IAS BABA

RAPID REVISION SERIES

800 High Probable Topics for UPSC Prelims 2021

(Current Affairs + Static Portion)

हिंदी

Full Compilation

HISTORY

Make the best use of this document by combining free explanation videos of these topics, Current Affairs Quiz, Static Quiz, CSAT Quiz, & 3 Full Mocks on rrs.iasbaba.Com (A Free Initiative targeting UPSC PRELIMS 2021)

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 8 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय कवरेज:

51. चंद्र ध्रुवीय अन्वेषण (Lunar Polar Exploration - LUPEX) मिशन
52. आदित्य - एल1
53. सूर्य की आंतरिक और बाहरी संरचना
54. इसरो का रिस्पॉन्ड प्रोग्राम (ISRO’s RESPOND Programme)
55. समाचारों में प्रमुख शब्द - अभयपात्र और बरगिस (Abhaypatra and Bargis)
56. मुल्लापेरियार बांध और जॉन पैनीकिक (John Pennycuick)
57. मालाबार विद्रोह या 1921 के मोपला दंगे
58. 'चौरी चौरा' घटना (1922)
59. असम में ढेकियाजुली का ऐतिहासिक शहीद कस्बा
60. असम का पथरूघाट विद्रोह (1894)

* इसके अलावा प्रमुख शब्दों की एक सूची भी शामिल है **(जो** अक्सर परीक्षा में पूछे जाने वाले **हैं)**

विषय 51: चंद्र ध्रुवीय अन्वेषण (Lunar Polar Exploration - LUPEX) मिशन

मुख्य बिंदु:

1. भारत (ISRO) और जापान (JAXA) द्वारा एक संयुक्त मिशन।
2. उद्देश्य- 2024 में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव का पता लगाने के लिए एक लैंडर और रोवर भेजना।
3. JAXA अंडर-डेवलपमेंट H3 लॉन्च व्हीकल और रोवर का प्रावधान करेगा।
4. इसरो लैंडर के लिए उत्तरदायी होगा।

चंद्र ध्रुवीय अन्वेषण मिशन ध्रुवीय क्षेत्रों में सतत चंद्र अन्वेषण के लिए वाहनों के परिवहन और चंद्र रात्रि अस्तित्व से संबंधित नई सतह अन्वेषण प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करेगा।
सटीक लैंडिंग के लिए, यह JAXA के स्मार्ट लैंडर फॉर इन्वेस्टिगेटिंग मून (Smart Lander for Investigating Moon - SLIM) मिशन से प्राप्त विशेषताएं समान एल्गोरिथम (Algorithm)और नेविगेशनल (Navigational) उपकरण का उपयोग करेगा।

विषय 52: आदित्य - L1

मुख्य बिंदु:

1. यह सूर्य का अध्ययन करने वाला भारत का पहला अंतरिक्ष यान मिशन है।
2. इसका मुख्य उद्देश्य सौर कोरोना (Solar Corona) का अध्ययन करना है।
3. कोरोना सूर्य के वायुमंडल का सबसे बाहरी क्षेत्र है।
4. यह इसरो और विभिन्न भारतीय अनुसंधान संस्थानों के सहयोग से डिजाइन और निर्मित है।
5. इसे L1 के चारों ओर एक प्रभामंडल कक्षा (Halo orbit) में स्थापित किया जाएगा, जो पृथ्वी से 1.5 मिलियन किमी दूर है।
6. अब यह सूर्य के कोरोना (नरम और कठोर एक्स-रे, दृश्य में उत्सर्जन रेखाएँ और NIR), क्रोमोस्फीयर (यूवी) और फोटोस्फीयर (ब्रॉडबैंड फिल्टर) का अवलोकन प्रदान कर सकता है।

विषय 53: सूर्य की आंतरिक और बाहरी संरचना

सूर्य आंतरिक, अंदर से बाहर, कोर, विकिरण क्षेत्र और संवहनी क्षेत्र से बना है।
ऊपर के सौर वातावरण में फोटोस्फीयर, क्रोमोस्फीयर और कोरोना शामिल हैं (सौर हवा कोरोना से गैस का एक बहिर्वाह है)।

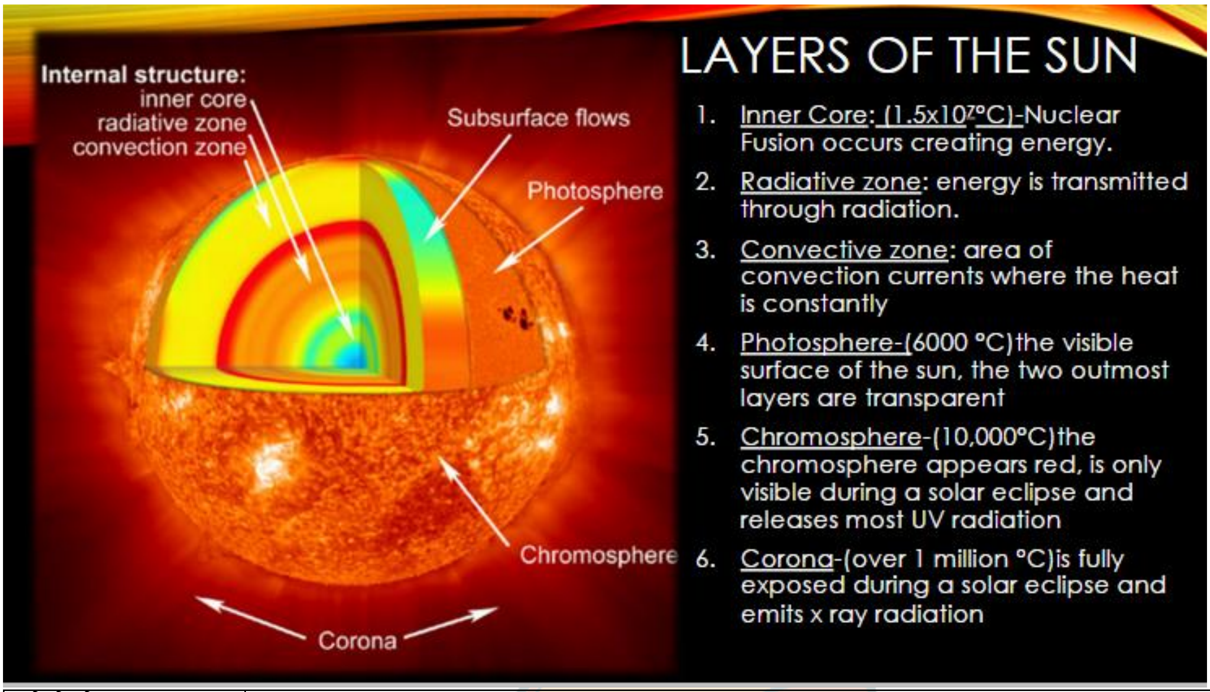

फ़ोटोस्फ़ेयर (Photosphere)	● फोटोस्फीयर सूर्य की उज्ज्वल बाहरी परत है जो अधिकांश विकिरण उत्सर्जित करती है। ● फोटोस्फीयर एक अत्यंत असमान सतह है। ● फोटोस्फीयर के बाहरी हिस्से का प्रभावी तापमान 6000 डिग्री सेल्सियस है।
क्रोमोस्फीयर (Chromosphere)	● फोटोस्फीयर/ प्रकाशमंडल के ठीक ऊपर क्रोमोस्फीयर है। ● यह अपेक्षाकृत जलती हुई गैसों की एक पतली परत है। ● क्रोमोस्फीयर थोड़ा ठंडा है - 4,320 डिग्री सेल्सियस।
सौर/सूर्य-कलंक (Sunspot)	● वे सूर्य □ (फोटोस्फीयर) की सतह पर मजबूत चुंबकीय बलों के क्षेत्र हैं ● सनस्पॉट अपेक्षाकृत शांत होते हैं क्योंकि वे उन क्षेत्रों में बनते हैं जहां चुंबकीय क्षेत्र विशेष रूप से मजबूत होते हैं। ● जब सनस्पॉट से ऊर्जा मुक्त होती है, तो सोलर फ्लेयर्स (Solar Flares) और बड़े तूफानों को कोरोनल मास इजेक्शन (Coronal Mass Ejections) कहा जाता है। ● सनस्पॉट अंधेरे क्षेत्रों के रूप में दिखाई देते हैं क्योंकि वे आसपास के क्रोमोस्फीयर की तुलना में लगभग 500-1500 डिग्री सेल्सियस ठन्डे होते हैं। ● प्रत्येक स्थान पर एक काला केंद्र या अम्ब्रा (Umbra) होता है, और एक हल्का क्षेत्र या पेनुम्ब्रा (Penumbra) होता है, जो इसके आसपास होता है। ध्यान दें □ सनस्पॉट की संख्या सीधे सौर गतिविधि के आनुपातिक होती है। अधिक सनस्पॉट का मतलब अधिक सौर गतिविधि है।

सौर पवन (Solar Wind)	● सौर पवन ऊर्जावान, आवेशित कणों, मुख्य रूप से इलेक्ट्रॉनों और प्रोटॉन की एक धारा है, जो सूर्य से बाहर की ओर 900 किमी / सेकंड की गति से और 1 मिलियन डिग्री (सेल्सियस) के तापमान पर बहती है। ● यह प्लाज्मा (आयनीकृत परमाणुओं) से निर्मित है।
सोलर फ्लेयर्स/ सौर ज्वाला (Solar Flares)	● चुंबकीय विसंगतियों के कारण सूर्य की सतह पर सौर ज्वालाएं उत्पन्न होती हैं। ● वे चुंबकीय तूफान हैं जो एक गैसीय सतह विस्फोट के साथ बहुत चमकीले धब्बे जैसे प्रतीत होते हैं। ● जैसे ही सौर फ्लेयर्स को कोरोना के माध्यम से प्रेरित किया जाता है, वे इसकी गैस को 10 से 20 मिलियन °C तक गर्म कर देते हैं।
सौर उभार (Solar prominence)	● सूर्य की सतह से निकलने वाली गैस के चाप को सौर उभार (Solar prominence) कहा जाता है। ● उभार अंतरिक्ष में सैकड़ों-हजारों मील की दूरी तय कर सकते हैं। ● सौर उभार (Solar Prominence) सूर्य की सतह के ऊपर मजबूत चुंबकीय क्षेत्रों द्वारा आयोजित किये जाते हैं और कई महीनों तक रह सकते हैं। ● उनके अस्तित्व में किसी समय, अधिकांश उभार प्रस्फुटित होंगे, जिससे अंतरिक्ष में भारी मात्रा में सौर सामग्री फैल जाएगी।
कोरोना (Corona)	● कोरोना प्लाज्मा का एक विशिष्ट वातावरण है जो सूर्य और अन्य खगोलीय पिंडों को घेरे हुए है। ● सूर्य का प्रभामंडल (Corona) अंतरिक्ष में लाखों किलोमीटर तक फैला हुआ है और पूर्ण सूर्य ग्रहण के दौरान सबसे आसानी से देखा जा सकता है। ● सूर्य का कोरोना पूर्ण सूर्यग्रहण के दौरान दिखाई देता है।
प्लाज्मा (Plasma)	● प्लाज्मा पदार्थ की चार मूलभूत अवस्थाओं में से एक है, अन्य ठोस, तरल और गैस हैं। ● प्लाज्मा आयनित गैस है (परमाणु और अणु आमतौर पर बाहरी आवरण से एक या अधिक इलेक्ट्रॉनों को हटाकर आयनों में परिवर्तित हो जाते हैं) ● बिजली और बिजली की चिंगारी प्लाज्मा से बनने वाली घटनाओं के रोजमर्रा के उदाहरण हैं। ● नियॉन लाइट को अधिक सटीक रूप से 'प्लाज्मा लाइट' कहा जा सकता है, क्योंकि प्रकाश उनके अंदर के प्लाज्मा से आता है।

विषय 54: इसरो का रिस्पॉन्ड प्रोग्राम (ISRO's RESPOND Programme)

मुख्य बिंदु:

1. मुख्य उद्देश्य □ अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को पूरा करने के लिए देश में प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के साथ मजबूत संबंध स्थापित करना।
2. भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का समर्थन करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों में अकादमिक आधार को बढ़ाना, गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन और बुनियादी ढांचा तैयार करना।
3. रिस्पॉन्ड के तहत, अंतरिक्ष कार्यक्रम की प्रासंगिकता के उन्नत क्षेत्रों में परियोजनाओं को प्रीमियर विश्वविद्यालयों/अकादमिक संस्थानों द्वारा शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
4. इसरो इन संस्थानों को आवश्यक तकनीकी सुविधाएं स्थापित करने में मदद करता है और शोधकर्ताओं को अत्याधुनिक अनुसंधान विषयों पर काम करने के लिए अधिछात्रवृत्ति भी प्रदान करता है।

विषय 55: समाचार में मुख्य शब्द – अभयपत्र और बारगिस (Abhaypatras and Bargis)

मुख्य बिंदु:

1. 1630 में, मानसून के दो साल तक विफल रहने के बाद, दक्कन का अकाल प्रस्फुटित हुआ और दो वर्ष तक चला।
2. अब्दुल हमीद लाहौरी के बादशाहनामा ने दर्ज किया कि भुखमरी इतनी व्याप्त थी कि "एक रोटी के लिए जीवन की पेशकश तक" की जा रही थी।
3. 18 वीं शताब्दी में, पेशवाओं ने प्रवासियों को वापस लौटने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए स्पष्ट रूप से सुरक्षा का वादा करने वाले अभय पत्र या पत्र की पेशकश की। उन्होंने रैयतों को भू-राजस्व से छूट दी। (पेशवा का कर अवकाश)

बार्गिस के बारे में;

1. यह शब्द 1741 और 1751 के बीच पश्चिम बंगाल के कई मराठा आक्रमणों का संदर्भ है, जिसके परिणामस्वरूप मुगल क्षेत्र में लूटपाट, डकैती और नरसंहार हुआ।
2. इस विशिष्ट अवधि की घटनाओं ने बंगाल की चेतना को इस हद तक प्रभावित किया है कि बंगाली लोककथाओं और साहित्य में उनकी एक स्थापित उपस्थिति है, और बार्गिस शब्द का उपयोग परेशान करने वाली बाहरी शक्तियों के आकस्मिक संदर्भ के रूप में किया जाता है।
3. बार्गिस शब्द मराठा और मुगल सेनाओं में घुड़सवारों को संदर्भित करता है। यह शब्द फारसी "बारगीर" से आया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "बोझ लेने वाला"।

विषय 56: मुल्लापेरियार बांध और जॉन पेनीक्यूइक (John Pennycuik)

मुख्य बिंदु:

1. मुल्लापेरियार बांध का निर्माण जॉन पेनीक्यूइक ने किया था और हाल ही में यह 125 वर्ष का हो गया है।

2. यह बांध मुल्लायर और पेरियार नदियों के संगम पर बना है। बांध केरल में पेरियार नदी पर स्थित है लेकिन पड़ोसी राज्य तमिलनाडु द्वारा इसका संचालन और रखरखाव किया जाता है।
3. यह जॉन पेनीक्यूइक थे जिन्होंने पेरियार के मार्ग को बदल दिया - पश्चिम की ओर बहने वाली नदी को पूर्व की ओर मोड़ दिया (जिससे कंबोम घाटी के पानी के वंचित खेतों को लाभ हुआ)
4. पेनीक्यूइक ने बंजर और बारिश से वंचित क्षेत्रों को खेती के तहत लाने के लिए नदी को आपस में जोड़ने की शुरुआत की।
5. मदुरै पर शासन करने वाले पांड्य राजाओं और तत्कालीन त्रावणकोर साम्राज्य के बीच जल बंटवारे के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे, जो अब केरल और तमिलनाडु के बीच विवाद का विषय है।
6. ब्रिटिश सरकार ने उन्हें एक उच्च नागरिक सम्मान 'कंपेनियन ऑफ स्टार ऑफ इंडिया' से नवाजा। 9 मार्च, 1911 को ब्रिटेन के फ्रिमली में उनका निधन हो गया।
7. हालांकि 125 साल पुराना बांध पूर्वी हिस्से में समृद्धि लेकर आया, लेकिन पश्चिमी तरफ नीचे की ओर लोग भय में जी रहे हैं, और बांध की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं।

विषय 57: मालाबार विद्रोह या 1921 के मोपला दंगे

प्रमुख बिंदु:

1. 1921 के मालाबार विद्रोह या मोपला दंगों के 100 साल।
2. मालाबार विद्रोह, मालाबार (उत्तरी केरल) में अंग्रेजों और हिंदू जमींदारों के खिलाफ मोपला (मालाबार के मुसलमानों) द्वारा किये गए दंगों की एक श्रृंखला की परिणति थी।
3. ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और सामंती व्यवस्था के खिलाफ शुरू हुआ प्रतिरोध बाद में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक हिंसा में समाप्त हुआ।
4. मोपला विद्रोह या मालाबार विद्रोह 1921 में केरल में खिलाफत आंदोलन का एक विस्तारित संस्करण था।

इस विद्रोह के प्रमुख नेता थे:

1. वरियानकुनाथ कुंजामद हाजी
2. सिथी कोया थंगल
3. अली मुस्लियार

विषय 58: 'चौरी चौरा' घटना (1922)

1. 'चौरी चौरा' घटना के 100 साल (4 फरवरी 1922) पुरे हुए हैं।
2. चौरी चौरा गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में है।
3. इसमें असहयोग आंदोलन में भाग ले रहे प्रदर्शनकारियों के एक बड़े समूह की गोलीबारी करने वाले पुलिस वालों के साथ झड़प हो गई थी।
4. महात्मा गांधी ने इस घटना के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में 12 फरवरी 1922 को असहयोग आंदोलन को समाप्त कर दिया था।
5. मुकदमे के बाद, 19 लोगों को मौत की सजा सुनाई गई, कई को आजीवन कारावास और कैद की सजा सुनाई गई।

विषय 59: असम में ढेकियाजुली का ऐतिहासिक शहीद **कस्बा**

मुख्य बिंदु:

1. ढेकियाजुली 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन से संबद्ध था।
2. ढेकियाजुली संभवतः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे कम उम्र के शहीदों का घर है।
3. 20 सितंबर, 1942 को, भारत छोड़ो आंदोलन के हिस्से के रूप में, स्वतंत्रता सेनानियों के जुलूस ने असम के कई शहरों में विभिन्न पुलिस स्टेशनों तक मार्च किया।
4. इन दस्तों, जिन्हें 'मृत्यु वाहिनी' या मृत्यु दस्ते के रूप में जाना जाता था, में महिलाओं और बच्चों सहित व्यापक भागीदारी थी - और औपनिवेशिक सत्ता के प्रतीक के रूप में देखे जाने वाले पुलिस स्टेशनों के ऊपर तिरंगा फहराने के लिए निकल पड़े।
5. ब्रिटिश प्रशासन ने उन्हे रोकने के लिए दमनकारी उपाय अपनाए।
6. ढेकियाजुली में, कम से कम 15 लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी गई, जिनमें 12 वर्षीय तिलेश्वरी बरुआ सहित तीन महिलाएं थीं।

नोट: हाल ही में, ढेकियाजुली पुलिस स्टेशन को विरासत का दर्जा दिया गया और असम सरकार द्वारा इसे नवीनीकरण किया गया।

विषय 60: असम का पथरूघाट (Patharughat) विद्रोह (1894)

मुख्य बिंदु:

1. औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा लगाए गए भूमि राजस्व में वृद्धि के खिलाफ निहत्थे किसानों द्वारा विरोध प्रदर्शन।
2. यह घटना जलियांवाला बाग हत्याकांड से पच्चीस साल पहले की है।
3. "पथरूघाट रॉन" या "पथरुघाट की लड़ाई" एक शांतिपूर्ण विरोध और सविनय अवज्ञा आंदोलन का अग्रदूत था, जिसे बाद में महात्मा गांधी द्वारा प्रचारित किया गया।

4. बड़े असमिया समुदाय के लिए, पथरुघाट सरायघाट की लड़ाई के बाद दूसरे स्थान पर आता है, जब अहोमों ने 1671 में मुगलों को हराया था।

प्रमुख शब्दों की सूची (अक्सर परीक्षा में पूछे जाने वाले)

प्राचीन भारत

आर्यों का आगमन/प्रारंभिक ऋग्वैदिक युग

पारिभाषिक शब्द	विवरण
पुरंदर/इंद्र	किलों को तोड़ने वाला/युद्ध का देवता
अग्नि	अग्नि देवता
वरुण	जल देवता
सोम	वनस्पति देवता
अदिति,उषा	प्रगति एवं उत्थान देवता
अवेस्ता	ईरानी भाषा में सबसे पुराना पाठ
नादितरना	सरस्वती नदी का एक और नाम, जिसे ऋग्वेद में नदियों में सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है
दास / दस्यु	आर्य प्रवास के दौरान भारत के स्वदेशी निवासी
पंचजन	आर्यों को पंचजन नामक 5 जनजातियों में विभाजित किया गया था
गविस्थी	ऋग्वेद में युद्ध/गाय की खोज के लिए शब्द
अयस	ऋग्वेद में तांबा/कांस्य - धातुओं के लिए प्रयुक्त शब्द
समुद्र	पानी का संग्रह
राजन	ऋग्वैदिक युग के दौरान एक प्रकार का प्रमुख
समिति/सभा/विदथ/गण	आदिवासी या कबीले आधारित सभाएं
पुरोहित	प्रधान पुजारी
बलि	जनजातीय मुखिया को लोगों द्वारा स्वैच्छिक भेंट
प्रजापति	वह अधिकारी जिसे एक बड़ी भूमि या चरागाह पर अधिकार प्राप्त था
कुल	परिवार
कुलप	परिवार का मुखिया

ग्राम	गाँव
ग्रामिण/ग्रामीणी	लड़ने वाले दल का मुखिया/गांव का मुखिया
व्रजपति	जब युद्धों के बाद इकाइयाँ बस गईं, तो ग्रामिणी गाँव का मुखिया बन गया, समय के साथ उसकी पहचान व्रजपति के रूप में हो गई
व्रत/गण/ग्राम/सरधा	विभिन्न आदिवासी समूह
जन	लोग
गोप/गोपति	जन के मुखिया
गृह	परिवार
विज़	कबीले
विशपति	कबीले का मुखिया
राष्ट्र	क्षेत्र/देश
राजन	राष्ट्र प्रमुख
सेनानी	सेना प्रमुख
पुरचारिश्नु	युद्ध लड़ने हेतु निर्मित गतिशील किला
शीरा- पकमोदनाम्	दूध के साथ पका हुआ अनाज
अघन्या	गाय के लिए प्रयुक्त, जिसका अर्थ है 'मारने योग्य नहीं'
सूरा और सोम	मादक पेय

उत्तर वैदिक काल

पारिभाषिक शब्द	विवरण
श्याम/ कृष्ण अयस	लोहा
शतपथ ब्राह्मण	हल अनुष्ठान से सम्बंधित लेख
व्रिही	वैदिक ग्रंथों में धान
विज़	साधारण लोग
राजसूय यज्ञ	राजा को सर्वोच्च शक्ति प्रदान करने के लिए बलिदान अनुष्ठान

अश्वमेध यज्ञ	उस क्षेत्र पर निर्विवाद नियंत्रण जिसमें शाही घोड़ा निर्बाध रूप से दौड़ता था
संगरीहित्री	करों और पुरस्कार के संग्रह के लिए अधिकारी
विस/वैश्य	दुर्दम्य लोग/आम लोग
राजन्य	राजा के करीबी रिश्तेदार
उपनयन	वैदिक ग्रंथों के अनुसार 3 वर्णों के पवित्र धागे के साथ अलंकरण
रथकर	रथ निर्माता
गौत्र	गौशाला / स्थान जहाँ पूरे कुल के मवेशी रहते हैं। बाद में इसका मतलब एक सामान्य पूर्वज से वंशज था।
गोघना	अतिथि या कोई व्यक्ति जिसे मवेशियों को खिलाया जाता था।
यज्ञ	बलिदान अनुष्ठान
यजमान	जिसने यज्ञ किया

उत्तर वैदिक युग में आधिकारिक पद

पारिभाषिक शब्द	विवरण
पुरोहित	पुजारी
महिषि	रानी
युवराज	युवराज
सुता/सारथी	सारथी
सेनानी	सेनापति
ग्रामणी	ग्राम प्रधान
क्षत	गेटमैन/चैंबरलेन
संगराहित्री	कोषाध्यक्ष
भागदुग	कर संग्रहकर्ता
अक्षवपा	संदेशवाहक

पलागला (Palagala)	राजा के मित्र - स्मृति चिन्ह- पालि राजा
गोविकार्ता (Govikarta)	वन विभाग के प्रमुख
गण	व्यापारियों का संध
श्रेष्ठी /श्रेष्ठिन	व्यापारियों का संघ/ व्यापारियों का संघ का प्रमुख

प्रादेशिक राज्य और प्रथम मगध साम्राज्य

पारिभाषिक शब्द	विवरण
जनपद	वह क्षेत्र जिससे कोई संबंधित है
एकराट	महापद्म नंद की उपाधि- एकमात्र संप्रभु जिसने अन्य सभी शासक राजकुमारों को नष्ट कर दिया।
जलदुर्ग	जल किला- इस संदर्भ में पाटलिपुत्र

बुद्ध के युग में राज्य और वर्ण समाज

पारिभाषिक शब्द	विवरण
वेसास	व्यापारिक सड़कें
निष्क/शतमान	धातुओं से बने सिक्के/प्रतिष्ठा वस्तुएं
भोजक	ग्राम प्रधान
गहपति	अमीर किसान
महामात्र	अदालत में उच्च अधिकारी
मंत्री	वज़ीर
सेनानायक	सेनाध्यक्ष
आयुक्त	राज्य में अधिकारियों का एक वर्ग
ग्रामभोजक / ग्रामणी / ग्रामिका	ग्राम प्रधानों के लिए अलग-अलग उपाधि
बलि साधक	अनिवार्य भुगतान एकत्र करने के लिए नियुक्त अधिकारियों-पहले स्वैच्छिक भुगतान को बलि कहा जाता था।

शुलकिका/शुलकाध्याक्ष	व्यापारियों से सीमा शुल्क वसूलने वाले टोल अधिकारी
परिषद	समितियों / सभाओं के समान छोटा समूह - जिसमें विशेष रूप से ब्राह्मण शामिल हैं।
भंडारिका	कोषाध्यक्ष

मौर्य युग

पारिभाषिक शब्द	विवरण
भेरीघोष	भौतिक व्यवसाय की नीति
धम्मघोष	सांस्कृतिक विजय की नीति
राजुक	धर्म की नीति के अनुसार लोगों को पुरस्कृत करने या दंडित करने का अधिकार रखने वाले अधिकारी।
संगीति	बौद्ध परिषद
भाग	उपज का शाही हिस्सा
धम्ममहामात्र	सामाजिक समूहों के बीच धर्म के प्रचार के लिए अशोक के अधिकारी।

मौर्य शासन का महत्व

पारिभाषिक शब्द	विवरण
धर्मप्रवर्तक	सामाजिक व्यवस्था के राजा/प्रचारक
तीर्थ	प्रशासन में महत्वपूर्ण पदाधिकारी
पण	एक तोले के 3/4 भाग के बराबर चांदी का सिक्का
अध्यक्ष	27 अधीक्षक ज्यादातर राज्य की आर्थिक गतिविधियों को विनियमित करने के लिए
समाहर्ता	कराधान के आकलन के प्रभारी सर्वोच्च अधिकारी।
सन्निधाता	राज्य के कोषागार एवं भण्डार गृह के मुख्य अभिरक्षक।
दुष्टमात्य	दुष्ट नौकरशाह

मध्य एशियाई संपर्क और उनके परिणाम

पारिभाषिक शब्द	विवरण
दोआब	दो नदियों के बीच की भूमि
रणनीतिकार	सैन्य गवर्नर- यूनानियों द्वारा शुरू की गई प्रणाली
अवदान	महायान बौद्ध धर्म की प्रगति के दौरान रचित ग्रंथ
यवनिका	यूनानियों से उधार लिए गए आवरण
यवन	प्राचीन भारत में ज्ञात यूनानियों की शाखा
होरशास्त्र	संस्कृत में ज्योतिष/कुंडली के लिए शब्द
ड्राचमा	नाटक के लिए ग्रीक शब्द
औषधि	पौधे
औषधि	दवा

मध्यकालीन भारत

भारत और विश्व

पारिभाषिक शब्द	विवरण
जागीर	सामंती प्रभु का महल
सामंत	जागीरदार
सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट द्वारा संशोधित और सुधारित खगोल विज्ञान पर कार्य

उत्तर युग- 3 साम्राज्यों का युग

पारिभाषिक शब्द	विवरण
अपभ्रंश	भ्रंश भाषाएं आधुनिक भारतीय भाषाओं की अग्रदूत मानी जाती हैं
अंतःपुर	शाही परिवार के अधिकारी
भुक्ति	प्रांत

मंडल/विसय	जिले
उपरिक	प्रांत/भुक्ति के राज्यपाल
विषयपति	किसी जिले का मुखिया
सामंत/भोगपति	प्रधान/ग्राम प्रधान
पट्टाल	विसय के नीचे प्रशासनिक इकाई
ग्राम महाजन / महत्त्रा	गांव के बुजुर्ग
नाद-गवुंडास/देसा-ग्रामकूट	दक्कन में वंशानुगत राजस्व अधिकारी

चोल साम्राज्य

पारिभाषिक शब्द	विवरण
मंडलम	प्रांत
वालनाडु/नाडु	प्रांतों का विभाजन
अग्रहार	ब्राह्मण गांव
उर/सभा/महासभा	ग्रामीण क्षेत्रों में विधानसभाएं- स्थानीय स्वशासन के लिए
मंडप	स्तंभित हॉल
गर्भगृह	मुख्य देवता कक्ष
देवदासी	भगवान की सेवा के लिए समर्पित महिलाएं
गोपुरम	मंदिरों के ऊंचे द्वार
तिरुमारी	तमिल में न्यानार और अलवर के लेख, 12 वीं शताब्दी में 11 खंडों के तहत एकत्र किए गए- जिन्हें अक्सर 5 वां वेद कहा जाता है।
नयनार	शिव के संत भक्त
अलवर	विष्णु के संत भक्त

आर्थिक और सामाजिक जीवन/शैक्षिक और धार्मिक विश्वास

पारिभाषिक शब्द	विवरण

श्रेणि/संघ	व्यापार श्रेणी- समय के साथ उप जातियों के रूप में उभरा
द्वादस श्रेणि	श्रेणी जो वैश्यों की एक उप जाति बन गई
मुंज	एक प्रकार की घास
सामंत/रानक/रौत्ता	सामंती वर्ग, राजपूत
भोग	राजस्व
महासमंतधिपति	मंत्रियों, अधिकारियों और सामंती प्रमुखों द्वारा ग्रहण की गई उच्च उपाधियाँ
कोटिश्वर	करोड़पति
उत्पल सक	कड़वे स्वाद की जंगली सब्जी
बसादी	जैन मंदिर
महास्तम्भ	स्तंभ
अद्वैतवाद	अद्वैतवाद का सिद्धांत

संघर्ष का युग

पारिभाषिक शब्द	विवरण
अमीर-उल-उमरा	अर्थ कमांडरों के कमांडर-खलीफा द्वारा उन जनरलों को दी गई उपाधि जो अधिकार के एक अलग क्षेत्र को जीतने में सक्षम थे।
शिकन	बुतों/ मूर्तियों का विध्वंसक
देउल/गर्भगृह	मुख्य देवता कक्ष
जहान सोज़	अर्थ विश्व ज्वालक- सुल्तान अलाउद्दीन की उपाधि क्योंकि उसने गजनी को तबाह कर दिया था।

दिल्ली सल्तनत-**1**

पारिभाषिक शब्द	विवरण
चहलगनी	अर्थ- 'चालीस'- तुर्की प्रमुख
छत्र	शाही प्रतीक चिन्ह

दीवाने अर्ज	सैन्य विभाग
सिजदा एवम पैबोस	साष्टांग प्रणाम और राजा के पैरों के चुंबन - बलबन के तहत

दिल्ली सल्तनत- II

पारिभाषिक शब्द	विवरण
मलिक नायब	साम्राज्य के उप राज्य-संरक्षक
शहना	बाजार, व्यापारियों और कीमतों को नियंत्रित करने वाले उच्च अधिकारी
बंजारे	व्यापारी
बाँध	पैसा
जीतल	मुद्रा की इकाई
टंका	मुद्रा
सवार	घुड़सवार
खुट्स और मुकद्दम	जमींदार/ग्राम प्रधान
अमिल	स्थानीय अधिकारी
दीवानी-अमीर-ए-कोही	दोआब में खेती में सुधार के लिए विभाग
जजिया	गैर मुसलमानों पर कर
करखाना	शाही कार्यशालाएं

नोट:
प्रारंभिक तुर्की सुल्तानों की कृषि और भूमि राजस्व प्रणाली दो नींवों पर टिकी हुई थी।

1. इक्ता (भू-राजस्व का कार्य, कर खेती)
2. खराज (भू-राजस्व)।

इक्ता प्रणाली के तहत, साम्राज्य की भूमि को इक्ता नामक कई बड़े और छोटे इलाकों में विभाजित किया गया था और इन इक्ता को अपने सैनिकों, अधिकारियों और कुलीनों को सौंप दिया था। शुरुआत में, एक इक्ता वेतन पर आधारित था। बाद में, फिरोज शाह तुगलक के अधीन यह वंशानुगत हो गया।

दिल्ली सल्तनत के तहत सरकार, आर्थिक और सामाजिक जीवन

पारिभाषिक शब्द	विवरण
खुतबा	खलीफा के नैतिक नेतृत्व को स्वीकार करने वाले इस्लामी शासक
उलेमा	धार्मिक वर्ग
वज़ीर	प्रमुख प्रशासनिक व्यक्ति, जो पहले एक सैन्य नेता के लिए उपयोग किया जाता था, बाद में राजस्व मामलों के विशेषज्ञ के लिए इस्तेमाल किया गया।
दीवान-ए-अर्ज	सैन्य विभाग
अर्ज-ए-ममलिक	सैन्य विभाग के प्रमुख
दाग	घोड़ों की ब्रांडिंग प्रणाली
दीवान-ए-रिसालत	धार्मिक मामलों का विभाग- 'सदर' की अध्यक्षता में
दीवान-ए-इंशा	राज्य पत्राचार विभाग
बरीद	खुफिया एजेंट
वकील-ए-दर	फिरोज तुगलक के अधीन दास विभाग के प्रभारी अधिकारी
मुक़तिस/वालिस	इक्ता के धारक
शिक	प्रांतों को शिक में बांटा गया था और शिकों को परगना में बांटा गया था।
अमिल	परगना के मुखिया
पटवारी	ग्राम लेखाकार
राएस (Rais)	स्वायत्त हिंदू जमींदार
टंका/दिरहम	मुद्रा
मलमल	बंगाल से बढ़िया सूती कपड़ा
धुनिया	कपास संचालकों का चाप
रहट	फारसी पहिया को कहना - सिंचाई के लिए पानी उठाने के लिए उपयोगी।
जवाबित	सुल्तानों को अपने स्वयं के नियमों को तैयार करके मुस्लिम कानून को पूरक करना पड़ा।
जहाँदरी	सांसारिक या धर्मनिरपेक्ष विचारों पर आधारित राज्य

ज़िम्मी	हिंदू विषयों को संरक्षित लोगों के रूप में दिया गया दर्जा जिन्होंने मुसलमानों के शासन को स्वीकार किया और जजिया का भुगतान करने के लिए सहमत हुए। फिरोज तुगलक ने जजिया को भू-राजस्व से अलग कर दिया।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 9 - HISTORY

#RaRebaba
www.rrs.iasbaba.com

विषय कवरेज:

61. 'उत्कल केशरी'
62. पाइका विद्रोह/'पाइक विद्रोह'
63. वीर सुरेंद्र साईं
64. पंडित गोपबंधु दास
65. भारत की गुमनाम महिला स्वतंत्रता सेनानी
66. 1800 से पहले के नागरिक विद्रोह
67. नागरिक विद्रोह 1800-30
68. 1831 के बाद नागरिक विद्रोह
69. 1915 से पहले किसान विद्रोह
70. 1915 के बाद किसान विद्रोह

विषय 61: 'उत्कल केशरी'

मुख्य बिंदु:

1. 'ओडिशा इतिहास' पुस्तक 'उत्कल केशरी' हरेकृष्ण महताब द्वारा लिखी गई थी।
2. हरेकृष्ण महताबी के बारे में
3. उत्कल केशरी की कृतियां

हरेकृष्ण महताबी के बारे में

1. वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता थे, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक उल्लेखनीय व्यक्ति और ओडिशा के पूर्व सीएम थे।
2. 1922 में, उन्हें कैद कर लिया गया और देशद्रोह का आरोप लगाया गया। वह नमक सत्याग्रह आंदोलन में शामिल हुए और 1930 में फिर से जेल गए। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया और 1942 से 1945 तक जेल में रहे।

उनके उल्लेखनीय कार्य:

1. वह प्रजातंत्र प्रचार समिति के संस्थापक थे और उन्होंने 1923 में बालासोर में साप्ताहिक पत्रिका प्रजातंत्र की शुरुआत की, जो बाद में दैनिक प्रजातंत्र बन गया।
2. वह एक मासिक पत्रिका झंकार की स्थापना के समय से ही इसके मुख्य संपादक थे। उन्होंने साप्ताहिक अंग्रेजी पत्र द ईस्टर्न टाइम्स भी प्रकाशित किया और इसके मुख्य संपादक थे।
3. 1983 में उनकी प्रसिद्ध कृति गाँव मजलिस के तीसरे खंड के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

विषय 62: पाइका विद्रोह/'पाइक विद्रोह'

मुख्य बिंदु:

1. 1817 में खुर्दा क्षेत्र में अंग्रेजों के खिलाफ पाइका विद्रोह हुआ।
2. इसका नेतृत्व ओडिशा में बक्सी जगबंधु (विद्याधर महापात्र) ने किया था।
3. पाइक ओडिशा के गजपति शासकों के अधीन किसान मिलिशिया थे।
4. बाद में उनकी किराया-मुक्त भूमि पर कब्जा करने के बाद उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया।
5. पाइका को कनिका, कुजंग, नयागढ़ के राजाओं और घुमसर तथा जमींदारों, ग्राम प्रमुखों और आम किसानों का समर्थन प्राप्त था।

विषय 63: वीर सुरेंद्र साईं

मुख्य बिंदु:

1. उन्हें ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ संबलपुर के प्रतिरोध आंदोलन में अपनी भूमिका के लिए जाना जाता है।
2. सुरेंद्र उस परिवार से संबंध रखते थे, जो संबलपुर राज्य के शासक कबीले का हिस्सा था।
3. इसके बाद गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने "व्यपगत के सिद्धांत" को लागू करते हुए संबलपुर को अपने कब्जे में ले लिया। इसी वजह से सुरेंद्र साईं और उनके समर्थकों ने संबलपुर पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ विद्रोह कर दिया।
4. 1857 में संबलपुर का विद्रोह मुख्य रूप से एक आदिवासी विद्रोह था।

विषय 64: पंडित गोपबंधु दास

मुख्य बिंदु:

1. उन्हें उत्कलामणि (उत्कल या ओडिशा का गहना) के नाम से जाना जाता है।
2. वह एक सामाजिक कार्यकर्ता, सुधारक, राजनीतिक कार्यकर्ता, पत्रकार, कवि और निबंधकार थे।
3. नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने गोपबंधु को 'ओडिशा में राष्ट्रीय आंदोलन का जनक' कहा।
4. उन्होंने मोर्ले-मिंटो सुधार की शर्तों के तहत 1909 में बनाए गए विधान परिषद का चुनाव जीता।
5. वह 1920 में उत्कल प्रदेश कांग्रेस समिति के पहले अध्यक्ष बने, 1928 तक इस पद पर रहे और उन्होंने 1921 में गांधी का प्रांत में स्वागत किया।
6. उन्होंने स्वदेशी आंदोलन से प्रभावित होकर असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया।

विषय 65: भारत की गुमनाम महिला स्वतंत्रता सेनानी

नाम	विवरण
रमा देवी चौधरी	मुख्य बिंदु: 1. बालासोर में इंचूदी नमक सत्याग्रह का नेतृत्व करने वाली स्वतंत्रता सेनानी। 2. उन्हें प्यार से ओडिशा के लोगों द्वारा मां (मां) कहा गया। 3. एक बहुत अमीर जमींदार परिवार में जन्मी और गोपबंधु चौधरी से विवाह हुआ। 4. वह अपने पति के साथ असहयोग आंदोलन में शामिल हुई।

	5. ओडिशा के विभिन्न हिस्सों में नमक सत्याग्रह का आयोजन किया। 6. उन्होंने हरिजन भाइयों के कल्याण के लिए काम करने के लिए अस्पृश्यता निवारण समिति की स्थापना की। 7. रमा देवी जी एक सच्ची गांधीवादी थीं, जिन्होंने अपना जीवन राष्ट्र और लोगों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।
अन्नपूर्णा महाराणा	मुख्य बिंदु: 1. वे स्वतंत्रता सेनानी रमा देवी और गोपबंधु चौधरी की पुत्री थीं। 2. उन्हें महात्मा गांधी का करीबी माना जाता था और उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया था। 3. उन्हें चुन्नी आपा के नाम से भी जाना जाता था, वह 14 साल की कम उम्र में स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गईं। 4. भारत के स्वतंत्र होने के बाद महाराणा ने महिलाओं और बच्चों के उत्थान की दिशा में कार्य करना जारी रखा। 5. अपनी मां की तरह, वह आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में भूदान आंदोलन में शामिल हुईं। 6. 1964 में राउरकेला के सांप्रदायिक दंगों के दौरान उन्होंने शांति रक्षक के रूप में कार्य किया।
मालती देवी चौधरी	मुख्य बिंदु: 1. एक स्वतंत्रता सेनानी जिन्हें महात्मा गांधी ने 'तूफानी' कहा। 2. उन्होंने अंतिम सांस तक आदिवासी और सामाजिक रूप से वंचितों के अधिकारों के लिए अपना संघर्ष जारी रखा। 3. उन्होंने गरीब किसानों को जमींदारों और साहूकारों के प्रकोप से बचाने के लिए 'कृषक आंदोलन' का नेतृत्व किया। उन्हें भारत की संविधान सभा के सदस्य के रूप में भी चुना गया था।
जानकीदेवी बजाज	मुख्य बिंदु: 1. उनका जन्म मध्य प्रदेश के जावरा के एक मारवाड़ी परिवार में हुआ था। 2. वह महात्मा गांधी की करीबी सहयोगी थीं। स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में भाग लेने के साथ-साथ उन्होंने खादी और चरखे पर कताई भी की। 3. 1921 में गांधी से प्रेरित होकर जानकी देवी बजाज ने घर के अंदर और बाहर इस्तेमाल होने वाले विदेशी कपड़ों को जला दिया। 4. उन्होंने 1928 में महिलाओं के उत्थान, 'गौ सेवा' और हरिजनों के जीवन की बेहतरी और उनके मंदिर में प्रवेश के लिए भी काम किया। 5. आजादी के बाद उन्होंने विनोबा भावे के साथ भूदान आंदोलन पर काम किया।
तारकेश्वरी सिन्हा	मुख्य बिंदु: 1. उनका जन्म बिहार में हुआ। 2. वह एक किशोरी के रूप में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हो गईं (16 साल की उम्र में) 3. सिन्हा मोरारजी देसाई की पहली महिला उप वित्त मंत्री बनीं।

रानी वेलू नचियार	मुख्य बिंदु: 1. माना जा रहा है कि उन्होंने अंग्रेजों को निरस्त्र करने के लिए भारत में पहली बार आत्मघाती हमले की योजना बनाई थी। 2. 1780 में, शिवगंगाई के तमिल राज्य की रानी ने ब्रिटिश शासन से अपने राज्य को वापस जीतने के लिए अपनी सेना का गठन किया। 3. ऐसा माना जाता है कि जब रानी वेलु नचियार को पता चला कि अंग्रेज अपने गोला-बारूद और हथियार कहाँ रखे हैं, तो उनकी दत्तक पुत्री कुयली ने खुद को तेल में भीगा लिया और ब्रिटिश गोदाम में रखे गोला-बारूद को नष्ट करने के लिए खुद को आग लगा ली।
कैप्टन लक्ष्मी सहगल	मुख्य बिंदु: 1. उन्हें नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा भारतीय राष्ट्रीय सेना में रानी झांसी रेजिमेंट की महिला टुकड़ी का नेतृत्व करने के लिए चुना गया था।
उषा मेहता	मुख्य बिंदु: 1. 1942 में, उषा मेहता एक भूमिगत रेडियो स्टेशन - सीक्रेट कांग्रेस रेडियो स्थापित करने के बाद एक पखवाड़े के लिए भूमिगत हो गईं। 2. हालांकि यह मुश्किल से कुछ महीनों के लिए काम कर सका, रेडियो सेवा ने लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए महात्मा गांधी के आह्वान को फैलाने में मदद की।
तारा रानी श्रीवास्तव	मुख्य बिंदु: 1. अपने पति को अपनी आंखों के सामने गोली लगते हुए देखने के बावजूद उन्होंने अपनी लड़ाई को जारी रखा। 2. जब उनके पति फूलेंदु बाबू ने सीवान थाने की छत पर तिरंगा फहराने के लिए एक गुट का नेतृत्व किया तो उन्हें गोली मर दी गई और वह जमीन पर गिर पड़े। तारा रानी ने अपने घावों पट्टी बांधी और थाने की ओर मार्च करते हुए चली पड़ी।
कुंतला कुमारी सबत	मुख्य बिंदु: 1. कुंतला कुमारी सबत को प्यार से उड़ीसा की कोकिला या बुलबुल कहा जाता है। 2. गांधी की अनुयायी, कुंतला कुमारी सबत हमेशा मानती थीं कि स्वतंत्रता उनका जन्मसिद्ध अधिकार है और उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया। 3. एक प्रख्यात कवि, कुंतला सबत ने देश भर के लोगों में देशभक्ति की भावना को प्रज्वलित करने के लिए अपनी विचारशील कविताओं का उपयोग किया। उन्होंने अन्य महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित करने का भी प्रयास किया। 4. ना टुंडी', 'काली बोहू', 'पारसमणि', 'भ्राती', 'रघु अराचिता' उनकी कुछ उल्लेखनीय कृतियां हैं। वह संघ 'भारती तपोवन संघ' की संस्थापक भी थीं, जिसे उन्होंने उड़िया साहित्य के विकास के लिए स्थापित किया था।
सरला देवी चौधरानी	मुख्य बिंदु: 1. संगीत के माध्यम से देशभक्ति का आह्वान करने वाले स्वतंत्रता सेनानी।

	2. वह एक विपुल लेखिका, एक महान गायिका और एक सच्ची नारीवादी थीं। 3. उनका जन्म कोलकाता में हुआ था (रवींद्रनाथ टैगोर के बहन की बेटी) 4. हालाँकि रवींद्रनाथ टैगोर ने 'वंदे मातरम' की पहली दो पंक्तियों के लिए धुन तैयार की थी, लेकिन बाकी संगीत सरला देवी ने ही लगाया था। 5. वह लाहौर में महात्मा गांधी के संपर्क में आई और उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांत से काफी प्रभावित हुई। 6. उन्होंने एक गुप्त क्रांतिकारी समाज सुहिद समिति के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखा। 7. उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने के लिए स्वयं इसका कार्यभार लिया और भारत स्त्री महांमण्डल का गठन किया।
चंद्रप्रवा सैकियानी	मुख्य बिंदु: 1. असम की विद्रोही सत्याग्रही जिन्होंने विवाह के बंधन के बिना मां बनने की हिम्मत दिखाई। 2. लेखक और समाज सुधारक थी जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी और असम में सामाजिक समानता लाने की दिशा में कार्य किया। 3. अखिल असम प्रादेशिक महिला समिति की स्थापना की। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया और पितृभिथा, सिपाही बिद्रोहाट और दिलीर सिन्हासन जैसे सामाजिक उपन्यास लिखे।
राजकुमारी गुप्ता	मुख्य बिंदु: 1. उनका जन्म कानपुर में हुआ था और उन्होंने मदन मोहन गुप्ता से शादी की थी जो एक क्रांतिकारी थे, 2. वह बाद में क्रांतिकारियों से प्रभावित हुई, जो अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह में विश्वास करते थे। वह चंद्रशेखर आजाद के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थी और गुप्त रूप से अन्य क्रांतिकारियों को संदेश और सामग्री ले जाकर उनका समर्थन करने लगी। 3. उन्हें काकोरी डकैती के लिए क्रांतिकारियों को आग्नेयास्त्र पहुंचाने का प्रभार दिया गया था। 4. उन्होंने एक बार कहा था: "हम उपर से गांधीवादी, नीचे से क्रांतिवादी है।
दुर्गावती देवी या दुर्गा भाभी	मुख्य बिंदु: 1. वह एक भारतीय क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थी। 2. वह उन चंद महिला क्रांतिकारियों में से एक थीं, जिन्होंने सत्तारूढ़ ब्रिटिश राज के खिलाफ सशस्त्र क्रांति में सक्रिय रूप से भाग लिया। 3. वह भगत सिंह के साथ ट्रेन यात्रा में जाने के लिए सबसे अच्छी तरह से जानी जाती हैं, जिसमें उन्होंने सॉन्डर्स की हत्या के बाद भेष बदल कर भाग लिया था। 4. वह हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के सदस्य भगवती चरण वोहरा की पत्नी थीं। 5. देवी ने अपने पति के साथ, दिल्ली के कुतुब रोड पर 'हिमालयन टॉयलेट्स' (बम बनाने के एजेंडे को छिपाने के लिए एक स्मोकस्क्रीन) नामक एक बम फैक्ट्री चलाने में HSRA सदस्य विमल प्रसाद जैन की मदद की। इस कारखाने में, उन्होंने पिक्रिक एसिड, नाइट्रोग्लिसरीन और पारा के फुलमिनेट को संभाला।

विषय 66: 1800 से पहले के नागरिक विद्रोह

वर्ष	विद्रोह	नेता	स्थान/टिप्पणियां
1763-1800	सन्यासी-फकीर विद्रोह	भवानी पाठक देवी चौधुरानी चिराग शाही मजनुन शाही	संन्यासी विद्रोह पर बंकिम चंद्र - देवी चौधुरानी का आनंदमठ आधारित है।
1766-74	मिदनापुर और धालभूम में विद्रोह	दामोदर सिंह जगन्नाथ ढाल	कारण: बंगाल में स्थायी बंदोबस्त प्रणाली की शुरूआत और जमींदारों का बेदखली।
1769-99	मोअमरियास का विद्रोह		रंगपुर (अब बांग्लादेश में) और जोरहाट असम के अहोम राजाओं के विरुद्ध मोआमरिया निम्न जाति के किसान थे जो अनिरुद्धदेव की शिक्षाओं का पालन करते थे।
1781	गोरखपुर, बस्ती और बहराइच में नागरिक विद्रोह		भू-राजस्व के खिलाफ जमींदार और किसान उठ खड़े हुए।
1794	विजयनगरम के राजा का विद्रोह	विजयारामाराजु	अंग्रेज़ों ने 3 लाख रुपये की राशि की मांग की।
1795-1805	पोलीगारों का विद्रोह	कट्टाबोम्मन	थिरुनेलवेली, तमिल नाडु पोलीगार दक्षिण भारत के जमींदार थे। उन्होंने अपनी राजस्व मांगों के कारण अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह में कट्टाबामन नायकन, ओमाइथुरई और मारुथू पांडियन महत्वपूर्ण प्रमुख थे।
1797-1805	केरल वर्मा पझासी राजा का प्रतिरोध	केरल सिम्हम	कोट्टायम, केरल कोट्टायम पर ब्रिटिश सर्वोपरिता के विस्तार और किसानों पर कर की अत्यधिक दरों के कारण पझासी राजा के नेतृत्व में किसानों द्वारा बड़े पैमाने पर विरोध किया।
1799	बेदनूर में धुंडिया का विद्रोह	धुंडिया वाघ	स्थानीय मराठा नेता धुंडिया एक मराठा नेता थे जो अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में उठ खड़े हुए। 1800 में वेलेस्ली ने उन्हें पराजित किया था।
1799	अवध में नागरिक विद्रोह	वज़ीर अली ख़ान	बनारस का नरसंहार
1800 1835-37	गंजम और गुसुर में विद्रोह	स्त्रीकारा भंज धनंजय भंज	अंग्रेजों के खिलाफ गुसुर के जमींदार रहे स्त्रीकारा भंज और उनके बेटे धनंजय भंज ने विद्रोह किया।

विषय 67: नागरिक विद्रोह 1800-30

वर्ष	विद्रोह	नेता	स्थान/टिप्पणियां
1800-02	पलामू में विद्रोह	भुखान सिंह	झारखंड
1809	भिवानी में विद्रोह		हरियाणा के जाट
1808-09	वेलू थम्पी का विद्रोह	वेलू थम्पी	त्रावणकोर, केरल राज्य वेलू थम्पी ने कुंदरा उद्घोषणा के नाम से जानी जाने वाली कुंदरा में एक सभा को संबोधित किया। कारण: ● सहायक संधि में सहमत होने के बाद त्रावणकोर राज्य बाकी के साथ मिल गया। ● त्रावणकोर के ब्रिटिश रेज़िडन्ट राज्य के आंतरिक मामलों में दखल दे रहे थे। ● इसने वेलू थंपी को कंपनी के खिलाफ खड़ा कर दिया। ● विद्रोह के उनके आह्वान को कुंदरा उद्घोषणा के नाम से जाना जाता था।
1808-12	बुंदेलखंड में अशांति	लक्ष्मण दावा	बुंदेलखंड बुंदेलखंड के बंगाल प्रेसीडेंसी के साथ संलग्न होने के बाद बुंदेला प्रमुखों द्वारा विद्रोह। बुंदेलों के साथ इकरनामाह नामक संविदात्मक दायित्वों द्वारा विद्रोह को कम कर दिया गया।
1813-34	परलाकिमेडी विद्रोह	नारायण देव	गंजम, परलाकिमेदी कंपनी के खिलाफ परलाकिमेदी राजा नारायण देव का प्रतिरोध
1816-32	कच्छ विद्रोह	राजा भारमल द्वितीय	कच्छ कारण: ● कच्छ के आंतरिक मामलों में ब्रिटिश हस्तक्षेप। ● ब्रिटिश प्रशासनिक नवाचार-अत्यधिक भूमि मूल्यांकन

1816	बरेली में विद्रोह		● पुलिस कर का अधिरोपण ● विदेशी प्रशासन के कारण असंतोष
1817	हाथरस में विद्रोह		उत्तर प्रदेश हाथरस से उच्च राजस्व निर्धारण के परिणामस्वरूप दयाराम ने कंपनी के खिलाफ विद्रोह किया।
1817	पाइका विद्रोह	जगबंधु खुर्द के राजा	ओडिशा के पाइक पारंपरिक भूमि वाले मिलिशिया थे। कारण: ● अंग्रेजी कंपनी की ओडिशा पर विजय, और खुर्द के राजा के गद्दी से हटने से पाइक की शक्ति और प्रतिष्ठा बहुत कम हो गई थी। ● जबरन वसूली करने वाली भू-राजस्व नीतियों ने जमींदारों और किसानों में और अधिक आक्रोश पैदा किया। ● करों के कारण नमक की कीमतों में वृद्धि हुई। ● कौड़ी मुद्रा का उन्मूलन ● चांदी में करों के भुगतान की आवश्यकता अन्य कारण हैं।
1818-20	वाघेरा विद्रोह		गुजरात का बड़ौदा क्षेत्र विदेशी शासन के खिलाफ आक्रोश बड़ौदा के गायकवाड़ की कार्रवाई।
1827-33	राजू विद्रोह	वीरभद्र राजू	विशाखापट्टनम
1828	अहोम विद्रोह	गोमधर कोंवर	असम प्रथम बर्मा युद्ध के बाद अंग्रेजों ने असम को अपने क्षेत्र में शामिल करने का प्रयास किया।
1829	गमसूर विद्रोह	धनंजय भोज	गंजम, उड़ीसा

विषय **68: 1831** के बाद का नागरिक विद्रोह

वर्ष	विद्रोह	नेता	स्थान/टिप्पणियां
1835	पालकोण्डा का विद्रोह		आंध्र प्रदेश जमींदारों द्वारा विद्रोह
1840	सूरत नमक आंदोलन		नमक शुल्क 50 पैसे से बढ़ाकर एक रुपये करने का सरकार का कदम। बंगाल मानक बाट और माप की शुरूआत
1840	कित्तूर विद्रोह	सुरेंद्र साईं	संबलपुर, उड़ीसा
1842	संबलपुर विद्रोह	धर राव पवार	सतारा, महाराष्ट्र
1844	सतारा विद्रोह बुंदेला विद्रोह	महुकर शाह जवरहिर सिंह	बुंदेलखंड
1844	गडकरी विद्रोह		महाराष्ट्र का कोल्हापुर; गडकारी, एक वंशानुगत सैन्य वर्ग
1844-59	सावंतवाड़ी विद्रोह	फोंड सावंत सुबाना निकम	उत्तरी कोंकण तट गडकरी प्रशासनिक पुनर्गठन और बेरोजगारी के कारण अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में उठे।
1830-61	वहाबी आंदोलन	रायबरेली के सैयद अहमद	बिहार, बंगाल, उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत, पंजाब एक इस्लामी पुनरुत्थानवादी आंदोलन दार-उल-हरब का दार-उल-इस्लाम में परिवर्तन जिहाद सिखों पर और बाद में अंग्रेजों पर घोषित किया गया।
1840-72	कूका आंदोलन	भगत जवाहरमल राम सिंह	पंजाब एक धार्मिक आंदोलन उद्देश्य: ● सिख धर्म में जाति और अन्य भेदभाव का उन्मूलन। ● मांस, शराब और नशीली दवाओं के सेवन को हतोत्साहित करना।

			• अंतर्विवाह की अनुमति। • विधवा पुनर्विवाह • ब्रिटिश को हटाना और सिख राज्य बहाल करना। • अंग्रेजी कानूनों, शिक्षा और उत्पादों का बहिष्कार।

विषय 69: 1915 से पहले के किसान विद्रोह

वर्ष	विद्रोह	नेता	स्थान/टिप्पणियां
1827 – 1831	नार्केबेरिया विद्रोह	टीटू मीर	पश्चिम बंगाल • जमींदारों के खिलाफ, मुख्य रूप से हिंदू, फ़राज़ियों और नील बागान मालिकों पर उच्च कर के लिए। • अंग्रेजों के खिलाफ पहला सशस्त्र किसान विद्रोह। • बाद में वहाबी आंदोलन में विलय।
1820-60	फराजी आंदोलन	फरीदपुर के हाजी शरीयत-अल्लाह द्वारा स्थापित। दादू मियां	बंगाल दादू मियां ने अपने अनुयायियों को बंगाल से अंग्रेजों को निकालने के लिए संगठित किया।
1825-35	पागल पंथी	करम शाह टीपू	मैमनसिंह जिला, बंगाल की गारो जनजाति। उन्होंने लगान देने से इनकार कर दिया और जमींदारों के घरों पर हमला कर दिया।
1836-54	मोपला विद्रोह		मालाबार, केरल कारण: • राजस्व मांगों में वृद्धि। • क्षेत्र के आकार में कमी। • अधिकारियों का उत्पीड़न।
1859	इंडिगो विद्रोह/ नील विद्रोह	दिगंबर बिस्वास बिष्णु बिस्वास	• नदिया, बंगाल में शुरू। • समाचार पत्रों, जनसभाओं और कानूनी लड़ाइयों में बंगाली बुद्धिजीवियों का समर्थन मिला।

			● सरकार ने 1869 में नील आयोग को नियुक्त किया। ● 1860 के दशक के अंत तक बंगाल से नील की खेती का सफाया हो गया था, ● इस पर नील दर्पण, 1869 में लिखा गया।
1874-85	पबना कृषि लीग		बंगाल
1867	दक्कन दंगे		● पूना, अहमदनगर, शोलापुर और सतारा के गांवों का सामाजिक बहिष्कार। ● सामाजिक बहिष्कार दंगों और साहूकारों पर हमले में तब्दील हो गया। ● ढक्कन कृषक राहत अधिनियम 1879 में पारित किया गया था।
1890-1900	पंजाब में किसान अशांति		साहूकारों के खिलाफ
1917	चंपारण	गांधीजी	बिहार

विषय 70: 1915 के बाद के किसान विद्रोह

वर्ष	विद्रोह	नेता	स्थान/टिप्पणियां
1918-22	किसान सभा आंदोलन	गौन शंकर मिश्रा इंद्र नारायण द्विवेदी	● उत्तर प्रदेश में विरोध आंदोलन ● अवध किराया (संशोधन) अधिनियम पारित करना।
1918	खेडा सत्याग्रह	गांधीजी	गुजरात
1921	एका आंदोलन		हरदोई, बहराइच, सीतापुर- यूपी
1921	मोपला या मप्पीला विद्रोह	कुनहमद हाजी अली मुसलियार सिथी कोया	दक्षिण मालाबार, केरल
1928	बारडोली सत्याग्रह	वल्लभ भाई पटेल	कोई राजस्व अभियान नहीं गुजरात।
1936	अखिल भारतीय किसान सभा	स्वामी सहजन सरस्वती एन.जी रंगा	● लखनऊ में आरंभ हुआ। ● किसान घोषणा पत्र इंदुलाल याज्ञनिक द्वारा

			जारी किया गया था। ● 1943 के अकाल के दौरान इसने उल्लेखनीय कार्य किया।
जुलाई 1946	तेलंगाना आंदोलन	असाजाही निज़ाम	● धार्मिक-भाषाई वर्चस्व का मेल। ● भाषाई आधार पर आंध्र प्रदेश के गठन का रास्ता साफ किया।
सितंबर 1946	तेभागा आंदोलन	किसान सभा	● बंगाल ● बटाइदार के आयोजन के लिए शहरी छात्र ग्रामीण इलाकों में गए ● उनका केंद्रीय नारा था "निय खमारे धान तोलो"

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 22 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय 151: भारतीय स्वतंत्रता में ईसाई योगदान (Christian Contribution to Indian Freedom)

	अक्कम्मा चेरियन (**Accamma Cherian**) (1909-1982) 	• ये त्रावणकोर, केरल से थी। • उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उतरने के लिए एक कैथोलिक स्कूल के प्रिंसिपल के रूप में अपना पद छोड़ दिया। • इन्होने त्रिवेंद्रम की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की क्षेत्रीय इकाई पर प्रतिबंध के खिलाफ संघर्ष किया। • इन्होंने कांग्रेस में देशसेविका संघ - महिला विंग की शुरुआत की।
	एनी मास्करेन (**Annie Mascarene**) **(1902-1963)** 	• ये त्रिवेंद्रम, केरल से थी। • राष्ट्र के साथ रियासतों के एकीकरण के लिए अक्कम्मा चेरियन के साथ संघर्ष में भाग लिया। • ये संविधान सभा के सदस्य थी। • ये हिंदू कोड बिल पर बनी प्रवर समिति की सदस्य भी थी। • वे केरल से पहली महिला सांसद थीं।
	जोआचिम **सेबास्टियन** अल्वा (**Joachim Alva**) **(1907-1979)**	• जोआचिम अल्वा (Joachim Alva) मैंगलोर के एक कैथोलिक वकील और पत्रकार थे। • उन्होंने बारडोली सत्याग्रह में "नो टैक्स" अभियान में भाग लिया। • 1937 में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू द्वारा संबोधित बंबई में ईसाइयों की एक बड़ी सभा की अध्यक्षता की। • वह 1951-52 के चुनावों से शुरू होकर तीन बार संसद के लिए चुने गए।

विषय 152: स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक (Unsung Heroes of Freedom Struggle)

1	सुशिला चैन त्रेहन (**Sushila Chain Trehan**)	● ये पंजाब से थी। ● ये आर्य समाज और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य थी। ● इसके अलावा ये पूर्वी पंजाब की नेता भी रहीं। ● इन्होने घर त्याग दिया और भारतीय समाज में पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ लड़ने के लिए 'शकुंतला आजाद' में शामिल हो गयीं। ● इन्होंने महिलाओं की आत्म निर्भरता के लिए संघर्ष किया और बालिका शिक्षा के लिए तीन विद्यालय शुरू किये।
2	कुंबर बसावन सिंह (**Kumwar Basawon Singh**)	● बसावन सिंह वंचितों, औद्योगिक मजदूरों और कृषि श्रमिकों के अधिकारों के प्रचारक रहे। ● ये बिहार में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक सदस्य थे। ● इन्होंने चंद्रशेखर आजाद और केशब चक्रवर्ती के साथ काम किया। ● काकोरी और तिरहुत षड्यंत्र के मामलों में ये सह आरोपी थे। ● जेल में लंबे समय तक भूख हड़ताल के पश्चात् इनकी मृत्यु हो गई।
3	वेलु नचियार (**Velu Nachiyar**) 	● ये तमिलनाडु से थी। ● वेलु नचियार शिवगंगा रियासत की रानी थी। ● वह भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ युद्ध छेड़ने वाली पहली भारतीय रानी थीं। ● अंग्रेजों के साथ युद्ध में उनके पति उदयवीर की मृत्यु हो गई। ● उसने 1780 में हैदर अली के साथ गठबंधन किया। ● ये अपने राज्य की सम्प्रभुता को बनाए रखने में सफल रही।

4	कर्नाड सदाशिव राव (**Karnad Sadashiva Rao**)	• वह कर्नाटक, भारत से एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे। • उन्होंने विधवाओं और गरीब महिलाओं की मदद के लिए महिला सभा की स्थापना की। • उन्होंने दिसंबर 1936 में फैजपुर कांग्रेस सत्र में भाग लिया। • ये कर्नाटक से गांधी के सत्याग्रह आंदोलन के लिए पहले स्वयंसेवक बने।

विषय 153: आदिवासी नेता (Tribal leaders)

संदर्भ: ओडिशा इतिहास पुस्तक के विमोचन पर प्रधानमंत्री का भाषण (ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री 'उत्कल केशरी' हरे कृष्ण मेहता द्वारा)

लक्ष्मण नायक

- नायक ने अपने और अपने लोगों के लिए अकेले ही ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ मोर्चा खोला।
- ये कांग्रेस के एक सक्रिय सदस्य थे।
- कोरापुट जिले में भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया।
- उन्होंने खादी को लोकप्रिय बनाया वे जहां भी गए वहां अपने साथ चरखा ले जाते थे।
- अपने पूरे जीवन में, उन्होंने वयस्क शिक्षा और शराब से परहेज का संदेश दिया।
- उन्हें 'मलकानगिरी का गांधी' भी कहा जाता है।

मुथुरमलिंगम थेवर (**Muthuramalingam Thevar**)

- इन्होंने तमिलनाडु में **CTA** (आपराधिक जनजाति अधिनियम) के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- उन्होंने मंदिर प्रवेश आंदोलन को पूर्ण समर्थन दिया।
- उन्होंने महालक्ष्मी और मीनाक्षी मिल मजदूर संघ की स्थापना की।
- वे ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक से सांसद बने।

धन सिंह गुर्जर, उत्तर प्रदेश से

- ये मेरठ में एक कोतवाल थे।
- इन्होंने सिपाही विद्रोह में भाग लिया।
- इन्होंने अपराधी जनजाति अधिनियम के तहत गुर्जरों को अपराधी घोषित किए जाने के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

वन स्टॉप रिवीजन (**One stop revision**):

1	पहाड़िया विद्रोह (**Pahariyas rebellion**)	• 1778 में राजमहल की पहाड़ियों पर। • अपने क्षेत्रों के ब्रिटिश अधिग्रहण के खिलाफ था।

2	चौर विद्रोह (**Chaur Uprising**)	● ये 1766-72, में पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले का जंगल महल में हुआ। ● ये बढ़े हुए भू-राजस्व के खिलाफ था।
3	कोल विद्रोह (**Kol Mutiny**)	● 1832, छोटानागपुर पठार में। ● इसका नेतृत्व बुद्ध भगत द्वारा किया गया। ● इसका कारण बाहरी लोगों को कोल भूमि का हस्तांतरण था।
4	हो और मुंडा विद्रोह (**Ho and Munda Uprising**)	● 1827, सिंहभूम, झारखंड। ● यह विद्रोह नई कृषि नीतियों और बंगालियों के प्रवेश के खिलाफ था। ● इसका नेतृत्व बिरसा मुंडा द्वारा किया गया।
5	संथाल विद्रोह (**Santhal Rebellion**)	● 1855-56, राजमहल हिल्स, बिहार। ● नेतृत्वकर्ता सिद्धू और कान्हू थे। ● बाहरी लोगों और कंपनी के नियम के खिलाफ।
6	रामोसी विद्रोह (**Ramosi Risings**)	● 1825-26, पश्चिमी घाट। ● अंग्रेजों द्वारा मराठा क्षेत्र का विलय। ● नेतृत्वकर्ता चित्तूर सिंह।
7	खासी विद्रोह (**Khasi Uprising**)	● 1830, मेघालय। ● यह बाहरी लोगों और अंग्रेजी के प्रवेश के खिलाफ था।
8	सिंगफोस विद्रोह (**Singhphos Uprising**)	● यह 1830, में असम में हुआ। ● इसका नेतृत्व निरंग फिदु द्वारा किया गया। ● यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ था।
9	कोया विद्रोह (**Koya Revolt**)	● यह 1803-80, में गोदावरी ट्रैक्ट पर हुआ। ● इसके नेतृत्वकर्ता 'टोमा सोरा' थे। ● यह पुलिस और साहूकारों द्वारा दमन के खिलाफ था।

10	भील और कोली विद्रोह (**Bhil & Koli Revolts**)	● यह 1820-50, में डेक्कन क्षेत्र में हुआ। ● इसका कारण अकाल और आर्थिक संकट था।
11	खोंड विद्रोह (**Khond Rebellion**)	● यह 1837-56, के दौरान ओडिशा और आंध्र प्रदेश में हुआ। ● इसके नेतृत्वकर्ता 'चक्र बिसोई' थे। ● यह कंपनी के शासन के खिलाफ था।

विषय 154: अशफाक उल्लाह खान (Ashfaq Ullah Khan)

संदर्भ: यूपी सरकार ने अशफाक उल्लाह खान पर एक प्राणी उद्यान का नाम रखने का फैसला किया है।

उनका जीवन:

- इन्होने असहयोग आंदोलन को वापस लेने का विरोध किया।
- इन्होंने **1924** में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की।
- ये काकोरी षडयंत्र मामले में मुख्य आरोपी थे।
- इस मामले में इन्हे फांसी की सजा सुनाई गई थी।

अशफाक उल्ला खान की मंडली में: राम प्रसाद बिस्मिल, राजेंद्र लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह, सचिंद्र बख्शी, चंद्रशेखर आजाद, केशब चक्रवर्ती शामिल थे।

	कानपुर षड्यंत्र	● 1924 ● भारत में साम्यवाद को बढ़ावा देने के आरोप में गिरफ्तारी हुई। ● एस ए डांगे (S A Dange) और एम एन रॉय (M N Roy)
	काकोरी षडयंत्र	● 1925 ● हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (जिसे पहले हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी के नाम से जाना जाता था) द्वारा काकोरी ट्रेन से शस्त्रागार डकैती।
	मेरठ षड्यंत्र	● 1929-33 ● कम्युनिस्टों द्वारा भारतीय रेलवे हड़ताल का आयोजन ● एस ए डांगे (S A Dange), शौकत उस्मानी (Shaukat Usmani), मुज्जफर अहमद (Muzzafar Ahmad).
	लाहौर षडयंत्र	● 1928-31 ● भगत सिंह और अन्य द्वारा सॉन्डर्स की हत्या।

विषय 155: पथरूघाट किसान विद्रोह (**Patharughat battle**)

संदर्भ: **28** जनवरी-पाथुरूघाट शहीदों की स्मृति में स्मारक का निर्माण किया जायेगा।

- पथरूघाट, असम में एक स्थान है।
- जिसका असम से 1826 के बाद ब्रिटिश राज में विलय हुआ।
- अंग्रेजों द्वारा भूमि कर लगाना आरंभ कर दिया गया, कथित तौर पर 70-80 प्रतिशत
- जिसका किसानों ने विरोध किया और उन्होंने रायज मेल्स (शांतिपूर्ण सभा) नामक सार्वजनिक सभा की शुरुआत की।
- 28 जनवरी 1894 को गुस्से में पुलिस ने ऐसे ही एक सभा पर गोलियां चलाई, जिसमें 15 किसानों की मौत हुए और 37 घायल हो गए।
- इस घटना को असम का 'जलियांवाला बाग' कहा जाता है।

विषय 156: एंग्लो इंडियन लेखक (**Anglo Indian Authors**)

	लेखक	साहित्यिक कार्य
	रिस डेविड्स (**Rhys Davids**)	• बौद्ध जन्म कहानियां। • मिलिंद के प्रश्न। • बौद्ध भारत। • भारत के संवाद।
	मैक्स मूलर (**Max Müller**)	• ऋग्वेद-ब्राह्मणों के पवित्र ग्रंथ • पूर्व की पवित्र पुस्तकें • धर्म के विज्ञान का परिचय

		• हितोपदेश।
	मैडम ब्लावात्स्की (**Madam Blavatsky**)	• हिंदोस्तान की गुफाओं और जंगलों से। • थियोसोफिकल शब्दावली। • मौन की आवाज।

विषय 157: अम्बेडकर के नेतृत्व में सामाजिक आंदोलन (Social Movements led by Ambedkar)

अम्बेडकर और डाक टिकट संग्रह - हिंदू लेख

चवदार टैंक संघर्ष (महाड, **1927**)

- 1923 में बॉम्बे विधान परिषद ने एक प्रस्ताव पारित किया कि दलित वर्गों के लोगों को स्थानों का उपयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए।
- इसका क्रियान्वयन सवर्ण हिंदुओं के विरोध के कारण बाधित था।
- 20 मार्च 1927 को अछूत लोगों को महाड में एक सार्वजनिक टैंक में पानी का उपयोग करने की अनुमति देने के लिए प्रदर्शन आयोजित किया गया।
- इस दिन (20 मार्च) को भारत में सामाजिक सशक्तिकरण दिवस के रूप में मनाया जाता है।

कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन (नासिक, **1930**)

- बी के गायकवाड़ और अंबेडकर ने काला राम मंदिर के सामने प्रदर्शन किया।
- उन्होंने मंदिर में अछूतों के वास्तविक प्रवेश के लिए नहीं बल्कि प्रवेश करने के उनके अधिकार को पहचानने के लिए कहा।
- इसके बाद अम्बेडकर दलितों की सामाजिक स्थिति के उत्थान में ज्योतिबा फुले के उत्तराधिकारी बने।

विषय 158: बाल गंगाधर तिलक (Bal Gangadhar Tilak)

संदर्भ: बाल गंगाधर तिलक की 100वीं पुण्यतिथि।

	लेखक	साहित्यिक कार्य

	विचारधारा:	● धर्म जीवन का एक अंग है। ● मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। ● स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा। ● विवेकानंद की विचारधाराओं के कट्टर समर्थक। ● उन्होंने ब्रिटिश विरोधी आंदोलन को कर्म योग कहा।
	कार्य	● 1890 में न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की। ● 1884 में डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की शुरुआत की, लेकिन 1890 में इसे छोड़ दिया। ● 1890 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए। ● 1891 के एज ऑफ़ कंसेन्ट अधिनियम का विरोध किया। ● सक्रिय रूप से स्वदेशी आंदोलन 1905 का नेतृत्व किया। ● 1916-18 में जीएस खापर्डे और एनी बेसेंट के साथ ऑल इंडिया होम रूल लीग की स्थापना में मदद की। ● ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा तीन बार 1897, 1909 और 1916 में देशद्रोह के आरोपी बने।
	साहित्यिक रचनाएँ:	पत्रिकाएं - ● केसरी ● महरट्टा (Mahratta) पुस्तकें - ● वेदों के आर्कटिक गृह (The Arctic Home in Vedas) ● ओरायन (The Orion) ● श्रीमद भगवद गीता रहस्य

विषय 159: मुजारा किसान आंदोलन (Muzzara Movement)

संदर्भ: मुजारा आंदोलन के शहीदों को नए कृषि कार्यों का विरोध कर रहे किसानों द्वारा सम्मानित किया गया।

- PEPSU (पटियाला और ईस्ट पंजाब स्टेट यूनियन) मुजारा आंदोलन।
- पटियाला रियासत के अधीन आने वाले पंजाब के गांवों में 1930 के दशक में मुजारा आंदोलन शुरू हुआ था।
- यह बिस्वेदारी व्यवस्था के खिलाफ था।

- जागीरदार (बिस्वेदार) कई गांवों के किसानों की फसल में हिस्सेदारी चाहते थे।
- 'मुजरा' शब्द का प्रयोग भूमिहीन किसानों के लिए किया जाता था।
- 'सेवा सिंह टिकरीवाला' के नेतृत्व में मुज्जरों ने विद्रोह किया।
- लेकिन अंग्रेजों द्वारा इस विद्रोह को दबा दिया गया।

विषय 160: सारागढ़ी की लड़ाई (Battle of Saragarhi)

- यह ब्रिटिश और अफगान आदिवासियों के बीच एक लड़ाई थी।
- सिख सैनिकों ने पश्तून ओरकजई आदिवासियों के खिलाफ ब्रिटिश भारतीय सेना की ओर से लड़ाई लड़ी।
- भारतीय सेना की सिख रेजिमेंट की 4 बटालियन हर साल 12 सितंबर को सारागढ़ी दिवस के रूप में इस लड़ाई को याद करती है।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES – UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 23 – HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

161. गांधीवादी विचारधारा
162. अनुयोजन में गांधीवादी विचार
163. बंगाली नेता और विभाजन
164. किसान आंदोलन
165. गोवा मुक्ति
166. ज्योतिबा फुले
167. ननकाना साहिब नरसंहार
168. ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस
169. अवनिंद्रनाथ टैगोर
170. किसान सभा

161. गांधीवादी विचारधारा (Gandhian Ideology)

1	जाति और धर्म को **पृथक इकाईयों** के रूप में माना।	• जातिवाद धर्म में अंतर्निहित नहीं है। • उदाहरण: अनुसूचित जाति के व्यक्ति को हिंदू होने पर गर्व हो सकता है। • हालांकि, अम्बेडकर के लिए; अगर पिछड़ी जातियों को ऊपर उठाना है तो सारे संपूर्ण समाज का विकास करना होगा।
2	राज्यविहीन समाज-शांतिपूर्ण साधन **(Stateless Society – Peaceful Means)**	• गांधीजी ने आत्मनिर्भर गांवों और अन्तश्चेतना के नेतृत्व वाले नागरिकों का विचार किया। • इसका मतलब केंद्रीकृत नियमों और विनियमों का अभाव भी हो सकता है। • कार्ल मार्क्स ने इसका प्रचार किया लेकिन उन्होंने इसे प्राप्त करने के लिए वर्ग संघर्ष और हिंसक साधनों की वकालत की।
3	एसेंशियलिस्ट फिलॉसफी **(Essentialist Philosophy)**	• गांधीजी न तो दक्षिणपंथी थे और न ही वामपंथी। • उन्होंने कहा कि उनकी विचारधारा समय और स्थान की जरूरतों और आकांक्षाओं पर निर्भर है।
4	राजनीति और धर्म **(Politics & Religion)**	• गांधीजी चाहते थे कि राजनीति और धर्म साथ-साथ चलें। • वह अल्पसंख्यकों को गोहत्या बंद करने के लिए राजी करना चाहते थे। • हालाँकि, मैकियावेली के लिए राजनीति धर्म से स्वतंत्र थी।
5	आदर्शवाद **(Normativism)**	• गांधीजी ने सत्य, अहिंसा और शांति जैसे मानदंडों और मूल्यों की शिक्षा दी। • रामराज्य, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, पर्यावरण सततता।

162. अनुयोजन में गांधीवादी विचार

- चुनाव कर और भारतीय विवाहों को अमान्य करने के खिलाफ अभियान
    - ✓ 1906, पंजीकरण प्रमाण पत्र के खिलाफ सत्याग्रह।
- ट्रांसवाल इमिग्रेशन **(Transvaal Immigration)**
    - ✓ यह ट्रांसवाल इमिग्रेशन एक्ट के खिलाफ था।
    - ✓ गोपाल कृष्ण गोखले ने भारत में ब्रिटिश-विरोधी भावना को जुटाकर इस आंदोलन का समर्थन किया।

- चंपारण सत्याग्रह **1917**
    - ✓ तिनकठिया व्यवस्था के खिलाफ।
    - ✓ राजेंद्र प्रसाद, मजहर उल हक, जेबी कृपलानी और अन्य द्वारा सहायता प्रदान की गई थी।
- अहमदाबाद मिल श्रमिकों की हड़ताल **1918**
    - ✓ बोनस वापस लेने के खिलाफ और मिल मजदूरों के वेतन में बढ़ोतरी हेतु
    - ✓ अनुसूया साराभाई आंदोलन की प्रमुख नेता थीं।
    - ✓ अनुसूया अहमदाबाद मिल मालिक संघ की अध्यक्ष थीं।
- खेड़ा सत्याग्रह **1918**
    - ✓ भूमि की जब्ती के खिलाफ क्योंकि किसान चल रहे सूखे के कारण कर का भुगतान नहीं कर सके।
    - ✓ इस संघर्ष में वल्लभभाई पटेल, नरहरि पारिख, मोहनलाल पांड्या और रविशंकर व्यास प्रमुख थे।
- रॉलेट सत्याग्रह **1919**
    - ✓ यह अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम, 1919 के खिलाफ था।
    - ✓ इस अधिनियम में यह प्रावधान था कि कार्यकर्ताओं को दो साल तक बिना किसी मुकदमे के निर्वासित या कैद किया जा सकता था, जिसमें समाचार पत्रों में देशविरोधी खबरें भी अपराध का पर्याप्त सबूत थी।
    - ✓ भारी दबाव के बावजूद अधिनियम में कोई बदलाव नहीं किया गया।
    - ✓ लेकिन इसने गांधी को स्वतंत्रता आंदोलन में एक राष्ट्रीय नेता बना दिया।
- खिलाफत आंदोलन **1920-22**
    - ✓ नवंबर 1919 में दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन आयोजित किया गया।
    - ✓ सितंबर 1920 में, कलकत्ता में एक विशेष सत्र में, कांग्रेस ने एक असहयोग कार्यक्रम को मंजूरी दी।
    - ✓ मोहम्मद अली जिन्ना, एनी बेसेंट, जी. एस. खरपडे और बी. सी. पाल ने कांग्रेस छोड़ दी क्योंकि वे एक संवैधानिक और वैध संघर्ष में विश्वास करते थे।
    - ✓ सुरेंद्र नाथ बनर्जी ने कांग्रेस से अलग होने के बाद इंडियन नेशनल लिबरल फेडरेशन की स्थापना की।
- गोलमेज सम्मेलन - गांधी जी की **11** मांगें

- ✓ इरविन की 1929 की घोषणा ने भारत को डोमिनियन का दर्जा देने का वादा किया और गोलमेज सम्मेलनों का आह्वान किया।
- ✓ प्रमुख नेताओं द्वारा रखे गए दिल्ली घोषणापत्र की तर्ज पर गांधीजी ने भी ग्यारह मांगें रखीं।

उनमें प्रमुख थीं –

	सेना और सिविल सेवाओं पर खर्च में 50 प्रतिशत की कमी।
	पूर्ण शराबबंदी लागू करना।
	शस्त्र अधिनियम में बदलाव किया जाए।
	राजनीतिक बंदियों को रिहा किया जाये।
	वस्त्र उद्योग को संरक्षण प्रदान किया जाये।
	भारतीयों के लिए आरक्षित तटीय नौवहन।
	भू-राजस्व में 50 फीसदी की कमी।
	नमक कर और सरकार के नमक एकाधिकार की समाप्ति।

- सविनय अवज्ञा आंदोलन और गांधी इरविन समझौता
  - ✓ दोनों में से किसी को भी, दिल्ली घोषणापत्र और गांधीजी के ग्यारह बिंदुओं को ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वीकार नहीं किया गया।
  - ✓ और जलियांवाला बाग नरसंहार के बाद गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया।
  - ✓ एक बार आंदोलन तेज हो जाने के बाद, अंग्रेज गांधीजी के साथ एक समझौता करने के लिए सहमत हो गए – यह गांधीजी इरविन समझौता था।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन – **1931**
  - ✓ गांधी-इरविन में हुए समझौते के अनुसार, गांधीजी ने दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
  - ✓ द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में, विंस्टन चर्चिल के नेतृत्व में ब्रिटेन के दक्षिणपंथी नेताओं ने भारत में एक मजबूत सरकार के लिए आग्रह किया।
  - ✓ यह डोमीनियन की स्थिति और उस स्वायत्तता के खिलाफ था जिसका वादा किया गया था।
  - ✓ इसलिए, दूसरा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन विफल रहा।

- पूना पैक्ट - हरिजन आंदोलन **1932**

  ✓ द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के बाद गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुनः शुरू कर दिया।

  ✓ हालांकि, डॉ. अम्बेडकर ने तीसरे गोलमेज सम्मेलन में अनुसूचित जाति के लोगों के लिए एक पृथक निर्वाचक मंडल का आग्रह किया।

  ✓ गांधीजी द्वारा इसका विरोध किया गया और उनके द्वारा भूख हड़ताल शुरू कर दी गयी।

  ✓ नतीजतन, प्रसिद्ध पूना पैक्ट 1932 द्वारा एक संतुलन कायम किया गया – जिसमें एक ही मतदाता के भीतर अनुसूचित जातियों के लिए कुछ आरक्षण प्रदान करने पर सहमति व्यक्त की गई।

- हरिपुर-त्रिपुरी अधिवेशन

  ✓ 1938 के हरिपुर अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस INC के अध्यक्ष बने।

  ✓ 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में गांधीजी ने पट्टाभि सीतारमैया की उम्मीदवारी का समर्थन किया।

  ✓ हालाँकि, सुभाष चंद्र बोस गांधीजी की इच्छा के विरुद्ध अध्यक्ष के रूप में चुने गए।

  ✓ चूंकि सुभाष कांग्रेस के विचारों से सहमत नहीं हो सके, इसलिए उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी।

- भारत छोड़ो आंदोलन-**1942**

  ✓ लंबे अंतराल के बाद गांधीजी फिर से स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्यधारा में आए।

  ✓ वर्धा में CWC की बैठक (14 जुलाई, 1942) ने संघर्ष के विचार को स्वीकार किया।

  ✓ 8 अगस्त, 1942 को बॉम्बे के गोवालिया टैंक में कांग्रेस की बैठक में भारत छोड़ो संकल्प की पुष्टि की गई।

  ✓ गांधीजी ने आंदोलन में क्या करें और क्या न करें के सामान्य निर्देश दिए।

  ✓ गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्होंने जेल से आजादी और विभाजन तक आंदोलन का नेतृत्व किया।

- नोआखाली दंगे (**Noakhali riots**)

  ✓ जबरन धर्मांतरण के आरोपों को लेकर चटगांव डिवीजन में दंगे भड़क उठे।

  ✓ गांधीजी ने अपने अंतिम दिन दंगों को निपटाने में बिताए।

163. बंगाली नेता और विभाजन

1	शरत चन्द्र बोस (**Sarat Chandra Bose)** 	● 1936 में बोस बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने। ● उन्होंने आईएनए के गठन में सुभाष बोस की मदद की। ● 1941 में जब सुभाष चंद्र बोस जेल से भागे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। ● इसके बाद उन्होंने आईएनए रक्षा और राहत समिति का नेतृत्व किया। ● वह अंतरिम सरकार में खान और **शक्ति** मंत्री थे।
2	जे बी कृपलानी (**J B Kripalani):** 	● 1946-47 में कांग्रेस के अध्यक्ष थे। ● किसान मजदूर प्रजा पार्टी की स्थापना की। ● बंगाल के विभाजन का समर्थन किया।
3	हुसैन शाहिद सुहरावर्दी (**Huseyn Shahid** **Suhrawardy)**	● 1946 में बंगाल के मुख्यमंत्री। ● एकीकृत बंगाल योजना के साथ आये।

164. किसान आंदोलन

1	पगड़ी संभाल जट्टा आंदोलन	● 1907 के कृषि संबंधी तीन कानून थे- पंजाब भूमि अलगाव अधिनियम 1900, पंजाब भूमि उपनिवेश अधिनियम 1906 और दोआब बारी अधिनियम। ● पगड़ी संभाल जट्टा एक सफल कृषि आंदोलन था, जिसने 1907 में ब्रिटिश सरकार को कृषि से संबंधित इन तीन कानूनों को वापस लेने के लिए मजबूर किया।

		● भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह इस आंदोलन के नेतृत्वकर्ता थे, वे इन कानूनों पर लोगों के गुस्से को प्रसारित करना चाहते थे। ● इन अधिनियमों के कारण किसान भूमि के मालिक न रहकर भूमि के ठेकेदार/अनुबंधक बन जाते और यदि किसान अनुमति लिये बिना अपने खेत में एक पौधा भी छू लेता तो ब्रिटिश सरकार उस किसान को आवंटित भूमि वापस ले सकती थी।
	छोटू राम 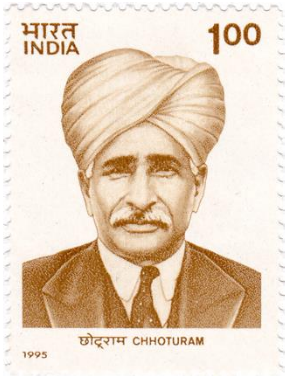	● ब्रिटिश भारत के पंजाब प्रांत में प्रमुख राजनीतिज्ञ ● राष्ट्रीय यूनियनिस्ट पार्टी के सह-संस्थापक। ● 1923 में यूनियनिस्ट पार्टी (जमींदारा लीग) की स्थापना की, जो हिंदू और मुस्लिम किसानों का एक क्रॉस-सांप्रदायिक गठबंधन था। ● 1934 के पंजाब राहत ऋणग्रस्तता अधिनियम और 1936 के पंजाब देनदार संरक्षण अधिनियम के अधिनियमन में योगदान। ● छोटू राम को 'राव बहादुर' की उपाधि से नवाजा गया था। ● उन्हें 1937 में नाइट की उपाधि दी गई थी और उन्हें दीन बंधु के नाम से जाना जाता था।
	वैगन त्रासदी या बेल्लारी ट्रेन त्रासदी	● 10 नवंबर 1921 को भारत के केरल राज्य के मालाबार क्षेत्र में 64 कैदियों की मृत्यु हो गयी। ● इन कैदियों को अंग्रेजों के खिलाफ मैपिला विद्रोह के बाद हिरासत में लिया गया था।

165. गोवा की मुक्ति

- त्रिस्ताओ दा कुन्हा ने 1928 में गोवा कांग्रेस कमेटी की शुरुआत की।
- 1940 के दशक में आजाद गोमांतक दल और गोवा के संयुक्त मोर्चे ने पुर्तगालियों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह शुरू कर दिया।
- स्वतंत्रता के बाद पुर्तगालियों ने एस्टाडो दा इंडिया (**Estado Da India**) पर अपना नियंत्रण जारी रखा।
- लिस्बन और नई दिल्ली के बीच कूटनीतिक वार्ता विफल रही।
- ऑपरेशन विजय के तहत-भारत की संयुक्त सेना ने गोवा को घेर लिया।
- परिणामस्वरूप गवर्नर जनरल वासलो ई सिल्वा आत्मसमर्पण के लिए मजबूर हुए।

166. ज्योतिबा फुले

- इनका जन्म महाराष्ट्र के सतारा में हुआ।
- इन्होंने पुणे में दलित बालिकाओं के लिए पहला विद्यालय खोला।
- 1863, पहली बार शिशुहत्या निषेध गृह 'बाल हत्या प्रतिबंधक गृह' की शुरुआत की।
- 1873 में, उन्होंने पुणे में 'सत्य शोधक समाज' (सत्य के साधकों का समाज) का गठन किया
- **1988** में विट्ठलराव कृष्णजी वांडेकर द्वारा इन्हें महात्मा की उपाधि दी गयी।
- पुस्तकें
  - ✓ ब्राह्मणचा कसब (1969),
  - ✓ गुलामगिरी (1873),
  - ✓ शेतकार्यांच असूद (1883),
  - ✓ सार्वजनिक सत्यधर्म पुस्तक (1891),
  - ✓ अस्पृश्यांची कैफियत (1893)

167. नानकाना साहिब नरसंहार

- फरवरी 1921 में पंजाब प्रांत के ननकाना साहिब गुरुद्वारा में यह नरसंहार हुआ।
- शिरोमणि कमेटी का लक्ष्य भ्रष्ट महंत-नारायण दास से गुरुद्वारों का प्रभार लेना था।
- हालांकि, महंत ने सिख नेताओं को बुलाकर उनकी हत्या करने की योजना बनाई।
- जल्द ही शिरोमणि समिति द्वारा तहल सिंह, करतार सिंह जब्बार और अन्य के नेतृत्व में एक शहीद जत्था (शहादत मार्च) आयोजित किया गया।
- बाद में लाहौर कमिश्नर ने इसका जायजा लिया, महंत-नारायण दास को गिरफ्तार कर लिया और शिरोमणि कमेटी को चाबियां सौंप दीं।

168. ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस

- पिछले साल हमने AITUC की 100 वीं वर्षगांठ मनाई।
- इसकी स्थापना 31 अक्टूबर 1920 को हुई थी।
- इसके अध्यक्ष लाला लाजपत राय और सचिव दीवान चमन लाल थे।
- सी आर दास की अध्यक्षता में कांग्रेस का गया अधिवेशन (1922) - किसान आंदोलन को पूर्ण समर्थन दिया।
- ट्रेड यूनियन अधिनियम, **1926** में ट्रेड यूनियनों की मान्यता और पंजीकरण के लिए प्रावधान किया गया।

- 1931 में एन एम जोशी ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन (All India Trade Union Federation) का गठन किया।
- AITUC ने 1937 के चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवारों का समर्थन किया।

169. अवनिंद्रनाथ टैगोर

- इन्होने इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट (Indian Society of Oriental Art) की स्थापना की।
- 1942 में विश्व भारती के चांसलर बने।
- ये अबान ठाकुर के नाम से मशहूर थे।
- पेंटिंग्स-
    - ✓ भारत माता
    - ✓ अविसारिका
    - ✓ याय और याय

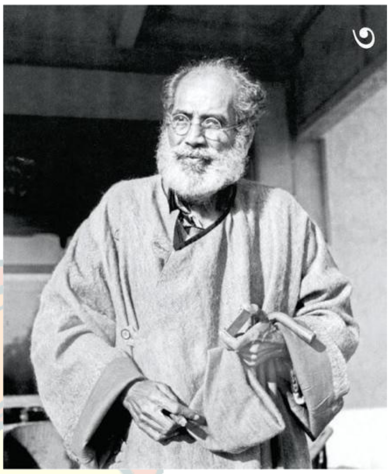

170. किसान सभा

- **1918** में संयुक्त प्रांत किसान सभा की शुरुआत हुई।
    - ✓ बाबा रामचंद्र ने किसान सभा के लिए नेहरू की मदद मांगी।
- **1920** में अवध किसान सभा अस्तित्व में आई।
    - ✓ इसकी स्थापना बेदखली (जबरन बेदखली) तथा हरि और बेगार (अवैतनिक श्रम) के खिलाफ हुई।
- **1936**-अखिल भारतीय किसान कांग्रेस की स्थापना।
    - ✓ इसकी शुरुआत स्वामी सहजानंद सरस्वती और एन जी रंगा द्वारा की गयी।

	स्वामी सहजानंद सरस्वती	● **समाचार** में: 70 वीं पुण्यतिथि और विरोध कर रहे किसानों द्वारा इन्हे याद किया गया। ● इन्होंने बिहार प्रांतीय किसान सभा की स्थापना की थी। ● ये अखिल भारतीय किसान सभा के प्रथम अध्यक्ष थे। ● वह "डंडा मेरा जिंदाबाद" आंदोलन के लिए प्रसिद्ध थे। यह लंबे समय तक किसान छड़ी अभियान था। किताबें-

	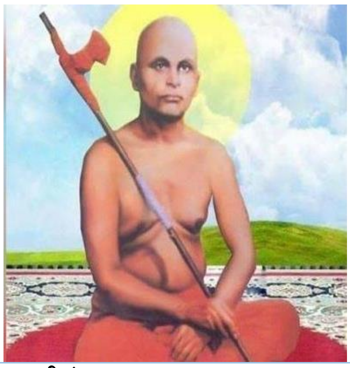	● भूमिहार ब्राह्मण परिचय; ● झूठा भय मिथ्या अभिमान (झूठा डर झूठी शान) ● जंग और राष्ट्रीय आज़ाद
	एन जी रंगा 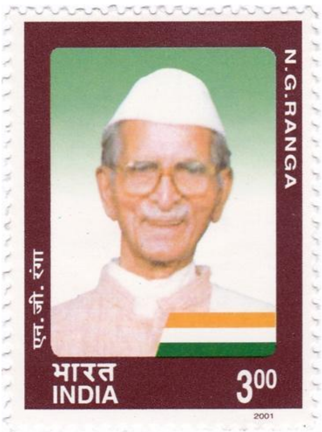 	● ये आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले से थे। ● यह स्वतंत्र पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष थे। ● इन्हे भारतीय किसान आंदोलन का जनक माना जाता है। किताबें ● बापू का आशीर्वाद। ● विश्व किसान का श्रेय। ● भारतीय गांवों का आर्थिक संगठन।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 36 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

251. डिकिंसोनिया (Dickinsonia)

252. नवपाषाण स्थल (Neolithic sites)

253. भारत में ताम्रपाषाण स्थल (Chalcolithic places in India)

254. भीमबेटका गुफाएं (Bhimbetka caves)

255. वैदिक साहित्य (Vedic Literature)

256. सिंधु घाटी सभ्यता में पशुपालन (Animal rearing in Indus Valley civilization)

257. मेसोपोटामिया के साथ भारतीय संबंध (Indian connections with Mesopotamia)

258. प्राचीन भारत की धातु कृतियाँ (Metal Works of Ancient India)

259. जलवायु परिवर्तन और सिंधु घाटी का पतन (Climate Change & Fall of Indus Valley)

260. शयन मुद्रा में बुद्ध (Reclining Buddha)

251. डिकिंसोनिया (Dickinsonia)

समाचार में: फरवरी 2021 में, शोधकर्ताओं ने भीमबेटका रॉक/ शिला आश्रयों की छत पर सबसे पहले ज्ञात जीवित जानवर, 550 मिलियन वर्ष पुराने 'डिकिंसोनिया' के तीन जीवाश्मों की खोज की।

डिकिंसोनिया के बारे में

- यह बेसल (**Basal**) जानवर की एक विलुप्त प्रजाति है जो ऑस्ट्रेलिया, रूस और यूक्रेन में इडिऐकरन कल्प (Ediacaran Period) की बाद की अवधि के दौरान रहता था।
- बेसल जानवर ऐसे जानवर होते हैं जिनके शरीर की योजनाओं में रेडियल समरूपता होती है। उनके पास बहुत ही सरल शरीर हैं और द्विकोरकी (**Diploblastic**) (केवल दो भ्रूण कोशिका परतों से प्राप्त) होते हैं।
- हमारे ग्रह पर जटिल बहुकोशिकीय जीवन के शुरुआती विकास का प्रतिनिधित्व करने के विचार से ये जीव शिकारियों से रहित दुनिया में उत्पन्न हुए, जहां इन्हे कठोर सुरक्षात्मक कवच या कंकाल की कोई आवश्यकता नहीं थी।
- डिकिंसोनिया के जीवाश्मों में पित्त-सांद्रव (**Cholesterol**) के अणुओं की खोज इस विचार का समर्थन करती है कि डिकिंसोनिया एक जानवर था।
- यह इसी तरह के पुरापर्यावरण का साक्ष्य है जो **550 Ma** (मेगा वार्षिक) द्वारा गोंडवानालैंड के संयोजन की पुष्टि करता है।

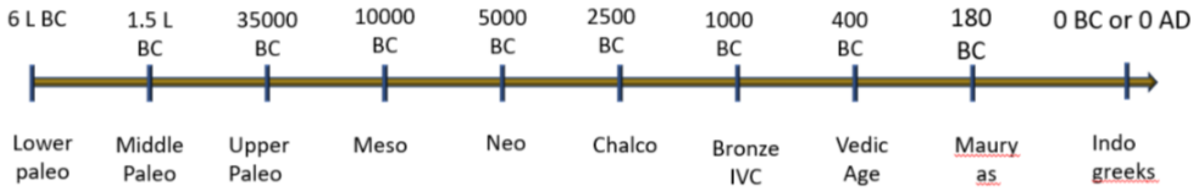

252. नवपाषाण स्थल (Neolithic sites)

समाचार में: नवपाषाण काल से संबंधित पत्थर की कुल्हाड़ी, तमिलनाडु के तिरुपथुर जिले में जवाधु पहाड़ियों के आदिवासी गांवों में प्रचुर मात्रा में पाई गई थी।

पाए गए औजारों का महत्व

- पत्थर के औजार इन क्षेत्रों में नवपाषाण काल के लोगों की उपस्थिति के प्रमाण हैं।
- नवपाषाण काल में पत्थर की कुल्हाड़ी प्रमुख औजार थे, जिसके दौरान लोग शिकार से कृषि-पशुपालन उत्पादन में चले गए।
- स्थानीय आदिवासियों ने नदियों और कृषि क्षेत्रों पर पत्थर के औजार पाए और उन्हें एकत्र कर मंदिरों के बाहर ढेर लगा दिया। पत्थर की कुल्हाड़ियों के पुरातात्विक और सांस्कृतिक मूल्य को समझे बिना भी आदिवासी उन्हें पवित्र मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

नवपाषाण युग

- पाषाण युग के अंतिम चरण के रूप में संदर्भित, इस युग में खाद्य उत्पादन की शुरुआत हुई।
- सेडेंटिज्म (**Sedentism**) (लंबे समय तक एक स्थान पर रहना) मिट्टी के बर्तनों का उपयोग, और शिल्प का आविष्कार नवपाषाण युग की विशेषता है।
- नवपाषाण औज़ार भारी जमीन के औज़ारों जैसे - मूसल (Grinders), ओखली (Pounders) और दरांती से बने होते हैं।

नवपाषाण स्थल का नाम	स्थान	समय अवधि	विशेषताएँ
मेहरगढ़	बलूचिस्तान, पाकिस्तान	7,000 ई.पू.	कपास और गेहूं का उत्पादन किया।
बुर्जहोम (भोज वृक्ष का स्थान)	कश्मीर	2,700 ई.पू.	गड्ढों में रहते थे घरेलू कुत्तों को उनके मालिकों के साथ दफनाया जाता था।
गुफक्कराल	कश्मीर	2,000 ई.पू.	कृषि और पशुपालन दोनों का अभ्यास किया जाता था।
चिरांद	बिहार	2,000 ई.पू.	हड्डी से बने औजारों और हथियारों का उपयोग होता था।

पिकिलिहाल, ब्रह्मगिरि, मस्की, हल्लूर, टक्कलकोटा, टी. नरसीपुर, कोडेकल, संगनाकल्लू	कर्नाटक	2,000 ई.पू. 1,000 ई.पू.	पिकलीहाल के लोग पशुपालक थे। यहां से राख के टीले मिले हैं।

महापाषाण (**Megalith**) संस्कृति

- मेगालिथ बड़े पत्थर की संरचनाओं का उल्लेख करते हैं जिनका निर्माण या तो दफन स्थलों के रूप में या स्मारक स्थलों के रूप में किया गया था।
- भारत में, पुरातत्वविदों ने लौह युग (1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व) में अधिकांश मेगालिथ का पता लगाया है, हालांकि कुछ स्थल लौह युग से पहले 2000 ईसा पूर्व तक फैली हुए हैं।
- मेगालिथ भारतीय उपमहाद्वीप में फैले हुए हैं। उनमें से अधिकांश प्रायद्वीपीय भारत में पाए जाते हैं, जो महाराष्ट्र (मुख्य रूप से विदर्भ), कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में केंद्रित हैं।

253. भारत में ताम्रपाषाण स्थल (**Chalcolithic places in India**)

समाचार में: महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित 3500 से 4000 साल पुरानी ताम्रपाषाण युग का स्थल एक राजमार्ग परियोजना के लिए मिट्टी खोदने के काम के दौरान नष्ट हो गया है।

ताम्रपाषाण काल के बारे में

- 'ताम्रपाषाण युग' नवपाषाण और कांस्य युग के बीच की अवधि को संदर्भित करता है।
- ताम्रपाषाण एक ग्रीक शब्द है। जिसका अर्थ है 'तांबे का युग'। जैसा कि नाम से संकेत मिलता है, ताम्रपाषाण काल (ताम्र = तांबा और पाषाण = पत्थर) के दौरान, धातु और पत्थर दोनों का उपयोग दैनिक जीवन में उपकरणों के निर्माण के लिए किया जाता था।
- जिस अवधि के दौरान मनुष्य ने धातु के उपकरणों (जैसे निर्माण, कृषि, आत्मरक्षा आदि के लिए उपकरण बनाना) के साथ प्रयोग करना शुरू किया और अपने समाजों का पुनर्गठन किया, उसे 'चालकोलिथिक (Chalcolithic)' युग कहा जाता है।
- चूंकि यह पहला धातु युग था, तांबे और उसके मिश्र धातु कांस्य जो कम तापमान पर पिघलते थे, इस अवधि के दौरान विभिन्न वस्तुओं के निर्माण के लिए उपयोग किए जाते थे।
- 'ताम्रपाषाण युग' की एक विशिष्ट तिथि का अनुमान लगाना कठिन है। हालांकि, यह माना जा रहा है कि 'ताम्रपाषाण-युग' लगभग **3,500** से **2300** ईसा पूर्व तक चला था।
- शिकार ताम्रपाषाण युग के लोगों के महत्वपूर्ण व्यवसायों में से एक था।
- भारत में, ताम्रपाषाण युग के स्थल राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग, मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग और महाराष्ट्र के आसपास और दक्षिण और पूर्वी भारत के कुछ हिस्सों में स्थित हैं।

क्षेत्र	ताम्रपाषाण स्थल
सिंधु क्षेत्र	मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, रोपड़, सूरतगढ़, हनुमानगढ़, चन्नूदड़ो।
गंगा क्षेत्र	कौशांबी, आलमगीरपुर
चंबल क्षेत्र	सेवा, नागदा, परमार खीरी, तुंगिनी,
सौराष्ट्र क्षेत्र	रंगपुर, अहर, प्रशस पाटन, लोथल, पिठड़िया, रोजड़ी, अदकोटी
नर्मदा क्षेत्र	नवदाटोली, महेश्वर, भगतराव,
तापी क्षेत्र	प्रकाश, बहल
गोदावरी-प्रवर क्षेत्र	जोर्वे, नासिक, कोपरगाँव, निवासा, दैमाबाद
भीमा क्षेत्र	करेगांव, चंदोली, उम्ब्रज, चनेगांव,
कर्नाटक क्षेत्र	ब्रह्मगिरी

254. भीमबेटका गुफाएं (Bhimbetka caves)

- भीमबेटका रॉक शेल्टर मध्य भारत में एक पुरातात्विक स्थल है जो प्रागैतिहासिक पुरापाषाण और मध्यपाषाण काल के साथ-साथ ऐतिहासिक काल तक फैला है।
- यह भारत में मानव जीवन के शुरुआती साक्ष्यों और अच्युलियन समय में स्थलों पर शुरू होने वाले पाषाण युग के प्रमाण प्रदर्शित करता है।
- ये रॉक शेल्टर मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में और रातापानी वन्यजीव अभयारण्य के अंदर स्थित हैं।
- इन गुफाओं का नाम महाभारत के पांच पांडवों में से एक 'भीम' के नाम पर रखा गया है। भीमबेटिका का सीधा सा अर्थ है "भीम के बैठने का स्थान" है।
- यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल (2003 में घोषित) है जिसमें सात पहाड़ियों और 750 से अधिक रॉक आश्रयों को 10 किमी (6.2 मील) में वितरित किया गया है।

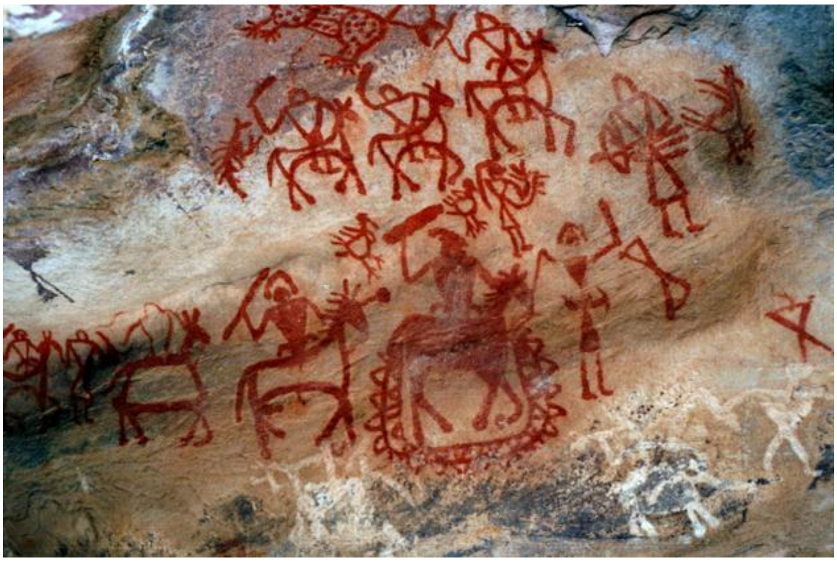

- भीमबेटका के कुछ शैल आश्रयों में प्रागैतिहासिक गुफा चित्र हैं जो लगभग 10,000 वर्ष पुराने हैं (8,000 ईसा पूर्व), और भारतीय मध्यपाषाण काल के अनुरूप हैं।
    - जन्म, दफन, नृत्य, धार्मिक संस्कार, शिकार के दृश्य, जानवरों की लड़ाई और उत्सव जैसी विभिन्न सामुदायिक गतिविधियों को भी इन चित्रों में चित्रित किया गया है।
    - गैंडा, बाघ, जंगली भैंस, भालू, मृग, सूअर, शेर, हाथी, छिपकली आदि जानवरों के चित्र भी वर्णित हैं।
    - प्राकृतिक लाल, सफेद, हरे और पीले रंगों का उपयोग किया जाता था।
    - रंग मैंगनीज, हेमेटाइट, लकड़ी के कोयले, नरम लाल पत्थर, पौधों की पत्तियों और पशु वसा का एक संयोजन है।
    - जानवरों की विशाल रेखीय आकृतियाँ पुरापाषाणकालीन चित्रों का व्यापार-चिह्न (Trademark) हैं। समय के साथ, चित्र छोटे, सटीक और अधिक नाजुक होते गए।

255. वैदिक साहित्य (Vedic Literature)

समाचार में: नमित अरोड़ा द्वारा 'इंडियंस: ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ ए सिविलाइजेशन' में चर्चा की गई है कि भारत में जाति व्यवस्था को किन कारकों ने प्रेरित किया।

पुस्तक में दिए गए मुख्य तर्क है -

- हड़प्पा की मुहरों, मिट्टी के बर्तनों, मूर्तियों और जानवरों की हड्डियों से कई वास्तविक और पौराणिक जानवरों का पता चलता है- कुत्ता, बाघ, पक्षी, जंगली गधा, 'गेंडा, कूबड़ वाला बैल, हाथी, गैंडा, पानी की भैंस, छोटे सींग वाला कूबड़ वाला बैल, बकरी, मृग, मगरमच्छ और खरगोश' - लेकिन घोड़ा नहीं, एक कूबड़ वाला ऊंट या गधे का जिक्र है।

- हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद उपमहाद्वीप में घोड़ा दिखाई देता है। यह संभवतः मध्य एशिया के आर्यों के साथ आया था, जो एक घुड़सवारी खानाबदोश-पशुपालक लोग थे।

- उनके साथ उनकी भाषा और धर्म भी था: आद्य-संस्कृत, आद्य-वेद और वैदिक देवता- ज्यादातर पुरुष देवता, जैसे इंद्र, अग्नि, मित्र, वरुण, रुद्र और सूर्य, और कुछ महिला देवता, जैसे उषा और पृथ्वी।

- जब तक इन आर्य चरवाहों ने उपमहाद्वीप में प्रवेश किया—दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व की मध्य शताब्दियों में—शहरी हड़प्पा बड़े पैमाने पर ग्रामीण जीवन में घुल गए थे।

- आर्य भी अपने साथ सामाजिक पदानुक्रम का एक रूप लेकर आए, जिसमें पुरोहित शीर्ष पर थे - एक प्रोटो-वर्ण प्रणाली जिसमें अंतर्विवाह नहीं था (यानी, केवल एक विशिष्ट सामाजिक समूह के भीतर शादी करना)।
- उनके पास कोई भाषाई लिपि नहीं थी और शहरी सभ्यता की कमी के कारण इसकी आवश्यकता कम हो गई थी।
  - पुजारियों ने एक ऐसी लिपि के उदय में भी बाधा डाली हो सकती है जिसने उनके मौखिक मंत्रों को लोकतांत्रिक बना दिया हो और उनकी शक्तियों को खराब कर दिया हो।
  - यह हड़प्पा के लोकाचार के विपरीत है जहां पर उनकी लिपि के साथ कलाकृतियों की सर्वव्यापकता थी। उदाहरण के लिए: आम लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले मिट्टी के बर्तनों पर संदेशों की मुहर लगी होती थी।
- उपमहाद्वीप में मिश्रण और प्रवास की एक सहस्राब्दी के बाद, उन्होंने सामाजिक संरचनाओं का विकास किया 'जिसमें कुलों, वंश और जनजातियों ने नई सत्तारूढ़ परिषदों और राजाओं को जन्म देना शुरू किया'।
- इससे नए शहरी जीवन, संकर संस्कृतियां, भाषाएं, पंथ और धार्मिक-आध्यात्मिक विचार आए जिन्हें अब हम मध्य-प्रथम सहस्राब्दी ईसा पूर्व भारत के साथ जोड़ते हैं। इन विकासों में आर्य और हड़प्पा दोनों ही आधारों का मजबूत योगदान था।
- रास्ते में नए राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों ने भी महान महाकाव्य महाभारत की कई कहानियों को प्रेरित किया है।

किस सांस्कृतिक आधार-आर्य या हड़प्पा-ने जाति व्यवस्था का निर्माण किया?

(Which cultural substrate—the Aryan or the Harappan—drove the creation of the caste system?)

- एक मजबूत साक्ष्य इस तथ्य से मिलता है कि आर्य जीन उच्च जाति में कहीं अधिक मजबूती से दर्ज होते हैं, जो औसतन हल्के त्वचा वाले भी होते हैं।
- इसके अलावा, डीएनए साक्ष्य से पता चला है कि सगोत्र विवाह पहली बार दिखाई दिया और 'उच्च जातियों और इंडो-यूरोपीय वक्ताओं के बीच' आदर्श बन गया।

नोट: उपरोक्त बिंदु लेखक के तर्क हैं। हालाँकि, आर्य प्रवासी थे या पूरी तरह से स्वदेशी इस पर अलग-अलग दृष्टिकोण हैं।

वैदिक साहित्य पर त्वरित नज़र:

वैदिक साहित्य को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- चार वेद अर्थात ऋग, साम, यजुर, और अथर्व, और उनकी संहिताएँ।
- ब्राह्मण
- अरण्यक
- उपनिषद

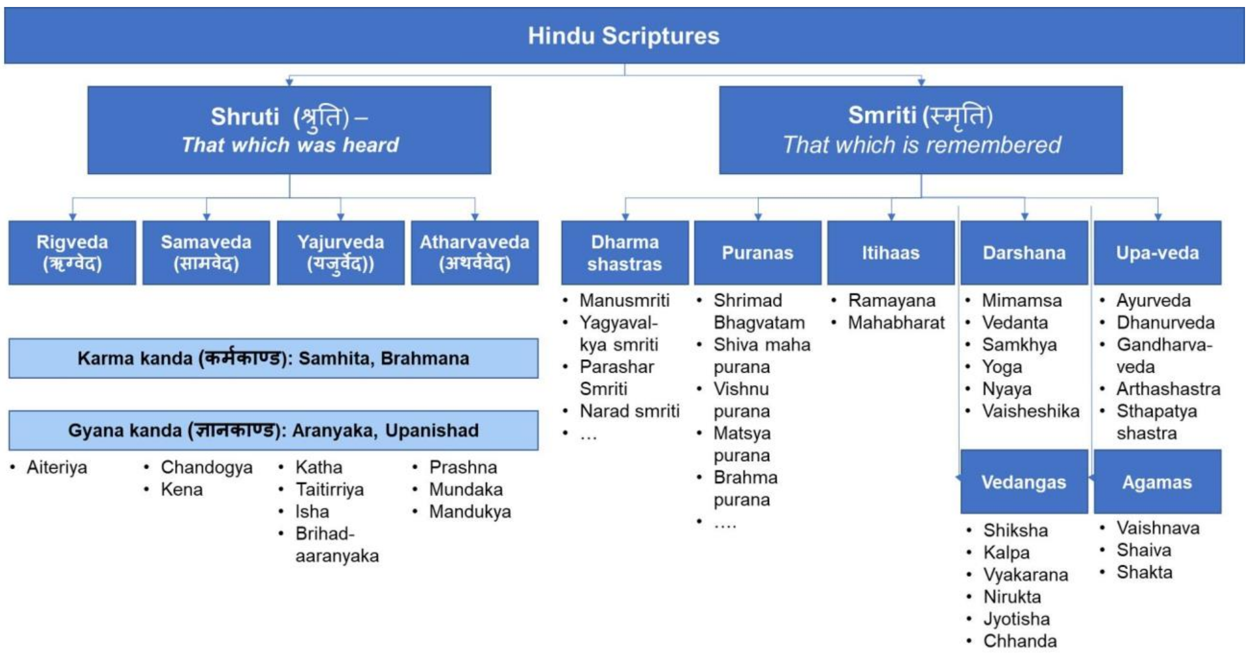

वेद का नाम	वेद की मुख्य विशेषताएं
ऋग्वेद	यह वेद का प्राचीनतम रूप है।
सामवेद	गायन के लिए सबसे पहला संदर्भ
यजुर्वेद	इसे प्रार्थना की पुस्तक भी कहा जाता है।
अथर्ववेद	जादू और आकर्षण का उल्लेख।

उपनिषद	इसके बारे में
ऐतरेय उपनिषद	आत्मा और चेतना के निर्माण के बारे में बात करता है।
छांदोग्य उपनिषद	लय और मंत्रों के जाप से संबंधित है।
कथा उपनिषद	नचिकेता और यम की कहानी बताता है। उनकी बातचीत मनुष्य, आत्मा, ज्ञान और मोक्ष (मुक्ति) की चर्चा में विकसित होती है।
बृहदारण्यक उपनिषद	तत्वमीमांसा और नैतिकता के मार्ग पर आत्मा के स्थानांतरगमन के बारे में बात करता है।
मुंडक उपनिषद:	इसमें "सत्यमेव जयते" (केवल सत्य की जीत) मंत्र शामिल है, जिसे भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में चुना गया है।

256. सिंधु घाटी सभ्यता में पशुपालन (Animal rearing in Indus Valley civilization)

समाचार में: कनाडा और भारतीय शोधकर्ताओं की एक टीम के निष्कर्षों के अनुसार, भारत में डेयरी उत्पादन तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुआ जो सिंधु घाटी सभ्यता को बनाए रखने के पीछे एक कारक हो सकता है।

- परिणाम गुजरात में स्थित एक ग्रामीण बस्ती कोटड़ा भाड़ली के पुरातात्विक स्थल पर पाए जाने वाले मिट्टी के बर्तनों के अवशेषों के आणविक रासायनिक विश्लेषण पर आधारित थे।
- डेयरी उत्पादन की उपलब्धता ने ऐसे प्राचीन समाजों को बनाए रखने में मदद की हो सकती है, क्योंकि इससे आपके झुंड में जानवरों की संख्या को प्रभावित किए बिना पशु प्रोटीन के अधिशेष को जमा करने की अनुमति मिलती है।

एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों के आहार में मांस का प्रभुत्व था।

- यह शोध प्राचीन लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले मिट्टी के बर्तनों पर सभ्यता से बचे भोजन के अवशेषों के आधार पर किया गया था।
- यह शोध मेरठ, हिसार और रोहतक के विभिन्न गांवों में किया गया था।
- अध्ययन में पाया गया है कि आहार में सूअर, मवेशी, भैंस और बकरी जैसे जानवरों के मांस का प्रभुत्व था। सभ्यता में डेयरी उत्पादों का भी उपयोग किया जाता था।
- शोध के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता के लोग सर्दी और गर्मी के अनुसार फसलें उगाते थे।
    - लोग सर्दी और गर्मी के लिए विभिन्न प्रकार के गेहूं, जौ, चावल, बाजरा, दाल, बैंगन, ककड़ी अंगूर, खजूर सहित फल और सब्जियां उगाते थे।

सिंधु घाटी सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थलों पर त्वरित नज़र

स्थल	स्थान	महत्वपूर्ण निष्कर्ष
हड़प्पा	पंजाब (पाकिस्तान) के मोंटगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर स्थित है।	▪ मानव शरीर रचना विज्ञान की बलुआ पत्थर की मूर्तियाँ ▪ अन्न भंडार ▪ बैलगाड़ी
मोहनजोदड़ो (मृतकों का टीला)	पंजाब (पाकिस्तान) के लरकाना जिले में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।	▪ उन्नत स्नानागार ▪ अन्न भंडार ▪ कांस्य नृत्य करने वाली लड़की ▪ पशुपति महादेव की मुहर ▪ दाढ़ी वाले आदमी की स्टेटाइट (Steatite) प्रतिमा ▪ बुने हुए कपास का एक टुकड़ा
सुत्कागेंडोर	दक्षिण-पश्चिमी बलूचिस्तान प्रांत, पाकिस्तान में दास्त नदी पर	▪ हड़प्पा और बेबीलोन के बीच एक व्यापारिक स्थल
चन्हुदड़ो	सिंध प्रान्त के मोहेंजोदड़ो से 130 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है।	▪ इंद्रगोप मनकों का निर्माण स्थल। ▪ बिल्ली का पीछा करते हुए एक कुत्ते के पदचिह्न।
अमरी	सिंधु नदी के तट पर	▪ मृग साक्ष्य

कालीबंगा	राजस्थान में घग्गर नदी के तट पर।	▪ अग्नि वेदी ▪ ऊंट की हड्डियाँ ▪ लकड़ी का हल
लोथल	गुजरात में खंभात की खाड़ी के निकट भोगवा नदी पर	▪ पहला मानव निर्मित बंदरगाह ▪ जहाज़ बनाने का स्थान ▪ चावल की भूसी ▪ अग्नि वेदियां ▪ शतरंज खेलना
सुरकोटडा	गुजरात	▪ घोड़ों की हड्डियाँ ▪ मोती
बनावली	हरियाणा का हिसार जिला।	▪ मोती ▪ जौ ▪ हड़प्पा पूर्व और हड़प्पा संस्कृति दोनों के साक्ष्य।
धोलावीरा	गुजरात में कच्छ के रण में	▪ जल दोहन प्रणाली ▪ पानी का हौज

257.मेसोपोटामिया के साथ भारतीय संबंध (Indian connections with Mesopotamia)

समाचार में: यह निष्कर्ष निकाला गया है कि मेसोपोटामिया और भारत के बीच संबंध 3000 ईसा पूर्व के अंत में शुरू हुए थे।

- अक्कड़ का सरगोन (Sargon of Akkad) (लगभग 2300 ईसा पूर्व) मेलुहा क्षेत्र का सटीक संदर्भ देने वाला पहला मेसोपोटामिया शासक था, जिसे व्यापक रूप से आधुनिक बलूचिस्तान या प्राचीन भारत (सिंधु) क्षेत्र के रूप में समझा जाता है।

भूमि और समुद्री संबंध

- प्राचीन भारत से पश्चिम हड़प्पा शहर अरब प्रायद्वीप के पास सत्कगन डोर में मकरान तट पर स्थित था, और इसे दुनिया का सबसे पहला समुद्री व्यापार केंद्र माना जाता है।
- इस व्यापारिक केंद्र के माध्यम से प्राचीन भारत और फारस की खाड़ी (लोअर मेसोपोटामिया) के बीच व्यापार होता था।

सांस्कृतिक संबंध

- शोधकर्ताओं के अनुसार, भारतीय उपमहाद्वीप को बेहतर ढंग से समझने के लिए मेसोपोटामिया में लोगों ने भारतीय धर्म, हिंदू धर्म का अध्ययन किया।
- मेसोपोटामिया में सिंधु घाटी के डिजाइन और मुहरें मिली हैं।

- सिंधु घाटी की कई मुहरें एक बाघ जैसे जानवर और खुरों, सींगों और पूंछ वाले एक आदमी के बीच एक लड़ाई का दृश्य दिखाती हैं, जो प्राचीन भारत में मेसोपोटामिया के बुल-मैन एनकिडू और नंदी (गाय) और शिव से जुड़ा हुआ था।

मेसोपोटामिया क्षेत्र में भारतीय आयात

पुरातत्वविदों ने 2600 ईसा पूर्व के उर (प्राचीन मेसोपोटामिया में एक प्रभावशाली सुमेरियन शहर-राज्य) कब्रों में प्राचीन भारत (सिंधु घाटी) से कारनेलियन मोतियों की खोज की।

- कारनेलियन एक भूरे रंग का खनिज है जिसे आमतौर पर अर्ध-कीमती रत्न के रूप में उपयोग किया जाता है।
- कार्नेलियन मोतियों को स्पष्ट रूप से सिंधु घाटी से आयात किया गया था और प्राचीन भारतीयों (हड़प्पा) द्वारा आविष्कृत एसिड-नक़्क़ाशी की तकनीक के अनुसार बनाया गया था।

- दक्षिण पूर्व एशिया में मोलुकास से निकलने वाले क्लोव हेड **(Clove heads)**, टेरका में दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व साइट में पाए गए थे।
- पुरातत्वविदों को लगभग 2350 ईसा पूर्व से प्राचीन भारत से उर तक विभिन्न अन्य आयातों के प्रमाण मिले, जिसमें शेल प्रजातियों से बनी वस्तुएं शामिल थीं जो सिंधु तट की विशिष्ट हैं, विशेष रूप से फासिओलारिया ट्रेपेज़ियम (Fasciolaria Trapezium) और ट्रुबिनेला पाइरम (Trubinella Pyrum).

भारत में मेसोपोटामिया आयात (**Mesopotamian imports into India)**

- शोधकर्ताओं के अनुसार प्राचीन भारतीयों ने मेसोपोटामिया विचारधारा और धर्म के कुछ पहलुओं को स्वीकार किया होगा।
- गिलगमेश की उपस्थिति, प्राचीन मेसोपोटामिया विश्वास में एक नायक और गिलगमेश महाकाव्य के योद्धा, सिंधु मुहरों पर अक्कादियन में लिखी गई एक कविता इसकी पुष्टि करती है।
  - किसी सभ्यता का अन्य धर्मों और विश्वासों के प्रति प्रेम और सम्मान दिखाने का यह शायद पहला उदाहरण था। शायद, इसी तरह मेसोपोटामिया और प्राचीन भारत का सह-अस्तित्व था।
- मेसोपोटामिया से प्राचीन भारत में अन्य आयातों में मुहरें और सिलेंडर सील शामिल थी।

मेसोपोटामिया (**Mesopotamia)**

- मेसोपोटामिया मुख्य रूप से आधुनिक इराक और कुवैत है।
- इसका आधुनिक नाम ग्रीक से मध्य-मेसोस—और नदी-पोटामोस के लिए आता है-और इसका शाब्दिक अर्थ है "दो नदियों के बीच का देश" वे दो नदियाँ टाइग्रिस और यूफ्रेट्स हैं।
- मेसोपोटामिया न केवल कृषि को विकसित करने वाले पहले स्थानों में से एक था, यह मिस्र और सिंधु घाटी सभ्यताओं के **मार्ग** पर भी था।
- इसने इसे भाषाओं और संस्कृतियों का एक पिघलने वाला बर्तन बना दिया जिसने लेखन, प्रौद्योगिकी, भाषा, व्यापार, धर्म और कानून पर स्थायी प्रभाव डाला।

- मेसोपोटामिया से जुड़ी सुमेरियन (Sumerians), असीरियन (Assyrians), अक्काडियन (Akkadians) और बेबीलोनिया (Babylonia) जैसी प्राचीन संस्कृतियां हैं।

258. प्राचीन भारत की धातु कृतियाँ (Metal Works of Ancient India)

भारत में चौथी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में धातु कार्यों की एक प्रभावशाली और विकसित परंपरा रही है। इसकी शुरुआत का पता सिंधु घाटी सभ्यता से लगाया जा सकता है, और यह परंपरा आज भी जारी है।

हड़प्पा और धातु के औजार

- हड़प्पा धातु के लोहार निस्संदेह तांबे, कांस्य, सीसा, चांदी, सोना और इलेक्ट्रम, सोने और चांदी के मिश्र धातु का उपयोग करने की कला जानते थे।
- कॉपर तकनीक सबसे पुरानी है। हड़प्पा के लोगों ने बहुत पहले ही पता लगा लिया था कि तांबे में टिन मिलाने से कांसे का उत्पादन होता है, एक मिश्र धातु जो तांबे की तुलना में सख्त होती है लेकिन ढलाई में आसान होती है। इसके अलावा, यह जंग के लिए अधिक प्रतिरोधी है।
- निकेल, आर्सेनिक या सीसा मिलाने से हड़प्पावासियों को कांस्य को और सख्त करने में मदद मिली।
- मोहनजोदड़ो में पाए गए तांबे-कांस्य के औजारों में कुल्हाड़ी, खंजर, चाकू, भाले, तीर के सिर, छोटी तलवारें, छेनी, ड्रिल, मछली-हुक, धातु के दर्पण आदि शामिल हैं।

हड़प्पा की मूर्तियाँ और **लुप्त** हुई मोम विधि (**Harappan Figurines & Lost Wax Method**)

- औजारों के अलावा, सिंधु घाटी स्थलों से मनुष्यों और जानवरों की कई कांस्य मूर्तियों का पता चला है, उदाहरण के लिए: एक नृत्य करने वाली लड़की, पैर और पायल, बैल आदि की कांस्य मूर्तियां।
- इन मूर्तियों को **लुप्त**-मोम प्रक्रिया द्वारा ढला गया था;
    - प्रारंभिक मॉडल मोम से बना था, जिसे बाद में मिट्टी के साथ मोटे तौर पर लेपित किया गया था।

- ○ जब इसे जलाया जाता था, तो मोम पिघल जाता था, या 'खो' जाता था और मिट्टी सख्त होकर एक सांचे में बदल जाती थी, जिसमें बाद में पिघला हुआ कांस्य डाला जाता था।

लौह स्तंभ - धातुकर्म उत्कृष्टता (**Iron Pillar – Metallurgical Excellence**)

- दिल्ली लौह स्तंभ**, 1**,500 वर्ष से अधिक पुराना है, जिसकी ऊंचाई 7.2 मीटर से अधिक है, और व्यास 40.6 सेमी है और इसका वजन 6,000 किलोग्राम से अधिक होने का अनुमान है।
  - ○ इसकी सतह पर संस्कृत शिलालेख के अनुसार, यह गुप्त सम्राट, चंद्रगुप्त-प्रथम विक्रमादित्य (375-414 सीई) द्वारा मध्य प्रदेश में सांची के पास आधुनिक उदयगिरि में बनवाया गया था। इसे 1233 CE के आसपास नई दिल्ली के कुतुब परिसर में अपने वर्तमान स्थान पर लाया गया था।
  - ○ यह एक 'जंग रहित आश्चर्य' है जिसने कई विशेषज्ञों को चकित कर दिया है। हाल ही में, यह गुण लोहे के साथ फास्फोरस के कारण देखा गया है, जिसमें हवा से ऑक्सीजन सतह पर एक पतली सुरक्षात्मक कोटिंग के निर्माण में योगदान करती है।
- कर्नाटक में कोडाचाद्री (Kodachadri) पहाड़ी क्षेत्र में आदि मूकाम्बिका (**Mookambika)** मंदिर में एक लोहे का खंभा है, जिसकी ऊंचाई लगभग 8.7 मीटर है और इसका वजन 500 किलोग्राम है।
  - ○ यह मंदिर का धवाजस्तंभ है।
  - ○ इसे प्राचीन भारतीय धातु विज्ञान के सबसे पुराने उदाहरणों में से एक माना जाता है, जो संभवत: 600 CE से पहले का है।

प्राचीन भारत में धातु विज्ञान के बारे में अन्य रोचक तथ्य

- ऋग्वेद को ब्रह्मवर्त नामक स्थान पर लिखा गया था - खेतड़ी तांबे की खदानों ने ब्रह्मवर्त में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया।
- अथर्ववेद और शतपथ ब्राह्मण कृष्ण अयस ("काली धातु") का उल्लेख करते हैं
- बौद्ध ग्रंथ सुत्तनिपता "गर्म हल के फाल को पानी में फेंकने पर फुफकारता है"।
- तीसरी और दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में लोथल और अतरंजीखेड़ा में पीतल का इस्तेमाल किया गया था।
- प्राचीन विश्व की सबसे गहरी सोने की खदानें कर्नाटक के मस्की क्षेत्र में पाई गईं।
- टिन के लिए आसवन तकनीक का विकास राजस्थान के जावर में लगभग 1200 ई. में किया गया था।

259. जलवायु परिवर्तन और सिंधु घाटी का पतन (**Climate Change & Fall of Indus Valley**)

हड़प्पा का उत्थान और पतन

- हड़प्पा का उद्भव लगभग 5200 साल पहले उत्तर-पूर्व अफगानिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत के बीच सिंधु घाटी में हुआ था, जो लगभग 2600 ईसा पूर्व में चरम पर था।
- उनके बारे में बहुत कुछ अज्ञात है, क्योंकि उनकी लिखित लिपि अभी भी अनिर्दिष्ट है।
- फिर भी पुरातात्विक अवशेष एक परिष्कृत लोगों की कहानी बताते हैं, जो धातु विज्ञान, व्यापार और शहरी नियोजन में कुशल थे, और विशेष रूप से पानी को नियंत्रित करने में माहिर थे।

- उनके विशाल शहर, जटिल सीवर सिस्टम, जलाशयों और सार्वजनिक स्नानघरों से परिपूर्ण, लंबे समय से रोमन साम्राज्य जैसे प्रतीत होते रहे हैं।
- लेकिन 1900 ईसा पूर्व तक उनका समाज पतन की ओर जाता दिख रहा था और **1300** ईसा पूर्व तक हड़प्पा सभ्यता का पतन हो चुका था।
- आक्रमण और जलवायु परिवर्तन सहित पतन की व्याख्या करने के लिए कई विचार सामने रखे गए हैं।

दो सूखे की परिकल्पना:

- लगभग 4200 साल पहले उत्तरी गोलार्ध में भयंकर सूखा पड़ा था।
- होलोसीन भूवैज्ञानिक युग के मेघालय काल की शुरुआत।
- हड़प्पा को सर्दियों की बारिश में भारी कमी का सामना करना पड़ा।
- वे दक्षिण और पूर्वी भारत में चले गए।
- हड़प्पा में भी जौ और गेहूं जैसी सर्दियों की फसलों से बाजरे जैसी फसलों की ओर रुख किया गया जो गर्मी की बारिश की स्थिति के अनुकूल थी।
- बाद में एक उष्णकटिबंधीय सूखा शुरू हुआ।
- दूसरे सूखे ने हड़प्पा को एक ग्रामीण, कृषि प्रधान समाज में बदल दिया जो अंततः लुप्त हो गया।

260. शयन मुद्रा में बुद्ध (Reclining Buddha)

समाचार में: बुद्ध जयंती (26 मई) पर, बोधगया में बुद्ध अंतर्राष्ट्रीय कल्याण मिशन मंदिर में भारत की सबसे बड़ी शयन मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमा स्थापित की जानी थी। समारोह को कोविड -19 प्रतिबंधों के कारण स्थगित कर दिया गया है।

- एक लेटी हुई बुद्ध की मूर्ति या छवि उनकी अंतिम बीमारी के दौरान परिनिर्वाण में प्रवेश करने के बारे में बुद्ध का प्रतिनिधित्व करती है।
    - परिनिर्वाण मृत्यु के बाद महान मोक्ष की अवस्था है जिसे केवल प्रबुद्ध आत्माओं द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।
- बुद्ध की मृत्यु 80 वर्ष में ध्यान की अवस्था में, पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले में हुई थी, जो बिहार के साथ राज्य की सीमा के करीब है।
- शयन मुद्रा में बुद्ध, बुद्ध के जीवन के इस बहुत अच्छी तरह से दर्ज अंतिम क्षण से आते हैं, यही वजह है कि मूर्तियों और चित्रों में इस तरह के विशिष्ट विवरणों के साथ इसे नेत्रहीन रूप से बनाया जा सकता है।
- यह बुद्ध की अंतिम दीक्षा को भी दर्शाता है - यहां तक कि अपनी मृत्युशय्या पर रहते हुए, उन्होंने एक अनुयायी को बांहों में भर लिया।

प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व:

- बुद्ध मूर्ति पूजा के खिलाफ थे, उनके परिनिर्वाण के तुरंत बाद की सदियों में (483 ईसा पूर्व), उनका प्रतिनिधित्व प्रतीकों के माध्यम से था। जैसे कि भक्ति पहलू ने बाद में बौद्ध अभ्यास में प्रवेश किया,
- हालांकि, बुद्ध के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व शुरू हुए पुनरावर्ती बुद्ध को पहली बार गांधार कला में चित्रित किया गया था, जो 50 ईसा पूर्व और 75 ईस्वी के बीच की अवधि में शुरू हुआ था, और पहली से पांचवीं शताब्दी ईस्वी तक कुषाण काल के दौरान चरम पर था।
- शयन मुद्रा में बुद्ध की मूर्तियों और छवियों में उन्हें अपनी दाहिनी ओर लेटा हुआ दिखाया गया है, उनका सिर एक कुशन पर या उनकी दाहिनी कोहनी पर टिका होता है।
- यह दिखाने के लिए है कि सभी प्राणियों में जागृत होने और मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होने की क्षमता है।

भारत के बाहर शयन मुद्रा में बुद्ध

- श्रीलंका और भारत में, बुद्ध को ज्यादातर बैठने की मुद्रा में दिखाया जाता है, जबकि थाईलैंड और दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य हिस्सों में शयन मुद्रा में बुद्ध अधिक प्रचलित हैं।
- दुनिया में सबसे बड़े झुके हुए बुद्ध 600 फुट का विंसिन ताव्या (Winsein Tawya) बुद्ध है जिसे 1992 में म्यांमार के मावलमाइन में बनाया गया था।
- 15 वीं शताब्दी के अंत में, कंबोडिया के अंगकोर में बाफून के हिंदू मंदिर स्थल पर शयन मुद्रा में बुद्ध की 70 मीटर की मूर्ति बनाई गई थी।
- पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में भामाला बुद्ध परिनिर्वाण, जो दूसरी शताब्दी ईस्वी पूर्व का है, को दुनिया में अपनी तरह की सबसे पुरानी मूर्ति माना जाता है।

- चीन, थाईलैंड, जापान, इंडोनेशिया और मलेशिया में शयन मुद्रा में बुद्ध की कई मूर्तियाँ हैं।

भारत में शयन मुद्रा में बुद्ध:

1. यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल अजंता की गुफा संख्या **26** में **24** फुट लंबी और नौ फुट ऊंची शयन मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसे 5वीं शताब्दी ईस्वी में तराशा गया था।
2. कुशीनगर**,** जहां बुद्ध ने वास्तव में परिनिर्वाण प्राप्त किया था, में परिनिर्वाण स्तूप के अंदर 6 मीटर लंबी लाल बलुआ पत्थर की अखंड बुद्ध की मूर्ति है।

भारत में बुद्ध के अन्य चित्रण:

- महाबोधि मंदिर में बुद्ध भूमि-स्पर्श मुद्रा में बैठे हैं, जहां उनका हाथ जमीन की ओर इशारा कर रहा है। यह पृथ्वी को उनके ज्ञानोदय की साक्षी के रूप में दर्शाता है।

- सारनाथ में, जहां बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, पत्थर की मूर्ति में एक हाथ का इशारा है जिसे धर्म-चक्र मुद्रा कहा जाता है, जो उपदेश का प्रतीक है। यह बोधि वृक्ष चित्रण के साथ-साथ भारत में सबसे लोकप्रिय चित्रण भी है।

- पैदल चलने वाले बुद्ध या तो आत्मज्ञान की ओर अपनी यात्रा शुरू कर रहे हैं या उपदेश देकर लौट रहे हैं। यह बुद्ध मुद्राओं में सबसे कम आम है, और ज्यादातर थाईलैंड में देखा जाता है।

- बुद्ध को दुनिया भर में सौ से अधिक मुद्राओं में दर्शाया गया है। जबकि बैठे हुए बुद्ध - सबसे आम चित्रण - को शिक्षण या ध्यान माना जाता है, स्थायी बुद्ध निर्वाण तक पहुंचने के बाद सिखाने के लिए उठने का प्रतीक है।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 37 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

261. योगिक मूर्तिकला (Yogic Sculptures)

262. संत थिरुगनाना संबंदर (Saint Thirugnana Sambandar)

263. सेक्रेड एनसेंबल ऑफ होयसल (Sacred Ensemble of Hoysala)

264. पोलोन्नरुवा और चोल (Polonnaruwa and Cholas)

265. संगम साहित्य (Sangam Literature)

266. बोड़फुकम (Borphukam)

267. लिंगराज मंदिर (Lingaraja temple)

268. गुर्जर-प्रतिहार (Gurjara-Pratiharas)

269. कुषाण (Kushans)

270. जैन धर्म (Jainism)

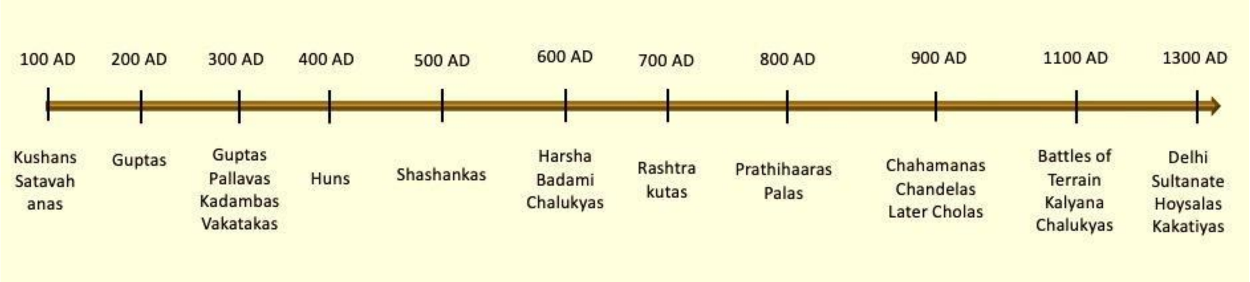

261. योगिक मूर्तिकला (Yogic Sculptures)

संदर्भ: पत्थरों में उकेरे गए योग का इतिहास और संस्कृति

- शब्द "योग" संस्कृत बीज "युज" में निहित है जिसका अर्थ है "एक साथ जुड़ना", इस प्रकार यह मिलन को दर्शाता है।
- यहाँ, यह परमात्मा या सर्वोच्च चेतना के साथ योगिन के मिलन का प्रतीक है, जो मोक्ष है।
- इसलिए, योग को केवल शारीरिक स्वास्थ्य दिनचर्या या व्यायाम का एक वर्ग नहीं माना जाता है। इसके बजाय यह एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है जिसमें मोक्ष प्राप्त करने के मुख्य उद्देश्य के साथ मन और शरीर पर नियंत्रण शामिल है, और जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर सर्वोच्च चेतना के साथ एक हो जाना है।

कला और मूर्तियों में योग

1. हम्पी में एकाश्म नरसिंह की मूर्ति अपने घुटनों के चारों ओर एक योगपट्ट के साथ।

- इस मूर्ति को भागवत पुराण में संदर्भित किया जा सकता है जहां श्री विष्णु अपने भक्त प्रहलाद को उस मुद्रा में भक्ति-योग की कला सिखाते हैं।
- भक्ति-योग योग का एक रूप है जहां भक्त अपने देवता के प्रति शुद्ध और अटूट भक्ति के माध्यम से मिलन चाहता है।

2. बद्रीनाथ मंदिर में मुख्य देवता श्री नारायण को ध्यान मुद्रा में बैठे हुए, ध्यान-योग करते हुए देखा जाता है।

3. शैव धर्म में शिव को आदि योगी और आदि गुरु माना जाता है।

- आदि योगी वह थे जिन्होंने सात ऋषियों को योग के रहस्यों को व्यवस्थित तरीके से सिखाया था, जहाँ उन्होंने जीवन के पूरे तंत्र को समझाया था, और ज्ञान-योग को एक ऐसे साधन के रूप में सामने लाया था जिसके द्वारा मनुष्य खुद को एक उच्चतर प्राणी के रूप में विकसित कर सकता है।
- दक्षिण भारतीय मंदिरों में शिव के इस रूप को दक्षिणामूर्ति के रूप में दर्शाया गया है, जहां शिव को आदि गुरु के रूप में ज्ञान –योग के माध्यम से अंतिम ज्ञान प्रदान करते हुए दिखाया गया है।

4. महाबलीपुरम में अर्जुन की तपस्या/गंगा का अवतरण

- शिव के दिव्य आशीर्वाद का ध्यान करने और प्राप्त करने के तरीके के रूप में, वृक्ष-आसन या वृक्ष मुद्रा में एक आकृति (अर्जुन या वैकल्पिक रूप से भागीरथ) खड़ी दिखाई देती है।

5. बौद्ध और जैन दोनों धर्मों में भी योग उनके धर्म का एक अभिन्न अंग है, और तीर्थंकरों और बुद्ध की विभिन्न ध्यानपूर्ण मुर्तियां इसके प्रमाण के रूप में हैं।

- लाहौर संग्रहालय में रखी गई ध्यान मुद्रा में एक मुक्त बुद्ध की उपवास मूर्ति बौद्ध धर्म में अधिक प्रसिद्ध योग मूर्तियों में से एक है।

262. संत थिरुगनाना संबंदर (Saint Thirugnana Sambandar)

- वह तमिलनाडु के एक शैव कवि-संत थे, जो 7 वीं शताब्दी ईस्वी में रहते थे।
- संबंदर की जीवित रचनाएँ तिरुमुरई के पहले तीन खंडों में संरक्षित हैं, और शैव सिद्धांत के दार्शनिक आधार का एक हिस्सा प्रदान करती हैं।
- वह साठ-तीन नयनार, तमिल शैव भक्ति संतों में से सबसे प्रमुख हैं, जो छठी और दसवीं शताब्दी CE के बीच रहते थे।
- वे एक अन्य शैव कवि-संत अप्पार के समकालीन थे।
- तिरुवरुर में राजराजा चोल प्रथम के एक शिलालेख में अप्पर, सुंदरार और उनकी पत्नी नंगई परवय्यार के साथ संबंदर का उल्लेख है।
- संबंदर की छवि तमिलनाडु के लगभग सभी शिव मंदिरों में पाई जाती है।
- उन्हें एक नाचते हुए बच्चे या एक युवा किशोर के रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें उनकी दाहिनी तर्जनी ऊपर की ओर इशारा करती है, जो उस किंवदंती को दर्शाती है जहां उन्होंने पार्वती-शिव को उनके पास जो कुछ भी है उसका श्रेय दिया है।

नयनार और अलवार

- नयनार और अलवर तमिल कवि-संत थे जिन्होंने 5 वीं -10 वीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- नयनार भगवान शिव को समर्पित 63 संतों का एक समूह था जो 6 वीं से 8 वीं शताब्दी CE के दौरान रहते थे।
- अलवर दक्षिण भारत के तमिल कवि-संत थे जिन्होंने अपने गीतों में भगवान विष्णु या उनके अवतार भगवान कृष्ण की भक्ति का समर्थन किया, और सेवा की।

263. सेक्रेड एनसेंबल ऑफ होयसाल (Sacred Ensemble of Hoysala)

संदर्भ: संस्कृति मंत्रालय के अनुसार, विश्व धरोहर स्थलों की "अस्थायी सूची" के लिए 'सेक्रेड एनसेंबल ऑफ होयसाल (Sacred Ensemble of Hoysala)' का नामांकन डोजियर यूनेस्को को प्रस्तुत किया गया है।

होयसाल राजवंश

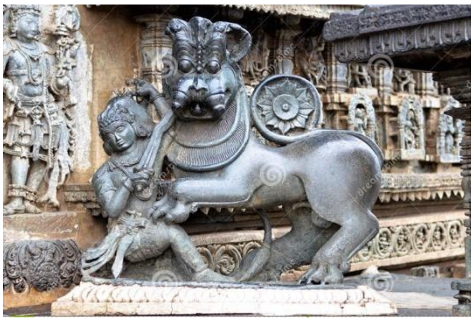

होयसाल ने 10 वीं से 14 वीं शताब्दी तक आधुनिक कर्नाटक और आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के एक बड़े हिस्से पर शासन किया।

संस्थापक: साल

राजधानी: द्वारसमुद्र (वर्तमान में हैलेबिड़ु)

प्रतीक: बाघ पर हमला करने वाले साल का प्रतिनिधित्व करने वाली आकृति

महान राजा: विष्णुवर्धन

वास्तुकला: होयसलस की वास्तुकला उत्तर भारत के मंदिर वास्तुकला की नागरा शैली और दक्षिण से द्रविड़ शैली का एक संकर है। मंदिरों को प्लेटफार्मों पर बनाया गया था और एक स्टार के आकार की योजना थी।

होयसालास के वास्तुशिल्प चमत्कार निम्नलिखित हैं:

- एक नवरंग को आम तौर पर लोगों को इकट्ठा करने और सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे संगीत और नृत्य प्रदर्शन, पौराणिक कथाओं से कहानी कहने और धार्मिक प्रवचनों में भाग लेने के लिए एक जगह के रूप में शामिल किया गया था।
- मंडप जो सभी आकार के मंडप या स्तंभित हॉल हैं, मंदिरों के साथ और बिना बने हुए हैं।
- कल्याणी या चरणबद्ध कुएं जो पानी के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करते हैं
- रथबेड़ी : मंदिर परिसर में विशाल रथों पर देवताओं के जुलूस और परिक्रमा के लिए रथबेड़ी या चौड़ी सड़कें थीं।

बेलूर में होयसाल की स्थापात्यकला

- बेलूर होयसाल की पहली राजधानी थी।
- चेन्नाकेशव मंदिर (विष्णु) परिसर यागाची नदी के तट पर स्थित पुरानी दीवारों वाले शहर के केंद्र में था।
- इस मंदिर का निर्माण 1117 ईस्वी में शुरू हुआ और इसे पूरा होने में 103 साल लगे।
    - मंदिर परिसर से कुल 118 पत्थर के शिलालेख बरामद किए गए हैं जो 1117 से 18 वीं शताब्दी की अवधि को कवर करते हैं।
    - मंदिर के बड़े पैमाने पर मूर्तिकला में मूर्तियां और आइकनोग्राफी और क्षैतिज चित्रवल्लरी (Horizontal friezes) शामिल हैं जो दैनिक जीवन, संगीत और नृत्य के दृश्यों को चित्रित करते हैं, और विष्णु और उनके पुनर्जन्म और महाकाव्यों, रामायण और महाभारत के जीवन के दृश्यों का वर्णन करते हैं।
    - हालाँकि, शिव के कुछ प्रतिनिधित्व भी शामिल हैं।

हैलेबिडु की स्थापात्यकला

- होयसाल साम्राज्य के चरम पर, राजधानी को बेलूर से हैलेबिडु में स्थानांतरित कर दिया गया था जिसे तब द्वारसमुद्र के नाम से जाना जाता था।
- बेलूर से कहीं बड़े और भव्य, शहर ने लगभग तीन शताब्दियों तक राजधानी के रूप में कार्य किया।
- हैलेबिडु में होयसलेश्वर मंदिर आज मौजूद होयसालों का सबसे अनुकरणीय वास्तुशिल्प है।
- होयसल राजा, विष्णुवर्धन होयसलेश्वर के शासनकाल के दौरान 1121 ई. में निर्मित।
- शिव को समर्पित मंदिर, द्वारसमुद्र के धनी नागरिकों और व्यापारियों द्वारा प्रायोजित और निर्मित किया गया था।
- किसी भी अन्य होयसाल मंदिर की तुलना में अधिक मूर्तिकला और कलात्मक रूप से परिष्कृत, होयसलेश्वर मंदिर 240 से अधिक दीवार मूर्तियों के लिए सबसे प्रसिद्ध है जो बाहरी दीवार के साथ चलती हैं।
- हैलेबिडु में एक दीवार वाला परिसर है जिसमें होयसाल काल के तीन जैन मंदिर प्रमुख हैं:
    - आदिनाथ स्वामी मंदिर,
    - पार्श्वनाथ स्वामी मंदिर
    - शांतिनाथ स्वामी मंदिर
- केदारेश्वर मंदिर शिव को समर्पित एक और उत्कृष्ट नक्काशीदार मंदिर है।

264. पोलोन्नरुवा और चोल (Polonnaruwa and Cholas)

संदर्भ: बुद्ध को चित्रित किया गया है।

- यह उत्तर मध्य प्रांत, श्रीलंका में पोलोन्नरुवा जिले का मुख्य शहर है।
- 10 वीं शताब्दी में देश की तत्कालीन राजधानी अनुराधापुर पर उनके सफल आक्रमण के बाद चोल वंश द्वारा पहली बार पोलोन्नरुवा की स्थापना की गई थी।
- पोलोन्नरुवा के प्राचीन शहर को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।
- यह देश का चावल का कटोरा भी है, जिसमें जिले के किसान देश में सबसे अधिक मात्रा में - पिछले साल 3 लाख मीट्रिक टन - धान का उत्पादन करते हैं।

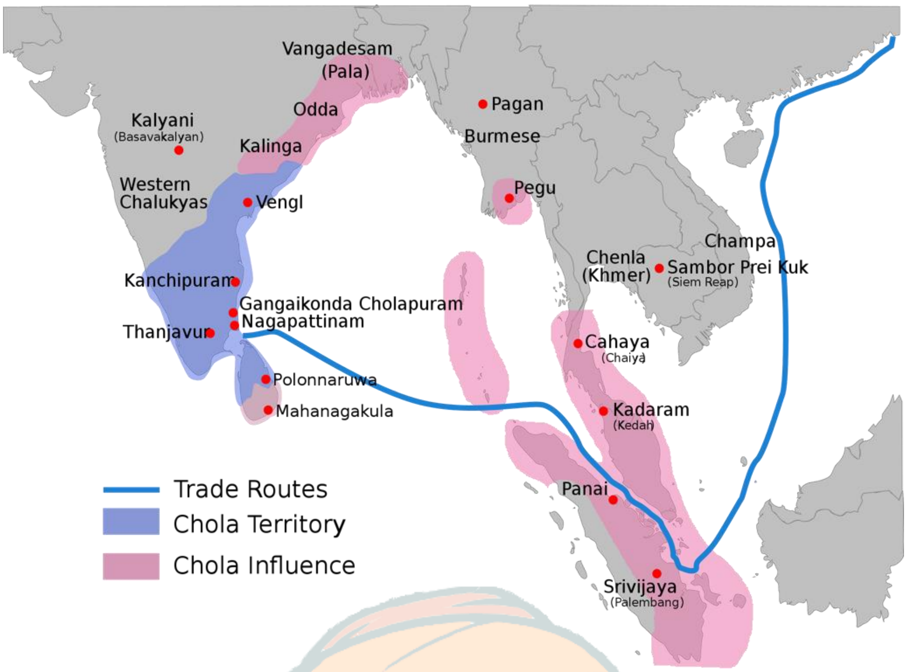

265. संगम साहित्य (Sangam Literature)

संदर्भ: संगम साहित्य जैसे चिलप्पथिकरम और पथित्रुपथु में जातिविहीन समाज के अस्तित्व का ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

संगम काल के बारे में

- दक्षिण भारत में लगभग 3 वीं शताब्दी ईसा पूर्व और 3 वीं शताब्दी ईस्वी के बीच की अवधि (कृष्णा और तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में स्थित क्षेत्र) को संगम काल के रूप में जाना जाता है।
- इसका नाम उस अवधि के दौरान आयोजित संगम अकादमियों के नाम पर रखा गया है जो मदुरै के पांड्या राजाओं के शाही संरक्षण में विकसित हुई थी।
- संगमों में प्रसिद्ध विद्वानों ने इकट्ठा होकर सेंसर बोर्ड के रूप में कार्य किया और संकलन की प्रकृति में सबसे अच्छा साहित्य का प्रतिपादन किया गया।
- ये साहित्यिक कृतियाँ द्रविड़ साहित्य के शुरुआती नमूने थे।
- तमिल किंवदंतियों के अनुसार, प्राचीन दक्षिण भारत में तीन संगम (तमिल कवियों की अकादमी) आयोजित किए गए थे, जिन्हें लोकप्रिय रूप से मुचंगम कहा जाता था।
    - माना जाता है कि पहला संगम मदुरै में आयोजित किया गया था, जिसमें देवताओं और पौराणिक संतों ने भाग लिया। इस संगम की कोई साहित्यिक कृति उपलब्ध नहीं है।
    - दूसरा संगम कपाटपुरम् में आयोजित किया गया था, इस संगम का एकमात्र तमिल व्याकरण ग्रंथ तोलकाप्पियम् ही उपलब्ध है।
    - तीसरा संगम भी मदुरै में हुआ था। इस संगम के अधिकांश ग्रंथ नष्ट हो गए थे। इनमें से कुछ तमिल साहित्यिक रचनाएँ बच गई हैं और संगम काल के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए एक उपयोगी स्रोत हैं।

संगम साहित्य:

संगम युग की प्रमुख रचनाओं में तोलकाप्पियम्, एतुत्तौके, पत्तुप्पातु, पदिनेकिल्लकणक्कु इत्यादि ग्रंथ तथा शिलप्पादिकारम्, मणिमेखलै और जीवक चिंतामणि महाकाव्य शामिल हैं।

- तोलकाप्पियम् के लेखक तोलकाप्पियर हैं। यह द्वितीय संगम का उपलब्ध एकमात्र प्राचीनतम ग्रंथ है। यह व्याकरण से संबंधित एक ग्रंथ है, साथ ही यह उस समय की राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की जानकारी भी प्रदान करता है।
- एतुत्तौके (अष्ट संग्रह) एक संग्रह ग्रंथ है इसमें आठ रचनाएँ शामिल हैं।
- पत्तुप्पातु (दशगीत) दस कविताओं का संग्रह है इसमें दस रचनाएँ शामिल हैं।
- पदिनेकिल्लकणक्कु में एथिक्स और नैतिकता के बारे में अठारह रचनाएँ हैं। इन 18 कविताओं में महत्त्वपूर्ण कविता तमिल के महान कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर द्वारा लिखित तिरुक्कुरल है। इसे तमिल साहित्य का बाइबिल अथवा पंचम वेद भी माना जाता है।
- शिलप्पादिकारम् 'इलांगोआदिगल' द्वारा और मणिमेखलै 'सीतलैसत्तनार' द्वारा लिखे गए महाकाव्य हैं। इन महाकाव्यों द्वारा तत्कालीन संगम समाज और राजनीति के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है।

संगम काल का राजनीतिक इतिहास

संगम युग के दौरान दक्षिण भारत पर तीन राजवंशों- चेर, चोल और पांड्यों का शासन था। इन राज्यों के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत संगम काल के साहित्यिक संदर्भों से पता चलता है।

266. बोड़फुकन (Borphukam)

संदर्भ: प्रधान मंत्री ने 17 वीं शताब्दी के अहोम जनरल लचित बोरफुकन को भारत की "आत्मा निर्मर सैन्य शक्ति"का प्रतीक कहा।

लाचित बोड़फुकन (**Lachit Borphukan**)

- 24 नवंबर, 1622 को जन्मे बोड़फुकन को 1671 में सरायघाट की लड़ाई में उनके नेतृत्व के लिए जाना जाता था, जिसमें मुगल सेना द्वारा असम पर कब्जा करने के प्रयास को विफल कर दिया गया था।
- वह अपनी महान नौसैनिक रणनीतियों के कारण भारत के नौसैनिक बल को मजबूत करने और अंतर्देशीय जल परिवहन को पुनर्जीवित करने और इससे जुड़े बुनियादी ढांचे के निर्माण के पीछे प्रेरणा थे।
- राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की ओर से सर्वश्रेष्ठ कैडेट को लचित बोड़फुकन स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है। इस पदक की स्थापना 1999 में रक्षा कर्मियों को बोड़फुकन की वीरता और बलिदान का अनुकरण करने के लिए प्रेरित करने के लिए की गई थी।
- उनका निधन 25 अप्रैल, 1672 को हो गया था।

सराईघाट का युद्ध

- सरायघाट की लड़ाई 1671 में गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र के तट पर लड़ी गई थी।
- इसे नदी पर सबसे बड़ी नौसैनिक लड़ाइयों में से एक माना जाता है जिसके परिणामस्वरूप मुगलों पर अहोमों की जीत हुई।

267. लिंगराज मंदिर (Lingaraja temple)

संदर्भ: इसे कोविड -19 के मद्देनजर सार्वजनिक दर्शन के लिए बंद कर दिया गया था।

- यह शिव को समर्पित एक हिंदू मंदिर है और भुवनेश्वर के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है।
- लिंगराज मंदिर भुवनेश्वर का सबसे बड़ा मंदिर है।
- मंदिर कलिंग वास्तुकला की सर्वोत्कृष्टता का प्रतिनिधित्व करता है और भुवनेश्वर में स्थापत्य परंपरा के मध्ययुगीन चरणों का समापन करता है।
- माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण सोमवम्सी वंश के राजाओं ने कराया था, जिसके बाद गंगा शासकों ने इसे बनवाया था।
- मंदिर देउला शैली में बनाया गया है जिसके चार घटक हैं:
    - विमना (गर्भगृह युक्त संरचना)
    - जगमोहन (सभा हॉल),
    - नटामंडीरा (उत्सव हॉल)
    - भोग-मंडप (प्रसाद का हॉल), प्रत्येक अपने पूर्ववर्ती की ऊंचाई में बढ़ रहा है।

- मंदिर परिसर में 50 अन्य मंदिर हैं और यह एक बड़ी परिसर की दीवार से घिरा हुआ है।

268. प्रतिहार शैली (Pratiharas Style)

संदर्भ: नटेश मूर्ति (Natesa), 9वीं शताब्दी की एक दुर्लभ बलुआ पत्थर की मूर्ति (राजस्थान की प्रतिहार शैली) को राजस्थान पुलिस ने 22 साल बाद पुनः प्राप्त किया है।

प्रमुख बिंदु

- नटेश मूर्ति (Natesa), जो वर्तमान में भारतीय उच्चायोग, लंदन में है, मूल रूप से घाटेश्वर मंदिर, बरोली, राजस्थान की थी।
- इसे **1998** में देश से बाहर तस्करी कर ले जाया गया था।
- 'इंडिया प्राइड प्रोजेक्ट' के पीछे कुछ पुरातत्वविदों ने भी नटेश मूर्ति की बहाली के लिए लगातार प्रयास किए हैं।

- इंडिया प्राइड प्रोजेक्ट: यह कला के प्रति उत्साही लोगों का एक समूह है जो भारतीय मंदिरों से चुराई गई धार्मिक कलाकृतियों की पहचान करने और उनकी वापसी सुनिश्चित करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करता है।

- विशेषताएं:
    - शिव के दुर्लभ और शानदार चित्रण में बलुआ पत्थर नटेश की आकृति लगभग 4 फीट लंबी है।
    - नटेश के दाहिने पैर के पीछे नंदी का एक सुंदर चित्रण दिखाया गया है।
- महत्व: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (**ASI**) और संस्कृति मंत्रालय को इस बहाली का उपयोग 1960 के दशक के बाद से हजारों कलाकृतियों की चोरी के बाद उनकी बहाली करने हेतु एक बहुत ही आवश्यक प्रोत्साहन के रूप में करना चाहिए।

प्रतिहार शैली

- यह राजस्थान के गुर्जर-प्रतिहार वंश से संबंधित एक प्रसिद्ध मंदिर वास्तुकला है।
- उन्होंने 8वीं से 11वीं शताब्दी के मध्य तक उत्तरी भारत के अधिकांश भाग पर शासन किया।
- महत्वपूर्ण शासक: नागभट्ट द्वितीय, मीर भोज, महेंद्र पाल प्रथम।
- शैली: वास्तुकला उनकी मूर्तियों, नक्काशीदार पैनलों और मंदिर वास्तुकला की नागर शैली से संबंधित खुले मंडप शैली के मंदिरों के लिए जानी जाती है।
- उन्होंने मूर्तियों के लिए सबसे आम बलुआ पत्थरों का इस्तेमाल किया, जिनमें लोहे के ऑक्साइड (जंग) के कारण लाल रंग के विभिन्न शेड होते हैं।
- उनके निर्माण की शैली का सबसे बड़ा विकास मध्य प्रदेश के खजुराहो में है, जो अब यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।

269. कुषाण (Kushans)

संदर्भ: अमेरिका के प्रमुख इतिहासकार ने पेशावर, पाकिस्तान के पास प्राचीन बौद्ध स्मारक कनिष्क स्तूप को दुनिया का आठवां अजूबा घोषित करने का आह्वान किया है।

- कनिष्क स्तूप पहली शताब्दी ईस्वी में कुषाण कनिष्क के शासनकाल के दौरान बनाया गया था
- चीनी तीर्थयात्रियों द्वारा अपने संस्मरणों में इसका विस्तार से वर्णन किया गया था और ह्वेन त्सांग ने 620-645 ईस्वी में अपनी यात्रा के दौरान इसे देखने के बाद साइट को एशिया के इस हिस्से में "सबसे ऊंची वास्तुशिल्प इमारत" कहा था।
- यह अनुमान लगाया गया है कि स्तूप वर्तमान समय में 13-मंजिला इमारत के बराबर था और आसपास का मठ वसुबंधु और पर्व के बौद्ध देवताओं से जुड़े थे।

- इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के पतन के साथ, स्तूप और मठ के निशान फीके पड़ गए।
- कनिष्क स्तूप में बुद्ध की हड्डी के टुकड़े मिले थे।

कुषाण साम्राज्य की उत्पत्ति

- कुषाणों को युची जनजाति की पाँच शाखाओं में से एक माना जाता है जो चीनी सीमा या मध्य एशिया में रहते थे।
- वे चीनी स्रोतों में कुई-शुआंग के रूप में जाने जाते हैं।
- उन्होंने अंततः अन्य युएझी जनजातियों पर प्रभुत्व हासिल कर लिया।
- वे पहली शताब्दी ईस्वी में पार्थियन और शक को हराकर भारत की ओर पूर्व की ओर बढ़े।
- कुजुल कडफिसेस (ई. 30-ई. 80) भारत में कुषाण साम्राज्य की नींव रखने वाले पहले युएझी प्रमुख थे। उसने काबुल, कंधार और अफगानिस्तान पर अपना वर्चस्व स्थापित किया।

कनिष्क [**127** ई. - **150** ई.]

- इन्हे सबसे महान कुषाण राजा और प्राचीन भारत का एक महान राजा माना जाता है।
- कनिष्क की मुख्य राजधानी पेशावर थी, जिसे उस समय पुरुषपुरा के नाम से जाना जाता था।
- कहा जाता है कि पाटलिपुत्र पर कब्जा करने के बाद, वह बौद्ध भिक्षु अश्वघोष को अपने साथ पेशावर ले गया था।
- उनके दरबार में विद्वानों में पार्श्व, अश्वघोष, वसुमित्र, नागार्जुन, चरक और मठरा शामिल थे। उन्होंने ग्रीक इंजीनियर एजेसिलॉस को भी संरक्षण दिया।
- कनिष्क ने कश्मीर के कुंडलवन में चौथी बौद्ध परिषद बुलाई।
- उन्होंने बौद्ध धर्म का संरक्षण किया, हालांकि वे अपने धार्मिक विचारों में बहुत सहिष्णु थे। उनके सिक्कों में भारतीय, ग्रीक और पारसी देवताओं का मिश्रण है।
- वह कला और वास्तुकला के संरक्षक भी थे। उनके अधीन गांधार कला विद्यालय विकसित हुआ।
- उन्होंने बौद्ध धर्म के महायान रूप का भी प्रचार किया और वह चीन में इसके प्रचार के लिए काफी हद तक उत्तरदायी थे।

कुषाण के सिक्के:

- विम कडफिसेस सोने के सिक्के जारी करने वाले पहले राजा थे।
- कनिष्क द्वितीय ने स्वर्ण दीनार जारी किए।
- समुद्रगुप्त के सिक्के कुषाणों के समान थे।

कनिष्क कला:

- कनिष्क का सिर रहित धड़।
- हुविष्क की खड़ी मूर्ति
- विम कडफिसेस की मूर्ति।
- लोरिया तंगाई की खड़े हुए बुद्ध की मूर्ति

270. जैन धर्म (Jainism)

संदर्भ: हाल ही में "नागालैंड में जैन धर्म के 100 वर्ष, 1885 से 1985 तक की यात्रा" नामक एक पुस्तक का विमोचन किया गया।

- कोहिमा जैन मंदिर ने 2020 में 100 साल पूरे किए और नागालैंड में जैन धर्म ने 135 साल पूरे किए।

जैन धर्म एक प्राचीन धर्म है जो उस दर्शन में निहित है जो सभी जीवित प्राणियों को अनुशासित अहिंसा के माध्यम से मुक्ति का मार्ग और आध्यात्मिक शुद्धता और आत्मज्ञान का मार्ग सिखाता है।

- जैन धर्म **6** वीं शताब्दी ईसा पूर्व में प्रमुखता में आया, जब भगवान महावीर ने धर्म का प्रचार किया।
- जैन धर्म में **24** तीर्थंकर हुए हैं, जिनमें से अंतिम भगवान महावीर थे प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ थे।
- 'जैन' शब्द जिन या जैना से बना है जिसका अर्थ है 'विजेता'।

जैन धर्म के सिद्धांत

जैन धर्म का मुख्य उद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति है, जिसके लिए किसी अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है। मुक्ति तीन सिद्धांतों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है जिसे तीन रत्न या त्रिरत्न कहा जाता है।

  - सम्यक ज्ञान,
  - सम्यक दर्शन,
  - सम्यक आचरण

- जैन धर्म के पांच सिद्धांत
  - अहिंसा: किसी जीव को चोट न पहुँचाना
  - सत्य: झूठ मत बोलो
  - अस्तेय: चोरी मत करो
  - अपरिग्रह: संपत्ति का अधिग्रहण न करें
  - ब्रह्मचर्य: निरंतरता का पालन करें
- इसने वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की बल्कि वर्ण व्यवस्था और कर्मकांड वैदिक धर्म की बुराइयों को कम करने का प्रयास किया।

  - महावीर के अनुसार, व्यक्ति पिछले जन्म में पापों या गुणों के परिणाम के रूप में उच्च या निम्न वर्ण में पैदा होता है। इस प्रकार, जैन धर्म आत्मा के संचरण और कर्म के सिद्धांत में विश्वास करता है।

- अनेकांतवाद: इस बात पर जोर देता है कि परम सत्य और वास्तविकता जटिल है, और इसमें कई पहलू हैं अर्थात बहुलता का सिद्धांत। यह कई, विविध, यहां तक कि विरोधाभासी दृष्टिकोण की एक साथ स्वीकृति को संदर्भित करता है।

जैन परिषद

- प्रथम जैन परिषद: 3 शताब्दी ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र में आयोजित की गई थी और इसकी अध्यक्षता शुलभद्र ने की थी।
- द्वितीय जैन परिषद: **512** ईस्वी में वल्लभी में आयोजित की गई और इसकी अध्यक्षता देवर्षि क्ष्मस्नमण ने की। इसके अंतिम संकलन में 12 अंग और 12 उपांगों को शामिल किया गया।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 50 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

351. अंबत्तूर शिलालेख (Ambattur Inscriptions)

352. बख्शाली पांडुलिपि (Bakhshali manuscript)

353. हिंदू शाही राजा (Hindu Shahi kings)

354. खजुराहो मंदिर (Khajuraho Temples)

355. हर्षवर्धन का प्रशासन (Administration of Harshavardhana)

356. कश्मीर और संस्कृत (Kashmir and Sanskrit)

357. रास उत्सव (Raas Utsav)

358. बहमनी साम्राज्य (Bahmani Kingdom)

359. काकतीय (Kakatiyas)

360. रेनाडु के तेलुगु चोल (Telugu Cholas of Renadu)

351. अंबत्तूर शिलालेख (Ambattur Inscriptions)

समाचार में: ग्रेनाइट खंड पंद्रहवीं शताब्दी में एक व्यापारिक केंद्र के रूप में अंबत्तूर का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है

- विजयनगर काल के दौरान, अंबत्तूर एक प्रमुख व्यापारिक शहर था जो प्राचीन राजमार्ग मार्गों पर स्थित था जो तिरुपट्टी, उथुकोट्टई और पेरियापलायम जैसे व्यापारिक केंद्रों को जाता था।
- अंबात्तूर थोंडाईमंडलम में एक प्रभाग का व्यापारिक मुख्यालय था।
    - 27 राजस्व प्रभागों में विभाजित, थोंडाईमंडलम विजयनगर द्वारा शासित क्षेत्र था।
- दो फीट ऊंचे खंड में 23 लाइनें हैं जो तमिल में बाएं से दाएं लिखी गई थीं, जो विजयनगर साम्राज्य के मलयदेव महाराजा नामक एक स्थानीय सरदार द्वारा दी गई दिशा का वर्णन करती हैं, जो पड़ोस में साप्ताहिक बाजार से एकत्र किए गए कुल करों का आधा हिस्सा दान करते थे।
- विशेष रूप से, व्यापारियों पर तीन कर लगाए गए थे —
    - उलल्यम एक व्यापारिक शहर में प्रवेश के लिए व्यापारियों से लगाए गए कर को संदर्भित करता था।
    - अल्लुपथंम एक प्रकार का कर है जो साप्ताहिक बाजार में व्यापारिक आउटलेट स्थापित करने के लिए एकत्र किया जाता था।
    - आदिकासू आधुनिक समय के संपत्ति कर के समान एक कर था जहां साप्ताहिक बाजार में उपयोग किए जाने वाले स्थान के लिए कर एकत्र किया जाता था।
- एकत्र किए गए कुल करों का आधा हिस्सा मंदिर के रखरखाव के लिए इस्तेमाल किया जाता था और शेष धन पड़ोस में निवासियों के रहने की स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से पहल की दिशा में निर्देशित किया जा रहा था।

विजयनगर साम्राज्य:

विजयनगर या "विजय का शहर" एक शहर और एक साम्राज्य दोनों का नाम था।

साम्राज्य की स्थापना चौदहवीं शताब्दी (1336 ई.) में संगम वंश के हरिहर और बुक्का ने की थी।

उन्होंने हम्पी को राजधानी बनाया। 1986 में, हम्पी को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

यह उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर प्रायद्वीप के चरम दक्षिण तक फैला हुआ है।

विजयनगर साम्राज्य पर चार महत्वपूर्ण राजवंशों का शासन था और वे हैं:

- संगम (Sangama)
- सलुव (Saluva)
- तुलुव (Tuluva)
- अराविदु (Aravidu)

इसके अतिरिक्त समाचार में: विजयनगर राजा कृष्णदेवराय की मृत्यु की तारीख का पहला अभिलेखीय संदर्भ (एक शिलालेख) कर्नाटक के तुमाकुरु जिले के होन्नाहल्ली में खोजा गया।

- आम तौर पर, राजाओं की मृत्यु शिलालेखों में दर्ज नहीं की जाती थी और यह उन दुर्लभ अभिलेखों में से एक था।

निष्कर्ष:

- शिलालेख के अनुसार, दक्षिण से शासन करने वाले भारत के सबसे महान सम्राटों में से एक कृष्णदेवराय की मृत्यु 17 अक्टूबर, 1529 (रविवार) को हुई थी। संयोग से, इस दिन को चंद्र ग्रहण द्वारा चिह्नित किया गया था।

- यह शिलालेख तुमकुरु जिले के होन्नाहल्ली में गोपालकृष्ण मंदिर के उत्तर की ओर स्थित एक खंड पर उत्कीर्ण है।

- शिलालेख कन्नड़ में लिखा गया है।

कृष्णदेवराय

- वह विजयनगर साम्राज्य के तुलुव वंश (1509-29 ईस्वी) के शासक थे।
- उनके शासन की विशेषता विस्तार और सुदृढ़ीकरण थी।
- उन्हें कुछ बेहतरीन मंदिरों के निर्माण और कई महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रभावशाली गोपुरम जोड़ने का श्रेय दिया जाता है।
- उन्होंने विजयनगर के पास अपनी मां के नाम पर नागलपुरम नामक एक उपनगरीय बस्ती की भी स्थापना की।
- उन्होंने तेलुगु में राज्य शिल्प पर एक रचना की, जिसे 'अमुक्तमाल्यदा' के नाम से जाना जाता है।

352. बख्शाली पांडुलिपि (Bakhshali manuscript)

संदर्भ: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा तीसरी शताब्दी की भारतीय पांडुलिपि पर एक काले बिंदु की पहचान भारत में शून्य के लिए गणितीय प्रतीक के पहले रिकॉर्ड किए गए उपयोग के रूप में की गई है, जो पहले सोचा गया था कि 500 साल पहले का था।

- बर्च की छाल को गांव के नाम पर 'बख्शाली पांडुलिपि' के रूप में जाना जाता है, जो अब पाकिस्तान में है, जहां इसे 1881 में दफन पाया गया था।

- बख्शाली स्क्रॉल को पहले से ही सबसे पुराने भारतीय गणितीय पाठ के रूप में मान्यता दी गई थी, लेकिन इसकी सटीक आयु व्यापक रूप से विवादित थी, और शोधकर्ताओं ने इसे तीसरी या चौथी शताब्दी में वापस खोजने के लिए कार्बन डेटिंग का उपयोग किया।

- पाठ में वास्तव में सैकड़ों शून्य पाए गए थे, जो प्राचीन भारतीय संख्या प्रणाली में परिमाण के क्रम का प्रतिनिधित्व करते थे।

- शून्य के उपयोग का सबसे पुराना रिकॉर्ड किया गया उदाहरण पहले भारत में ग्वालियर के एक मंदिर में एक दीवार पर नौवीं शताब्दी का शिलालेख माना जाता था।

शून्य का इतिहास:

- पहला दर्ज शून्य मेसोपोटामिया में **3** ईसा पूर्व के आसपास दिखाई दिया।

- मायाओं ने इसका स्वतंत्र रूप से लगभग **4** ईस्वी सन् में आविष्कार किया था।

- इसे बाद में भारत में पाँचवीं शताब्दी के मध्य में ईजाद किया गया था,

  ✔ **628** ई. में ब्रह्मगुप्त द्वारा - शून्य से निपटने के लिए गणितीय नियम (1 + 0 = 1; 1 - 0 = 1; और 1 x 0 = 0) बनाया गया।

- यह सातवीं शताब्दी के अंत में कंबोडिया में फैल गया।

- शून्य की अवधारणा आठवीं शताब्दी के अंत में चीन और इस्लामी देशों में फैल गई।
- यह बारहवीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोप में पहुंचा।

बौधायन	सुलवसूत्र 800 ईसा पूर्व
आर्यभट्ट	आर्यभटीय, आर्य सिद्धांत:
ब्रह्मगुप्त	शून्य का प्रयोग 600 AD.
भास्कर प्रथम	सिद्धांत शिरोमणि (1/0 = अनंत) (630 ई.)
वराह मिहिर	बृहत संहिता त्रिकोणमिति (550 ई.)
महावीर	बीजगणित (800 ई.)
श्रीधर	एक गोले का आयतन (800 ई.)
भास्कर द्वितीय	लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणिता और गोलाध्याय, (1120 ई.)

353. हिंदू शाही राजा (**Hindu Shahi kings**)

संदर्भ: हाल ही में, उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान में बारिकोट घुंडई में एक खुदाई के दौरान प्राचीन हिंदू मंदिर की खोज की गई।

- माना जाता है कि उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान के स्वात जिले में एक पहाड़ पर 1300 साल पहले एक हिंदू मंदिर का निर्माण किया गया था।
- खोजा गया मंदिर भगवान विष्णु का है। इसे हिंदुओं ने 1300 साल पहले हिंदू शाही काल के दौरान बनवाया था।
  - यह स्वात जिले में खोजी गई गांधार सभ्यता का पहला मंदिर था।
- हिंदू शाही या काबुल शाही (850-1026 CE) एक हिंदू राजवंश था जिसने काबुल घाटी (पूर्वी अफगानिस्तान), गांधार (आधुनिक पाकिस्तान) और वर्तमान में उत्तर-पश्चिमी भारत पर शासन किया था।
  - राजवंश की स्थापना कुल्लर के एक मंत्री द्वारा की गई थी जिसने काबुल शाबियों के खिलाफ विद्रोह किया था।
  - राजवंश कुषाण साम्राज्य (आधुनिक अफगानिस्तान), या तुर्क (तरुष्का) उत्तराधिकारी थे।
  - कुछ इतिहासकार कहते हैं कि कुल्लर क्षत्रिय या ब्राह्मण वर्ण के थे।
  - इसके बाद सफ़्फ़ारी राजवंश (**Saffarid dynasty**) शासन में आये।

354. खजुराहो मंदिर (**Khajuraho Temples**)

संदर्भ: पर्यटन मंत्रालय की 'देखो अपना देश' वेबिनार श्रृंखला ने अपना 85वां वेबिनार "खजुराहो-मंदिर" शीर्षक से आयोजित किया।

- खजुराहो मंदिर (मध्य प्रदेश में) चंदेल राजवंश द्वारा 950-1050 ईस्वी के बीच बनाया गया था।
    - मंदिर स्थल विंध्य पर्वत श्रृंखला के भीतर स्थित है।
- स्मारकों में हिंदू और जैन मंदिर शामिल हैं।
- इन मंदिरों को 1986 में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों का दर्जा मिला।
- मंदिर अपने नागरा शैली के वास्तुशिल्प प्रतीकवाद के लिए प्रसिद्ध हैं।
- इसकी जानकारी 1022 ई. में अबू रिहान अल बिरूनी और 1335 ई. में इब्न बतूता द्वारा पहली बार दर्ज की गई।

देखो अपना देश

- पर्यटन मंत्रालय ने 14 अप्रैल, 2020 से "देखो अपना देश" वेबिनार श्रृंखला शुरू की।
- यह कई स्थलों और अतुल्य भारत की संस्कृति और विरासत की गहन गहराई और विस्तार के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए शुरू किया गया है।
- "शहरों के शहर- दिल्ली की व्यक्तिगत डायरी" नामक श्रृंखला के पहले वेबिनार ने दिल्ली के लंबे इतिहास को छुआ क्योंकि यह 8 शहरों के रूप में सामने आया है।
- वेबिनार मंत्रालय के सोशल मीडिया हैंडल- इंक्रेडिबल इंडिया पर इंस्टाग्राम और फेसबुक पर उपलब्ध होगा।

- वेबिनार श्रृंखला की विशेषता इसकी निरंतरता है।

355. हर्षवर्धन का प्रशासन (Administration of Harshavardhana)

- राजा हर्षवर्धन जिन्हें हर्ष के नाम से भी जाना जाता है, का जन्म 590 ईस्वी में थानेसर, हरियाणा में हुआ था
- वे पुष्यभूति राजवंश या वर्धन वंश के संस्थापक प्रभाकर वर्धन के पुत्र थे।
- उन्हें 7वीं शताब्दी ईस्वी में सबसे प्रमुख भारतीय सम्राटों में से एक माना जाता है।
- गुप्तों के पतन के बाद, उत्तर भारत कई छोटे राज्यों में विभाजित हो गया था। हर्ष अपनी कमान के तहत उनमें से कई को एकजुट करने में सक्षम था।
- हर्ष के अधीन दो प्रकार के क्षेत्र थे। एक सीधे उसके अधीन था और दूसरा प्रकार वे थे जो सामंतवादी थे।
    - प्रत्यक्ष क्षेत्र: मध्य प्रांत, बंगाल, कलिंग, राजपुताना, गुजरात
    - सामंत: जालंधर, कश्मीर, कामरूप, सिंध, नेपाल
- उसका साम्राज्य उत्तर और उत्तर पश्चिमी भारत से दक्षिण में नर्मदा तक फैला हुआ था।
    - हालाँकि, दक्षिण में भूमि पर विजय प्राप्त करने की हर्ष की योजना तब बाधित हुई जब चालुक्य राजा, पुलकेशिन **II** ने **618-619** ईस्वी में हर्ष को हराया। इसने हर्ष की दक्षिणी क्षेत्रीय सीमा को नर्मदा नदी के रूप में सीमित कर दिया।
- उसकी राजधानी कन्नौज थी।
- वह एक हिंदू थे जिन्होंने बाद में महायान बौद्ध धर्म ग्रहण किया।
- हर्ष के शासनकाल ने भारत में सामंतवाद की शुरुआत को चिह्नित किया।
- ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल के दौरान भारत आया था। उन्होंने राजा हर्ष और उनके साम्राज्य का बहुत ही अनुकूल विवरण दिया है। वह अपनी उदारता और न्याय की प्रशंसा करता है।
- हर्ष कला के महान संरक्षक थे। वे स्वयं एक सिद्धहस्त लेखक थे। उन्हें रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद के संस्कृत कार्यों का श्रेय दिया जाता है।
- बाणभट्ट उनके दरबारी कवि थे और उन्होंने हर्षचरित की रचना की जो हर्ष के जीवन और कर्मों का लेखा-जोखा देती है।
- हर्ष ने उदारतापूर्वक नालंदा विश्वविद्यालय का समर्थन किया।
- उनके पास एक अच्छा कर ढांचा था। एकत्र किए गए सभी करों का 1/4 भाग दान और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता था।
- हर्ष मुसलमानों द्वारा आक्रमण से पहले भारत में एक विशाल साम्राज्य पर शासन करने वाले अंतिम राजा थे।
- हर्ष की मृत्यु 647 ईस्वी में 41 वर्षों तक शासन करने के बाद हुई।

- चूंकि वह बिना किसी वारिस के मर गया, इसलिए उसकी मृत्यु के तुरंत बाद उसका साम्राज्य विघटित हो गया।
    - उनकी एक बेटी और दो बेटे थे। उनकी बेटी ने वल्लभी के एक राजा से शादी की, जबकि उनके बेटों को उनके ही मंत्री ने मार दिया था।

हर्ष के साम्राज्य में प्रशासन

आधिकारिक	प्रशासन का क्षेत्र
महासामान्त	मुख्य मंत्री
उपरिक	प्रांत प्रमुख
महासंधि विग्रहक	युद्ध और शांति के बारे में निर्णय लेने वाला अधिकारी
महाबलाधिकारी	सेना के सर्वोच्च अधिकारी
बालाधिकृत	कमांडर
अयुक्तक	साधारण अधिकारी
वृहदस्वतार,	घुड़सवार सेना प्रमुख
राजस्थरुया, राजस्थानी	विदेश मंत्री
कटुक, स्कंद गुप्त	हाथी ब्रिगेड प्रमुख

356. कश्मीर और संस्कृत (Kashmir and Sanskrit)

- कश्मीर उत्तरापथ और दक्षिणा पथ के बहुत करीब है, जो प्राचीन भारत के दो महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग हैं (चित्र देखें)
- यह संस्कृत शिक्षण स्थानों तक्षशिला और **सा**कल (सियालकोट) के पास है।
- कश्मीरी ग्रंथ, नीलमाता पुराण (7वीं शताब्दी) और राजतरंगिणी (12वीं शताब्दी), संस्कृत में रचित है।
- कश्मीरी स्थान-नाम जो सभी संस्कृत से प्राप्त हुए हैं - अनंतनाग, श्रीनगर, सोपोर, बारामूला, तुलमुल, कन्नाज़, मराज़।
- मेघवाहन (**Meghavahana**), नवसुरेंद्रादित्यवर्मन (**Navasurendradityavarman**), ललितादित्य (**Lalitaditya**) आदि जैसे राजाओं के संस्कृत नाम के सिक्के मिले हैं।
- बौद्ध गिलगित पांडुलिपि और गणितीय बख्शाली पांडुलिपि भी संस्कृत में हैं।
- कश्मीरी **डार्डिक** भाषा इंडो आर्यन भाषाओं का एक पहाड़ी संस्करण है।

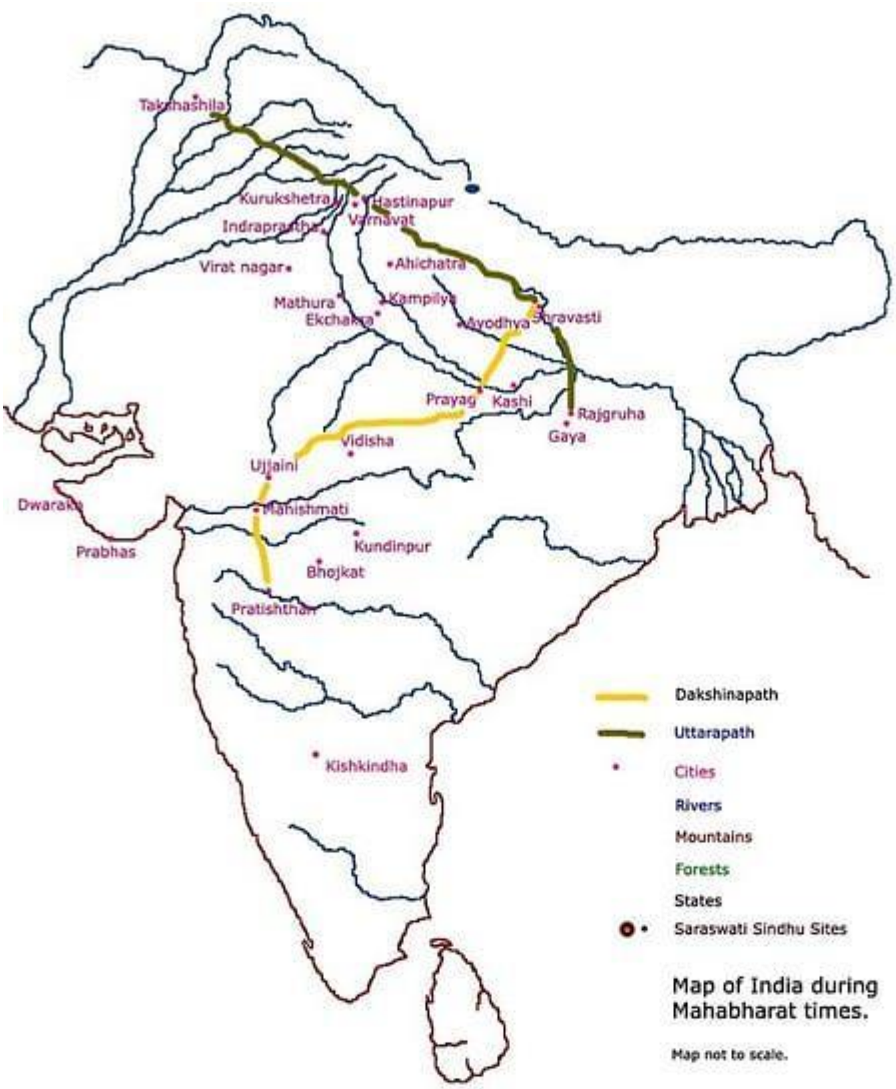

357. रास उत्सव (Raas Utsav)

- रास माजुली में विभिन्न सत्रों (मध्यकालीन संत श्रीमंत शंकरदेव द्वारा धर्म के सर्व-समावेशी रूप के लिए पेश किए गए वैष्णव उपदेश की सीट) के 500 वर्षों के सांस्कृतिक और कलात्मक योगदान का उत्सव है।
- जात्रा एक वार्षिक उत्सव है जिसमें भगवान कृष्ण के जीवन की कहानी को दर्शाते हुए एक प्रदर्शन कला के रूप में गीत, नृत्य, संवाद शामिल होता है।
- रास के दौरान प्रदर्शन में कई पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्र शामिल होते हैं जैसे खोल (एक ताल वाद्य यंत्र जो मृदंगम जैसा दिखता है), ताल (बड़े पीतल की झंकार झांझ), नागरा (विशाल लोक ड्रम) और डोबा (ज्यादातर प्रार्थना हॉल या मंदिरों में बजाया जाने वाला ड्रम)।
- इसमें असमिया शास्त्रीय संगीत और नृत्य भी शामिल है।
- माजुली में कई सत्ताओं में से, सामुगुरी पिछले 150 वर्षों से रास की मेजबानी कर रहा है।
- माजुली में त्योहार अद्वितीय है क्योंकि इसमें पारंपरिक हस्तनिर्मित मुखौटे और प्राकृतिक सामग्री जैसे बांस, ब्रह्मपुत्र नदी के तल से नरम मिट्टी, शोला या कुहिला उपजी, एक पानी का पौधा शामिल है।

माजुली

- यह ब्रह्मपुत्र नदी, असम में एक नदी द्वीप है और 2016 में यह भारत में एक जिला बनाने वाला पहला द्वीप बन गया।
- इसका गठन ब्रह्मपुत्र नदी और इसकी सहायक नदियों, मुख्य रूप से लोहित द्वारा धाराप्रवाह परिवर्तन के कारण किया गया था।
- माजुली असमिया नव-वैष्णवी संस्कृति का निवास स्थान है।
- यह विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप है ।
- माजुली की आबादी में आदिवासी, गैर-आदिवासी और अनुसूचित जातियां शामिल हैं।
- आदिवासी समुदायों में मिसिंग, देवरी और सोनोवाल कछारी शामिल हैं।
- अनुसूचित जातियों में कैवर्त, बनिया आदि शामिल हैं। गैर-आदिवासी समुदायों में कोच, कलितास, अहोम, चुटिया, केओट, योगी आदि शामिल हैं।
- इसके किनारों पर व्यापक मिट्टी के कटाव के कारण द्वीप खतरे में है।

श्रीमन्त शंकरदेव

- वे एक वैष्णव संत थे जिनका जन्म **1449** ई. में असम के नगांव जिले में हुआ था।
- उन्होंने नव-वैष्णव आंदोलन की शुरुआत की।
- उन्होंने असम में भक्ति आंदोलन को प्रेरित किया।
- उनके विचार भागवत पुराण पर आधारित थे।
- प्रारंभ में, उन्होंने संस्कृत में अपना गद्य लिखा लेकिन बाद में निम्नलिखित कला रूपों को विकसित करने के लिए असमिया और ब्रजावली (नाटकीय उपयोग तक सीमित एक साहित्यिक भाषा, जिसमें शंकरदेव ने अपने गीत और नाटक लिखे) का उपयोग किया:
  - बोरगीत (Borgeet-)-आध्यात्मिक संगीत का एक नया रूप,
  - भौआना (Bhaona)- एक पौराणिक कथाओं पर आधारित नाट्य प्रदर्शन, और
  - मठवासी नृत्य जो शास्त्रीय सत्रिया (एक शास्त्रीय नृत्य रूप जो वैष्णव विश्वास के प्रचार के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करता है) में विकसित हुआ।
- उनकी शिक्षाओं को असम में विभिन्न जातियों और लोगों के समूहों को एक सांस्कृतिक इकाई में एकीकृत करने का श्रेय दिया जाता है।

358. बहमनी साम्राज्य (**Bahmani Kingdom :1347-1526** ई.)

बहमनी सल्तनत दक्षिण भारत में दक्कन का एक फारसी मुस्लिम राज्य था और प्रमुख मध्ययुगीन भारतीय राज्यों में से एक था।

- हसन गंगू बहमनी ने इसे 1347 ई. में स्थापित किया था।
- वह देवगिरी का एक तुर्की अधिकारी था।
- इसके तुंगभद्रा दोआब के लिए विजयनगर सम्राटों के साथ युद्ध निरंतर हुए।

- सुल्तानों ने एक सामंती प्रकार के प्रशासन का पालन किया।
    - राज्य को कई प्रांतों में विभाजित किया गया था जिन्हें तराफी कहा जाता था।
    - तराफ़दार या अमीर - राज्यपाल जिसने तराफ़ी को नियंत्रित किया।
- बहमनी सुल्तानों ने शिक्षा पर बहुत ध्यान दिया।
- उन्होंने अरबी और फारसी सीखने को प्रोत्साहित किया।
- इस काल में उर्दू का भी विकास हुआ।
- कई मस्जिदों, मदरसों और पुस्तकालयों का निर्माण किया गया।
    - गुलबर्गा गोलकुंडा किले में जामा मस्जिद
    - बीजापुर में गोलगुंबद
    - मुहम्मद गवा के मदरसे

बहमनी साम्राज्य के शासक

मुहम्मद शाह-प्रथम (**1358-1377.A.D**)	• वह बहमनी साम्राज्य का अगला शासक था। • वह एक सक्षम सामान्य और प्रशासक थे। • उसने वारंगल के कपाया नायक और विजयनगर शासक बुक्का-I को हराया।
मुहम्मद शाह-द्वितीय (**1378-1397** ई.)	• 1378 ई. में मुहम्मद शाह-द्वितीय गद्दी पर बैठा। • वह एक शांति प्रेमी था और अपने पड़ोसियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित किया था। • उसने कई मस्जिदें, मदरसे (सीखने की जगह) और अस्पतालों का निर्माण किया।
फिरोज शाह बहमनी (**1397-1422** ई.)	• वह एक महान जनरल था • उन्होंने विजयनगर शासक देवा राय प्रथम को पराजित किया।
अहमद शाह (**1422-1435** ई.)	• अहमद शाह फिरोज शाह बहमनी के उत्तराधिकारी बने। • वह एक निर्दयी और हृदयहीन शासक था। • उसने वारंगल राज्य पर विजय प्राप्त की। • उसने अपनी राजधानी को गुलबर्गा से बदलकर बीदर कर दिया।
मुहम्मद शाह-तृतीय (**1463-1482** ई.)	• 1463 ई. में मुहम्मद शाह तृतीय नौ साल की उम्र में सुल्तान बने। • मुहम्मद गवा शिशु शासक के रीजेंट बन गया था। • मुहम्मद गवा के सक्षम नेतृत्व में बहमनी साम्राज्य बहुत शक्तिशाली हो गया।

	• मुहम्मद गवा ने कोंकण, उड़ीसा, संगमेश्वर और विजयनगर के शासकों को हराया। • 1481 में मुहम्मद गवा को दक्कन के मुसलमानों द्वारा सताया गया जो उससे ईर्ष्या करते थे और इसी कारण मुहम्मद शाह द्वारा उसे मौत की सजा सुनाई गई थी। • 1482 में मुहम्मद शाह-तृतीय की मृत्यु हो गई। • उनके उत्तराधिकारी कमजोर थे और बहमनी साम्राज्य पांच राज्यों में विभाजित हो गया, अर्थात्: ○ बीजापुर ○ अहमदनगर ○ बरार ○ गोलकुंडा ○ बीदर

359. काकतीय (Kakatiyas)

संदर्भ: आंध्र प्रदेश की राजधानी अमरावती में काकतीय शासक (गणपति देव) द्वारा निर्मित एक मंदिर को स्थानीय देवी बालुसुलम्मा (देवी दुर्गा) के निवास में परिवर्तित कर दिया गया है।

- **13** वीं शताब्दी के इस मंदिर की पीठासीन देवता काकतीय शासकों की देवी काकाती देवी थीं।

काकतीय वंश के बारे में

- वे पहले पश्चिमी चालुक्यों के सामंत थे।
  - दक्कन के सभी तीन समकालीन राजवंश यानी होयसल, यादव और काकतीय पश्चिमी चालुक्यों के सामंत थे।
- स्वतंत्र राजवंश की स्थापना तब हुई जब रुद्रदेव (प्रतापरुद्र प्रथम) 1158 AD में काकतीय वंश के पहले स्वतंत्र शासक बने।
- वारंगल काकतीयों की राजधानी थी।
- उन्हें **1310** से इस्लामी आक्रमण का सामना करना पड़ा (अलाउद्दीन खिलजी द्वारा)
- यह क्षेत्र अंततः 1323 में दिल्ली सल्तनत (सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक द्वारा आक्रमण) के नियंत्रण में आ गया।
- मोटुपल्ली काकतीय का प्रसिद्ध व्यापारिक बंदरगाह था।
- मार्को पोलो - प्रसिद्ध वेनिस यात्री ने इस बंदरगाह के माध्यम से काकतिया राज्य का दौरा किया और अपने यात्रा वृत्तांत में आंध्र में समृद्धि और शक्ति के बारे में लिखा।
- काकतिया राजवंश बड़े तालाबों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध थे और फसल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए इसमें जल-धारा यंत्र का उपयोग करते थे।
- कोह-ए-नूर हीरे का खनन गोलकुंडा खानों से काकतिया शासन के दौरान किया गया था।

प्रमुख स्थान

- रुद्रेश्वर मंदिर:
  - तेलुगु में वेयिस्तम्बलगुडी (हजार स्तंभ मंदिर) के रूप में भी जाना जाता है।
  - इसे रुद्रदेव ने 1163 ई. में बनवाया था।
  - मंदिर अपने समृद्ध नक्काशीदार स्तंभों, छिद्रित स्क्रीनों, शिला-कृत हाथियों और एकाश्म नंदी जैसे विशेष चिह्नों के लिए जाना जाता है।
  - दक्कन क्षेत्र पर आक्रमण के दौरान तुगलक वंश के शासकों द्वारा मंदिर को अपवित्र किया गया था।
- रामप्पा मंदिर (तेलंगाना):
  - यह भारत में एकमात्र मंदिर है जिसका नाम भगवान के नाम न होकर उसके शिल्पी के नाम पर है।
  - इसे राजा काकती गणपति देव की ओर से उनके प्रमुख सेनापति रुद्र समानी ने बनवाया था।
  - मंदिर में नृत्य मुद्राओं की मूर्तिकला जयपा सेनानी की प्रसिद्ध कृति 'नृत्य रत्नावली' के लिए महान प्रेरणा थी।
- वारंगल किला:
  - 13 वीं शताब्दी में राजा गणपति द्वारा निर्मित और 1261 ईस्वी में उनकी बेटी रुद्रमा देवी द्वारा पूरा किया गया।
  - किले में सजावटी और ऊंचे प्रवेश द्वार के साथ चार रास्ते हैं जिन्हें कीर्ति थोराना या हम्सा थोराना के नाम से जाना जाता है।

वारंगल किला, हजार स्तंभ मंदिर और इस क्षेत्र के रामप्पा मंदिर को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची में जोड़ा गया है।

360. रेनाडु के तेलुगु चोल (Telugu Cholas of Renadu)

संदर्भ: हाल ही में आंध्र प्रदेश के कडप्पा जिले के एक सुदूर गांव से एक दुर्लभ शिलालेख का पता चला था।

- यह एक डोलोमाइट खंड और शेल पर उत्कीर्ण पाया गया था।
- शिलालेख पुरातन तेलुगु में लिखा गया था।
- यह **8** वीं शताब्दी ईस्वी को सौंपा गया था, जब यह क्षेत्र रेनाडु के चोल महाराजा के शासन के अधीन था।

रेनाती चोल के बारे में

- रेनाडु के तेलुगु चोलों (जिन्हें रेनाती चोल भी कहा जाता है) ने रेनाडु क्षेत्र पर शासन किया।
  - उनका क्षेत्र पूरे कडप्पा जिले और अनंतपुर, कुरनूल और चित्तूर जिलों के आसपास के क्षेत्रों में विस्तारित हुआ।
- वे मूल रूप से स्वतंत्र थे, बाद में पूर्वी चालुक्यों के अधिकार के लिए मजबूर हो गए।
- उन्हें 7 वीं और 8 वीं शताब्दी से संबंधित अपने शिलालेखों में तेलुगु भाषा का उपयोग करने का अनूठा सम्मान प्राप्त था।
- 639-640 के दौरान कांचीपुरम में कई महीने बिताने वाले चीनी तीर्थयात्री जुआनजांग ने इन तेलुगु चोल के स्पष्ट संदर्भ में 'कोलीय के **साम्राज्य'** (kingdom of Culi) के बारे में लिखा है।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 51 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

361. भक्ति आंदोलन अवलोकन (Bhakti Movement Overview)

362. बसवन्ना का वीरशैववाद (Basavanna’s Virashaivism)

363. संत कबीर (Saint Kabir)

364. आदि शंकराचार्य (Adi Shankaracharya)

365. सूफीवाद का संक्षिप्त अवलोकन (Brief Overview of Sufism)

366. सूफी शब्दावली (Terms in Sufism)

367. निजामुद्दीन औलिया (Nizamuddin Auliya)

368. अजमेर शरिफ (Ajmer Sheriff)

369. बीबी फातिमा (Bibi Fatima)

370. तिब्बती बौद्ध धर्म (Tibetan Buddhism)

361. भक्ति आंदोलन अवलोकन (Bhakti Movement Overview)

भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत, अलवरों और नयनारों द्वारा शुरू हुआ।

- अलवर भगवान विष्णु के भक्त थे और नयनार भगवान शिव के भक्त थे। इन भक्तों ने अपने देवताओं की प्रशंसा में भजन गायन करते हुए विभिन्न स्थानों की यात्रा की।

भक्ति आंदोलन के प्रसार के कुछ कारण नीचे दिए गए हैं।

1. हिंदू धर्म में बुरी प्राथाएँ
2. इस्लाम के प्रसार का डर
3. जाति व्यवस्था
4. जटिल कर्मकांड
5. पूजा और मोक्ष की एक पूर्ण विधि की आवश्यकता थी।

भक्ति आंदोलन के मूल सिद्धांत हैं

1. सभी इंसान बराबर हैं
2. ब्राह्मणों के जाति भेदभाव और प्रभुत्व की अस्वीकृति
3. भक्ति अनुष्ठान से अधिक महत्वपूर्ण है।
4. सेवा (चैरिटी) जैसे सामाजिक दान की शुरुआत की।
5. अहिंसा में विश्वास (अहिंसा)

तमिलनाडु और केरल	अलवर (विष्णु के भक्त) और नयनार (शिव के भक्त)
कर्नाटक	बसवाना, अक्कामाहादेवी, अल्लामा प्रभु
महाराष्ट्र	ज्ञानदेव, नामदेव और तुकाराम
उत्तरी भारत	रामानंद, चैतन्य महाप्रभु, गुरु नानक, कबीर दास, रवि दास, नानक, मीराबाई

भक्ति आंदोलन के परिणाम

- भक्ति आंदोलन को भारतीय समाज का सुधार माना जाता था क्योंकि इसने पदानुक्रमित समाज के ध्यान में समानता और मानवता लाई थी।
- निम्न वर्ग बहुत महत्व की स्थिति में पहुंच गए क्योंकि यहाँ वे उच्च वर्गों द्वारा अधिक दबाए नहीं गए थे।
- चूंकि भक्ति आंदोलन ने पुरुषों और महिलाओं को समान महत्व दिया, इसलिए इससे समाज में महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ।
- भक्ति आंदोलन ने क्षेत्रीय भाषाओं जैसे हिंदी, मराठी, बंगाली, कन्नड़ आदि के विकास के लिए एक प्रेरणा प्रदान की।

नीचे दी गई तालिका भक्ति आंदोलन के कुछ प्रसिद्ध समर्थकों की एक सूची देती है

अंदाल	• अकेली महिला अलवार थी। • उसने स्वयं को विष्णु के प्रिय के रूप में देखा; • उनके छंद देवता के प्रति उनके भक्ति प्रेम को व्यक्त करते हैं।

कारइक्काल अम्मई	• 63 नयनार के बीच 3 महिला नयनारों में से एक। • शिव भक्त ने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तप का मार्ग अपनाया।
आदि शंकरचार्य	• इन्होने हिंदू पुनरुत्थान आंदोलन शुरू किया। • उनका सिद्धांत अद्वैत या अद्वैत वेदांत का था-व्यक्तिगत आत्मा ब्रह्म (सर्वोच्च आत्मा या भगवान) से अलग नहीं है। • चूंकि ब्रह्म ही परम सत्य है, इसलिए मुक्ति स्वयं के इस स्वरूप की सहज अनुभूति में निहित है। शंकर के अनुसार, मोक्ष या मुक्ति केवल ज्ञान के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है जो हमारे मन को शुद्ध करने और हमारे अज्ञान को नष्ट करने में मदद करती है।
माधवाचार्य	• माधव कन्नड़ क्षेत्र से है जिसका प्रचार 13 वीं शताब्दी में हुआ था। • उन्होंने द्वैतवाद (द्वैतवाद)के सिद्धांत का प्रचार किया। • उनका दर्शन था कि दुनिया एक भ्रम नहीं बल्कि एक वास्तविकता है। भगवान, आत्मा, वस्तु प्रकृति में अद्वितीय है।
रामानुज	• उन्होंने 12 वीं शताब्दी में विशिष्टाद्वैत का प्रचार किया। • उनके अनुसार, भगवान सगुणब्रह्म है। • उन्होंने प्रभातीमर्ग या भगवान के प्रति आत्म समर्पण के मार्ग को प्रोत्साहित किया। • उन्होंने समाज के निचले वर्ग को वैष्णव धर्म में आमंत्रित किया।
सूरदास	• वे वल्लभाचार्य के शिष्य थे। • उन्होंने भारत के उत्तरी भाग में कृष्ण पंथ को लोकप्रिय बनाया।
मीराबाई	• वह कृष्ण की बहुत बड़ी भक्त थीं। • वह अपने भजनों के लिए राजस्थान में लोकप्रिय हुईं।
तुलसीदास	• वे राम के उपासक थे। • उन्होंने रामायण के हिंदी संस्करण प्रसिद्ध रामचरितमानस की रचना की।
रामानंद	• उनका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। • वह रामानुजाचार्य से प्रेरित थे। • उन्होंने रामायण के हिंदी संस्करण प्रसिद्ध रामचरितमानस की रचना की।

	• बाद में उन्होंने अपने स्वयं के संप्रदाय की स्थापना की और बनारस और आगरा में हिंदी में अपने सिद्धांतों का प्रचार किया। • रामानंद अपने विचारों को फैलाने के लिए स्थानीय भाषा का इस्तेमाल करने वाले पहले व्यक्ति थे। • उन्होंने जाति व्यवस्था का विरोध किया और जाति के बावजूद समाज के सभी वर्गों से अपने शिष्यों को चुना।

362. बसवन्ना (Basavanna)

- बसवन्ना 12 वीं शताब्दी के दार्शनिक, राजनेता, कन्नड़ कवि और कर्नाटक, भारत में कलचुरी-वंश के राजा बिज्जला प्रथम के शासनकाल के दौरान एक समाज सुधारक थे।
- बसवेश्वर का जन्म **1131** ई. के दौरान बागेवाड़ी (कर्नाटक के अविभाजित बीजापुर जिले के) में हुआ था।
- वह लिंगायत संप्रदाय के संस्थापक संत थे।
- उनका आध्यात्मिक अनुशासन निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित था -
    - अरिवु (सच्चा ज्ञान)
    - आचार्य (सही आचरण)
    - अनुभव (दिव्य अनुभव)
- बसवेश्वर ने दो और बहुत महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक सिद्धांत दिए। वो हैं:
    - कयाक (ईश्वरीय कार्य): इसके अनुसार, समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पसंद का काम करना चाहिए और इसे पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए।
    - दसोहा (समान वितरण):
        - समान काम के लिए समान आय होनी चाहिए।
        - कार्यकर्ता (कायाकजीवी) अपनी मेहनत की कमाई से अपना दैनिक जीवन व्यतीत कर सकता है। लेकिन उसे कल के लिए धन या संपत्ति को सुरक्षित नहीं रखना चाहिए। उसे समाज और गरीबों के लिए अधिशेष धन का उपयोग करना चाहिए।
- यह व्यापक अनुशासन भक्ति (भक्ति), ज्ञान (ज्ञान), और क्रिया (क्रिया) को अच्छी तरह से संतुलित तरीके से शामिल करता है।
- यह मार्ग लिंगांगयोग (ईश्वर के साथ मिलन) के समग्र दृष्टिकोण की वकालत करता है।
- इसने 12वीं शताब्दी में सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक क्रांति लाई।
- कल्याण में, कलचुरी राजा बिज्जल (**1157-1167,** ईस्वी) ने बसवेश्वर को प्रारंभिक चरण में, अपने दरबार में और बाद में प्रधान मंत्री के रूप में एक कर्णिका (लेखाकार) के रूप में नियुक्त किया।
- यहाँ, बसवेश्वर ने पारंपरिक समाज की सभी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ विद्रोह किया और विभिन्न पहलुओं में भारी बदलाव लाया।
- उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण और 'कल्याण राज्य' (कल्याणकारी राज्य) की स्थापना के कार्य ने वर्ग, जाति, पंथ और लिंग के बावजूद समाज के सभी नागरिकों के लिए एक नई स्थिति और अवस्था प्रदान की।
- उन्होंने अनुभव मंडप की स्थापना की, जो व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों सहित सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर की मौजूदा समस्याओं पर चर्चा करने के लिए सभी के लिए एक सामान्य मंच था।
    - इस प्रकार, यह भारत की पहली और सबसे महत्वपूर्ण संसद थी, जहां शरण (कल्याणकारी समाज के नागरिक) एक साथ बैठे और एक लोकतांत्रिक व्यवस्था के समाजवादी सिद्धांतों पर चर्चा की।
- शरणों की वे सभी चर्चाएँ वचन के रूप में लिखी गई हैं

363. संत कबीर (Saint Kabir)

समाचार में: हाल ही में संत कबीरदास की याद में 24 जून, 2021, को संत कबीर दास जयंती के रूप में मनाया गया।

- कबीरदास जयंती हिंदू चंद्र कैलेंडर के अनुसार ज्येष्ठ पूर्णिमा तिथि को मनाई जाती है।

कबीर के बारे में:

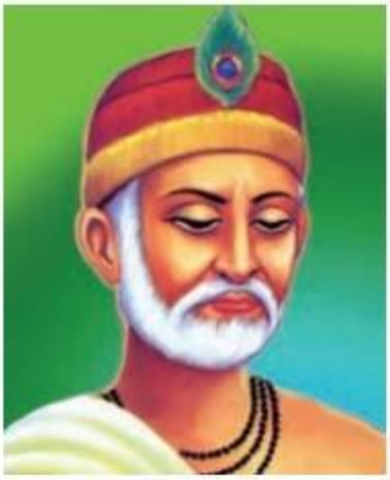

- संत कबीर दास का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में हुआ था।
- वह 15 वीं शताब्दी के रहस्यवादी कवि, संत और समाज सुधारक और भक्ति आंदोलन के प्रस्तावक थे।
- उनका प्रारंभिक जीवन एक मुस्लिम परिवार में गुजरा था, लेकिन वह अपने शिक्षक, हिंदू भक्ति नेता रामानंद से काफी प्रभावित थे।
- कबीर दास के लेखन का भक्ति आंदोलन पर बहुत प्रभाव पड़ा और इसमें कबीर ग्रंथावली, अनुराग सागर, बीजक और सखी ग्रंथ जैसे ग्रंथ शामिल हैं।
- उनके छंद सिख धर्म के ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में पाए जाते हैं।
- उनके काम का प्रमुख हिस्सा पांचवें सिख गुरु, गुरु अर्जन देव द्वारा एकत्र किया गया था।
- वह अपने दो-पंक्ति दोहे के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते थे, जिन्हें 'कबीर के दोहे' के नाम से जाना जाता था।
- भाषा: कबीर की कृतियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गईं, जिन्हें समझना आसान था। वह लोगों को जागरूक करने के लिए दोहों में लिखते थे।
- कबीर की विरासत अभी भी कबीर के पंथ के नाम से जाने जाने वाले पंथ के माध्यम से चल रही है, एक धार्मिक समुदाय जो उन्हें संस्थापक मानता है।

364. आदि शंकरचार्य (Adi Shankaracharya)

- इनका जन्म 11 मई 788 ई. को कोच्चि, केरल के पास कलाडी में हुआ। इन्होने 33 वर्ष की आयु में केदार तीर्थ में समाधि ली।
- इन्होने अद्वैत के सिद्धांत (अद्वैतवाद या अद्वैतवाद) को प्रतिपादित किया।
    - अद्वैत शब्द इस विचार को संदर्भित करता है कि सच्चा आत्म, आत्मा, ब्रह्म के समान है
    - केवल ब्रह्म ही अंततः वास्तविक (सर्वोच्च आत्मा या ईश्वर) है, अभूतपूर्व क्षणिक संसार ब्रह्म का एक भ्रामक स्वरूप (माया) है।
    - अद्वैत वेदांत की जड़ें प्राचीनतम उपनिषदों से मिलती हैं।
    - अद्वैत वेदान्तिनों ने संसार की इस भ्रमशीलता को पहचानने और विद्या प्राप्त करने के माध्यम से मोक्ष (मुक्ति) की खोज की।

- अद्वैत वेदांत जीवनमुक्ति पर जोर देता है, यह विचार कि मोक्ष (स्वतंत्रता, मुक्ति) अन्य भारतीय दर्शन के विपरीत इस जीवन में प्राप्त किया जा सकता है जो मृत्यु के बाद विधिमुक्ति, या मोक्ष पर जोर देते हैं।

- अद्वैत को एक धर्म के बजाय एक दर्शन या आध्यात्मिक मार्ग माना जाता है, क्योंकि इसे मानने वालों को किसी विशेष विश्वास या संप्रदाय की आवश्यकता नहीं होती है।

- उन्होंने विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और शक्ति के देवताओं पर लड़ रहे हिंदुओं के विभिन्न समूहों को पंचायतन पूजा के माध्यम से, पांच देवताओं की एक साथ पूजा के माध्यम से एकजुट करने की भी मांग की। उन्होंने यह भी समझाया कि सभी देवता एक ब्रह्म, अदृश्य सर्वोच्च होने के विभिन्न रूप थे।

- शंकराचार्य ने संस्कृत में वैदिक सिद्धांत (उपनिषद, ब्रह्म सूत्र और भगवद गीता) पर कई भाष्य लिखे।

- उनका प्रमुख कार्य ब्रह्मसूत्रभाष्य (ब्रह्म सूत्र पर भाष्य) है।

- उनका सबसे प्रसिद्ध स्तोत्र भजगोविन्द स्तोत्र है।

- उन्होंने निर्वाण शातकम् की भी रचना की।

- वे शिव के भक्त थे।

- अपने दार्शनिक योगदान के अलावा, उन्हें भारत के रणनीतिक बिंदुओं पर मंदिरों के निर्माण के अपने ठोस प्रयासों के माध्यम से पूरे भारत को एकीकृत करने के लिए भी जाना जाता है। भारत के चारों कोनों में उनके मठों (मठों) ने वेदों के ज्ञान को वर्तमान युग तक बढ़ाया है।
  - दक्षिण में श्रृंगेरी, कर्नाटक
  - पश्चिम में द्वारका, गुजरात
  - पूर्व में ओडिशा में, जगन्नाथ पुरी
  - उत्तर में उत्तराखंड में, बद्रीनाथ

365. सूफीवाद का संक्षिप्त अवलोकन (Brief Overview of Sufism)

- सूफीवाद इस्लाम का एक रहस्यमय रूप है, अभ्यास का एक स्कूल जो तपस्या पर जोर देता है, भगवान की आध्यात्मिक खोज पर ध्यान केंद्रित करता है और भौतिकवाद को दूर करता है।

- रहस्यवादी, जिन्हें सूफी कहा जाता है, गहरी भक्ति के व्यक्ति थे जो इस्लामी साम्राज्य की स्थापना के बाद धन के प्रदर्शन और नैतिकता के पतन से घृणा करते थे।

- सूफियों ने अक्सर मुस्लिम धार्मिक विद्वानों द्वारा मांगे गए विस्तृत अनुष्ठानों और व्यवहार के कोड को खारिज कर दिया। उन्होंने बाहरी धार्मिकता को खारिज कर दिया और इसके बजाय सभी साथी मनुष्यों के प्रति करुणा पर जोर दिया।

- ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति पर बहुत जोर दिया गया है।

- उन्होंने एक दूसरे धर्मों के कई विचारों को अपनाया।

- 'सूफी' शब्द संभवतः अरबी के 'सूफ' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है 'ऊन पहनने वाला'। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऊनी कपड़े आमतौर पर तपस्वियों से जुड़े होते थे। शब्द का एक अन्य संभावित मूल 'सफा' है जिसका अर्थ अरबी में शुद्धता है।

- दिल्ली सल्तनत के शासनकाल के दौरान 10 वीं और 11 वीं शताब्दी में भारत में सूफीवाद को प्रमुखता मिली।

- सूफी सिलसिले दो प्रकार के थे -
  - बा-शरा- जो इस्लामी सिद्धांतों के समर्थक थे।
  - बे-शरा- जो इस्लामी सिद्धांतों से बंधे नहीं थे।
- बा-शरा को 'मस्त कलंदर' भी कहा जाता था। उनमें घूमने वाले भिक्षु शामिल थे जिन्हें बाबा भी कहा जाता था।
- संतों ने स्वयं को बारह सिलसिलों या आदेशों में संगठित किया। उनमें से महत्वपूर्ण चिश्ती और सुहरावर्दी सिलसिला थे, जो दोनों बा-शरा क्रम से संबंधित थे।

चिश्ती **सिलसिला** (चिश्तियाह)

- यह फारस और मध्य एशिया में उत्पन्न हुआ।
- प्रथम संत अबू इशाक शमी थे। उन्होंने अफगानिस्तान में चिश्ती-ए-शरीफ में इस क्रम की स्थापना की। 940 ई. में उनकी मृत्यु हो गई।
- मोइनुद्दीन चिश्ती ने इस सिलसिले को भारत में बहुत लोकप्रिय बनाया और आज भी जारी है, जिनकी मृत्यु 1236 में अजमेर में हुई थी। उनका विश्राम स्थल अजमेर, राजस्थान में अजमेर शरीफ दरगाह है।
- इस सिलसिले के एक अन्य महत्वपूर्ण संत निजामुद्दीन औलिया (जिनकी मृत्यु 1335 में दिल्ली में हुई थी) थे।
- इस सिलसिले के संत स्वतंत्र रूप से लोगों के साथ घुल-मिल जाते थे और तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे।
- वे स्वतंत्र रूप से निम्न वर्ग के लोगों, यहां तक कि हिंदुओं के साथ भी घुलमिल जाते थे। चिश्ती प्रशासन या पैसे से कोई लेना-देना नहीं चाहते थे। वे सादा जीवन व्यतीत करते थे।

सुहरवर्दी **सिलसिला**

- अब्दुल-वाहिद अबू नजीब अस-सुहरावर्दी द्वारा स्थापित।
- इस आदेश के नेता भी समृद्ध थे और महत्वपूर्ण सरकारी पदों पर आसीन थे।
- एक प्रसिद्ध संत बहाउद्दीन जकारिया इसी से संबंधित हैं।

भारत के अन्य प्रमुख सूफी संत हैं:

अबू वली कलंदर	• घूमने वाले भिक्षुओं में से एक थे जिन्हे 'दरवेश' कहा जाता था। • भारत में कलंदरिया क्रम पेश किया।
अब्दुल्ला शत्तारी	• लोधी राजवंश के दौरान भारत में शतारी क्रम की शुरुआत की। • तानसेन इस सिलसिले के अनुयायी थे। • ईश्वर के साथ सीधे संपर्क का दावा किया।
शेख निज़ामत उल्लाह	• भारत में कादरी सिलसिला प्रस्तुत किया।

ख्वाजा पीर मोहम्मद	• भारत में नक्शबंदी सिलसिले की शुरुआत की। • रूढ़िवादी संप्रदाय वहादुत-उल-वुजुद ने वहादत-उल-शाहुद के शिया दर्शन का विरोध किया। • 'रेड-ए-काफ़ीद'('Red-i-Khafid) लिखा।
शेख सरफुदीन याह्या	• भारत में लोकप्रिय फिरदौसी सिलसिले से संबंधित । • वह ख्वाजा निजामुद्दीन फिरदौसी के शिष्य थे।
मियां बयाजिद अंसारी (पीर रोशन)	• खै-उल-ब्यान' नामक पुस्तक लिखी। • अकबर के शासनकाल के दौरान रासनिया सिलसिले की शुरुआत की।
मुल्ला मोहम्मद महदी	• रूढ़िवादी मुसलमानों का विरोध किया। • भारत में महादवी सिलसिले की शुरुआत की।
नूरुद्दीन नूरानी (वली)	• रूढ़िवादी मुसलमानों का विरोध किया। • भारत में रिसी सिलसिले पेश किया।

366. सूफी शब्दावली (Terms in Sufism)

- सूफी, पीर, मुर्शिद - संत
- मुरीद - अनुयायी
- खानकाह - वह स्थान जहाँ सूफी रहते थे, धर्मशालाएँ
- खलीफा - शिष्य
- ज़िक्र - भगवान के नाम का पाठ
- तौबा - पश्चाताप
- फना - सर्वशक्तिमान के साथ आध्यात्मिक विलय
- उर्स - मौत
- समा - संगीत सभा
- सुल-ए-खुल- सार्वभौमिक भाईचारा
- उलमा (आलिम का बहुवचन, या जो जानता है) इस्लामी अध्ययन के विद्वान हैं।
- कियास- सादृश्य द्वारा तर्क
- इज्मा-समुदाय की आम सहमति
- धिम्मी- जो सुरक्षित है
- शहादा-रसूल/ दूत-पैगंबर मुहम्मद
- नमाज/सलात-दिन में पांच बार नमाज अदा करना
- जकात-भिक्षा देना
- सौम- रमज़ान के महीने में उपवास

- हज / ज़ियारत - मक्का की तीर्थ यात्रा करना
- बरकत - सूफी आध्यात्मिक अनुग्रह
- फुतुह - बिना मांगे-दान के लिए
- औकाफ- चैरिटेबल ट्रस्ट्स
- इनाम- कर मुक्त भूमि

367. निजामुद्दीन औलिया (Nizamuddin Auliya)

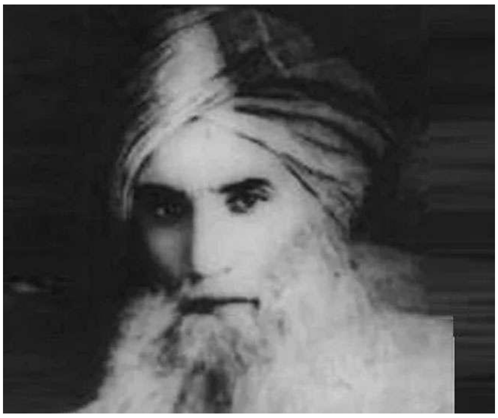

- सैयद मुहम्मद निजामुद्दीन औलिया भारतीय उपमहाद्वीप क्षेत्र के सबसे प्रसिद्ध सूफी संतों में से एक थे।
- हज़रत निज़ामुद्दीन, और महबूब-ए-इलाही (भगवान के प्रिय) के रूप में भी जाना जाता है, वह एक सुन्नी मुस्लिम विद्वान और चिश्ती सिलसिले के सूफी संत थे।
- अधिकांश चिश्ती सूफी संतों की तरह, निजामुद्दीन औलिया ने प्रेम को ईश्वर को प्राप्त करने के साधन के रूप में जोर दिया। उनका मानना था कि ईश्वर के प्रेम में मानवता का प्रेम निहित है।
- निजामुद्दीन औलिया का जन्म 1238 में उत्तर प्रदेश के बदायूं में हुआ था।
- निजामुद्दीन औलिया बाबा फरीद के उत्तराधिकारी बने।
- वह अजमेर के हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के चौथे आध्यात्मिक उत्तराधिकारी (खलीफा) थे।
- निजामुद्दीन औलिया चिश्ती निजामी सिलसिले के संस्थापक थे।
- उन्होंने गयासपुर में अपना खानकाह (पूजा स्थल, सूफी अनुष्ठान) बनवाया, जिसमें अमीर और गरीब सभी तरह के लोग थे।
- उनके शिष्य थे -
    - नसीरुद्दीन चिराग देहलवी जो उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बने
    - कवि अमीर खुसरो।
    - मुहम्मद हुसैनी **गे**सुदराज, गुलबर्गा।
    - शाह नियाज अहमद बरेलवी

368. अजमेर शरिफ (Ajmer Sheriff)

समाचार में: अजमेर शरीफ दरगाह, अजमेर, राजस्थान, भारत में स्थित श्रद्धेय सूफी संत, मोइनुद्दीन चिश्ती की एक सूफी दरगाह (दरगाह) है। इस दरगाह में चिश्ती की कब्र (मकबरा) है।

मोइनुद्दीन चिश्ती के बारे में -

- मोइनुद्दीन चिश्ती जिन्हें ख्वाजा गरीब नवाज के नाम से भी जाना जाता है, एक सूफी रहस्यवादी संत और दार्शनिक थे।

- उनका जन्म **1141-42 CE** में ईरान में सिजिस्तान (आधुनिक सिस्तान) में हुआ था।
- शेख उस्मान हरवानी से **52** वर्ष की आयु में खिलाफत प्राप्त करने के बाद, वह हज पर मक्का और मदीना गए। जब वह मदीना में पैगंबर की मस्जिद में प्रार्थना कर रहे थे, कहा जाता है कि तब ख्वाजा ने पैगंबर को हिंदुस्तान और अजमेर शहर जाने के लिए कहा।
- उस समय उन्हें पता नहीं था कि अजमेर कहाँ है। हालाँकि, वह बगदाद और हेरात होते हुए लाहौर और फिर दिल्ली और अजमेर के लिए रवाना हुए।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेर में रहने और उपदेश देने लगे।
- आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से भरपूर उनके शिक्षाप्रद प्रवचनों ने जल्द ही स्थानीय जनता के साथ-साथ राजाओं और कुलीनों तथा किसानों और गरीबों को दूर-दूर से आकर्षित किया।

ख्वाजा गरीब नवाज दरगाह या अजमेर शरीफ दरगाह के बारे में -

- यह अजमेर, राजस्थान, भारत में स्थित श्रद्धेय सूफी संत, मोइनुद्दीन चिश्ती का एक सूफी दरगाह (दरगाह) है।
- दरगाह में चिश्ती की कब्र (मकबरा) है।
- सफेद संगमरमर से निर्मित, इसमें **11** मेहराब और इमारत की पूरी लंबाई के माध्यम से चलने वाला एक फारसी शिलालेख है।
- इसमें एक संगमरमर का गुंबद है और अंदर का वास्तविक मकबरा एक चांदी के मंच से घिरा हुआ है।
- स्थानीय और राष्ट्रीय शासकों के यहां प्रार्थना करने के लिए आने के कारण संरचना का विस्तार किया गया था। 1332 में, दिल्ली के सुल्तान (तुगलक वंश) मोहम्मद बिन तुगलक ने एक दरगाह (मुस्लिम संतों की कब्र के चारों ओर निर्मित एक स्मारक संरचना, जहां सभी धर्मों के लोग प्रार्थना करने और मन्नतें मांगने आते हैं) का निर्माण किया और यह वर्षों में लोकप्रियता और आकार में बढ़ गया।
- हर धर्म, जाति, पंथ के लोग यहां आते हैं और इस सूफी संत का आशीर्वाद लेने के लिए एक पारंपरिक चादर चढ़ाते हैं।
- बाद में कई संतों सहित कई शासकों द्वारा संरचना का विस्तार किया गया।

369. बीबी फातिमा (Bibi Fatima)

- बीबी फातिमा सैम बाबा फरीद गंजशकर और हजरत निजामुद्दीन औलिया की समकालीन थीं।
- बीबी फातिमा सैम, इराक-ईरान सीमा पर एक जगह की थी, लेकिन एक आंतरिक आग्रह के जवाब में भारत आई थी। वह अंततः दिल्ली में बस गई, जहाँ बाद में उनकी मृत्यु हो गई।
- वह भारत की पहली सूफी महिला संत थीं, जिनके अनुयायी सभी समुदायों से हैं और जिन्हें दिल्ली की राबिया के रूप में सम्मानित किया जाता है।
- उनकी दरगाह दिल्ली में बापा नगर (काका नगर के पास) में स्थित है।
- निज़ामुद्दीन औलिया ने उन्हें 'अप्पा' कहा, जो एक बड़ी बहन के लिए प्यार से इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है।
- बीबी एक आध्यात्मिक वैरागी थीं, जिनके लिए धर्म सिर्फ एक बाहरी आवरण था।

370. तिब्बती बौद्ध धर्म (Tibetan Buddhism)

- तिब्बती बौद्ध धर्म (जिसे भारत-तिब्बत बौद्ध धर्म, हिमालयी बौद्ध धर्म और उत्तरी बौद्ध धर्म भी कहा जाता है) तिब्बत और भूटान में प्रचलित बौद्ध धर्म का रूप है, जहाँ यह प्रमुख धर्म है।
- तिब्बती बौद्ध धर्म भारतीय बौद्ध धर्म के नवीनतम चरणों से उपजी महायान बौद्ध धर्म के रूप में विकसित हुआ और इसमें कई वज्रयान तत्व भी शामिल थे।
- इस प्रकार यह गुप्तकालीन प्रारंभिक मध्ययुगीन काल (500 से 1200 सीई) के बाद के कई भारतीय बौद्ध तांत्रिक प्रथाओं को संरक्षित करता है।
- प्रारंभ में, तिब्बती बौद्ध धर्म मुख्य रूप से मंगोल युआन राजवंश (1271-1368) के प्रभाव के कारण तिब्बत के बाहर फैल गया, जिसकी स्थापना कुबलई खान ने की थी, जिसने चीन, मंगोलिया और साइबेरिया के कुछ हिस्सों पर शासन किया था।
    - आधुनिक युग में, तिब्बती प्रवासी (1959 के बाद) के प्रयासों के कारण तिब्बती बौद्ध धर्म एशिया के बाहर फैल गया है।
- तिब्बती बौद्ध धर्म मुख्य रूप से मध्यमिका और योगाचार दर्शन के कठोर बौद्धिक विषयों पर आधारित है और मध्य एशिया और विशेष रूप से तिब्बत में विकसित तांत्रिक अनुष्ठान प्रथाओं का उपयोग करता है।
- तिब्बती बौद्ध धर्म में प्रारंभिक थेरवाद बौद्ध धर्म के मठवासी विषयों और स्वदेशी तिब्बती धर्म, बॉन की शामानी धर्म से संबंधित विशेषताओं को भी शामिल किया गया है।
- बौद्ध धर्म मुख्य रूप से 7 वीं से 10 वीं शताब्दी के दौरान तिब्बत में प्रसारित हुआ। उल्लेखनीय प्रारंभिक शिक्षक 8 वीं शताब्दी के तांत्रिक गुरु पद्मसंभव और अधिक रूढ़िवादी महायान शिक्षक शांतिरक्षित थे।
- तिब्बती बौद्ध धर्म की विशेषता है
    - आबादी का असामान्य रूप से बड़ा वर्ग सक्रिय रूप से धार्मिक गतिविधियों में लगा हुआ है।
    - दिव्य प्राणियों की विशाल संख्या (प्रत्येक अपने परिवार, संघ, और प्रशांत और भयानक पहलुओं के साथ), जिन्हें धार्मिक रूप से परिष्कृण द्वारा मानसिक जीवन का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व माना जाता है और आम लोगों द्वारा वास्तविकताओं के रूप में स्वीकार किया जाता है।
    - "पुनर्जन्म लामा" की इसकी प्रणाली (लामा = तिब्बती बौद्ध धर्म में आध्यात्मिक नेता)
    - दलाई लामा (तिब्बती बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक प्रमुख) के कार्यालय और व्यक्ति में आध्यात्मिक और लौकिक अधिकार का पारंपरिक विलय;

तिब्बती बौद्ध धर्म में चार प्रमुख स्कूल हैं, अर्थात् निंगम्मा (सी. 8 वीं शताब्दी), काग्यू (11 वीं शताब्दी), शाक्य (1073), और गेलुग (1409).

- निंगम्मा
    - वज्रयान के उद्घोषक गुरु पद्मसंभव द्वारा स्थापित।
    - अतियोग (Dzogchen)- मन की मौलिक प्रकृति - शून्यता - विचारहीनता को प्राप्त करने का लक्ष्य।
- काग्यू (मौखिक वंश)

    - तिलोपा, नरोपा, मारपा, मिलारेपा और गम्पोपा
    - कर्मा काग्यू, ड्रिकिंग काग्यू, दृक्पा वंश और तकलांग काग्यू।

- शाक्य (पोंपो री हिल्स- **pale earth)**

    - कोंचोग ग्यालपो द्वारा स्थापित
    - सूत्र और तंत्र दोनों का पालन करता है (दर्शन और क्रिया)

- गेलुग (पुण्य) **Yellow hat school**

    - जे चोंखापास द्वारा स्थापित
    - पहला मठ गेंडुन
    - तंत्र की ओर बढ़ने से पहले सूत्रों का अच्छी तरह से प्रशिक्षण लें।

- गेदुन द्रुपा और गेंडुन ग्यात्सो ने पहले और दूसरे दलाई लामा का नाम रखा।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 64 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

451. सिख धर्म (Sikhism)

452. ईसाई धर्म (Christianity)

453. पारसी धर्म (Zoroastrianism)

454. यहूदी धर्म (Judaism)

455. सरना धर्म (Sarna Religion)

456. बहाई आस्था (Bahai Faith)

457. वैदिक मंत्रोच्चार और रामलीला (Vedic Chanting and Ramlila)

458. कुटियाट्टम और राममण (Kutiyattam and Ramman)

459. मुदियेट्टू और कालबेलिया (Mudiyettu and Kalbelia)

460. लद्दाख का चाऊ नृत्य और बौद्ध मंत्रोच्चार (Chau dance and Buddhist chanting of Ladakh)

451. सिख धर्म (Sikhism)

- पंजाबी भाषा में 'सिख' शब्द का अर्थ 'शिष्य' होता है। सिख धर्म की स्थापना सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में गुरु नानक देव ने की थी। गुरु नानक का जन्म 15 अप्रैल, 1469 को पश्चिमी पंजाब के तलवंडी गांव में हुआ था।
- सिख भगवान के शिष्य हैं जो दस सिख गुरुओं के लेखन और शिक्षाओं का पालन करते हैं।
- सिख एक ईश्वर में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि उन्हें अपने हर काम में भगवान को याद करना चाहिए। इसे सिमरन कहते हैं।
- सिख अपने विश्वास को गुरमत (पंजाबी: "गुरु का मार्ग") कहते हैं।
- सिख परंपरा के अनुसार, सिख धर्म गुरु नानक (1469-1539) द्वारा स्थापित किया गया था और बाद में नौ अन्य गुरुओं के उत्तराधिकार के नेतृत्व में किया गया था।
- सिखों का मानना है कि सभी 10 मानव गुरुओं में एक ही आत्मा का वास था। 10 वीं की मृत्यु पर, गुरु गोबिंद सिंह (1666-1708), शाश्वत गुरु की आत्मा ने खुद को सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब (गुरु के रूप में ग्रंथ) में स्थानांतरित कर दिया, जिसे आदि ग्रंथ (प्रथम खंड) के रूप में भी जाना जाता है, जिसे बाद में एकमात्र गुरु माना जाता था।
- पांचवें गुरु, गुरु अर्जन के समय तक सिख धर्म अच्छी तरह से स्थापित हो चुका था। गुरु अर्जन ने अमृतसर को सिख दुनिया की राजधानी के रूप में स्थापित किया और सिख शास्त्र की पहली अधिकृत पुस्तक, आदि ग्रंथ का संकलन किया।
- दुनिया भर में 25 मिलियन से अधिक सिख हैं, जिनमें से अधिकांश भारतीय राज्य पंजाब में रहते हैं।

दर्शन और विश्वास

- एक ही ईश्वर है (एक ओंकार "एक" एक है और "ओंकार" ईश्वर है)। वह सभी धर्मों के सभी लोगों के लिए एक ही भगवान हैं।
- मोक्ष प्राप्त करने और भगवान के साथ विलय करने का सच्चा मार्ग संसार के त्याग या ब्रह्मचर्य की आवश्यकता नहीं है, बल्कि एक गृहस्थ का जीवन जीने, ईमानदारी से जीवन जीने और सांसारिक प्रलोभनों और पापों से बचने की आवश्यकता है। गुरु नानक ने दिव्य नाम पर ध्यान के माध्यम से मुक्ति के संदेश पर जोर दिया।
- सिख धर्म अंध अनुष्ठानों जैसे उपवास, तीर्थ स्थलों का दौरा, अंधविश्वास, मृतकों की पूजा, मूर्ति पूजा आदि की निंदा करता है।
- सिख धर्म प्रचार करता है कि भगवान की नजर में विभिन्न जातियों, धर्मों या लिंग के लोग सभी समान हैं। यह पुरुषों और महिलाओं की पूर्ण समानता सिखाता है। महिलाएं किसी भी धार्मिक समारोह में भाग ले सकती हैं या कोई सिख समारोह कर सकती हैं या प्रार्थना में मण्डली का नेतृत्व कर सकती हैं।

सिख धर्म का विकास

- सिख धर्म का विकास भक्ति आंदोलन और वैष्णव हिंदू धर्म से प्रभावित था। हालाँकि, सिख धर्म केवल भक्ति आंदोलन का विस्तार नहीं था।
- सिख धर्म का विकास उस समय हुआ जब इस क्षेत्र पर मुगल साम्राज्य का शासन था। सिख गुरुओं में से दो-गुरु अर्जन और गुरु तेग बहादुर, इस्लाम में परिवर्तित होने से इनकार करने के बाद, मुगल शासकों द्वारा प्रताड़ित और निष्पादित किए गए थे। सिखों के इस्लामी युग के उत्पीड़न ने खालसा की स्थापना को अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता के लिए एक आदेश के रूप में शुरू किया।
- अंतिम जीवित गुरु, गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा आदेश (जिसका अर्थ है 'शुद्ध'), सैनिक-संतों की स्थापना की। खालसा प्रतिबद्धता, समर्पण और एक सामाजिक जागरूक के उच्चतम सिख गुणों को कायम रखता है।
- खालसा वे पुरुष और महिलाएं हैं जो सिख बपतिस्मा समारोह से गुजर चुके हैं और जो सिख आचार संहिता और सम्मेलनों का सख्ती से पालन करते हैं और विश्वास के निर्धारित भौतिक लेख पहनते हैं (5K: केश (बिना कटे बाल), कंघा (एक लकड़ी की कंघी), कारा (एक लोहे का कंगन), कचेरा (सूती जांघिया) और कृपाण (एक लोहे का खंजर))।

- सिख धर्म में पुजारी नहीं हैं, उन्हें गुरु गोबिंद सिंह ने समाप्त कर दिया था।
- सिखों के पास केवल गुरु ग्रंथ साहिब (ग्रंथी) के संरक्षक हैं, और कोई भी सिख गुरुद्वारा (एक सिख मंदिर) या अपने घर में गुरु ग्रंथ साहिब को पढ़ने के लिए स्वतंत्र है। गुरुद्वारे में सभी धर्मों के लोगों का स्वागत है।
- प्रत्येक गुरुद्वारे में एक मुफ्त सामुदायिक रसोई पाई जा सकती है जो सभी धर्मों के सभी लोगों को भोजन परोसती है। गुरु नानक ने सबसे पहले इस संस्था की शुरुआत की जो सेवा, विनम्रता और समानता के बुनियादी सिख सिद्धांतों को रेखांकित करती है।
- तीन कर्तव्य जो एक सिख को करने चाहिए; प्रार्थना करो, काम करो, दान करना।
    - नाम जपना: हर समय भगवान को ध्यान में रखना।
    - कीर्त कर्णा: ईमानदारी से जीवन यापन करना। चूंकि ईश्वर सत्य है, इसलिए एक सिख को ईमानदारी से जीना चाहिए। इसका मतलब सिर्फ अपराध से बचना नहीं है; सिख जुआ, भीख मांगने या शराब या तंबाकू उद्योगों में काम करने से बचते हैं।
    - वंदना: (शाब्दिक रूप से, अपनी कमाई को दूसरों के साथ साझा करना) दान देना और दूसरों की देखभाल करना।
- पांच दोष: सिख उन पांच दोषों से बचने की कोशिश करते हैं जो लोगों को आत्म-केंद्रित बनाते हैं, और उनके जीवन में भगवान के खिलाफ बाधाओं का निर्माण करते हैं। ये हैं वासना, लोभ और लालच, , संसार की वस्तुओं में आसक्ति, क्रोध और अभिमान।

<u>सिख आदेश के गुरु</u>

1.	गुरु नानक देव-**1469 से 1539**	• 10 गुरुओं के पहले - एक ईश्वर की अवधारणा का परिचय देते हुए सिख धर्म की स्थापना की। • उन्होंने गुरु का लंगर-आम रसोई की संस्था शुरू की, जहां बिना किसी भेदभाव के सभी को भोजन परोसा जाता है । • उन्होंने महिलाओं की समानता पर बल दिया और त्याग के मार्ग को अस्वीकार कर दिया और उन्होंने वेदों के अधिकार को अस्वीकार कर दिया। • वह मुगल सम्राट - बाबर के समकालीन थे।
2.	गुरु अंगद देव **1539 से 1552**	• उन्होंने गुरमुखी (पंजाबी का लिखित रूप) लिपि का आविष्कार और परिचय दिया । • उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब में नानक देव के लेखन को गुरमुखी लिपि में संकलित किया । • गुरु का लंगर की संस्था को लोकप्रिय और विस्तारित किया।
3.	गुरु अमरदास साहिब **1552 से 1574**	• उन्होंने हिंदू रूप की जगह सिखों के लिए आनंद कारज विवाह समारोह की शुरुआत की। • उन्होंने क्रमशः पुरुषों और महिलाओं के लिए धार्मिक मिशनों की मांजी और पीरी प्रणाली की स्थापना की। • उन्होंने सिखों के बीच, सती और परदाह प्रणाली के रिवाज को भी पूरी तरह से समाप्त कर दिया। • वह मुगल बादशाह - अकबर के समकालीन थे।

4.	गुरु राम दास **1574 से 1581**	• उन्होंने अमृतसर शहर की स्थापना की। • उन्होंने सिखों के पवित्र शहर अमृतसर में प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर का निर्माण शुरू किया। • उन्होंने मुस्लिम सूफी मियां मीर से हरमंदिर साहिब की आधारशिला रखने का अनुरोध किया।
5.	गुरु अर्जन देव **1581 से 1606**	• उन्होंने आदि ग्रंथ, सिखों के शास्त्रों का संकलन किया। • उन्होंने श्री दरबार साहिब का निर्माण पूरा किया जिसे अमृतसर में स्वर्ण मंदिर के रूप में भी जाना जाता है। • उन्होंने गोइंदवाल साहिब के पास तरनतारन साहिब शहर की स्थापना की। • वह सिख इतिहास में पहला महान शहीद बने जब सम्राट जहांगीर ने उसकी फांसी का आदेश दिया। इस प्रकार, उन्हें शहीदन-दे-सरताज (शहीदों का ताज) के रूप में सम्मानित किया गया।
6.	गुरु हर गोबिंद साहिब **1606 से 1644**	• वह गुरु अर्जन देव के पुत्र थे और उन्हें "सैनिक संत" के रूप में जाना जाता था। • उन्होंने एक छोटी सी सेना का आयोजन किया और विश्वास की रक्षा के लिए हथियार उठाने वाले पहले गुरु बने। • उन्होंने मुगल शासकों जहांगीर और शाहजहां के खिलाफ युद्ध छेड़ा। • वह गुरु अर्जन देव के पुत्र थे और उन्हें "सैनिक संत"के रूप में जाना जाता था।
7.	गुरु हर राय साहिब **1644 से 1661**	• हालांकि वह शांतिप्रिय व्यक्ति थे, उन्होंने कभी भी उन सशस्त्र सिख योद्धाओं को भंग नहीं किया, जिन्हें पहले गुरु हर गोबिंद द्वारा बनाए रखा गया था। • उसने मुगल शासक शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र दारा शिकोह को आश्रय दिया, जिसे बाद में औरंगजेब ने सताया। • उन्होंने सम्राट औरंगजेब के साथ संघर्ष से सावधानीपूर्वक परहेज किया और मिशनरी कार्यों के लिए अपने प्रयासों को समर्पित कर दिया।
8.	गुरु हर कृष्ण साहिब **1661 से 1664**	• वे गुरुओं में सबसे छोटे थे। उन्हें पांच साल की उम्र में गुरु के रूप में स्थापित किया गया था। • वह औरंगजेब के समकालीन थे और उनके द्वारा इस्लाम विरोधी ईशनिंदा के आरोप के तहत उन्हें दिल्ली बुलाया गया था।
9.	गुरु तेग बहादुर साहिब **1665 से 1675**	• उन्होंने आनंदपुर शहर की स्थापना की। • उन्होंने मुगल शासक औरंगजेब द्वारा हिंदू कश्मीरी पंडितों के जबरन धर्मांतरण का विरोध किया और इसके परिणामस्वरूप उन्हें सताया गया।
10.	गुरु गोबिंद सिंह साहिब	• अपने पिता गुरु तेग बहादुर की शहादत के बाद वे गुरु बने।

		• उन्होंने 1699 में खालसा की स्थापना की, जिसमें सिखों को अपनी रक्षा के लिए एक संत-सिपाही आदेश में बदल दिया। • मानव रूप में अंतिम सिख गुरु और उन्होंने सिखों के गुरुत्व को गुरु ग्रंथ साहिब को सौंप दिया।
11.	गुरु ग्रंथ साहिब	• आदि ग्रंथ के रूप में भी जाना जाता है) सिखों का ग्रंथ है। • ग्रंथ गुरुमुखी लिपि में लिखा गया था और इसमें सिख गुरुओं द्वारा बोले गए वास्तविक शब्द और छंद शामिल हैं। • इसे किसी भी जीवित व्यक्ति के बजाय सर्वोच्च आध्यात्मिक प्राधिकरण और सिख धर्म का प्रमुख माना जाता है।

452. ईसाई धर्म (Christianity)

ईसाई धर्म आज पूरी दुनिया में सबसे बड़ा धर्म है। दुनिया भर में इसके लगभग 2.168 बिलियन अनुयायी हैं, जो वैश्विक आबादी का लगभग 31% है।

- ईसाई धर्म भी हिंदू धर्म और इस्लाम के बाद भारत का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है, जिसमें लगभग 27.8 मिलियन (2.78 करोड़) अनुयायी हैं, जो भारत की जनसंख्या (2011 की जनगणना) का 2.3 प्रतिशत है।

इसके बारे में

- ईसाई धर्म, पहली शताब्दी ईस्वी में नासरत के यीशु (मसीह, या ईश्वर का अभिषिक्त) के जीवन, शिक्षाओं और मृत्यु से उपजी प्रमुख धर्म।
    - यीशु (4 ईसा पूर्व-ईस्वी 30 / 33) रोमन शासन के तहत फिलिस्तीन में एक यहूदी के रूप में पैदा हुए थे।
- विश्वास प्रणाली के अनुसार सभी ने पाप किया है और इसलिए भगवान से अलग हो गए हैं। ईसाई धर्म का प्राथमिक लक्ष्य मसीह में विश्वास के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करना है और कुछ लोग संस्कारों का पालन करने और अच्छे काम करने के माध्यम से इसे प्राप्त करने में विश्वास करते हैं।
- ईसाई मानते हैं कि केवल एक ईश्वर (एकेश्वरवादी) है, लेकिन यह कि वह तीन अलग-अलग रूपों में प्रकट होता है:
    - गॉड फादर
    - भगवान पुत्र
    - पवित्र आत्मा
- ईसाई धर्म का केंद्रीय सिद्धांत यीशु में ईश्वर के पुत्र और मसीहा (मसीह) के रूप में विश्वास है। ईसाइयों का मानना है कि यीशु, मसीहा के रूप में, ईश्वर द्वारा मानवता के उद्धारकर्ता के रूप में अभिषेक किया गया था
- यीशु ने लोगों को परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना सिखाया।
- ईसा मसीह की बढ़ती लोकप्रियता और उनके उपदेशों से चिंतित, कुछ यहूदी पुजारियों ने उन्हें मारने की साजिश रची और उन्हें सूली पर चढ़ाने में सफल रहे। यीशु को रोमनों द्वारा एक अपराधी के रूप में क्रूस (सूली पर चढ़ाए जाने) पर मार दिया गया था, और ईसाई शिक्षा के अनुसार तीन दिनों के बाद वह मृतकों (पुनरुत्थान) में से जी उठे।

- मूल ईसाई विश्वास यह है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में विश्वास और स्वीकृति के माध्यम से, पापी मनुष्यों का भगवान से सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है, और इस तरह मोक्ष और अनन्त जीवन का वादा किया जाता है।
- रोम के सम्राट कॉन्सटेंटाइन के 313 ईस्वी में ईसाई धर्म में परिवर्तित होने के बाद ईसाई धर्म रोमन साम्राज्य का औपचारिक धर्म बन गया। धर्म को कैथोलिक या सार्वभौमिक के रूप में जाना जाता था, जिसका प्रमुख रोमन पोप था।

पवित्र पुस्तक

- ईसाई पवित्र पुस्तक बाइबिल है।
- बाइबिल हिब्रू, अरामी, ग्रीक और अंग्रेजी में लिखा 9 ईसा पूर्व से 1 ईस्वी डेटिंग लेखन का एक संग्रह है।
- बाइबल को 46 पुस्तकों के साथ पुराने नियम में और 27 के साथ नए नियम में विभाजित किया गया है।
- पुराना नियम एक हिब्रू पाठ है, जो यहूदियों और ईसाइयों दोनों के लिए पवित्र है और इसमें दुनिया के निर्माण के बारे में जानकारी है।
- यीशु मसीह का जीवन और शिक्षाएं, जो ईसाई विश्वास का केंद्र हैं, नए नियम में दर्ज हैं।
- ईसा मसीह का जीवन और शिक्षाएं, जो ईसाई विश्वास का केंद्र हैं, नए नियम में दर्ज हैं।
- ईसाई मानते हैं कि यीशु ही मसीह है, जिसके मसीहा के रूप में आने की भविष्यवाणी हिब्रू बाइबिल में की गई थी, जिसे ईसाई धर्म में ओल्ड टेस्टामेंट कहा जाता है, और नए नियम में इतिवृत किया गया है।

विभिन्न प्रकार के ईसाई

- यीशु के अनुयायियों के एक छोटे समूह के साथ इसकी शुरुआत से, ईसाई धर्म पूरी दुनिया में फैल गया है। आज, लगभग दो अरब लोग इसका अभ्यास करते हैं।
- किसी भी बड़े समूह की तरह, ईसाई धर्म ने सदियों से सत्ता के लिए कई अलग-अलग व्याख्याओं, असहमति और संघर्षों का अनुभव किया है।
- इनके कारण ईसाई धर्म की कई अलग-अलग शाखाओं का विकास हुआ है, जो यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान की विभिन्न तरीकों से व्याख्या करते हैं।
- ईसाई धर्म की तीन मूल धाराएँ हैं: रूढ़िवादी, प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक।
- 16 वीं शताब्दी में मार्टिन लूथर ने चर्च में कई सुधारों की वकालत की, जिसके कारण ईसाई समुदाय में एक और विभाजन हुआ और पूर्वोत्तर यूरोप में प्रोटेस्टेंट चर्चों का निर्माण हुआ। प्रोटेस्टेंट ने पोप के अधिकार को अस्वीकार कर दिया और बाइबल के कारण को एकमात्र अधिकार के रूप में आगे बढ़ाया।

453. पारसी धर्म (Zoroastrianism)

- पारसी धर्म के प्राचीन धर्म की नींव आधुनिक ईरान में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में आध्यात्मिक नेता और सुधारवादी जोरोस्टर (जिसे जरथुस्त्र के नाम से भी जाना जाता है) की शिक्षाओं और ज्ञान द्वारा रखी गई थी।
- यह अच्छाई और बुराई के द्वैतवादी ब्रह्मांड विज्ञान पर आधारित है। यह दुनिया के सबसे पुराने लगातार प्रचलित धर्मों में से एक है। भारत में, उन्हें 'पारसी' या 'फारस से एक' के रूप में जाना जाता है।

- पारसी धर्म ज्ञान के एक अप्रकाशित और परोपकारी देवता, अहुरा मज़्दा (बुद्धिमान भगवान) को अपने सर्वोच्च व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करता है।
- पारसी धर्म एक एकेश्वरवादी धर्म है यानी एक शक्तिशाली ब्रह्मांडीय इकाई में विश्वास। वह इकाई, इस मामले में, फ़ारसी में अहुरा मज़्दा या 'लॉर्ड ऑफ़ लाइट' है। पारसी धर्म की अन्य प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:
    - मसीहाईवाद: एक 'मसीहा' या उद्धारकर्ता में विश्वास जो लोगों के एक समूह को अनन्त मुक्ति के लिए मुक्त करेगा या बचाएगा।
    - मृत्यु के बाद निर्णय: यह माना जाता है कि पृथ्वी को प्रस्थान करने पर एक आत्मा को अहुरा मज़्दा द्वारा स्वर्ग या नरक में जाने के लिए आंका जाएगा।
    - स्वर्ग और नरक का अस्तित्व: पारसी धर्म स्वर्ग और नरक के अस्तित्व पर अच्छी तरह से विस्तृत है।
    - नि: शुल्क इच्छा: एक अवधारणा जो प्रत्येक व्यक्ति के पास कार्रवाई के विभिन्न संभावित पाठ्यक्रमों के बीच चयन करने की क्षमता है।
- पारसी धर्म के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ अवेस्ता के हैं। अवेस्ता में जोरास्टर की केंद्रीय शिक्षाएं भी शामिल हैं जिन्हें गट्टा के रूप में जाना जाता है।
- पारसी धर्म में एक अग्नि मंदिर पारसी लोगों के लिए पूजा का स्थान है, जिसे अक्सर दार-ए मेहर (फारसी) या अगियारी (गुजराती) कहा जाता है। पारसी धर्म में, अग्नि, स्वच्छ जल के साथ, अनुष्ठान शुद्धता के एजेंट हैं।
- फारस की अरब विजय के बाद पारसी धर्म अंतिम गिरावट में चला गया। गिरावट तत्काल नहीं थी, लेकिन सदियों से ईरान की पूर्व-इस्लामी आबादी के बहुमत के साथ परिवर्तित हो गई।
- धर्मांतरण के लिए आर्थिक और सामाजिक प्रोत्साहनों के बावजूद, पारसी धर्म पूर्व ससानिद साम्राज्य के दूर-दराज के क्षेत्रों में जीवित रहा, लेकिन जनता द्वारा निरंतर उत्पीड़न के साथ-साथ एक जानबूझकर राज्य-नीति ने शेष को अधिक सहिष्णु भूमि, विशेष रूप से भारत में स्थानांतरित करने के लिए मजबूर किया।
    - आज, हालांकि वे ईरान में अल्पसंख्यक हैं, भारत दुनिया में पारसी लोगों की सबसे बड़ी एकाग्रता का मेजबान है।
- जोरास्ट्रियन पहले उत्तरी ईरान, फिर होर्मुज द्वीप और अंत में भारत भाग गए।
- इतिहासकार केवल 1599 में एक पारसी पुजारी द्वारा लिखे गए क़िस्सा-ए-संजन और 200 से अधिक वर्षों के बाद लिखे गए क़िस्सा-ये ज़रतुश्तियन-ए हिंदुस्तान पर भरोसा करते हैं।
- कथा के अनुसार, गुजरात के संजन के राजा ने आश्रय दिया।
- इस अवधि के दौरान, पारसी व्यापारियों को भारत के बाहर निष्पादन का सामना करना पड़ा, जिसमें चीन भी शामिल था जहां गुआंगज़ौ नरसंहार के दौरान कई मारे गए थे।
- भारत में पारसी लोगों का प्रवास जारी रहा और **1477** तक उन्होंने फारस के साथ सभी संपर्क खो दिए थे।

454. यहूदी धर्म (Judaism)

- यहूदी धर्म अब्राहम का धर्म है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति **1500** ईसा पूर्व के आसपास हुई थी।
    - परमेश्वर ने सबसे पहले खुद को अब्राहम नाम के एक हिब्रू व्यक्ति के सामने प्रकट किया, जो यहूदी धर्म के संस्थापक के रूप में जाना जाने लगा।

- अब्राहम का पुत्र इसहाक और उसका पोता याकूब भी प्राचीन यहूदी इतिहास में केंद्रीय व्यक्ति बन गए।
- याकूब ने इस्राएल का नाम लिया, और उसके बच्चे और आने वाली पीढ़ियों को इस्राएलियों के रूप में जाना जाने लगा (उसके 10 बच्चे थे)
- यहूदी मानते हैं कि केवल एक ही ईश्वर है, यहोवा।
- उनकी विश्वास प्रणाली के अनुसार, परमेश्वर ने यहूदी लोगों के लिए जो भी अच्छा किया है, उसके बदले में यहूदी लोग परमेश्वर के नियमों का पालन करते हैं और अपने जीवन के हर पहलू में पवित्रता लाने का प्रयास करते हैं।
- यहूदी धर्म के अनुयायी भगवान की आज्ञाओं का पालन करते हैं, नैतिक रूप से जीते हैं और अगले जीवन की तुलना में इस जीवन पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं।
- यहूदी धर्म की प्राथमिक प्रथाओं में जन्म के समय खतना, वयस्कता में बार / बैट मिट्ज्वा, सब्त (प्रार्थना और आराम), लंबा वस्त्र पहनना, प्रार्थना सेवाएं शामिल हैं।
- अधिकांश यहूदियों का मानना है कि उनका मसीहा अभी तक नहीं आया है, लेकिन एक दिन आएगा।
- यहूदी लोग पवित्र स्थानों में पूजा करते हैं जिन्हें आराधनालय के रूप में जाना जाता है, और उनके आध्यात्मिक नेताओं को रब्बी कहा जाता है।
- डेविड का छह-बिंदु स्टार यहूदी धर्म का प्रतीक है।
- उनके धार्मिक पाठ में हिब्रू बाइबिल (तनाख) शामिल है; और तलमूद।

455. सरना धर्म (Sarna Religion)

- समाचार में: झारखंड सरकार ने सरना धर्म को मान्यता देने और **2021** की जनगणना में इसे एक अलग कोड के रूप में शामिल करने के लिए केंद्र को एक पत्र भेजने का प्रस्ताव पारित किया है।

इसके बारे में

- सरना छोटा नागपुर पठार में पवित्र ग्रोव हैं।
- सरना का अर्थ है" ग्रोव " और साल के पेड़ के नाम से संबंधित है ।
- इन धर्मों के अनुयायी मुख्य रूप से बैगा, हो, कुरुख, मुंडा और संताल के हैं।
- आस्था की पवित्र कब्र "जल, जंगल, ज़मीन" है और इसके अनुयायी वन क्षेत्रों की रक्षा में विश्वास करते हुए पेड़ों और पहाड़ियों से प्रार्थना करते हैं।
- ऐसा माना जाता है कि 2011 की जनगणना में पूरे देश में 50 लाख आदिवासियों ने अपना धर्म 'सरना' रखा था, हालांकि यह कोई संहिता नहीं थी।
- गांव के पुजारी, पाहन धर्म का प्रचार करते हैं और विभिन्न अनुष्ठानों का आयोजन करते हैं।
- ग्राम पुजारी के मुख्य सहायक को नाइक कहा जाता है।
- सरना धर्म का मुख्य त्योहार सरहुल है, जिसमें भक्त अपने पूर्वजों की पूजा करते हैं।

- वे देवताओं को सकुआ फूल और पत्ते चढ़ाते हैं।

अब क्या मामला है?

- इस विश्वास का पालन करने वाले कई आदिवासी बाद में ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए हैं - राज्य में 4% से अधिक ईसाई हैं, जिनमें से अधिकांश आदिवासी हैं।
- अब मुद्दा यह है कि धर्मांतरित आदिवासी अल्पसंख्यक के रूप में आरक्षण का लाभ लेने के साथ-साथ अनुसूचित जनजातियों को मिलने वाले लाभ भी ले रहे हैं।
- इसलिए, जो अभी भी केवल सरना धर्म का पालन कर रहे हैं, उनका कहना है कि लाभ विशेष रूप से उन्हें दिया जाना चाहिए, न कि उन्हें जो धर्मांतरित हुए हैं।

अलग कोड क्यों?

- झारखंड राज्य में सरना आदिवासियों की जनसंख्या 1931 में 38.3 प्रतिशत से घटकर 2011 में 26.02 प्रतिशत हो गई है। इसका एक कारण विभिन्न राज्यों में काम पर जाने वाले आदिवासी थे, जिनका जनगणना में रिकॉर्ड नहीं होना था।
- अन्य राज्यों में, उन्हें आदिवासी के रूप में नहीं गिना जाता है।
- इसलिए अलग कोड उनकी आबादी की रिकॉर्डिंग सुनिश्चित करेगा।

एक अलग संहिता का क्या अर्थ है?

- 1871 से 1951 के बीच आदिवासियों का अलग कोड था। हालाँकि, इसे 1961-62 के आसपास बदल दिया गया था।
- विशेषज्ञों का कहना है कि जब आज पूरी दुनिया प्रदूषण कम करने और पर्यावरण की रक्षा करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है, तो यह समझदारी है कि सरना एक धार्मिक संहिता बन जाती है क्योंकि इस धर्म की आत्मा प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा करना है।
- आदिवासियों के साथ उनकी भाषा और इतिहास की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है।
- यदि केंद्र नए सरना कोड को मंजूरी देता है, तो जनगणना 2021 को एक नए धर्म के लिए जगह बनानी होगी।
- वर्तमान में, केवल छह धर्मों: हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के नागरिक चुन सकते हैं।

456. बहाई आस्था (Bahai Faith)

- आस्था बहाई शिक्षाओं के आधार पर तीन मुख्य सिद्धांत या सिद्धांत पर आधारित है अर्थात ईश्वर की एकता; धर्म की एकता; और मानवता की एकता।
- इसकी स्थापना फारस के बहाउल्लाह ने की थी, जिन्हें उनके शिक्षण के लिए तुर्क साम्राज्य द्वारा निर्वासित किया गया था।
- बहाई नया साल पारंपरिक फ़ारसी नव वर्ष से मेल खाता है, जिसे नव रेज़ **(Naw Rúz,)** कहा जाता है, और 21 मार्च को उपवास के महीने के अंत में, वसंत विषुव पर होता है।
- धर्म के प्रतीक अरबी शब्द 'बहा' से लिए गए हैं, जिसका अर्थ है "वैभव" या "महिमा", जिसका संख्यात्मक मूल्य **9** है।

- यही कारण है कि सबसे आम प्रतीक नौ-बिंदु वाला तारा है।
- यह व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन के माध्यम से समाज की बेहतरी पर जोर देता है।
- विश्वास एक एकल, दुर्गम, सर्वशक्तिमान ईश्वर का वर्णन करता है जो ब्रह्मांड में सभी चीजों का निर्माता है।
- शराब पीना या ड्रग्स लेना, जुआ और कट्टरता मना है।
- विश्वास में प्रार्थना अनिवार्य प्रार्थना और भक्ति (सामान्य) प्रार्थना के बीच है।
- अनिवार्य प्रार्थनाओं के उल्लेखनीय अपवाद के साथ, अनुष्ठान का पालन हतोत्साहित किया जाता है।

----

13 ICH traditions recognised by UNESCO			
1.	Tradition of Vedic chanting, 2008	8.	Buddhist chanting of Ladakh: recitation of sacred Buddhist texts in the trans-Himalayan Ladakh region, Jammu and Kashmir, India, 2012
2.	Ramlila, the traditional performance of the Ramayana, 2008	9.	Sankirtana, ritual singing, drumming and dancing of Manipur, 2013
3.	Kutiyattam, Sanskrit theatre, 2008	10.	Traditional brass and copper craft of utensil making among the Thatheras of Jandiala Guru, Punjab, India ,2014
4.	Ramman, religious festival and ritual theatre of the Garhwal Himalayas, India, 2009	11.	Yoga, 2016
5.	Mudiyettu, ritual theatre and dance drama of Kerala, 2010	12.	Nowruz, 2016
6.	Kalbelia folk songs and dances of Rajasthan, 2010	13.	Kumbh Mela, 2017
7.	Chhau dance, 2010		

457. वैदिक मंत्रोच्चार और रामलीला (Vedic Chanting and Ramlila)

वैदिक मंत्रोच्चार

- वेदों में 3,500 साल पहले आर्यों द्वारा विकसित और रचित संस्कृत कविता, दार्शनिक संवाद, मिथक और अनुष्ठान मंत्रों का एक विशाल संग्रह शामिल है।
- हिंदुओं द्वारा ज्ञान के प्राथमिक स्रोत और उनके धर्म की पवित्र नींव के रूप में माना जाने वाला, वेद दुनिया की सबसे पुरानी जीवित सांस्कृतिक परंपराओं में से एक हैं।
- वैदिक विरासत चार वेदों में एकत्र किए गए ग्रंथों और व्याख्याओं के एक समूह को समाहित करती है, जिसे आमतौर पर "ज्ञान की पुस्तकें" के रूप में जाना जाता है, भले ही उन्हें मौखिक रूप से प्रेषित किया गया हो।
  - ऋग्वेद पवित्र भजन का संकलन है;
  - समा वेद में ऋग्वेद और अन्य स्रोतों से भजनों की संगीत व्यवस्था है;
  - यजुर्वेद पुजारियों द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रार्थनाओं और यज्ञ सूत्रों संकलन है;
  - अथर्व वेद में मंत्र और मंत्र शामिल हैं।

- वेद हिंदू धर्म के इतिहास और कई कलात्मक, वैज्ञानिक और दार्शनिक अवधारणाओं के प्रारंभिक विकास में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, जैसे कि शून्य की अवधारणा।
- वैदिक भाषा में व्यक्त, जो शास्त्रीय संस्कृत से ली गई है, वेदों के छंदों को पारंपरिक रूप से पवित्र अनुष्ठानों के दौरान जप किया जाता था और वैदिक समुदायों में दैनिक रूप से पढ़ा जाता था।
- इस परंपरा का मूल्य न केवल इसके मौखिक साहित्य की समृद्ध सामग्री में निहित है, बल्कि हजारों वर्षों से ग्रंथों को संरक्षित करने के लिए ब्राह्मण पुजारियों द्वारा नियोजित सरल तकनीकों में भी निहित है।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रत्येक शब्द की ध्वनि अपरिवर्तित रहती है, पेशवरों बचपन की जटिल सस्वर पाठ तकनीकों से सिखाया जाता है जो तानवाला लहजे पर आधारित होती हैं, प्रत्येक अक्षर के उच्चारण का एक अनूठा तरीका और विशिष्ट भाषण संयोजन।
- यद्यपि वेद समकालीन भारतीय जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, फिर भी एक हजार से अधिक वैदिक पाठ शाखाओं में से केवल तेरह ही बची हैं।

रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन

- रामलीला, शाब्दिक रूप से "राम का नाटक", दृश्यों की एक श्रृंखला में तत्कालीन रामायण महाकाव्य का एक प्रदर्शन है जिसमें गीत, वर्णन, गायन और संवाद शामिल हैं।
- यह शरद ऋतु में अनुष्ठान कैलेंडर के अनुसार प्रत्येक वर्ष आयोजित दशहरा के त्योहार के दौरान पूरे उत्तर भारत में किया जाता है।
- रामलीला का सबसे अधिक प्रतिनिधित्व करने वाले लोग अयोध्या, रामनगर और बनारस, वृंदावन, अल्मोड़ा, सतना और मधुबनी से होते हैं।
- रामायण का यह मंचन रामचरितमानस पर आधारित है, जो देश के उत्तर में सबसे लोकप्रिय कहानी कहने के रूपों में से एक है। रामायण के नायक राम की महिमा को समर्पित इस पवित्र ग्रंथ की रचना तुलसीदास ने सोलहवीं शताब्दी में हिंदी के रूप में संस्कृत महाकाव्य को सभी के लिए उपलब्ध कराने के लिए की थी।
- दस से बारह दिनों तक चलने वाले प्रदर्शनों की एक श्रृंखला के माध्यम से अधिकांश रामलीला रामचरितमानस के प्रकरणों का ब्योरा देती है, लेकिन कुछ, जैसे कि रामनगर का, पूरे एक महीने तक चल सकता है।
- रामलीला राम और रावण के बीच की लड़ाई को याद करती है और इसमें देवताओं, ऋषियों और वफादार लोगों के बीच संवादों की एक श्रृंखला होती है। रामलीला का नाटकीय बल प्रत्येक दृश्य के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकों के उत्तराधिकार से उपजा है।
- दर्शकों को गायन और कथा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है।
- रामलीला जाति, धर्म या उम्र के भेद के बिना पूरी आबादी को एक साथ लाती है।
- सभी ग्रामीण अनायास भाग लेते हैं, भूमिका निभाते हैं या विभिन्न संबंधित गतिविधियों में भाग लेते हैं, जैसे कि मुखौटा- और पोशाक बनाना, और मेकअप, पुतले और रोशनी तैयार करना।
- हालांकि, जनसंचार माध्यमों, विशेष रूप से टेलीविजन धारावाहिकों के विकास से रामलीला नाटकों के दर्शकों की संख्या में कमी आ रही है, जो लोगों और समुदायों को एक साथ लाने की अपनी प्रमुख भूमिका खो रहे हैं।

458. कुटियाट्टम और राममण (Kutiyattam and Ramman)

कुटियाट्टम

- कुटियाट्टम, संस्कृत रंगमंच, जो केरल राज्य में प्रचलित है, भारत की सबसे पुरानी जीवित नाट्य परंपराओं में से एक है।
- **2,000** से अधिक साल पहले उत्पन्न, कुटियाट्टम संस्कृत क्लासिकवाद के संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करता है और केरल की स्थानीय परंपराओं को दर्शाता है।

- इसकी शैली और संहिताबद्ध नाट्य भाषा में, नेता अभिनया (नेत्र अभिव्यक्ति) और हस्त अभिनया (इशारों की भाषा) प्रमुख हैं। वे मुख्य चरित्र के विचारों और भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- परिष्कृत श्वास नियंत्रण और चेहरे और शरीर की सूक्ष्म मांसपेशियों में बदलाव के साथ अभिनेता पूरी तरह से विकसित कलाकार बनने के लिए दस से पंद्रह साल के कठोर प्रशिक्षण से गुजरते हैं। अभिनेता की कला किसी स्थिति या प्रकरण को उसके सभी विवरणों में विस्तारित करने में निहित है। इसलिए, किसी एक कार्य को करने में कई दिन लग सकते हैं और एक पूर्ण प्रदर्शन 40 दिनों तक चल सकता है।
- कुटियाट्टम पारंपरिक रूप से कुट्टम्पलम नामक थिएटरों में किया जाता है, जो हिंदू मंदिरों में स्थित हैं।
- प्रदर्शनों तक पहुंच मूल रूप से उनके पवित्र स्वभाव के कारण प्रतिबंधित थी, लेकिन नाटकों ने उत्तरोत्तर बड़े दर्शकों के लिए खोल दिया है।
- फिर भी अभिनेता की भूमिका एक पवित्र आयाम को बरकरार रखती है, जैसा कि शुद्धिकरण अनुष्ठानों और एक दिव्य उपस्थिति के प्रतीक प्रदर्शन के दौरान मंच पर एक तेल दीपक रखने से प्रमाणित होता है। पुरुष अभिनेता अपने प्रशिक्षुओं को विस्तृत प्रदर्शन नियमावली सौंपते हैं, जो हाल के दिनों तक चयनित परिवारों की अनन्य और गुप्त संपत्ति बनी हुई थी।
- उन्नीसवीं शताब्दी में सामंती व्यवस्था के साथ-साथ संरक्षण के पतन के साथ, अभिनय तकनीकों के रहस्यों को रखने वाले परिवारों को गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बीसवीं सदी की शुरुआत में पुनरुद्धार के बाद, कुटियाट्टम को एक बार फिर धन की कमी का सामना करना पड़ रहा है, जिससे पेशे में गंभीर संकट पैदा हो गया है।

रम्मन

- हर साल अप्रैल के अंत में, उत्तराखंड राज्य (उत्तरी भारत) में सलूर-डूंगरा के जुड़वां गांवों को राममन द्वारा चिह्नित किया जाता है, जो एक स्थानीय देवता भूमियाल देवता के सम्मान में एक धार्मिक त्योहार है, जिसके मंदिर में अधिकांश उत्सव होते हैं। .

- यह घटना अत्यधिक जटिल अनुष्ठानों से बनी है: राम के महाकाव्य और विभिन्न किंवदंतियों के एक संस्करण का पाठ, और गीतों और नकाबपोश नृत्यों का प्रदर्शन।
- त्योहार ग्रामीणों द्वारा आयोजित किया जाता है, और प्रत्येक जाति और व्यावसायिक समूह की एक अलग भूमिका होती है। उदाहरण के लिए:
  - युवा और बुजुर्ग प्रदर्शन करते हैं, ब्राह्मण प्रार्थना का नेतृत्व करते हैं और अनुष्ठान करते हैं।
  - भंडारी – क्षत्रिय जाति के स्थानीय लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं – अकेले सबसे पवित्र मुखौटे में से एक पहनने के हकदार हैं, जो कि आधे आदमी, आधे शेर हिंदू देवता, नरसिंह हैं।
- वर्ष के दौरान भूमियाल देवता की मेजबानी करने वाले परिवार को एक सख्त दैनिक दिनचर्या का पालन करना चाहिए।
- रंगमंच, संगीत, ऐतिहासिक पुनर्निर्माण, और पारंपरिक मौखिक और लिखित कहानियों का संयोजन, राममन एक बहुआयामी सांस्कृतिक घटना है जो समुदाय की पर्यावरण, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अवधारणा को दर्शाती है, अपने संस्थापक मिथकों को याद करती है और आत्म-मूल्य की भावना को मजबूत करती है।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह व्यवहार्य बना रहे, समुदाय की प्राथमिकताएं इसके प्रसारण को बढ़ावा देना और भौगोलिक क्षेत्र से परे इसकी मान्यता प्राप्त करना है जिसमें इसका अभ्यास किया जाता है।

459. मुदियेट्टू और कालबेलिया (Mudiyettu and Kalbelia)

मुदियेट्टु

- मुदियेट्टू केरल का एक अनुष्ठान नृत्य नाटक है जो देवी काली और दानव दारिका के बीच की लड़ाई की पौराणिक कथा पर आधारित है।
- यह एक सामुदायिक अनुष्ठान है जिसमें पूरा गांव भाग लेता है।
- गर्मियों की फसल की कटाई के बाद, ग्रामीण नियत दिन पर सुबह-सुबह मंदिर पहुंच जाते हैं।
- मुदियेट्टू कलाकार उपवास और प्रार्थना के माध्यम से खुद को शुद्ध करते हैं, फिर देवी काली की एक विशाल छवि बनाते हैं, जिसे कलाम कहा जाता है, मंदिर के फर्श पर रंगीन पाउडर के साथ, जिसमें देवी की आत्मा का आह्वान किया जाता है।
- यह पालन करने के लिए जीवंत अधिनियमन के लिए जमीन तैयार करता है, जिसमें दिव्य ऋषि नारद शिव को दानव दारिका को शामिल करने के लिए कहते हैं, जो नश्वर लोगों द्वारा पराजय की प्रतिरक्षा में है। शिव इसके बजाय आज्ञा देते हैं कि दारिका देवी काली के हाथ मर जाएगी।
- मुडियेट्टु का प्रदर्शन प्रतिवर्ष 'भगवती कवस' में किया जाता है, जो देवी के मंदिरों में, चलक्कुडी पुझा, पेरियार और मूवट्टुपुझा नदियों के साथ विभिन्न गांवों में होता है।
- अनुष्ठान में प्रत्येक जाति का आपसी सहयोग और सामूहिक भागीदारी समुदाय में आम पहचान और आपसी संबंध को मजबूत और मजबूत करती है।
- मुदियेट्टू पारंपरिक मूल्यों, नैतिकता, नैतिक संहिताओं और समुदाय के सौंदर्य मानदंडों को अगली पीढ़ी तक प्रसारित करने के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थल के रूप में कार्य करता है, जिससे वर्तमान समय में इसकी निरंतरता और प्रासंगिकता सुनिश्चित होती है।

राजस्थान के कालबेलिया लोक गीत और नृत्य

- गीत और नृत्य कालबेलिया समुदाय के पारंपरिक जीवन शैली की अभिव्यक्ति हैं।
- एक बार पेशेवर साँप संचालकों, कालबेलिया आज संगीत और नृत्य में अपने पूर्व व्यवसाय को विकसित करते हैं जो नए और रचनात्मक तरीकों से विकसित हो रहा है।
- वर्तमान, काली स्कर्ट में महिलाएं सर्प की हरकतों की नकल करते हुए नृत्य करती हैं और घूमती हैं, जबकि पुरुष उनके साथ खंजरी ताल वाद्य और पोंगी, पारंपरिक रूप से सांपों को पकड़ने के लिए बजाया जाने वाला वाद्य यंत्र बजाते हैं।
- नर्तक पारंपरिक टैटू डिजाइन, आभूषण और छोटे दर्पण और चांदी के धागे के साथ बड़े पैमाने पर कढ़ाई वाले वस्त्र पहनते हैं।
- कालबेलिया गीत कहानियों के माध्यम से पौराणिक ज्ञान का प्रसार करते हैं, जबकि विशेष पारंपरिक नृत्य रंगों के त्योहार होली के दौरान किए जाते हैं।
- गीत कालबेलिया के काव्य कौशल को भी प्रदर्शित करते हैं, जो प्रदर्शन के दौरान गीतों को सहज रूप से लिखने और गीतों को सुधारने के लिए प्रतिष्ठित हैं।
- पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रेषित, गीत और नृत्य एक मौखिक परंपरा का हिस्सा हैं, जिसके लिए कोई पाठ या प्रशिक्षण नियमावली मौजूद नहीं है।
- गीत और नृत्य कालबेलिया समुदाय के लिए गर्व की बात है, और एक समय में उनकी पहचान का एक मार्कर है जब ग्रामीण समाज में उनकी पारंपरिक यात्रा जीवन शैली और भूमिका कम हो रही है। वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने और सामाजिक आर्थिक स्थितियों को बदलने के लिए अपने समुदाय के प्रयास को प्रदर्शित करते हैं।

460. छाऊ नृत्य और लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चार (Chau dance and Buddhist chanting of Ladakh)

छऊ नृत्य

- छऊ नृत्य पूर्वी भारत की एक परंपरा है जो महाभारत और रामायण, स्थानीय लोकगीत और अमूर्त विषयों सहित महाकाव्यों के एपिसोड को लागू करती है।
- इसकी तीन अलग-अलग शैलियों सेराइकेला, पुरुलिया और मयूरभंज के क्षेत्रों से आती हैं, पहले दो मास्क का उपयोग करते हैं।
- छऊ नृत्य क्षेत्रीय त्योहारों, विशेष रूप से वसंत त्योहार चैत्र पर्व से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है।
- इसकी उत्पत्ति नृत्य और मार्शल प्रथाओं के स्वदेशी रूपों के लिए खोजी जा सकती है।
- आंदोलन की इसकी शब्दावली में नकली मुकाबला तकनीक, पक्षियों और जानवरों की शैलीबद्ध चालें और गांव की गृहिणियों के कामों पर आधारित आंदोलन शामिल हैं।
- छऊ पारंपरिक कलाकारों के परिवारों से या स्थानीय समुदायों से पुरुष नर्तकियों को सिखाया जाता है।
- यह नृत्य रात में एक खुली जगह पर पारंपरिक और लोक धुनों के लिए किया जाता है, जो ईख के पाइप मोहुरी और शहनाई पर बजाया जाता है। विभिन्न प्रकार के ड्रमों के गूंजने वाले ड्रमों के साथ-साथ संगीत कलाकारों की टुकड़ी पर हावी है।
- छऊ इन समुदायों की संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह विभिन्न सामाजिक स्तरों और जातीय पृष्ठभूमि के लोगों को विविध सामाजिक प्रथाओं, विश्वासों, व्यवसायों और भाषाओं के साथ जोड़ता है।
- हालांकि, बढ़ते औद्योगिकीकरण, आर्थिक दबाव और नए मीडिया समुदायों को अपनी जड़ों से अलग होने के साथ सामूहिक भागीदारी में कमी की ओर ले जा रहे हैं।

लद्दाख का बौद्ध जप

- लद्दाख क्षेत्र के मठों और गांवों में, बौद्ध लामा (पुजारी) बुद्ध की आत्मा, दर्शन और शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले पवित्र ग्रंथों का जाप करते हैं।
- लद्दाख में बौद्ध धर्म के दो रूप प्रचलित हैं – महायान और वज्रयान-और चार प्रमुख संप्रदाय हैं, अर्थात् निंग्मा, काग्यूद, शाक्य और गेलुक। प्रत्येक संप्रदाय में जप के कई रूप हैं, जीवन-चक्र अनुष्ठानों के दौरान और बौद्ध और कृषि कैलेंडर में महत्वपूर्ण दिनों में अभ्यास किया जाता है।
- लोगों की आध्यात्मिक और नैतिक भलाई के लिए, मन की शुद्धि और शांति के लिए, बुरी आत्माओं के क्रोध को खुश करने के लिए या विभिन्न बुद्ध, बोधिसत्व, देवताओं और रिनपोच के आशीर्वाद का आह्वान करने के लिए जप किया जाता है।
- जप समूहों में किया जाता है, या तो घर के अंदर बैठकर या मठ के आंगनों या निजी घरों में नृत्य के साथ किया जाता है।
- भिक्षु विशेष वेशभूषा पहनते हैं और दिव्य बुद्ध का प्रतिनिधित्व करने वाले हाथ के इशारे (मुद्राएं) बनाते हैं, और घंटी, ड्रम, झांझ और तुरही जैसे उपकरण जप के लिए संगीत और लय उधार देते हैं।
- अनुचरों को वरिष्ठ भिक्षुओं की कड़ी निगरानी में प्रशिक्षित किया जाता है, जब तक उन्हें याद नहीं किया जाता है, तब तक वे अक्सर पाठ पढ़ते हैं।
- विश्व शांति के लिए और चिकित्सकों के व्यक्तिगत विकास के लिए प्रार्थना के रूप में मठवासी सभा हॉल में प्रतिदिन मंत्रों का अभ्यास किया जाता है।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 65 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

461. योग और सोवा रिग्पा (Yoga & Sawa Rigpa)

462. आयुर्वेद और यूनानी (Ayurveda & Unani)

463. सिद्ध और होम्योपैथी (Siddha & Homeopathy)

464. ज़रदोज़ी और कलमकारी (Zardosi & Kalamkari)

465. फुलकारी और पिचवाई (Phulkari & Pichwai)

466. रबारी कला और शामिलामी (Rabari Art & Shamilami)

467. कसुती और काठी (Kasuti & Kathi)

468. क्रेवेल और गोटा वर्क (Crewel & Gota Work)

469. जंडियाला गुरु के ठठेरे और संकीर्तन (Sankirtana and Thatheras of Jandiala Guru)

470. नवरोज और कुंभ मेला (Nawrouz and Kumbh Mela)

461. योग और सोवा रिग्पा (Yoga & Sawa Rigpa)

योग

- योग अनिवार्य रूप से व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण की एक पारंपरिक और समय से सम्मानित भारतीय समग्र प्रणाली है जो शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण एकीकरण पर केंद्रित है।
- योग में आसन, ध्यान, नियंत्रित श्वास, शब्द जप और अन्य तकनीकों की एक श्रृंखला शामिल है जो व्यक्तियों को आत्म-साक्षात्कार बनाने में मदद करने के लिए डिज़ाइन की गई है, जो वे अनुभव कर रहे हैं और मुक्ति की स्थिति की अनुमति दे सकते हैं।
- योग की उपस्थिति अच्छी तरह से उपनिषद (मुंडका), कथा आदि की तरह दार्शनिक ग्रंथों को ऋग्वेद से सही भारतीय शाब्दिक परंपरा में प्रलेखित है और ऋषि पतंजलि से पहले भगवद्गीता ने इसे अपने योगसूत्रों में व्यवस्थित किया।
- भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव इस प्रणाली के पहले शिक्षक हैं।
- योगी ग्रंथों के अनुसार योग का अभ्यास सार्वभौमिक चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना के मिलन की ओर जाता है और इस प्रकार इन तत्वों के बीच एक आदर्श सद्भाव को इंगित करता है।
- योग का उद्देश्य आंतरिक आत्म को महसूस करना है, सभी प्रकार के पीड़ाओं को कम करने या दूर करने और मुक्ति की स्थिति को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करना है।
- भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव इस प्रणाली के पहले शिक्षक हैं।
- योग शास्त्रों के अनुसार योग का अभ्यास सार्वभौमिक चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना के मिलन की ओर जाता है और इस प्रकार इन तत्वों के बीच एक पूर्ण सामंजस्य का संकेत देता है।
- योग का उद्देश्य आंतरिक आत्म की अनुभूति करना, सभी प्रकार के कष्टों को कम करना या दूर करना और मुक्ति की स्थिति प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करना है।
- व्यापक रूप से प्रचलित योग अभ्यास हैं:
  - यम (पांच संयम)
  - नियम (पांच व्रत)
  - आसन (आसन)
  - प्राणायाम (सांस रोकना)
  - प्रत्याहार (अमूर्त)
  - धारणा (एकाग्रता)
  - ध्यान (ध्यान)
  - समाधि (पूरी तरह से एकीकृत चेतना)
  - बंध (ताला) और मुद्राएं (इशारों)
  - षट-कर्म (शुद्धिकरण अभ्यास)
  - युक्ताहार, (समग्र भोजन)
  - युक्ता कर्म (सही क्रिया)
  - मंत्र जप (पवित्र शब्दों का जाप) आदि।

सोवा रिग्पा-

- "सोवा-रिग्पा" (चिकित्सा विज्ञान) जिसे आमतौर पर चिकित्सा की आमची प्रणाली के रूप में जाना जाता है।
- यह तिब्बत, मैगनोलिया, भूटान, चीन के कुछ हिस्सों आदि में लोकप्रिय रहा है।

- इस चिकित्सा परंपरा की उत्पत्ति के बारे में विभिन्न विचारधाराएं हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसकी उत्पत्ति भारत से हुई, कुछ का कहना है कि चीन और कुछ लोग इसे तिब्बत से ही उत्पन्न मानते हैं।
- सोवा-रिग्पा का अधिकांश सिद्धांत और व्यवहार "आयुर्वेद" के समान है। पहली आयुर्वेदिक प्रभाव तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान तिब्बत में आया था लेकिन यह 7 वीं शताब्दी के बाद ही तिब्बत में बौद्ध धर्म के दृष्टिकोण के साथ लोकप्रिय हो गया।
- तत्पश्चात, बौद्ध धर्म और अन्य भारतीय कला और विज्ञान के साथ-साथ भारतीय चिकित्सा साहित्य के निर्यात की यह प्रवृत्ति 19 वीं शताब्दी की शुरुआत तक जारी रही।
- ग्युद-ज़ी **(Gyud-Zi)** (चार तंत्र) इस दवा की मौलिक पाठ्य पुस्तक का पहली बार भारत से अनुवाद किया गया था और तिब्बत में अपनी लोककथाओं और अन्य चिकित्सा परंपरा जैसे चीनी और फारसी आदि के साथ समृद्ध किया गया था।

सिद्धांत और व्यवहार

- सोवा-रिग्पा के मूल सिद्धांत जंग-वा-नगा (पंच महाबुथा), नेस्पा-सम (त्रिदोष), लुज़ुंग-दुन (सप्त धातु) और क्या करें और क्या न करें, खाने की आदतें, नाड़ी परीक्षा आदि पर आधारित हैं।
- ब्रह्मांड के सभी जीवित प्राणियों और निर्जीव वस्तुओं के शरीर पंचमहाभूतों से बने हैं: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।
- हमारा शरीर जंग-वा-नगा के इन पांच ब्रह्मांडीय भौतिक तत्वों से बना है; जब हमारे शरीर में इन तत्वों का अनुपात असंतुलित हो जाता है तो विकार उत्पन्न होता है। विकारों के उपचार के लिए उपयोग की जाने वाली दवा और आहार भी उन्हीं पांच मूल तत्वों से बने होते हैं।
- विकारों के उपचार के लिए उपयोग की जाने वाली दवा और आहार भी उन्हीं पांच मूल तत्वों से बने होते हैं।
- सोवा-रिग्पा के मूल सिद्धांत को निम्नलिखित पांच बिंदुओं के संदर्भ में समझा जा सकता है:
    - उपचार के स्थान के रूप में रोग में शरीर।
    - एंटीडोट, यानी, उपचार।
    - एंटीडोट के माध्यम से उपचार की विधि।
    - दवा जो बीमारी को ठीक करती है।
    - मटेरिया मेडिका, फार्मेसी और फार्माकोलॉजी।

462. आयुर्वेद और यूनानी (Ayurveda & Unani)

आयुर्वेद

- आयुर्वेद शब्द की उत्पत्ति आयु और वेद से हुई है। आयु का अर्थ है जीवन वेद का अर्थ है विज्ञान या ज्ञान। आयुर्वेद का अर्थ है जीवन का विज्ञान।
- यह दुनिया की सबसे पुरानी समग्र ("संपूर्ण-शरीर") उपचार प्रणालियों में से एक है। इसे भारत में 3,000 साल से भी पहले विकसित किया गया था।
- यह इस विश्वास पर आधारित है कि स्वास्थ्य और कल्याण मन, शरीर और आत्मा के बीच एक नाजुक संतुलन पर निर्भर करता है।
- आयुर्वेद में यह माना जाता है कि जीवित मनुष्य तीन त्रिदोषन (वात, पित्त और कफ), सात मूल ऊतकों (रस, रक्ता, मनसा, मेदा, अस्थी, माजा और शुक्र) और शरीर के अपशिष्ट उत्पादों यानी माला, म्यूट और स्वेदा का एक समूह है।

- इस शरीर मैट्रिक्स और इसके घटकों की वृद्धि और क्षय इन तत्वों के मनोवैज्ञानिक तंत्र को घुमाते हैं और इसका संतुलन किसी के स्वास्थ्य की स्थिति का मुख्य कारण है।
- आयुर्वेद प्रणाली में उपचार दृष्टिकोण समग्र और व्यक्तिगत है जिसमें निवारक, उपचारात्मक, शमन, पुनरुत्थान और पुनर्वास पहलू हैं।
- आयुर्वेदिक उपचार उत्पादों को जोड़ता है (मुख्य रूप से पौधों से प्राप्त होता है, लेकिन इसमें पशु, धातु और खनिज भी शामिल हो सकते हैं), आहार, व्यायाम और जीवन शैली।
- आयुर्वेद के प्रमुख उद्देश्य स्वास्थ्य को बनाए रखना और बढ़ावा देना, बीमारी की रोकथाम और बीमारी का इलाज करना है।
- आयुर्वेद सभी जीवित चीजों, मानव और गैर-मानव को गले लगाता है। यह तीन मुख्य शाखाओं में विभाजित है। ,
- मानव जीवन से संबंधित नारा आयुर्वेद
- सत्व आयुर्वेद पशु जीवन और उसके रोगों से निपटने वाला विज्ञान।
- वृक्ष आयुर्वेद पौधे के जीवन, उसके विकास और रोग से निपटने वाला विज्ञान।
- आयुर्वेद पर सबसे पुराने ज्ञात ग्रंथ चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और अष्टांग हृदय हैं।

यूनानी चिकित्सा

- यूनानी चिकित्सा प्रणाली की उत्पत्ति यूनानी दार्शनिक-चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स (460-377 ईसा पूर्व) से हुई।
- भारत में, यूनानी चिकित्सा प्रणाली अरबों द्वारा शुरू की गई थी और जल्द ही इसकी जड़ें मजबूत हो गईं।
- यूनानी के अनुसार रोग एक प्राकृतिक प्रक्रिया है और चिकित्सक को शरीर की प्राकृतिक शक्तियों की सहायता करनी होती है।
- यूनानी चिकित्सा त्रिदोषन सिद्धांत पर आधारित है। हमारे शरीर में त्रिदोषन
    - बांध - (रक्त)
    - बलघम - (कफ)
    - सफरा - (पीला पित्त)
    - सौदा- (काला पित्त)
- निदान: यूनानी चिकित्सा पद्धति नाड़ी (नब्ज़), मूत्र (बौल) और मल (बाराज़) के माध्यम से एक बीमारी के निदान पर जोर देती है।
- रोग की रोकथाम: उचित पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए हमें पानी, भोजन और वायु को प्रदूषण से मुक्त रखने की आवश्यकता है।
- उपचार
    - रेजिमेंटल थेरेपी में वेन-सेक्शन (Vene-Section), क्यूपिंग (Cupping), डायफोरेसिस (Diaphoresis), लीचिंग आदि शामिल हैं।
    - आहार-ओ-चिकित्सा (Diet-o-therapy); फार्माकोथेरेपी (Pharmacotherapy) स्वाभाविक रूप से होने वाली दवाओं के उपयोग से संबंधित है; और सर्जरी।

463. सिद्ध और होम्योपैथी (Siddha & Homeopathy)

सिद्ध

- सिद्ध चिकित्सा पद्धति मुख्यतः भारत के दक्षिणी भाग में प्रचलित है।
- यह दुनिया की सबसे पुरानी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में से एक है जो न केवल शरीर बल्कि मन और आत्मा का भी इलाज करती है।
- सिद्ध शब्द की उत्पत्ति तमिल शब्द सिद्धि में हुई है, जिसका अर्थ है "प्राप्त की जाने वाली वस्तु" या "पूर्णता" या "स्वर्गीय आनंद"।
- इस प्रणाली की जड़ें प्राचीन तमिल सभ्यता की संस्कृति से जुड़ी हुई हैं।
- अगस्त्य या अगस्त्य को सिद्ध चिकित्सा का जनक माना जाता है। "सिद्धार्थगल" या सिद्धारमैया प्राचीन काल में इस प्रणाली के प्रमुख विद्वान थे।
- सिद्ध दवा के बारे में दावा किया जाता है कि यह रोग पैदा करने वाले निष्क्रिय अंगों को पुनर्जीवित और फिर से जीवंत करती है।
- कयाकरपम, चिकित्सा और जीवन शैली का एक विशेष संयोजन, वर्म चिकित्सा, वासी (प्राणायाम) और मुप्पू सार्वभौमिक नमक चिकित्सा की सिद्ध प्रणाली की विशेषता है।
- इस प्रकार यह प्रणाली आध्यात्मिक और भौतिक दोनों को जोड़ती है और व्यक्ति को समग्र रूप से मानती है यानी यह व्यक्ति के शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आध्यात्मिक कल्याण को केंद्रित करती है।
- सिद्धारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले हर्बल एजेंटों को तीन समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है:
  - थावरम (हर्बल उत्पाद),
  - थधू (अकार्बनिक पदार्थ) और
  - जंगम (पशु उत्पाद)
- सिद्धारों का ज्ञान जो शुरू में मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था, बाद में ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियों में लिखा गया था, जिसके टुकड़े दक्षिण भारत के कई हिस्सों में पाए जाते हैं।

होम्योपैथी

- होम्योपैथी एक चिकित्सा प्रणाली है जो इस विश्वास पर आधारित है कि शरीर खुद को ठीक कर सकता है।
- इसे जर्मनी में **1700** के दशक के अंत में विकसित किया गया था।
- 1839 में, होनिगबर्गर दूसरी बार भारत आए और पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह का इलाज किया।
- फकीर अज़ीज़-उद-दीन ने होनिगबर्गर को बुलाया क्योंकि सभी देशी चिकित्सक महाराज के सूजे हुए पैरों को ठीक करने में विफल रहे थे।

इसका कार्य:

- होम्योपैथी के पीछे एक बुनियादी विश्वास " इलाज की तरह है ।"
- दूसरे शब्दों में, कुछ ऐसा जो एक स्वस्थ व्यक्ति में लक्षण लाता है - बहुत कम खुराक में - समान लक्षणों वाली बीमारी का इलाज कर सकता है। यह शरीर की प्राकृतिक सुरक्षा को सक्रिय करने के लिए है।
- उदाहरण के लिए, लाल प्याज आपकी आंखों में पानी ला देता है। इसलिए इसका उपयोग एलर्जी के लिए होम्योपैथिक उपचार में किया जाता है।
- होम्योपैथिक डॉक्टर "पोटेंटाइजेशन" नामक प्रक्रिया के हिस्से के रूप में पानी या अल्कोहल मिला कर इन अवयवों को कमजोर करते हैं।
- होम्योपैथ का यह भी मानना है कि खुराक जितनी कम होगी, दवा उतनी ही शक्तिशाली होगी।
- दवाएं कई रूपों में आती हैं, जैसे चीनी के छर्रों, तरल बूंदों, क्रीम, जैल और गोलियां।

464. ज़रदोज़ी और कलमकारी (Zardosi & Kalamkari)

जरदोज़ी

- ज़र का अर्थ है सोना और दोज़ी का अर्थ है कढ़ाई।
- जरदोजी कढ़ाई का काम मुख्य रूप से लखनऊ, भोपाल, हैदराबाद, दिल्ली, आगरा, कश्मीर, मुंबई, अजमेर और चेन्नई की विशेषता है।

- एक फारसी कढ़ाई रूप, जरदोसी ने अकबर के संरक्षण में अपना शिखर प्राप्त किया।
- औरंगजेब के शासन में शाही संरक्षण बंद हो गया। कई शिल्पकार दिल्ली छोड़कर काम की तलाश में राजस्थान और पंजाब के दरबार में चले गए।
- उपकरण में घुमावदार हुक, सुई, सलमा के टुकड़े (सोने के तार), सितार (धातु के तारे), गोल-सेक्विन, कांच और प्लास्टिक के मोती, डबका (धागा) और कसाब (धागा) शामिल हैं।

कलमकारी

- कलमकारी हस्त चित्रकला की एक प्राचीन शैली है।
- यह प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके कपास या रेशम के कपड़े पर इमली की कलम से किया जाता है।
- इस कला में रंगाई, विरंजन, हाथ की पेंटिंग, ब्लॉक प्रिंटिंग, स्टार्चिंग, सफाई और बहुत कुछ के 23 कठिन चरण शामिल हैं।
- यह **3000** ईसा पूर्व से भी अधिक पुराना है।
- कलमकारी कला का चित्रण करने वाले कपड़े के नमूने मोहनजोदड़ो में पाए गए।

- मुगलों ने गोलकुंडा और कोरोमंडल प्रांत में इस कला को बढ़ावा दिया। यहां कई कुशल कारीगर पाए जाते हैं जिन्हें क्वालमकार के रूप में जाना जाता है।

कलमकारी के प्रकार

- श्रीकालहस्ती शैली और मछलीपट्टनम शैली।
- कलमकारी की मछलीपट्टनम शैली, रूपांकन अमूर्त डिजाइन हैं।
- चित्रकला की श्रीकालहस्ती शैली हिंदू पौराणिक कथाओं से प्रेरणा लेती है।
- हाल के दिनों में दो अन्य प्रकार के कलमकारी पैटर्न भी सामने आए हैं।
    - आंध्र कलमकारी किलों, महलों और मंदिरों, जानवरों और पक्षियों से प्रेरित है।
    - गुजरात कलमकारी पौराणिक पात्रों के रूपांकनों को दर्शाती है।

465. फुलकारी और पिचवाई (Phulkari & Pichwai)

फुलकारी

- फुलकारी, या 'फूलों का काम', पंजाब की संस्कृति से जुड़ा है।
- कढ़ाई की यह शैली ओडिनी, शॉल, कुर्तियां और चुनरी पर बनाई गई है।
- यह चरका द्वारा काता जाता है।
- फुलकारी को मध्य एशिया के प्रवासी जाट लोगों द्वारा लाया गया।
- वारिस शाह द्वारा हीर और रांझा (एक प्रेम कहानी) की प्रसिद्ध प्रेम कहानी में इसका उल्लेख किया गया है।
- कढ़ाई एक महिला के जीवन का एक मात्र प्रतिबिंब थी।
- थिरमा: पवित्रता का प्रतीक, जिसे बुजुर्ग महिलाओं और विधवाओं द्वारा पहना जाता है।
- दर्शन द्वार: एक इच्छा पूरी होने के बाद भगवान को धन्यवाद देने के लिए एक मंदिर के रूप में बनाया गया।
- बावन बाग: बावन अलग-अलग पैटर्न की पच्चीकारी।
- मीनाकारी: सोने और सफेद रंग के पाट से बने, छोटे बहुरंगी लोज़ेंग से सजाया गया है जो तामचीनी के काम (मीनाकारी)का उल्लेख करते हैं।

पिचवाई

- पिचवाई चित्रों की उत्पत्ति लगभग चार शताब्दी पहले हुई थी।
- यह राजस्थान राज्य से, राज्य के नाथद्वारा शहर से आता है।

- "पिच्छ" शब्द का अर्थ है वापस, और "वाई" शब्द का अनुवाद टेक्सटाइल हैंगिंग से होता है।
- उन्हें श्रीनाथजी के मंदिरों में देवता के पीछे लटका दिया जाता है।
- इन चित्रों में राजस्थान के पारंपरिक फड़ चित्रों की तुलना में गहन विवरण है।
- पिचवाई चित्रों में भगवान कृष्ण को श्रीनाथजी के रूप में चित्रित किया गया है; राधा, गोपियाँ और कमल के चित्र।
- वे दिवाली, जन्माष्टमी, होली जैसे विभिन्न भारतीय त्योहारों को भी दर्शाते हैं।

466. रबारी कला और शामिलामी (Rabari Art & Shamilami)

रबारी कला

- यह कच्छ में रहने वाले रबारी समुदाय द्वारा रचा गया है।
- यह विभिन्न आकारों और प्रकारों में दर्पणों के उपयोग के लिए जाना जाता है।
- दर्पणों के साथ, कपड़ों को सजावटी रूप से रेखांकित करने के लिए चेन स्टिच विधि का उपयोग किया जाता है।
- अधिकांश डिजाइन पौराणिक कथाओं और रेगिस्तानी बस्तियों से प्रेरित हैं।

शामिलामी

- कढ़ाई को शमिलामी कहा जाता है क्योंकि यह जानवरों के पैटर्न का उपयोग करता है।
- मणिपुरी में शमिलामी का अर्थ है "जंगली जानवर पैटर्न वाला योद्धा कपड़ा"।

- यह राजा द्वारा योद्धाओं को उनकी बहादुरी को स्वीकार करने और सराहना करने के लिए दिया गया था।
- इसे नागालैंड में नागा अंगामी चादर के रूप में जाना जाता है क्योंकि वे अपने शॉल पर शामिलामी कढ़ाई का काम करते हैं।

अक्योबी कढ़ाई

- यह एक प्रकार की शामिलामी कढ़ाई है जो एक सांप से प्रेरित है।
- मणिपुरी में अक्योबी का मतलब गोलाकार होता है।
- इस डिज़ाइन में एक दूसरे से जुड़ने वाले मंडलियों पर कढ़ाई की जाती है।

467. कसुती और काठी (Kasuti & Kathi)

कसुति

- धारवाड़ कर्नाटक की कढ़ाई की एक शैली है।
- कसुती कढ़ाई की एक हाथ से बुनी हुई किस्म है।
- मूल रूप से सिल्क पल्लस में पाया जाता है, इसमें अंतर्वयन ज्यामितीय पैटर्न होते हैं।
- यह धारवाड़ साड़ियों के नाम का वास्तविक स्रोत है।
- कसुती कढ़ाई का शाब्दिक अर्थ है सूती धागे की हस्तकला।
- इस कढ़ाई पैटर्न को इकल साड़ियों में अपना स्रोत मिला, इकल के क्षेत्रों में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की सूती साड़ियाँ।
- बाद में इसे रेशम की किस्मों की ओर बढ़ा दिया गया।

काठी

- गुजरात में काठी समुदाय की महिलाओं द्वारा काठी का अभ्यास किया जाता है।
- यह गुजरात राज्य में कढ़ाई का सबसे पुराना रूप है।

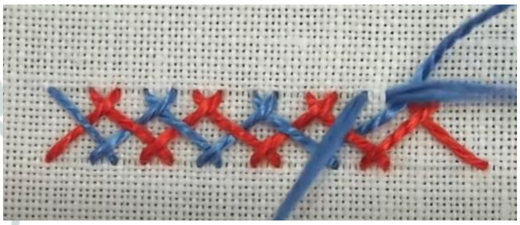

- सुंदर पैटर्न बनाने के लिए गहन रंग के धागों का उपयोग किया जाता है।
- सबसे लोकप्रिय रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले धागे के रंग लाल, बैंगनी और पीले रंग के होते हैं।
- काठी कढ़ाई अलंकृत दीवार के पर्दे और दरवाजे के फ्रेम और कपड़े में की जाती है।
- काठी कढ़ाई को दो प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है - आदित्य फातिया और पैच वर्क।
- काठी कढ़ाई में उपयोग किए जाने वाले बहुत सारे तालियों के काम को आसानी से देखा जा सकता है।

- इसमें जानवरों के रूपांकनों, फूलों के रूपांकनों, मोर के रूपांकनों और ज्यामितीय आकृतियों के अलावा अन्य शामिल हैं।
- कढ़ाई एक विशेष प्रकार के स्टिच पैटर्न का उपयोग करती है जिसे हेरिंगबोन (**Herringbone**) कहा जाता है।
- काठी कढ़ाई के सबसे लोकप्रिय रूप हीर और गुरेरी हैं।

468. क्रेवेल और गोटा वर्क (Crewel & Gota Work)

क्रेवेल

- बेयक्स टेपेस्ट्री (**Bayeux Tapestry**) के रूप में उत्पन्न हुआ, जो लगभग एक हज़ार वर्ष पुराना है।
- इसे इंग्लैंड में बनाया गया था और फ्रांस को दिया गया था।
- जैकोबियन कढ़ाई क्रेवेल से प्रेरित है।
- क्रूवेल तकनीक मुक्त कढ़ाई की एक शैली है।
- परंपरागत रूप से, क्रूवेल कढ़ाई कसकर बुने हुए लिनन टवील पर की जाती है।
- हाल ही में, मटका सिल्क, कॉटन वेलवेट और जूट जैसे अन्य कपड़ों का भी इस्तेमाल किया गया है।
- इस्तेमाल किया जाने वाला एक दृढ़ कपड़ा क्रूवेल ऊन है।
- टांके लगाने के लिए एक क्रूवेल सुई।
- डिज़ाइन की रूपरेखा अक्सर कपड़े पर मुद्रित स्क्रीन होती है।

गोटा

- गोटा वर्क को गोटा पट्टी वर्क, गोटा-किनारी वर्क के नाम से भी जाना जाता है।
- यह राजस्थान, भारत में उत्पन्न धातु कढ़ाई का एक प्रकार है।
- सोना, चांदी, तांबा आदि जैसी धातुओं के साथ अधिरोपण तकनीक आम है।
- यह फैंसी पैटर्न बनाने के लिए कपड़े के किनारों पर लगाया जाता है।
- यह लोकप्रिय रूप से दुल्हन की साड़ियों और लहंगे को संपादित करने में उपयोग किया जाता है।

469. जंडियाला गुरु के ठठेरे और संकीर्तन (Sankirtana and Thatheras of Jandiala Guru)

संकीर्तन:

- संकीर्तन में मणिपुर के मैदानों के वैष्णव लोगों के जीवन में धार्मिक अवसरों और विभिन्न चरणों को चिह्नित करने के लिए प्रदर्शन की जाने वाली कलाओं की एक सरणी शामिल है ।
- संकीर्तन का आयोजन मंदिर में किया गया, जहां कलाकार गीत और नृत्य के माध्यम से कृष्ण के जीवन और कर्मों का वर्णन करते हैं।
- एक विशिष्ट प्रदर्शन में, दो ढोलकिया और लगभग दस गायक-नर्तक बैठे भक्तों से घिरे एक हॉल या घरेलू प्रांगण में प्रदर्शन करते हैं।
- संकीर्तन के दो मुख्य सामाजिक कार्य हैं:
    - यह पूरे वर्ष उत्सव के अवसरों पर लोगों को एक साथ लाता है, मणिपुर के वैष्णव समुदाय के भीतर एक एकजुट शक्ति के रूप में कार्य करता है;

    - यह जीवन-चक्र समारोहों के माध्यम से व्यक्ति और समुदाय के बीच संबंधों को स्थापित और मजबूत करता है।

- इस प्रकार यह भगवान के दृश्य अभिव्यक्ति के रूप में माना जाता है.
- मणिपुर का संकीर्तन लोगों के साथ एक जैविक संबंध को बढ़ावा देने वाला एक जीवंत अभ्यास है: पूरा समाज इसकी सुरक्षा में शामिल है, जिसमें विशिष्ट ज्ञान और कौशल पारंपरिक रूप से संरक्षक से शिष्य तक प्रसारित होते हैं।
- संकीर्तन प्राकृतिक दुनिया के साथ सद्भाव में काम करता है, जिसकी उपस्थिति को इसके कई अनुष्ठानों के माध्यम से स्वीकार किया जाता है।

जंडियाला गुरु के ठठेरे

- जंडियाला गुरु के ठठेरों का शिल्प पंजाब में पीतल और तांबे के बर्तन बनाने की पारंपरिक तकनीक है।
- उपयोग की जाने वाली धातुएँ - तांबा, पीतल और कुछ मिश्र धातुएँ - स्वास्थ्य के लिए लाभकारी मानी जाती हैं।
- प्रक्रिया धातु के ठंडे पिंडिका की खरीद के साथ शुरू होती है जिसे पतली प्लेटों में चपटा किया जाता है और फिर घुमावदार आकृतियों में अंकित किया जाता है, जिससे आवश्यक छोटे कटोरे, रिमेड प्लेट, पानी और दूध के लिए बड़े बर्तन, खाना पकाने के बड़े बर्तन और अन्य कलाकृतियाँ बनाई जाती हैं।
- प्लेटों को हथौड़े से गर्म करने और उन्हें अलग-अलग आकार में मोड़ने के लिए सावधानीपूर्वक तापमान नियंत्रण की आवश्यकता होती है, जो कि लकड़ी से जलने वाले छोटे स्टोव (हाथ से पकड़े हुए धौंकनी द्वारा सहायता प्राप्त) का उपयोग करके प्राप्त किया जाता है।
- रेत और इमली के रस जैसी पारंपरिक सामग्रियों से पॉलिश करके बर्तनों को मैन्युअल रूप से तैयार किया जाता है।
- गर्म धातु में छोटे-छोटे डेंट की एक श्रृंखला को कुशलता से हथौड़े से मारकर डिजाइन बनाए जाते हैं।
- विवाह या मंदिरों जैसे विशेष अवसरों पर व्यक्तिगत और सामुदायिक उपयोग दोनों के लिए, अनुष्ठान या उपयोगिता उद्देश्यों के लिए बर्तनों का निर्माण किया जा सकता है।
- निर्माण की प्रक्रिया पिता से पुत्र तक मौखिक रूप से प्रेषित होती है।
- धातु का काम केवल ठठेरों के लिए आजीविका का एक रूप नहीं है, बल्कि यह उनके परिवार और रिश्तेदारी संरचना, कार्य नैतिकता और शहर के सामाजिक पदानुक्रम के भीतर स्थिति को परिभाषित करता है।

470. नौरोज़ और कुंभ मेला (Nawrouz and Kumbh Mela)

नौरोज़

- नॉरूज़, जिसका अर्थ है "नया दिन", एक पैतृक उत्सव है जो वसंत के पहले दिन और प्रकृति के नवीनीकरण को चिह्नित करता है।
- बाल्कन, काला सागर बेसिन, काकेशस, मध्य एशिया, मध्य पूर्व और अन्य क्षेत्रों में 3000 से अधिक वर्षों से मनाया जाता है।
- 21 मार्च को अफगानिस्तान, अजरबैजान, भारत, ईरान (इस्लामी गणराज्य), इराक, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्की, तुर्कमेनिस्तान और उजबेकिस्तान में वर्ष की शुरुआत होती है। इसे नौरोज़ के रूप में जाना जाता है।

- इस समय के दौरान प्रचलित एक महत्वपूर्ण परंपरा 'टेबल' के चारों ओर इकट्ठा होना है, जिसे पवित्रता, चमक, आजीविका और धन का प्रतीक वस्तुओं से सजाया गया है, ताकि प्रियजनों के साथ एक विशेष भोजन का आनंद लिया जा सके।
- नए कपड़े पहने जाते हैं और रिश्तेदारों, विशेषकर बुजुर्गों और पड़ोसियों से मिलने जाते हैं। उपहारों का आदान-प्रदान किया जाता है, विशेष रूप से बच्चों के लिए, कारीगरों द्वारा बनाई गई वस्तुओं की विशेषता।
- संगीत और नृत्य के सड़क प्रदर्शन, पानी और आग से जुड़े सार्वजनिक अनुष्ठान, पारंपरिक खेल और हस्तशिल्प का निर्माण भी होता है।
- ये प्रथाएं सांस्कृतिक विविधता और सहिष्णुता का समर्थन करती हैं और सामुदायिक एकजुटता और शांति के निर्माण में योगदान करती हैं।
- **2010 में,** संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपने प्रस्ताव में "नौरोज़ अंतर्राष्ट्रीय दिवस" घोषित किया गया था। यह संकल्प सदस्य राज्यों के प्रयासों का स्वागत करता है जहां नौरोज़ से संबंधित संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित और विकसित करने के लिए नौरोज़ मनाया जाता है।

कुंभ मेला

- कुंभ मेला (पवित्र घड़े का त्योहार) पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण मण्डली है, जिसके दौरान प्रतिभागी स्नान करते हैं या पवित्र नदी में डुबकी लगाते हैं।
- भक्तों का मानना है कि गंगा में स्नान करने से मनुष्य जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर पापों से मुक्त हो जाता है। मण्डली में तपस्वी, संत, साधु, आकांक्षी-कल्पवासी और आगंतुक शामिल हैं।
- यह उत्सव प्रयागराज (गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदी का संगम), हरिद्वार (गंगा नदी के किनारे), उज्जैन (शिप्रा नदी के किनारे) और नासिक (गोदावरी नदी के किनारे) में हर चार साल में बारी-बारी से आयोजित किया जाता है। और इसमें जाति, पंथ या लिंग की परवाह किए बिना लाखों लोग शामिल होते हैं।
- इसके प्राथमिक पदाधिकारी, हालांकि, अखाड़ों और आश्रमों, धार्मिक संगठनों से संबंधित हैं, या भिक्षा पर रहने वाले व्यक्ति हैं।
- यह आयोजन खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, कर्मकांड परंपराओं और सामाजिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है, जिससे यह ज्ञान में अत्यंत समृद्ध होता है।
- जैसा कि यह भारत के चार अलग-अलग शहरों में आयोजित किया जाता है, इसमें विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियां शामिल हैं, जो इसे सांस्कृतिक रूप से विविध त्योहार बनाती हैं।
- परंपरा से संबंधित ज्ञान और कौशल प्राचीन धार्मिक पांडुलिपियों, मौखिक परंपराओं, ऐतिहासिक यात्रा वृत्तांत और प्रख्यात इतिहासकारों द्वारा निर्मित ग्रंथों के माध्यम से प्रेषित होते हैं।
- हालांकि, आश्रमों और अखाड़ों में साधुओं का शिक्षक-छात्र संबंध कुंभ मेले से संबंधित ज्ञान और कौशल प्रदान करने और उनकी सुरक्षा करने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका है।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 78 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

551. पुतुल नाच और यमपुरी कठपुतली (Putul Nach and Yampuri puppetry)

552. केसरिया बुद्ध स्तूप (Kesaria Buddha Stupa)

553. शुमंग लीला रंगमंच रूप (Shumang Leela theatre form)

554. पांडव लेनी बौद्ध गुफाएं (Pandav Leni Buddhist caves)

555. झारखण्ड में मिला बौद्ध मठ (Buddhist Monastery found in Jharkhand)

556. कथकली और कथक (Kathakali and Kathak)

557. निजामुद्दीन मरकज मस्जिद (Nizamuddin Markaz mosque)

558. यक्षगान (Yakshagana)

559. पट्टचित्र पेंटिंग और वर्ली पेंटिंग (Pattachitra paintings & Warli Painting)

560. ओटो कोएनिग्सबर्गर और ले कोर्बुसी (Otto Koenigsberger and Le Corbusi)

551. पुतुल नाच और यमपुरी कठपुतली (Putul Nach and Yampuri puppetry)

पुतुल नाच

- यह पश्चिम बंगाल की पारंपरिक छड़ कठपुतली का रूप है।
- लकड़ी से बनी कठपुतलियां लगभग 3 से 4 फीट ऊंचाई की होती हैं और तीन जोड़ों से बनी होती हैं।
- यह जात्रा के कलाकारों की तरह वेशभूषा में होते है, जो राज्य में प्रचलित एक पारंपरिक थिएटर रूप है।
- संचालक प्रत्येक कठपुतली को सिर-ऊंचे पर्दे के पीछे पकडे खड़े रहते हैं।
- छड़ों में हेरफेर करते हुए संचालक कठपुतली को गति प्रदान करते हैं और नृत्य भी करते हैं।
- संचालक गीत गाता हुआ गद्यात्मक संवादों को भी बोलता है। मंच के साथ बैठे हुए तीन-चार संगीतकार ढोलक, हारमोनियम तथा झांझ बजाते हुए संगति करते हैं।
- संगीत और मौखिक पाठ की जात्रा रंगमंच के साथ घनिष्ठ समानता है।

यमपुरी कठपुतली:

- बिहार की पारंपरिक छड़ कठपुतली को यमपुरी के नाम से जाना जाता है।
- इस कला रूप में नियोजित कठपुतलियाँ लकड़ी से बनी होती हैं और तार से संचालित की जाती हैं।
- पश्चिमी बंगाल और उड़ीसा की छड़ पुतलियों के समान ये पुतलियां एक टुकड़े में होती हैं और उनमें कोई जोड़ नहीं होता है।
- चूंकि इनमें कोई जोड़ नहीं होता, इसलिए इन्हें चलाना अन्य छड़ पुतलियों से भिन्न होता है अत: इन्हें चलाने में अति निपुणता की आवश्यकता होती है।
- मुख्य पात्र भगवान यम (मृत्यु के हिंदू देवता), उनके दूत और चित्रगुप्त (किसी व्यक्ति के कर्मों के रिकॉर्ड-रक्षक) हैं।
- वास्तव में, 'यमपुरी' शब्द दो शब्दों 'यम' और 'पुरी' (निवास) का एक समामेलन है जो मृत्यु के देवता के निवास में अनुवाद करता है।
- माध्यमिक पात्रों में विदुषक (जोकर), ऋषि नारद, कथावाचक और मृत शामिल हैं जो मृत्यु के देवता से अपने जीवनकाल के कर्मों के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं।
- पूरा नाटक हिंदी में लिखा और सुनाया जाता है।
- यह नाटक लोगों के मन में बुरे कर्मों के संबंध में डर पैदा करने के लिए है, जो अंततः किसी की आत्मा को नरक में ले जाता है।

- यमपुरी कठपुतली सांस्कृतिक गिरावट के कगार पर है क्योंकि यह एक विशेष जनसांख्यिकीय क्षेत्र और पदोन्नति की कमी तक ही सीमित है।

भारत में कठपुतली के बारे में एक संक्षिप्त जानकारी

- प्राचीन हिंदू दार्शनिकों ने कठपुतलियों को सबसे बड़ी श्रद्धांजलि दी है। उन्होंने सर्वशक्तिमान ईश्वर की तुलना एक कठपुतली और पूरे ब्रह्मांड की कठपुतली अवस्था से की है।
- महान ग्रन्थ श्रीमद् भागवत, भगवान श्री कृष्ण के बालरूप की नह्द कथा के अनुसार भगवान धागों सत्, रज और तम प्रत्येक से पूरे विश्व को कठपुतली की भांति चलाते हैं।
- पुतली कला की प्राचीनता के सम्बंध में पहली एवं दूसरी सदी ईसा पूर्व में लिखे गए लेख तमिल ग्रन्थ 'शिलप्पदिकारम' में पाए जाते हैं।
- नाटयशास्त्र दूसरी सदी ईसा पूर्व से द्वितीय सदी इसवीं तक के दौरान कभी कभार नाटयशास्त्र पर प्रभावशाली ढंग से लिखे गए लेख पुतली कला का वर्णन नहीं मिलता है लेकिन मानव नाटय के निर्माता-सह निर्देशक को 'सूत्रधार' के रूप में प्रभावित किया गया है जिसका अर्थ धागों से है। इस शब्द ने नाटय शब्दावली में शायद अपना स्थान 'नाटयशास्त्र' के लिऐ जाने से बहुत पहले पाया है, लेकिन यह शब्द पुतलीकला नाटय (रंगमंच) से अवश्य आया होगा। इस प्रकार पतुलीकला नाटय में 500 ईसा पूर्व भी बहुत पहले वर्षों से आयी होगी।
- पारंपरिक रंगमंच की तरह, कठपुतली रंगमंच के विषय ज्यादातर महाकाव्यों और किंवदंतियों पर आधारित होते हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों की कठपुतलियों की अपनी अलग पहचान है। चित्रकला और मूर्तिकला की क्षेत्रीय शैलियाँ इनमें परिलक्षित होती हैं।
- भारत में लगभग सभी प्रकार की कठपुतली पाई जाती है।
  - धागा कठपुतली
  - छाया कठपुतलियां
  - छड़ कठपुतली
  - दस्ताना कठपुतली

552. केसरिया बुद्ध स्तूप (Kesaria Buddha Stupa)

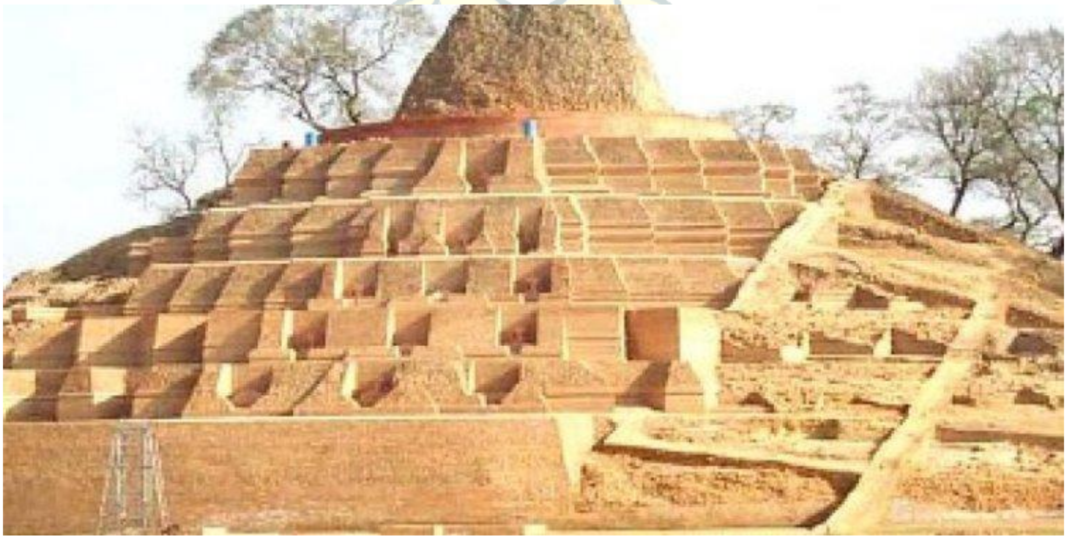

समाचार में: बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में बाढ़ के बाद केसरिया बुद्ध स्तूप जलमग्न हो गया था

केसरिया बुद्ध स्तूप के बारे में

- यह दुनिया में अब तक का सबसे ऊंचा खुदाई वाला बौद्ध स्तूप है। केसरिया स्तूप की परिधि लगभग 400 फीट है और इसकी ऊंचाई लगभग 104 फीट है।
- यह स्तूप इंडोनेशिया के बोरोबुदुर स्तूप से एक फीट ऊंचा है।
- इसकी खोज 19 वीं शताब्दी की शुरुआत में **1814** में कर्नल मैकेंज़ी के नेतृत्व में हुई थी। बाद में, **1861-62** में जनरल कनिंघम द्वारा और **1998** में पुरातत्वविद् के.के. मुहम्मद ने इस स्थल की ठीक से खुदाई करवाई थी।
- मूल केसरिया स्तूप को सम्राट अशोक (लगभग 250 ईसा पूर्व) के समय का कहा जाता है क्योंकि वहां एक अशोक स्तंभ के अवशेष मिले हैं।
- यहां के स्थानीय लोग स्तूप को "देवालय" कहते हैं जिसका अर्थ है "देवताओं का घर"
- एएसआई ने इसे राष्ट्रीय महत्व का संरक्षित स्मारक घोषित किया है।
- पुरातत्वविदों का मानना है कि केसरिया में लोगों द्वारा "राजा बेन का देवरा" के रूप में जाना जाने वाला स्तूप, बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने से पहले वैशाली के लिच्छिवियों द्वारा बनाया गया था।
- दो महान विदेशी यात्री, फैक्सियन (फाह्यान) और जुआन जांग (हुआन त्सांग) ने इस स्थान का दौरा किया था।
- वर्तमान स्तूप 200 ईस्वी और 750 ईस्वी के बीच गुप्त राजवंश की तारीख है और 4 वीं शताब्दी के शासक राजा चक्रवर्ती के साथ जुड़ा हुआ हो सकता है।
- हाल की खुदाई से स्तूप के चारों ओर "प्रदक्षिणा पथ" के साथ छतों का पता चलता है।

क्या आप जानते हैं?

- 1934 में बिहार में आए भूकंप से पहले केसरिया स्तूप 123 फीट ऊँचा था।
- हाल के दिनों में जब भारत में बौद्ध धर्म फल-फूल रहा था, ए.एस.आई. के अनुसार केसरिया स्तूप 150 फीट और बोरोबुदुर स्तूप 138 फीट ऊँचा था।
- वर्तमान में केसरिया की ऊंचाई **104** फीट और बोरोबोदुर (इंडोनेशिया) की ऊंचाई **103** फीट हो गई है।
- भगवान बुद्ध ने अपनी अंतिम यात्रा में केसरिया में एक यादगार समय बिताया। यहां उन्होंने सनसनीखेज घोषणाएं कीं, जो बाद में बौद्ध जातक कथा में दर्ज की गईं।
    - यहां केसरिया में बुद्ध ने कहा कि अपने पिछले जन्मों में उन्होंने चक्रवर्ती राजा के रूप में शासनकिया था।
    - बुद्ध ने लिच्छिवियों को "भीख का कटोरा" देकर वैशाली लौटने के लिए भी कहा।

553. शुमंग लीला रंगमंच रूप (Shumang Leela theatre form)

समाचार में: मणिपुर सरकार ने लोगों तक पहुंचने और कोविड -19 के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए लोकप्रिय 'शुमंग लीला' रंगमच का उपयोग करने की योजना बनाई है।

शुमंग लीला रूप के बारे में-

- इसे शुमंग कुम्हेई भी कहा जाता है।
- यह मणिपुर में रंगमंच का एक पारंपरिक रूप है।
- 'शुमंग' का अर्थ है आंगन और 'लीला' का अर्थ है नाटक।
- रंगमंच को चारों तरफ से खुली हवा के रूप में व्यवस्थित किया गया है।
- महिलाओं सहित सभी पात्रों को पुरुष अभिनेताओं द्वारा निभाया जाता है।
- यह आधिकारिक तौर पर 1918 में हरिश्चंद्र लीला के साथ राज्य में पहली बार दर्ज किया गया था।
- हालाँकि, यह रूप बहुत पुराना है और माना जाता है कि यह राजा चंद्रकृति (1851-1886) के शासनकाल के दौरान अस्तित्व में था।
- सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाने के लिए रंगमंच एक लोकप्रिय माध्यम बना हुआ है।

554.पांडव लेनी बौद्ध गुफाएं(Pandav Leni Buddhist caves)

- नासिक गुफाएं या त्रिरश्मी गुफाएं या पांडवलेनी गुफाएं परिसर
- पांडव लेनी परिसर या नासिक गुफाएं 24 गुफाओं का एक समूह है जो पहली शताब्दी ईसा पूर्व और तीसरी शताब्दी सीई के बीच उकेरी गई है।
- इन्हें त्रिरश्मी बौद्ध गुफाएं भी कहा जाता है इस परिसर को पहली बार 1823 में कैप्टन जेम्स डेलमाइन द्वारा प्रलेखित किया गया था और अब यह एक एएसआई-संरक्षित साइट है।
- हालांकि 6 वीं शताब्दी के बारे में अतिरिक्त मूर्तियों को जोड़ा गया था, यह बौद्ध भक्ति प्रथाओं में परिवर्तन का एक प्रमुख मील का पत्थर है
- गुफा 18 को छोड़कर अधिकांश गुफाएं विहार हैं जो पहली शताब्दी ईसा पूर्व की चैत्य है।

- ये गुफाएं हीनयान काल की हैं। हालांकि बाद में इन गुफाओं में महायान काल का प्रभाव भी पाया जा सकता है।
- गुफाओं के परिसर को **1823** में कैप्टन जेम्स डेलामाइन द्वारा प्रलेखित किया गया था।
- इन गुफाओं को नासिक पर शासन करने वाले विभिन्न राजाओं जैसे सातवाहन, नहपान, बौद्ध भिक्षुओं के अभिषेक द्वारा नक्काशीदार और दान किया गया था –
- कुछ गुफाएं पत्थर को काटकर बनाई गई सीढ़ियों से जटिल रूप से जुड़ी हुई हैं जो उन्हें अन्य गुफाओं से जोड़ती हैं।
- गुफाओं में बुद्ध, बोधिसत्व, राजा, किसानों, व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करने वाली मूर्तियां और इंडो-यूनानी वास्तुकला के सुंदर समामेलन को दर्शाती समृद्ध प्रतिमाएं हैं।
- साइट में कई आकर्षक पानी की टंकियों के साथ एक उत्कृष्ट प्राचीन जल प्रबंधन प्रणाली है।

क्या आप जानते हैं?

- उनका उत्तरी अग्रभाग पांडवलेनी गुफाओं को धूप से बचाता है और दक्षिण-पश्चिम बारिश से बचाता है इसलिए इन गुफाओं के नक्काशीदार काम और कई लंबे और सबसे मूल्यवान शिलालेख 1500-2000 वर्षों के दौरान ताजा और अप्रभावित रहे हैं।
- दादा साहब फाल्के स्मारक पांडवलेनी गुफाओं के तल पर स्थित है और दादा साहब फाल्के के काम को प्रदर्शित करता है।

555. झारखण्ड में मिला बौद्ध मठ (Buddhist Monastery found in Jharkhand)

समाचार में: हाल ही में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने एक बौद्ध मठ का पता लगाया है, जो कम से कम 900 साल पुराना माना जाता है, जो झारखंड के हजारीबाग जिले के एक गांव में एक टीले के नीचे दफन है

इसके बारे में

- एएसआई ने हजारीबाग के बुरहानी गांव सीतागढ़ हिल्स में देवता तारा और बुद्ध की 10 पाषाण प्रतिमाओं की खुदाई की है।

- ए.एस.आई को कुंडलित मुकुट और चक्र के साथ एक मूर्ति मिली जो शैव देवता माहेश्वरी की प्रतीत होती है जो सांस्कृतिक आत्मसात का संकेत है।
- यह मठ वाराणसी के पुराने मार्ग पर स्थित है जहां बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था।
- देवता तारा की मूर्तियों की उपस्थिति इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के वज्रयान रूप के संभावित प्रसार को दर्शाती है।

वज्रयान

- वज्रयान का अर्थ वज्र का वाहन है।
- इसे तांत्रिक बौद्ध धर्म या तिब्बती बौद्ध धर्म के रूप में भी जाना जाता है।
- भारत में 5वीं शताब्दी ई. में विकसित हुआ।
- यह स्वीकार किया गया की वज्रयान बौद्ध धर्म भारत में महायान से निकला है।
- वज्रयान अनुष्ठान और भक्ति मंत्र (गूढ़ मौखिक सूत्र), मंडल (आरेख और चित्र जो मानदर्शन प्रथाओं में उपयोग किए जाते हैं, और अन्य अनुष्ठानों की एक जटिल सरणी को नियोजित करता हैं।
- वज्रयान बौद्ध धर्म के व्यवसायी अपने जन्मजात बुद्ध प्रकृति को अभ्यास के साधन के रूप में लेते हैं।

556.कथकली और कथक (Kathakali and Kathak)

कथकली के बारे में

- यह भारत के छह शास्त्रीय नृत्यों में से एक है।
- राज्य: यह केरल राज्य के आसपास दक्षिण-पश्चिमी भारत से आता है।
- कथकली शब्द कथा से लिया गया है जिसका अर्थ है "कहानी या बातचीत, या एक पारंपरिक कहानी", और कलि जिसका अर्थ है "प्रदर्शन और कला"। नृत्य अच्छाई और बुराई के बीच शाश्वत लड़ाई का प्रतीक है।
- यह एक कहानी है, जो एक शास्त्रीय प्रारूप में बुनी गई एक नृत्य कथा है, जो हिंदू पौराणिक कथाओं की कहानियों पर आधारित है।
- कहानी विशुद्ध रूप से हाथों (मुद्राओं), चेहरे के भाव (रस) और शरीर की हरकतों से बनी है - 24 बुनियादी मुद्राएँ हैं।
    - कुछ पात्र हाथ के इशारों की स्पष्टता को बढ़ाने के लिए अपनी बाई उंगलियों को लंबे स्टील या चांदी के नाखूनों से सजाते हैं।
- यह नृत्य चतुर चाल, अत्यधिक विकसित हावभाव, ज़ोरदार व्यायाम और अभ्यास, रंगीन विस्तृत स्कर्ट जैसी वेशभूषा और मेकअप को सामने लाता है जिसमें व्यापक चेहरा-पेंटिंग भी शामिल है।
- कलाकार: यह परंपरागत रूप से लड़कों और पुरुषों महिला भूमिकाओं के लिए भी किया जाता है। लेकिन आधुनिक रचनाओं में भारतीय कथकली मंडलियों में महिला कलाकारों को शामिल किया गया है।

- वेशभूषा: वेशभूषा और श्रृंगार विशेष रूप से विस्तृत होते हैं, जिसमें चेहरे चित्रित मुखौटे और विशाल हेडड्रेस की तरह दिखते हैं।
- उत्पत्ति: कथकली के तत्व और पहलू प्राचीन संस्कृत ग्रंथों जैसे नाट्य शास्त्र में पाए जा सकते हैं। कथकली का श्रेय भरत ऋषि को जाता है।
- विषय: कथकली के विषय हिंदू महाकाव्यों और पुराणों से लोक पौराणिक कथाएं, धार्मिक किंवदंतियां और आध्यात्मिक विचार हैं।
- कथकली विचारों को व्यक्त करने के लिए संगीत, मुखर कलाकारों, कोरियोग्राफी और हाथ और चेहरे के हावभाव को एक साथ संश्लेषित करती है।

शैलियां

कथकली में वंश या नाटक व्याख्या और नृत्य प्रदर्शन के विशिष्ट स्कूल हैं जिन्हें संप्रदायम कहा जाता है। ये शैलियाँ हैं:

- किदंगूर शैली, जो त्रावणकोर में विकसित हुई और यह कुटियाट्टम से काफी प्रभावित है।
- कल्लुवाज़ी शैली, जो मध्य केरल में पलक्कड़ (ओलप्पमन्ना मन) में विकसित हुई, और यह पुराने कपलिंगदान और कल्लादिक्कोटन प्रदर्शन कलाओं का एक संश्लेषण है।

यह अन्य शास्त्रीय नृत्यों से किस प्रकार भिन्न है?

- इसमें प्राचीन भारतीय मार्शल आर्ट और दक्षिण भारत की खेलकूद परंपराओं के आंदोलनों को शामिल किया गया है।
- कथकली इस बात में भी भिन्न है कि अन्य शास्त्रीय भारतीय नृत्यों के विपरीत हिंदू रियासतों की अदालतों और रंगमंचो में विकसित इसके कला रूप की संरचना और विवरण मुख्य रूप से हिंदू मंदिरों और मठवासी स्कूलों में विकसित हुए।

कथक के बारे में

- कथक नृत्य की उत्पत्ति उत्तर भारत में उत्तर प्रदेश (यूपी) से हुई है।
- यह कथा शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है कहानी और पूरे नृत्य के दौरान, नर्तक अपनी आंखों और भावों के माध्यम से कहानियां सुनाते हैं।
- कथक मुद्रा, भाव, अनुग्रह, हाथ, आंख और शरीर की गतिविधियों और फुटवर्क पर जोर देता है।
- कथक 4 वीं शताब्दी ईसा पूर्व की है जहां कथक नर्तकियों की मूर्तियों को लिखित लिपियों में उत्कीर्ण किया गया था और प्राचीन मंदिरों में मूर्तियां थीं।
- कथक के प्रदर्शन में कहानियां आम तौर पर हिंदू भगवान कृष्ण (या कुछ मामलों में शिव या देवी) के बारे में होती जो भागवत पुराण या भारतीय महाकाव्यों जैसे स्रोतों से आती हैं।
- कथक निष्पादन के एक भाग के रूप में आमतौर पर तबले की तरह कुछ वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है जो एक शानदार जुगलबंदी बनाने के लिए कलाकार के संगीतमय पैर विकास के साथ अच्छी तरह से मिश्रित होते हैं।
- एक मंजीरा जो हाथ की झांझ होती है और सारंगी या हारमोनियम भी अक्सर उपयोग किया जाता है।

557. निज़ामुद्दीन मरकज मस्जिद (Nizamuddin Markaz mosque)

समाचार में: हाल ही में, केंद्र ने दिल्ली उच्च न्यायालय को बताया कि निज़ामुद्दीन मरकज़ मस्जिद को भक्तों के लिए रमजान के महीने के दौरान नमाज़ अदा करने के लिए चालू किया जा सकता है, जो 14 अप्रैल से शुरू होने की उम्मीद है।

निजामुद्दीन मरकाज़ मस्जिद के बारे में

- इसे बंगले वाली मस्जिद भी कहा जाता है, दक्षिण दिल्ली, भारत में निजामुद्दीन पश्चिम में स्थित एक मस्जिद है।
- यह जन्मस्थान और तब्लीगी जमात नेटवर्क का वैश्विक मुख्यालय है, मिशनरी और सुधारवादी आंदोलन 1926 में मुहम्मद इलियास कंधलावी द्वारा शुरू किया गया था।
- बंगलेवाली मस्जिद निजामुद्दीन में मिर्जा इलाही बख्श द्वारा बनाई गई थी।
- मुहम्मद इलियास कंधलावी के पिता मावलाना मुहम्मद इस्माइल ने अपने परिसर में काशिफ अल-उलूम नाम से एक मदरसा की स्थापना की।
- मावलाना इस्माइल और उनके बड़े बेटे की मृत्यु के बाद, मुअम्मद इलियास ने मदरसा में पढ़ाने का काम संभाला।
- यह देखते हुए कि उनका स्वयं का प्रत्यक्ष शिक्षण कार्य के लिए अपर्याप्त होगा, समय के साथ, उन्होंने तब्लीगी जमात की नींव बनाने वाली तब्लीगी की प्रथाओं को विकसित किया।
- इसमें आम मुसलमानों को प्रचारकों में बदलना शामिल था।
- उपदेश कार्य में उन्हें प्रशिक्षित करना मदरसा की मुख्य गतिविधि बन गई, धीरे-धीरे बंगले वाली मस्जिद को एक मरकज़ में बदल दिया गया।
- इलियास के जीवन के अंत तक, तब्लीगी जमात अंतरराष्ट्रीय क्षमता के साथ एक राष्ट्रीय संगठन के रूप में उभरा।

तब्लीगी जमात

- इसका शाब्दिक अर्थ है विश्वास फैलाने वाला समाज। यह एक सुन्नी इस्लामी मिशनरी आंदोलन, धर्मांतरण आंदोलन है।
- आम मुसलमानों तक पहुँचने और उनके विश्वास को पुनर्जीवित करने का लक्ष्य, विशेष रूप से अनुष्ठान, पोशाक और व्यक्तिगत व्यवहार के मामलों में।

आंदोलन की शुरुआत

- इसकी जड़ें हनफी स्कूल ऑफ न्यायशास्त्र के देवबंदी संस्करण में निहित हैं।
- इसकी शुरुआत 1927 में मेवात में देवबंद मौलवी और प्रोमिनेट इस्लामिक विद्वान मौलाना मुहम्मद इलियास खांलाव ने की थी।
- इसका उद्भव हिंदू धर्मांतरण आंदोलनों के साथ भी हुआ।
- सहारनपुर से कुछ सौ किलोमीटर दूर (जहां मौलाना इल्याज पढ़ा रहे थे) आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े मेव किसान थे, जिनमें ज्यादातर मुसलमान थे जो बड़े पैमाने पर हिंदू परंपराओं का अभ्यास कर रहे थे।
- मौलाना इल्याज ने मेव मुसलमानों को पारंपरिक इस्लाम की तह में वापस लाना शुरू किया; उन्होंने देवबंद और सहारनपुर के कई युवकों को प्रशिक्षित किया और उन्हें मेवात भेजा, जहां तब्लीगी जमात ने मदरसों और मस्जिद का एक नेटवर्क स्थापित किया।

आंदोलन का प्रसार

- इसकी शुरुआत के दो दशक बाद, तब्लीगी जमात मेवात क्षेत्र से परे फैल गई थी। 1941 में आयोजित पहले तब्लीगी सम्मेलन में, पूरे उत्तर भारत से लगभग 25,000 लोगों ने भाग लिया।
- 1947 में विभाजन के बाद, लाहौर के रायविंद शहर में एक पाकिस्तान अध्याय शुरू किया गया था। वर्तमान में, बांग्लादेश में सबसे बड़ा अध्याय है।

- तब्लीगी जमात का संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन में भी एक महत्वपूर्ण आधार है, जिसमें एक बड़ा भारतीय उपमहाद्वीप प्रवासी है। इसकी इंडोनेशिया, मलेशिया और सिंगापुर में भी उपस्थिति है।

तब्लीगी जमात छह सिद्धांतों पर आधारित है:

- **कलिमा**, विश्वास का एक लेख जिसमें तब्लीग स्वीकार करता है कि अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नहीं है और पैगंबर मुहम्मद उसके दूत हैं।
- सलात**,** या रोज़ाना पाँच बार नमाज़।
- इल्म और धिक्र, अल्लाह का ज्ञान और स्मरण सत्र में आयोजित किया जाता है जिसमें मण्डली इमाम द्वारा उपदेश सुनती है, प्रार्थना करती है, कुरान का पाठ करती है और हदीस पढ़ती है; कलीसिया इन सत्रों का उपयोग एक साथ भोजन करने के लिए भी करती है, इस प्रकार समुदाय और पहचान की भावना को बढ़ावा देती है।
- इकराम-ए-मुस्लिम, साथी मुसलमानों के साथ सम्मान का व्यवहार।
- इखलास-ए-नियात, या इरादे की ईमानदारी।

558. यक्षगान (Yakshagana)

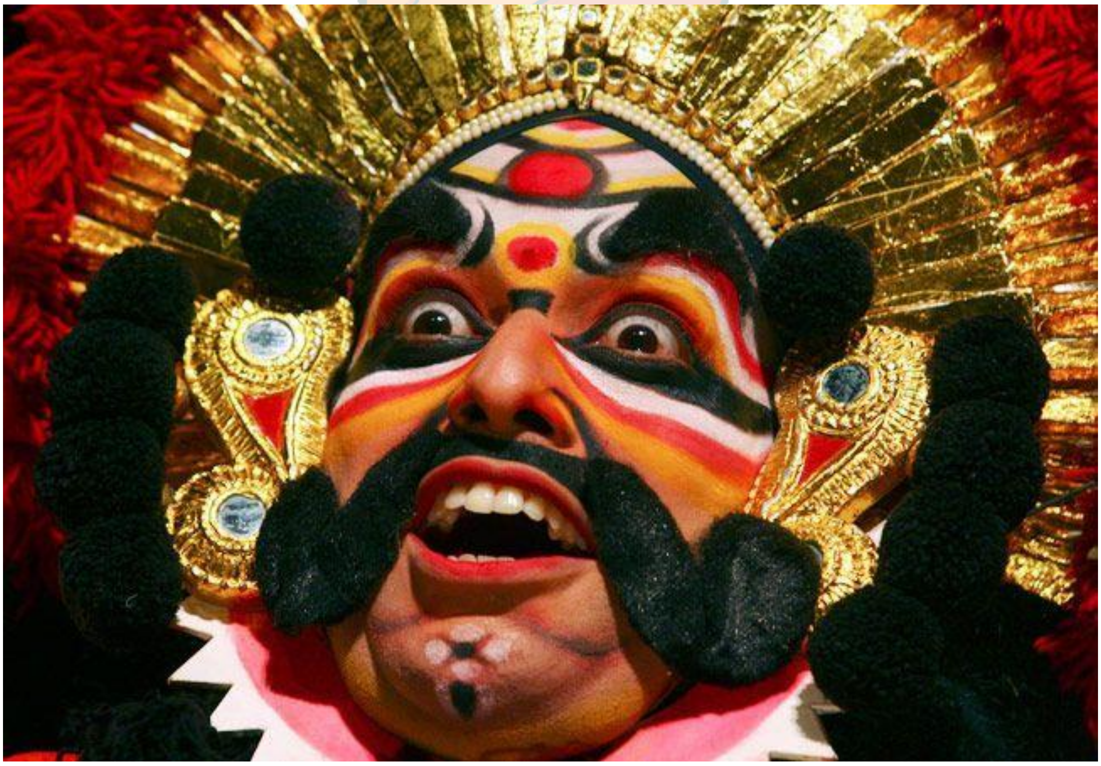

- यक्षगान कर्नाटक का एक पारंपरिक रंगमंच रूप है।
- यह एक मंदिर कला रूप है जिसमें पौराणिक कहानियों और पुराणों को दर्शाया गया है।
- यह बड़े पैमाने पर हेडगियर्स, विस्तृत चेहरे के मेकअप और जीवंत वेशभूषा और गहने के साथ किया जाता है।
- आमतौर पर कन्नड़ में सुनाया जाता है, यह मलयालम के साथ-साथ तुलु (दक्षिण कर्नाटक की बोली) में भी किया जाता है।

- यह चंदा, मद्दलम, जगट्टा या चेंगिला (झांझ) और चकरतला या इलाथलम (छोटे झांझ) जैसे टक्कर उपकरणों के साथ किया जाता है।
- यक्षगान पर पहली लिखित लिपि कुरुगोड़ु बेल्लारी जिले के 'लक्ष्मीनारायण मंदिर' में 1556 सी.ई में मिली थी।
- प्रदर्शन रात में शुरू होता है और भोर तक जारी रहता है।
- कुछ उल्लेखनीय कवियों जैसे पुरंदरदास, राजा कांतिरवा नरसराज वोडेयार द्वितीय ने कन्नड़ लिपि में 14 यक्षगान नाटक लिखे हैं।
- मुम्मदी कृष्णराजा वोडेयार ने 'सौगंधिका परिनय' सहित कई यक्षगान भी लिखे।

एक विशिष्ट यक्षगान समूह में शामिल हैं

- हिममेला: जगन्ते के साथ भागवत, चंदे, मृदंगम, तबला बजाने वाले संगीतकार।
- मुम्मेला: अभिनेता जो वेशभूषा पहनते हैं, नायक, नायिका, खलनायक की भूमिका निभाते हैं, और पारंपरिक नृत्य करते हैं जिसमें श्रृंगार, हस्य, विभात्स, रौद्र, शांता, वीरा, भाया, करुणा, अद्भुत होता है।
- कहानीकार (भागवत) गाकर कहानी सुनाता है जबकि अभिनेता कहानी के तत्वों को चित्रित करते हुए संगीत पर नृत्य करते हैं।

यक्षगान के सभी घटक—जिनमें संगीत, नृत्य और संवाद शामिल हैं, अभिनेताओं की क्षमता के आधार पर तात्कालिक हैं और इसलिए, नृत्य के साथ-साथ संवाद में भी भिन्नता हो सकती है।

- यक्षगान में अभिनय को विधि अभिनय के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- प्रदर्शनों ने ओपेरा की पश्चिमी परंपरा की तुलना की है।
- यक्षगान समान है, यदि पड़ोसी राज्यों में नृत्य-नाटक के विभिन्न रूपों से सीधे संबंधित नहीं है, तो विशेष रूप से केरल का कथकली शास्त्रीय रूप और तमिलनाडु का तेरुक्कुट्टू स्ट्रीट थिएटर।

559. पट्टचित्र पेंटिंग और वर्ली पेंटिंग (Pattachitra paintings & Warli Painting)

समाचार में: हाल ही में प्रधानमंत्री ने मन की बात में ओडिशा के 'पट्टचित्र' कलाकार की प्रशंसा की।

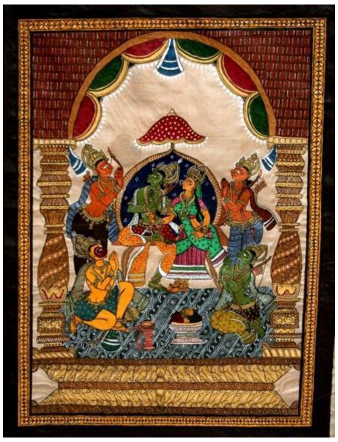

पट्टाचित्रा चित्रकला

- पट्टचित्रा शैली चित्रकला ओडिशा और पश्चिम बंगाल का एक लोकप्रिय कला रूप है।
- पट्टचित्र नाम संस्कृत के शब्द पट्टा से विकसित हुआ है, जिसका अर्थ है कैनवास, और चित्र, जिसका अर्थ है चित्र।
- पट्टचित्र समृद्ध रंगीन अनुप्रयोग, रचनात्मक रूपांकनों और डिजाइनों और सरल विषयों के चित्रण से प्रकट होता है, जो चित्रण में ज्यादातर पौराणिक हैं।
- यह ओडिशा के पुराने भित्ति चित्रों, विशेष रूप से पुरी, कोणार्क और भुवनेश्वर क्षेत्र के धार्मिक केंद्रों से मिलता जुलता है।

लोकप्रिय विषय

पट्टाचित्र (ओडिशा के) में मुख्य रूप से भगवान श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के डिजाइन हैं। इस कला के माध्यम से दर्शाए गए कुछ अन्य लोकप्रिय

विषय हैं:

- थिया बड़हिया-जगन्नाथ के मंदिर का चित्रण
- कृष्ण लीला-एक बच्चे के रूप में अपनी शक्तियों को प्रदर्शित करने वाले भगवान कृष्ण के रूप में जगन्नाथ का अधिनियमन
- दशावतार पट्टी-भगवान विष्णु के दस अवतार
- पंचमुखी-पांच सिर वाले देवता के रूप में भगवान गणेश का चित्रण।

ये पेंटिंग कैसे बनाई जाती हैं?

- पट्टा बनाना पहली चीज है जो एजेंडा में आती है, और चित्रकार इमली का मिश्रण तैयार करने का कार्य करते हैं, जो इमली के बीजों को तीन दिनों तक पानी में भिगोकर बनाया जाता है।
- बाद में बीजों को कोल्हू में पीसकर पानी में मिलाया जाता है और मिट्टी के बर्तन में गर्म करके मिश्रण बनाया जाता है, जिसे निर्यास कल्प कहा जाता है।
- इसके बाद मिश्रण को कपड़े के दो टुकड़ों को एक साथ रखने के लिए उपयोग किया जाता है, और नरम मिट्टी के पत्थर के पाउडर के साथ दो-दो बार तब तक लेपित किया जाता है जब तक कि यह दृढ़ न हो जाए।
- जैसे ही कपड़ा सूख जाता है, इसे खुरदुरे पत्थर से पॉलिश करने का अंतिम स्पर्श दिया जाता है और फिर एक चिकना पत्थर या लकड़ी दी जाती है, जब तक कि सतह चिकनी और चमड़े की न हो जाए, और यह कैनवास के रूप में चित्रित होने के लिए तैयार है।
- काइथा के पेड़ का गोंद मुख्य घटक है, और विभिन्न रंजक बनाने के लिए आधार के रूप में उपयोग किया जाता है, जिस पर विविध रंगों के लिए विविध कच्चे माल मिश्रित होते हैं।
- उदाहरण के लिए, पाउडर शंख के गोले का उपयोग सफेद वर्णक बनाने के लिए किया जाता है, जबकि दीपक कालिख का उपयोग काले वर्णक के लिए किया जाता है।
- कीया के पौधे की जड़ का उपयोग आम तौर पर सामान्य ब्रश बनाने के लिए किया जाता है, जबकि चूहों के बालों का उपयोग महीन ब्रश की आवश्यकता पर लकड़ी के हैंडल से जोड़ने के लिए किया जाता है।

पेंटिंग की वारली शैली के बारे में

- वार्ली पेंटिंग महाराष्ट्र में उत्तरी सह्याद्री रेंज से आदिवासी कला की एक शैली है।
- वार्ली संस्कृति प्रकृति की अवधारणा पर केंद्रित है।
- ये प्राथमिक दीवार पेंटिंग बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों के एक सेट का उपयोग करती हैं: चित्रण के लिए एक वृत्त, एक त्रिकोण और एक वर्ग।
- सूर्य और चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करने वाला चक्र, पहाड़ों और नुकीले पेड़ों से निकला त्रिकोण।
- वार्ली कलाकार अपने चित्रों की पृष्ठभूमि के रूप में अपनी मिट्टी की झोपड़ियों का उपयोग करते हैं, ठीक उसी तरह जैसे प्राचीन लोग गुफा की दीवारों को अपने कैनवस के रूप में इस्तेमाल करते थे।

560. ओटो कोएनिग्सबर्गर और ले कॉर्बूसियर (Otto Koenigsberger and Le Corbusier)

ओटो कोएनिग्सबर्गर

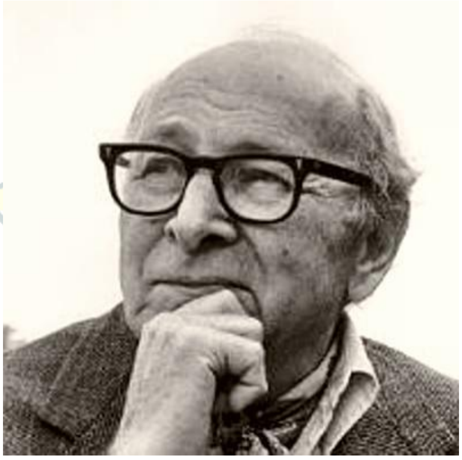

- ओटो एच कोएनिग्सबर्गर एक जर्मन वास्तुकार थे जिन्होंने मुख्य रूप से शहरी विकास योजना में काम किया था।
- 1930 के दशक के अंत में कोएनिग्सबर्गर ने मैसूर के महाराजा के लिए काम किया,
- उन्हें टाटा एंड संस द्वारा 1940 के दशक की शुरुआत में जमशेदपुर की औद्योगिक टाउनशिप विकसित करने के लिए नियुक्त किया गया था।
- बाद में उन्होंने भुवनेश्वर (**1948**) और फरीदाबाद (**1949**) के लिए मास्टर प्लान तैयार किया।
- उन्होंने शहर के केंद्र में स्कूलों और बाज़ारों की योजना बनाई।
- उनकी आवास योजनाओं में विभिन्न सामाजिक वर्गों और धर्मों के लोग शामिल थे।

ले कॉर्बूसियर

- वह एक स्विस-फ्रांसीसी वास्तुकार, डिजाइनर, चित्रकार, शहरी योजनाकार और लेखक थे।
- कॉर्बूसियर ने अदालतों से लेकर आवास तक, चंडीगढ़ के कई नागरिक भवनों को डिजाइन किया।
- कॉर्बूसियर के आधुनिकतावादी दृष्टिकोण ने, बिना सजावट के, भारत को इसकी क्रूर, नंगे कंक्रीट की इमारतें दीं।
- उन्होंने अहमदाबाद में साराभाई हाउस, शोधन हाउस, मिल ओनर्स एसोसिएशन बिल्डिंग और शंकर केंद्र भी बनवाया।
- उन्हें अक्सर "आधुनिक भारतीय वास्तुकला का पिता" कहा जाता है।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 79 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

561. नागर शैली की स्थापत्य कला में श्री राम मंदिर (Shri Ram Temple in Nagara style of architecture)

562. बूंदी पेंटिंग और किशनगढ़ पेंटिंग (Bundi Painting & Kishangarh Paintings)

563. बशोली पेंटिंग और कांगड़ा पेंटिंग (Basohli Paintings and Kangra Painting)

564. पाल और मुगल पेंटिंग (Pala and Mughal Paintings)

565. मोहिनीअट्टम और मणिपुरी नृत्य (Mohiniyattam and Manipuri Dances)

566. डोलू कुनिथा और मटकी नृत्य (Dollu Kunitha and Matki Dance)

567. ओट्टंथुल्लल और राउफ (Ootam Tullal and Rouff)

568. कठपुतली और बोम्मलट्टम (Kathputli and Bommalattam)

569. तोगलु गोम्बेयट्टा और रावणछाया (Togalu Gombeyatta and Ravanachhaya)

570. दस्ताना कठपुतली और थोलपावाक्कूथु (Glove Puppetry and Tholpavakkoothu)

561. नागर शैली की स्थापत्य कला में श्री राम मंदिर (**Shri Ram Temple in Nagara style of architecture**)

समाचार में: राम मंदिर निर्माण समिति ने मंदिर के लिए नींव बिछाने के काम की निगरानी के लिए भारत के शीर्ष इंजीनियरों और संरचनात्मक विशेषज्ञों के आठ सदस्यीय पैनल का गठन किया है।

- मंदिर के मुख्य वास्तुकार चंद्रकांत सोमपुरा के अनुसार राम मंदिर का निर्माण वास्तुकला की 'नागरा' शैली में किया जाएगा। मंदिर 360 फीट लंबा और 235 फीट चौड़ा होगा और इसमें तीन मंजिल होंगे।

वास्तुकला की नागारा शैली के बारे में

- नागारा मंदिरों की विशेषता है
  - वक्रीय सर्पिल छतों (Shikaras)
  - गर्भगृह (Garbagriha)
  - एक खंभे वाले हॉल (मंडप)।
  - अमलाका इन अक्सर चौकोर आकार के मंदिरों की एक और विशिष्ट विशेषता है जो ज्यादातर मंदिर तक जाने वाले चरणों के साथ उठाए गए प्लेटफार्मों पर निर्मित होते हैं।

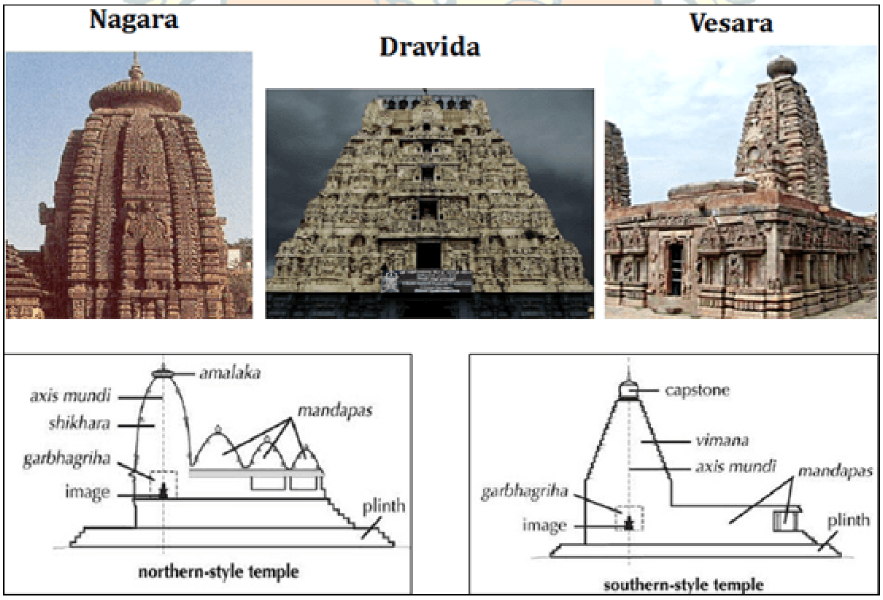

निर्माण शैली और शिखर के प्रकार के आधार पर, नागारा मंदिरों को निम्नलिखित उपप्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

रेखा-प्रसाद या लैटिना:	एक वर्ग आधार और अंदरूनी घुमावदार दीवारों के साथ सरल शिकारा जिसमें नुकीला शीर्ष होता है। पूर्व: ओडिशा का श्री जगन्नाथ मंदिर
शेकरी	यह लैटिना की एक भिन्नता है जहां शिकारा में मुख्य रेखा-प्रसाद शिकारा और केंद्रीय स्पिर के दोनों किनारों पर छोटे स्टीपल्स की एक या अधिक पंक्तियां शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, आधार और कोनों में मिनी शिकारा भी शामिल हैं। पूर्व: खजुराहो कंदारीया महादेव मंदिर।
भुमिजा	लैटिन शैली से विकसित और परमार राजवंश के तहत मालवा में विकसित। इन मंदिरों में एक सपाट ऊपर की ओर पतला प्रक्षेपण होता है जिसमें एक केंद्रीय लैटिना शिखर होता है और टेपिंग टॉवर द्वारा गठित चतुर्थांश पर लघु शिखर होते हैं। उदाहरण: मध्य प्रदेश में उदयेश्वर मंदिर।
वल्लभी	वल्लभी शैली मंदिर बैरल-वाल्टेड छतों के आकार में आयताकार हैं। वॉल्टेड चैम्बर छत ने उन्हें मोनिकर वैगन वॉल्टेड बिल्डिंग / संरचनाएं अर्जित की हैं। उदाहरण: ग्वालियर में तेली का मन्दिर

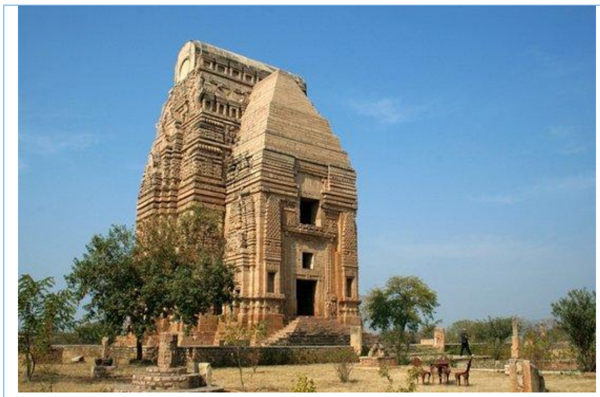	
फमसाना	वे कई स्लैब के साथ छतों से युक्त छोटी लेकिन व्यापक संरचनाएं हैं जो इमारत के मध्य बिंदु पर एक बिंदु पर एक पिरामिड बैठक की तरह एक सीधी ढलान पर एक कोमल ढलान में ऊपर की ओर बढ़ती हैं। फमसाना मोड का उपयोग मुख्य रूप से नागरा मंदिरों में मंडप के लिए किया जाता था। उदाहरण: कोणार्क मंदिर के जगमोहन

नागारा वास्तुकला के तीन उप विद्यालय

- ओडिशा स्कूल: सबसे प्रमुख विशिष्ट विशेषता शिकारा (देउल) है जो शीर्ष पर अंदर की ओर घुमावदार होने से पहले लंबवत बढ़ता है: मुख्य प्रकार वर्ग है जबकि ऊपरी पहुंच गोलाकार है।
- चंदेल स्कूल: ओडिशन शैली के विपरीत, इन मंदिरों की कल्पना एक इकाई के रूप में की जाती है और इसमें नीचे से ऊपर तक घुमावदार शिकारियां होती हैं। केंद्रीय टॉवर और टावरों से उठने वाले कई लघुचित्र शिकारा हैं जो धीरे-धीरे पोर्टिको और हॉल दोनों में मुख्य टॉवर कैप तक बढ़ते हैं।
- सोलंकी स्कूल: वे चंदेल स्कूल के समान हैं, सिवाय इसके कि उनके पास नक्काशीदार छत हैं जो एक सच्चे गुंबद की तरह दिखाई देती हैं। इन मंदिरों की विशिष्ट विशेषता मिनट और जटिल सजावटी रूपांकन है। केंद्रीय मंदिर को छोड़कर, दीवारों के आंतरिक और बाहरी दोनों किनारों पर नक्काशी मिल सकती है।

श्री राम मंदिर निर्माण ट्रस्ट-श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र

- केंद्र ने 1993 के अयोध्या एक्ट में कुछ क्षेत्र के अधिग्रहण के तहत ट्रस्ट तैयार किया।
- यह भारत सरकार द्वारा अयोध्या में श्री राम मंदिर के निर्माण और प्रबंधन के लिए स्थापित एक ट्रस्ट है।
- श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र में 15 सदस्य होंगे, जिनमें से 9 स्थायी और 6 मनोनीत हैं
- यह एम सिद्दीक(डी) टी एच आर एल आर एस वी/एस महंत सुरेश दास और ओआरएस मामले पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार बनाया गया था। कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वह फैसले के तीन महीने के भीतर मंदिर के निर्माण की देखरेख और प्रबंधन के लिए एक ट्रस्ट का गठन करे।

- इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद ट्रस्ट को विवादित 2.77 एकड़ भूमि के साथ-साथ 67.703 एकड़ भूमि अयोध्या अधिनियम, 1993 में कुछ क्षेत्र के अधिग्रहण के तहत अधिग्रहित की गई थी।

562. बूंदी पेंटिंग और किशनगढ़ पेंटिंग (Bundi Painting & Kishangarh Paintings)

बूंदी

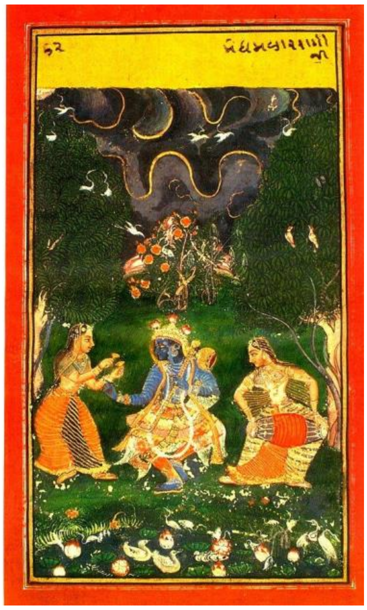

- हाडा राजपूत प्रांत की पूर्व राजधानी बूंदी दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में स्थित हदौती के नाम से जानी जाती है, ऐसा ही एक स्थान है।
- बूंदी को स्टेपवॉल, ब्लू सिटी और चॉटी काशी के रूप में भी जाना जाता है।
- प्राचीन काल में, बूंदी के आस-पास का क्षेत्र स्पष्ट रूप से विभिन्न स्थानीय जनजातियों द्वारा निवास किया गया था, जिनमें से पारिहर जनजाति, मीना प्रमुख थीं।
- बूंदी में चित्रकारी **1625** ई.के रूप में शुरू हुई।
- चित्रकला में शानदार लाल रंग में एक सीमा है।
- समृद्ध और चमकते रंग हैं।
- सुनहरा रंग में बढ़ते सूरज, क्रिमसन-लाल क्षितिज।
- ओवरलैपिंग और अर्ध-प्राकृतिक पेड़।
- मुगल प्रभाव चेहरे के परिष्कृत चित्र और पेड़ों में प्राकृतिकता का एक तत्व में दिखाई देता है।

उदाहरण:

- इलाहाबाद संग्रहालय में भैरवी रागिनी दिखाते हुए एक पेंटिंग
- कोट्टा संग्रहालय में भगवत पुराण की एक सचित्र पांडुलिपि
- राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में रासिकप्रिया कृष्ण की एक श्रृंखला।

किशनगढ़

- यह किशनगढ़ में राजस्थानी पेंटिंग का एक स्कूल है।
- राजा सावंत सिंह **(1748-1757 A.D)** के संरक्षण के तहत विकसित किया गया।
- कलाकारों ने मानव आंकड़ों के प्रकार को निष्पादित किया है, जो पतले निकायों और आंखों के ऊपर की आंखों के साथ स्वादिष्ट रूप से खींचा गया है।
- परिदृश्य का व्यापक विस्टा एक धारा, अतिव्यापी पेड़ की पंक्तियां दिखा रहा है, और वास्तुकला सामान्य विशेषताएं हैं।
- कलाकार ने लघुचित्र में कई आंकड़ों के समूह में एक उत्कृष्ट कौशल प्रदर्शित किया है। पेंटिंग में एक सुनहरी भीतरी सीमा है।
- उदाहरण: राष्ट्रीय संग्रहालय में उपस्थित शाम को गोपा और गायों के गोकुला के साथ कृष्णा की वापसी।

563. बशोली पेंटिंग और कांगड़ा पेंटिंग (Basohli Paintings and Kangra Painting)

बशोली

- बाशोली जम्मू-कश्मीर के कथुआ जिले में एक छोटा सा शहर है।
- इसकी स्थापना 1635 में राजा भूपत पाल ने की थी और यह पहारी लघु चित्रों की एक विशेष और जीवंत शैली के लिए प्रसिद्ध है।
- बाशोली पेंटिंग्स को पहाड़ी चित्रकला के पहले स्कूल के रूप में माना जाता है।
- यह शैली अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक बहुत व्यापक कंगड़ा पेंटिंग्स स्कूल में विकसित हुई।
- इसे प्राथमिक रंगों और गहरे सेट चेहरे के पैटर्न के बोल्ड स्टोक्स द्वारा चिह्नित किया जाता है।
- यह शैली राजा कृपाल पाल के संरक्षण में विकसित हुई और वास्तव में अपरंपरागत, समृद्ध और अत्यधिक जोरदार थी।

- यह जटिल ज्यामितीय डिजाइन, मोनोक्रोम पृष्ठभूमि, चमक खत्म और सजावटी पोशाक के साथ आंकड़े लगाने के साथ नाटकीय रचनाओं, आंखों पर विशेष ध्यान देने, गहने में हीरे दिखाने के लिए बीटल पंखों का उपयोग आदि के साथ संपन्न है।

- संकीर्ण आकाश और लाल सीमा भी इस लघु में नमूदार हैं.
- मुगल चित्रकला के प्रभाव के कारण चेहरे थोड़ा भारी और पेड़ प्राकृतिकवादी चरित्र बन जाते हैं।
- चमत्कारिक चित्रों ने हिंदू देवताओं के कई चित्रों को भी आकार दिया है जैसे कि। राधा-कृष्ण; जुगवता पुराण से माधव-माल्टी और यहां तक कि विषय।
- चित्रण हिंदू पौराणिक कथाओं, मुगल लघु कला रूपों और प्रचलित पहाड़ी लोक के एक कलात्मक समामेलन हैं।
- उदाहरण:
- 1730 AD में कलाकार मानकू द्वारा चित्रित गीता गोविंदा।
- देवदास ने 1694 AD में रसमानजी के रूप में लघुचित्रों को निष्पादित किया।

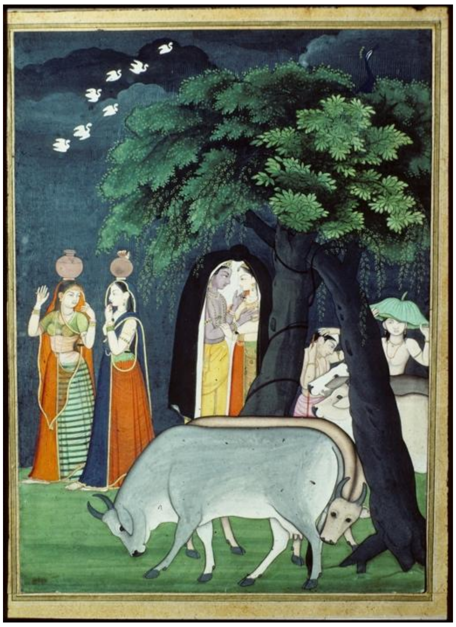

कांगड़ा

- कांगड़ा शैली गुलेर शैली से विकसित हुई।
- इसमें बाद की शैली की मुख्य विशेषताएं हैं, जैसे ड्राइंग की स्वादिष्टता और प्रकृतिवाद की गुणवत्ता।
- कांगड़ा शैली का नाम इसलिए है क्योंकि वे कांगड़ा के राजा संसार चंद की शैली में समान हैं।
- इन चित्रों में, महिलाओं के चेहरे की नाक लगभग माथे के अनुरूप होती है, आँखें लंबी और संकीर्ण होती हैं और ठोड़ी तेज होती है।
- कंगड़ा शैली विभिन्न स्थानों पर विकसित हुई कंगड़ा, गुलर, बसोहली, चंबा, जम्मू, नूरपुर और गढ़वाल इत्यादि।
- कुछ पहाड़ी चित्रकारों को महाराजा रणजीत सिंह के अधीन पंजाब में संरक्षण मिला।

- लघुचित्र छोटे आकार के चित्र होते हैं, जो आमतौर पर कपड़े या कागज पर पानी के रंग में किए जाते हैं।
- 1739 में नादिर शाह के आक्रमण और दिल्ली पर विजय के परिणामस्वरूप मैदानी इलाकों की अनिश्चितताओं से बचने के लिए मुगल कलाकारों का पहाड़ियों में प्रवास हुआ।
- इन कलाकारों को पहाड़ियों में तैयार संरक्षक मिले, जिसके कारण कांगड़ा स्कूल ऑफ पेंटिंग की स्थापना हुई।
- अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक कांगड़ा कलाकारों ने एक नई शैली विकसित की जिसमें प्रेरणा का स्रोत वैष्णवी परंपराएं थीं। शांत ब्लूज़ और साग सहित नरम रंग, और विषयों के एक गीतात्मक उपचार ने कांगड़ा पेंटिंग को प्रतिष्ठित किया।

564. पाल और मुगल पेंटिंग (Pala and Mughal Paintings)

लघु चित्र

- बंगाल के पाल भारत में लघु चित्रकला के अग्रणी थे।
- लघु चित्रकला की कला मुगल काल के दौरान अपनी पराकाष्ठा तक पहुंच गई।

पाल स्कूल (11 वीं - 12 वीं शताब्दी)

- पूर्वी भारत के पालों के तहत निष्पादित बौद्ध धर्म पर धार्मिक ग्रंथों और पश्चिमी भारत में निष्पादित जैन ग्रंथों के चित्र के रूप में मौजूद हैं
- नालंदा, ओडंतपुरी, विक्रमिला और सोमरुप के बौद्ध मठ बौद्ध शिक्षा और कला के महान केंद्र थे।
- बौद्ध विषयों से संबंधित ताड़ के पत्ते पर बड़ी संख्या में पांडुलिपियां लिखी गई थीं, इन केंद्रों पर बौद्ध देवताओं की छवियों के साथ सचित्र किया गया था।
- पाल पेंटिंग में घुमावदार रेखा और रंग के मातहत टन की विशेषता है।
- यह एक प्राकृतिक शैली है जो समकालीन कांस्य और पत्थर की मूर्तिकला के आदर्श रूपों से मिलती जुलती है।
- उदाहरण: अस्तासहस्रिका प्रज्ञापारमिता, नालंदा के मठ में निष्पादित एक पांडुलिपि

मुगल पेंटिंग (16वीं-19वीं सदी)

- मुख्य रूप से पुस्तकों पर लघु चित्रों तक सीमित या एक एल्बम में रखे जाने वाले एकल कार्यों के रूप में

- मुगल चित्र भारतीय, फारसी (सफवी) और इस्लामी शैलियों का एक अनूठा मिश्रण थे
- जो प्रकृतिवाद और धर्मनिरपेक्ष कला द्वारा चिह्नित थे।
- शास्त्रीय रागों और मौसमों या बारामासा को चित्रित करने की कोशिश की
- तूती-नामा-मुगल स्कूल का पहला कला कार्य द्वारा की गयी।
- अकबर के शासनकाल (1556-1605) ने भारतीय लघु चित्रकला में एक नए युग की शुरुआत की।
- जहांगीर के अधीन जेनिथ में जो खुद एक प्रसिद्ध चित्रकार थे।
    - जहांगीर ने कलाकारों को चित्र और दरबार के दृश्यों को चित्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया।
    - शाहजहां (1627-1658) ने चित्रकला का संरक्षण जारी रखा।
    - औरंगजेब को ललित कलाओं का कोई स्वाद नहीं था।
- उदाहरण:
- हमजानामा-अमीर हमजा की कहानियां, मीर सैय्यद अली द्वारा सचित्र।

- चंगेज़नामा, जफरनाम और रामायण के विषयों पर 1200 चित्र।

565. मोहिनीअट्टम और मणिपुरी नृत्य (Mohiniyattam and Manipuri Dances)

मोहिनीअट्टम

- मोहिनीअट्टम या मोहिनी का नृत्य (भगवान विष्णु का अवतार) केरल का शास्त्रीय एकल नृत्य रूप है।
- मोहिनीअट्टम के संदर्भ **1709** में माजामागालम नारायणन नंपुटिरी और घोषयात्रा द्वारा लिखित ग्रंथों में लिखे गए ग्रंथों में पाया जा सकता है, जिसे कवि कुंजन नंबियार द्वारा बाद में लिखा गया था।
- इसे त्रावणकोर राजाओं, महाराजा कार्तिका तिरुनेल और उनके उत्तराधिकारी महाराजा स्वाती तिरुनेल (18 वीं -19 वीं शताब्दी) द्वारा वर्तमान दिन शास्त्रीय प्रारूप में संरचित किया गया था।
- ज्यादातर परिपत्र आंदोलनों, नाजुक कदम और सूक्ष्म अभिव्यक्तियों वाली लड़कियों द्वारा एक एकल प्रदर्शन।
- आंदोलन कोमल और ग्लाइड की तरह हैं। उनके पास लयबद्ध कदम नहीं हैं।
- नांगिज कुथू और मादा लोक नृत्य कैकोट्टिकली और तिरुवतिराकली से आंदोलनों को उधार लिया गया है।
- इसमें भरतनाट्यम (अनुग्रह और लालित्य) और कथकली (शक्ति) के तत्व हैं लेकिन अधिक कामुक, गीतात्मक और नाजुक हैं।
- यथार्थवादी मेकअप और सरल ड्रेसिंग (केरल के कसाव साड़ी में) का उपयोग किया जाता है।
    - नर्तक रंगीन या सोने की जरी से सजी एक सफेद या क्रीम सादे साड़ी पहनता है।
- संगीत कर्नाटक शैली पर आधारित है।
- उपयोग किए जाने वाले उपकरण बांसुरी, वीणा, पर्क्यूशन उपकरण जैसे मृदंगम, मद्दालम, इडक्का और कुजितलम (झांझ) हैं।
- गाने आम तौर पर सोपान शैली में होते हैं।
- गीत मणिप्रावाला (तमिल-मलयालम और संस्कृत को मिलाकर एक मध्ययुगीन दक्षिण भारतीय भाषा) में हैं।
- सुनंदा नायर और पल्लवी कृष्णन उल्लेखनीय कलाकार हैं।

मणिपुरी

- लाई हरोबा मणिपुर में नृत्य का सबसे पुराना रूप है, और यह उन सभी नृत्यों का आधार बनाता है।
- मुख्य कलाकार पुजारी हैं, जिन्हें मैबास और मैबिस के नाम से जाना जाता है।
- एक नृत्य-नाटक के रूप में प्रदर्शन किया, इसके केंद्रीय थीम कृष्णा और राधा की प्रेम कहानियां हैं।
- शास्त्रीय मणिपुरी नृत्य में अनिवार्य रूप से दो प्रभाग हैं:
    - जगोई: रास लीला में प्रमुख, यह भाप लस्या तत्व का प्रतिनिधित्व करती है।
    - चोलोम: यह शास्त्रीय नृत्य के टंडवा रूप का प्रतिनिधित्व करता है।
- उपयोग किए जाने वाले मुख्य उपकरण ड्रम और बांसुरी हैं।
- महिला कलाकार बैरल के आकार की ड्रम जैसी स्कर्ट पहनती हैं।
- और एक गहरे रंग का मखमली ब्लाउज और चेहरे पर एक घूंघट।
- पुरुष नर्तक धोती, कुर्ता, सफेद पगड़ी, बाएं कंधे पर एक मुड़ा हुआ शॉल और दाहिने कंधे पर ड्रम का पट्टा पहनते हैं।
- भगवान कृष्ण का चरित्र हमेशा पीले रंग की धोती के साथ-साथ गहरे मखमली जैकेट और मोर के पंखों का मुकुट होता है।

566. डोलू कुनिथा और मटकी नृत्य (Dollu Kunitha and Matki Dance)

डोलू कुनिथा

- डोलू कुनिथा कर्नाटक की एक उत्कृष्ट और गतिशील लोक कला है।

- नृत्य अच्छी काया वाले पुरुषों तक ही सीमित है।
- कलाकार की कमर पर एक खोखला ड्रम बंधा होता है।
- यह एक धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान है और ज्यादातर कुरूबास, बेरे देवरु के भक्तों द्वारा किया जाता है।
- नर्तक एक सर्कल में खड़े होते हैं और चलते हैं क्योंकि वे ड्रम को पीटना शुरू करते हैं।

मटकी नृत्य

- मटकी नृत्य मध्य प्रदेश राज्य, विशेष रूप से मालवा क्षेत्र में लोकप्रिय एक लोक नृत्य है।
- यह रस नृत्य की भिन्नता है। अपनी छोटी उम्र के दौरान भगवान कृष्ण के प्रेम प्रकरण नृत्य में चित्रित किया गया है.
- विवाह और त्योहारों के दौरान महिलाएं इसका प्रदर्शन करती हैं।
- ढोल इस लोक नृत्य में प्रयुक्त संगीत वाद्ययंत्र है।
- आड़ा और खाड़ा नाच मटकी नृत्य के लोकप्रिय रूप हैं।

567. ओट्टंथुल्लल और राउफ (Ootam Tullal and Rouff)

ओट्टंथुल्लल

- यह केरल का लोक नृत्य है। कंचन नंबियार ने इसे 18 वीं शताब्दी में पेश किया।
- यह एक एकल प्रदर्शन है जहां कलाकार गायन के दौरान अभिनय और नृत्य करते हैं।
- कलाकार के साथ कोरस गायक, ड्रमर और झांझ खिलाड़ी के साथ है।
- पौराणिक कहानियां कोरस गीतों का आधार हैं। मलयालम साहित्य के चुनिंदा अंश की व्याख्या अपार सुंदरता के साथ प्रस्तुत की गई है।
- कलाकार को दर्शकों के प्रति अपने दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करने की स्वतंत्रता भी है।
- नृत्य में हरे रंग का श्रृंगार और रंग-बिरंगी वेशभूषा का उपयोग किया जाता है।

राउफ

- राउफ जम्मू और कश्मीर का एक लोक नृत्य है जो मुख्य रूप से फसल के मौसम में महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- महिलाएं दो पंक्तियों में नृत्य करती हैं। एक श्रृंखला का एक रूप एक दूसरे की पीठ के पार उनकी बाहों पर रखा जाता है।
- चांदी के गहने के साथ उज्ज्वल स्कर्ट और ड्रैपरियां **(Draperies)** वेशभूषा हैं।
- नर्तकियों का चेहरा मुस्कुराहट और प्रफुल्लता से भरा होता है।
- नर्तकियों को स्वर्गीय आकर्षण और खुशी पैदा होती है।

568. कठपुतली और बोम्मलट्टम (Kathputli and Bommalattam)

कठपुतली:

- राजस्थान की पारंपरिक स्ट्रिंग कठपुतलियों को कठपुतली के नाम से जानी जाता है।
- लकड़ी के एक ही टुकड़े से उकेरी गई ये कठपुतली बड़ी गुड़िया जैसी हैं।
- उनकी वेशभूषा और हेडगियर राजस्थानी शैली में डिजाइन किए गए हैं।
- कठपुतली क्षेत्रीय संगीत के अत्यधिक नाटकीय संस्करण के साथ है।
- अंडाकार चेहरे, बड़ी आंखें, धनुषाकार भौहें और बड़े होंठ चेहरे की कुछ विशिष्ट विशेषताएं हैं।
- ये कठपुतलियाँ लंबी अनुगामी स्कर्ट पहनती हैं और इनमे पैर नहीं होते हैं।
- कठपुतली उन्हें दो से पांच तारों के साथ जोड़-तोड़ करते हैं जो आम तौर पर उनकी उंगलियों से बंधे होते हैं न कि किसी सहारा या सहारे से।

बोम्मलट्टम

- तमिलनाडु की कठपुतली, जिसे बोम्मलट्टम के नाम से जाना जाता है, रॉड और स्ट्रिंग कठपुतली दोनों की तकनीकों को जोड़ती है।
- वे लकड़ी के बने होते हैं, और हेरफेर के लिए तार एक लोहे की अंगूठी से बंधे होते हैं जिसे कठपुतली अपने सिर पर मुकुट की तरह पहनती है।
- कुछ कठपुतलियों में संयुक्त बाहँ और हाथ होते हैं, जिन्हें छड़ों द्वारा हेरफेर किया जाता है।
- बोम्मलत्तम कठपुतलियाँ सबसे बड़ी, सबसे भारी और सभी पारंपरिक भारतीय मैरियनों में सबसे अधिक मुखर हैं।
- एक कठपुतली **4.5** फीट जितनी बड़ी हो सकती है, जिसका वजन लगभग दस किलोग्राम होता है।
- बोम्मलट्टम थिएटर में विस्तृत प्रारंभिक हैं जो चार भागों में विभाजित हैं - विनायक पूजा, कोमली, अमानट्टम और पुसेनकानट्टम।

569. तोगलु गोम्बेयट्टा और रावणछाया (Togalu Gombeyatta and Ravanachhaya)

तोगलु गोम्बेयट्टा

- कर्नाटक के छाया रंगमंच को तोगलु गोम्बेयट्टा के नाम से जाना जाता है।
- खिलौने चमड़े के बने होते हैं।
- लाठियों से उनके साथ छेड़छाड़ की जाती है।
- ये कठपुतली ज्यादातर आकार में छोटी होती हैं।
- हालाँकि कठपुतलियाँ अपनी सामाजिक स्थिति के अनुसार आकार में भिन्न होती हैं, उदाहरण के लिए, राजाओं के लिए बड़ा आकार, आदि।
- और आम लोगों या नौकरों के लिए छोटा आकार।

रावणछाया

- सबसे नाटकीय रूप से रोमांचक उड़ीसा का रावणछाया है।

- कठपुतली एक टुकड़े में होती हैं जिसमें कोई जोड़ नहीं होता है।
- वे रंगीन नहीं हैं, इसलिए स्क्रीन पर अपारदर्शी छाया फेंकते हैं।
- संचालन के लिए बड़ी निपुणता की आवश्यकता होती है, क्योंकि जोड़ नहीं होते हैं।
- कठपुतलियाँ हिरण की खाल से बनी होती हैं और उनकी कल्पना बोल्ड ड्रामेटिक पोज़ में की जाती है।
- मानव और पशु पात्रों के अलावा, पेड़, पहाड़, रथ आदि जैसे कई सहारा भी उपयोग किए जाते हैं।
- हालाँकि, रावणछाया कठपुतली आकार में छोटी होती हैं, लेकिन वे बहुत संवेदनशील और गीतात्मक छायाएँ बनाती हैं।

570. दस्ताना कठपुतली और थोलपावाक्कूथु (Glove Puppetry and Tholpavakkoothu)

दस्ताना कठपुतली

- दस्ताना कठपुतली, को आस्तीन, हाथ या हथेली की कठपुतलियों के रूप में भी जाना जाता है।
- सिर या तो पेयर माचे, कपड़े या लकड़ी से बना होता है, जिसमें दो हाथ गर्दन के ठीक नीचे से निकलते हैं।
- शेष आकृति में एक लंबी बहने वाली स्कर्ट है।
- ये कठपुतली लंगड़ी गुड़िया की तरह हैं, लेकिन कई तरह की हलचल पैदा करने में सक्षम हैं।
- भारत में दस्ताना कठपुतलियों की परंपरा उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और केरल में लोकप्रिय है।
- उत्तर प्रदेश में, दस्ताने कठपुतली नाटक आमतौर पर सामाजिक विषयों को प्रस्तुत करते हैं, जबकि उड़ीसा में ऐसे नाटक राधा और कृष्ण की कहानियों पर आधारित होते हैं।
- उड़ीसा में, कठपुतली एक हाथ से ढोलक बजाती है और दूसरे हाथ से कठपुतली में हेरफेर करती है।
- संवादों का वितरण, कठपुतली की चाल और ढोलक की थाप अच्छी तरह से तालमेल बिठाती है।

थोलपावक्कूथु के बारे में

- थोलपावक्कूथु केरल में एक पारंपरिक मंदिर कला है जिसकी जड़ें पलक्कड़ और पड़ोसी क्षेत्रों में हैं।

- मलयालम में, थोल का अर्थ है चमड़ा, पावा का अर्थ है गुड़िया और कूथू नाटक। हालांकि इस कर्मकांड कला रूप की उत्पत्ति बिल्कुल ज्ञात नहीं है, कुछ लोग इसे **1200** साल पुराना मानते हैं।

- यह पलक्कड़ के भद्रकाली मंदिरों में रामायण की कहानियों को बताते हुए किया जाता था।
- यह केरल के पलक्कड़ जिले के काली मंदिरों में वार्षिक उत्सवों के दौरान की जाने वाली एक आनुष्ठानिक कला है।
- यह मनोरंजन कला मंदिर प्रांगण में कूथुमादम नामक एक विशेष मंच पर प्रदर्शित की जाती है।
- यह आर्य और द्रविड़ संस्कृतियों के एकीकरण का एक बेहतरीन उदाहरण है।
- इसे निज़ाल्क्कूथु और ओलक्कूथु के नाम से भी जाना जाता है।
- नाटक का विषय कम्बा रामायण (महाकाव्य का तमिल संस्करण) पर आधारित है।
- यह पौराणिक आकृतियों के साथ-साथ आग के उपयोग और स्क्रीन के पीछे दीयों की रोशनी का उपयोग करके किया जाता है।
- मुख्य कठपुतली चलानेवाले को 'पुलावन' के नाम से जाना जाता है।

Regional Names of Shadow Puppetry in India

State	Name
Andhra Pradesh	Tholu bommalata
Karnataka	Togalu gombeyaata
Maharashtra	Charma bahuli natya
Odisha	Ravanachhaya
Kerala	Tholapavakkoothu
Tamil Nadu	Thol bommalata

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 92 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

651. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

652. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

653. हिंदुस्तानी संगीत (Hindustani Music)

654. हिंदुस्तानी संगीत घराने (Hindustani Music Gharanas)

655. कर्नाटक संगीत (Carnatic Music)

656. उत्तर प्रदेश का क्षेत्रीय संगीत (Regional Music of Uttar Pradesh)

657. राजस्थान का क्षेत्रीय संगीत (Regional Music of Rajasthan)

658. हिमालयी राज्यों का क्षेत्रीय संगीत (Regional Music of Himalayan States)

659. गोवा और महाराष्ट्र के लोक गीत (Folk Songs of Goa and Maharashtra)

660. छत्तीसगढ़ का लोक संगीत (Folk Music of Chattisgarh)

651 और 652. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

Q.1) भारत के संविधान की प्रस्तावना, है -

a) संविधान का हिस्सा है लेकिन इसका कोई कानूनी प्रभाव नहीं है।
b) संविधान का हिस्सा नहीं है और इसका कोई कानूनी प्रभाव भी नहीं है।
c) संविधान का एक हिस्सा और किसी अन्य भाग के समान कानूनी प्रभाव पड़ता है।
d) संविधान का एक हिस्सा है लेकिन अन्य भागों से स्वतंत्र रूप से कोई कानूनी प्रभाव नहीं है।

Answer: (d)

- केशवानंद भारती मामले (1973) में इस संबंध में कि क्या प्रस्तावना संविधान का भाग है या नहीं, सर्वोच्च न्यायालय ने पहले की राय को खारिज कर दिया और कहा कि प्रस्तावना संविधान का एक हिस्सा है। यह देखा गया कि प्रस्तावना का अत्यधिक महत्व है और संविधान को प्रस्तावना में व्यक्त भव्य और महान दृष्टि के आलोक में पढ़ा और व्याख्या किया जाना चाहिए।
- एलआईसी ऑफ इंडिया केस (1995) में भी, सुप्रीम कोर्ट ने फिर से कहा कि प्रस्तावना संविधान का एक अभिन्न अंग है।
- बेरुबारी संघ मामले (1963) और केशवानंद भारती मामले (1973) दोनों में, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने अमेरिकी संविधान की प्रस्तावना के बारे में विलोबी की निम्नलिखित टिप्पणियों का हवाला दिया: - इसे कभी भी संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार या उसके किसी भी विभाग को प्रदत्त किसी भी वास्तविक शक्ति का स्रोत नहीं माना गया है। इस तरह की शक्ति केवल संविधान के भाग में स्पष्ट रूप से दी गई है और जैसे कि दी गई लोगों से निहित हो सकती है। शक्तियों के बारे में जो सच है वह निषेध और सीमाओं के बारे में भी उतना ही सच है।
- इसलिए भारत के संविधान की प्रस्तावना संविधान का हिस्सा है, लेकिन अन्य भागों से स्वतंत्र रूप से इसका कोई कानूनी प्रभाव नहीं है।

Q.2) "गोल्ड ट्रेंच" (रिजर्व ट्रेंच) का अर्थ है

a) विश्व बैंक की एक ऋण प्रणाली
b) सेंट्रल बैंक के संचालन में से एक
c) विश्व व्यापार संगठन द्वारा अपने सदस्यों को दी गई एक ऋण प्रणाली
d) आईएमएफ द्वारा अपने सदस्यों को दी गई एक ऋण प्रणाली

Answer: (d)

आईएमएफ को इसके सदस्यों और उनके कोटा योगदान के माध्यम से वित्त पोषित किया जाता है। आरक्षित किश्त मूल रूप से एक आपातकालीन खाता है जिसे आईएमएफ सदस्य किसी भी समय शर्तों से सहमत हुए या सेवा शुल्क का भुगतान किए बिना एक्सेस कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी सदस्य देश के कोटे के एक हिस्से को अपने विवेक से नि:शुल्क वापस लिया जा सकता है।

Q.3) भारत के संविधान के भाग **IV** में निहित प्रावधानों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

1. वे न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय होंगे।
2. वे किसी भी न्यायालय द्वारा प्रवर्तनीय नहीं होंगे
3. इस भाग में निर्धारित सिद्धांत राज्य द्वारा कानून निर्माण को प्रभावित करना है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1

b) केवल 2
c) केवल 1 और 3
d) केवल 2 और 3

Answer: (d)

- निर्देशक सिद्धांत प्रकृति में गैर-न्यायिक हैं, अर्थात, उनके उल्लंघन के लिए वे अदालतों द्वारा कानूनी रूप से लागू नहीं होते हैं। इसलिए, सरकार (केंद्र, राज्य और स्थानीय) को उन्हें लागू करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है। फिर भी, संविधान (अनुच्छेद 37) स्वयं कहता है कि ये सिद्धांत देश के शासन में मौलिक हैं और कानून बनाने में इन सिद्धांतों को लागू करना राज्य का कर्तव्य होगा। अत: कथन **2** और **3** सही हैं।

Q.4) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत के संविधान के अनुसार एक व्यक्ति जो मतदान करने के लिए पात्र है, उसे छह महीने के लिए किसी राज्य में मंत्री बनाया जा सकता है, भले ही वह उस राज्य की विधायिका का सदस्य न हो।
2. लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के अनुसार, एक आपराधिक अपराध का दोषी और पांच साल के कारावास की सजा पाने वाले व्यक्ति को जेल से रिहा होने के बाद भी चुनाव लड़ने से स्थायी रूप से अयोग्य घोषित कर दिया जाता है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) न तो 1 और न ही 2

Answer: (d)

संविधान किसी राज्य में मंत्री बनने की शर्त के रूप में पात्रता का उल्लेख नहीं करता है। मंत्री के रूप में नियुक्ति के लिए पात्र बनने के लिए एक व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए:

- वह भारत का नागरिक होना चाहिए।
- उसकी आयु 25 वर्ष से अधिक होनी चाहिए।
- उसे भारत सरकार के अधीन लाभ का कोई पद धारण नहीं करना चाहिए।
- यदि वह संसद का सदस्य नहीं है, तो उसे मंत्री के रूप में नियुक्ति के छह महीने के भीतर लोकसभा या राज्यसभा के लिए चुना जाना चाहिए।

जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के अनुसार किसी भी अपराध के दोषी और दो साल से कम कारावास की सजा सुनाई गई व्यक्ति को इस तरह की सजा की तारीख से अयोग्य घोषित किया जाएगा और उसकी रिहाई के बाद से छह साल की आगे की अवधि के लिए अयोग्य घोषित किया जाएगा। अतः कथन **2** सही नहीं है।

Q.5) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत का राष्ट्रपति संसद का सत्र ऐसे स्थान पर आहूत कर सकता है, जैसा वह सोचता/सोचती है।
2. भारत का संविधान एक वर्ष में संसद के तीन सत्रों का प्रावधान करता है, लेकिन तीनों सत्रों का संचालन करना अनिवार्य नहीं है।
3. एक वर्ष में संसद की बैठक के लिए आवश्यक न्यूनतम दिनों की संख्या नहीं है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1
b) केवल 2
c) केवल 1 और 3
d) केवल 2 और 3

Answer: (c)

संविधान का अनुच्छेद **85(1)** राष्ट्रपति को यह अधिकार देता है कि वह संसद के प्रत्येक सदन को ऐसे समय और स्थान पर बैठक करने के लिए बुलाए, जो वह ठीक समझे, लेकिन एक सत्र में उसकी अंतिम बैठक और अगले सत्र में उसकी पहली बैठक के लिए नियत तारीख के बीच छह महीने से अधिक का अंतराल नहीं होगा। दूसरे शब्दों में, संसद को वर्ष में कम से कम दो बार मिलना चाहिए। अतः कथन 1 सही है और कथन 2 सही नहीं है। एक वर्ष में संसद की बैठक के लिए आवश्यक न्यूनतम दिनों की संख्या नहीं है। अतः कथन **3** सही है।

653. हिंदुस्तानी संगीत (Hindustani Music)

हिंदुस्तानी संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो अलग-अलग स्कूलों में से एक है जो मुख्य रूप से उत्तर भारत में प्रचलित है।

- दूसरा स्कूल कर्नाटक संगीत है जो मुख्य रूप से दक्षिणी भारत में प्रचलित है।

हिंदुस्तानी संगीत की उत्पत्ति

- वर्तमान भारतीय संगीत प्राचीन काल से विकसित हुआ है। इस वृद्धि में लगभग हर जनजाति या लोगों ने अपना-अपना योगदान दिया है।
- जबकि दोनों संगीत प्रकारों की ऐतिहासिक जड़ें भरत के नाट्यशास्त्र (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच लिखी गई) से संबंधित हैं, वे 14 वीं शताब्दी में अलग हो गए।
    - नाट्य शास्त्र मुख्य रूप से नाट्यशास्त्र से संबंधित एक व्यापक कार्य है। लेकिन इसके कुछ अध्याय संगीत से संबंधित हैं। इसमें हमें तराजू, मधुर रूपों, ताल और संगीत वाद्ययंत्रों की जानकारी मिलती है।
- संगीत की हिंदुस्तानी शाखा संगीत संरचना और उसमें सुधार की संभावनाओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है। हिंदुस्तानी शाखा ने शुद्ध स्वर सप्तक या 'प्राकृतिक नोटों के सप्तक' के पैमाने को अपनाया।
- हिंदुस्तानी संगीत में प्राचीन हिंदू परंपरा, वैदिक दर्शन और फारसी परंपरा के तत्व भी हैं। यह अरब, फारसी और अफगान तत्वों जैसे विभिन्न तत्वों से प्रभावित रहा है जिन्होंने हिंदुस्तानी संगीत में एक नया आयाम जोड़ा है।
- प्राचीन काल में इसे गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से एक से दूसरे तक पहुंचाया जाता रहा है ।
- हिंदुस्तानी संगीत में प्रयुक्त वाद्ययंत्र तबला, सारंगी, सितार, संतूर, बांसुरी और वायलिन हैं।
- यह राग प्रणाली पर आधारित है। राग एक मधुर पैमाना है जिसमें मूल सात स्वर शामिल हैं।
- अधिकांश हिंदुस्तानी संगीतकार तानसेन से अपने वंश का पता लगाते हैं।
- हिंदुस्तानी संगीत में गायन की दस मुख्य शैलियाँ हैं जैसे ध्रुपद, ख्याल, टप्पा, चतुरंग, तराना, सरगम, ठुमरी और राग सागर, होरी और धमार।

हिंदुस्तानी संगीत की प्रमुख शैलियाँ

ध्रुपद

- सबसे पुराने और भव्य रूपों में से एक।
- अलाप आमतौर पर प्रदर्शन का सबसे लंबा हिस्सा होता है।

खयाल

- इस शैली की उत्पत्ति का श्रेय अमीर खुसरो को दिया गया है।
- दो से आठ पंक्तियों तक के लघु गीतों के प्रदर्शनों की सूची पर आधारित। इसे 'बंदिश' भी कहा जाता है।

तराना शैली

- इस शैली में लय बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- यह कई शब्दों का उपयोग करता है जो तेज गति से गाए जाते हैं।

ठुमरी

- गायन की एक रोमांटिक और कामुक शैली; जिसे "भारतीय शास्त्रीय संगीत का गीत" भी कहा जाता है।
- रचनाएँ अधिकतर प्रेम, अलगाव और भक्ति पर आधारित हैं।
- एक ठुमरी आमतौर पर ख्याल संगीत कार्यक्रम के अंतिम आइटम के रूप में की जाती है।

टप्पा

- रचनाएँ तेज, सूक्ष्म और गाँठदार निर्माणों पर आधारित हैं।
- वाक्यांशों के बहुत तेज़ मोड़ का बढ़िया उपयोग।

ग़ज़ल

- खोने या अलगाव के दर्द और उस दर्द के बावजूद प्यार की सुंदरता दोनों की एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति।
- 10 वीं शताब्दी ईस्वी में ईरान में उत्पन्न हुआ।
- एक ग़ज़ल कभी भी 12 अशर या दोहे से अधिक नहीं होती।

654. हिंदुस्तानी संगीत घराने (Hindustani Music Gharanas)

- एक घराना एक सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है जो संगीतकारों या नर्तकियों को वंश या शिक्षुता से जोड़ती है, और एक विशेष संगीत शैली का पालन करती है।
- गुरु-शिष्य परंपरा में कार्य, अर्थात शिष्य किसी विशेष गुरु के अधीन सीखते हैं, अपने संगीत ज्ञान और शैली को प्रसारित करते हैं।
- ध्रुपद घराने: डगरी, दरभंगा, बेतिया, तलवंडी।
- ख्याल घराने: ग्वालियर, किराना, पटियाला, आगरा और भिंडीबाजार घराना
- ग्वालियर घराना सबसे पुराना है और इसे अन्य सभी घरानों की जननी भी माना जाता है।
- ठुमरी के तीन मुख्य घराने: बनारस, लखनऊ और पटियाला।

घराना	स्थान	संस्थापक
ग्वालियर	ग्वालियर	नानथन खान
आगरा	आगरा	हाजीसुजान खान
रंगीला	आगरा	फैय्याज खान

जयपुर अतरौली	जयपुर	अल्लादिया खान
किराना	अवध	अब्दुल वाहिद खान

655. कर्नाटक संगीत (Carnatic Music)

- कर्नाटक संगीत का नाम संस्कृत शब्द कर्नाटक संगीतम पर पड़ा है जो "पारंपरिक" या "संहिताबद्ध" संगीत को दर्शाता है।
- रागम (राग) और थालम (ताल) की एक प्रणाली से बना, इसका एक समृद्ध इतिहास और परंपरा है।
- कर्नाटक संगीत दक्षिण भारतीय राज्यों तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में विकसित हुआ है। ये राज्य द्रविड़ संस्कृति की मजबूत प्रस्तुति के लिए जाने जाते हैं।

कर्नाटक संगीत की विशेषताएं -

- इस शैली में ध्वनि की तीव्रता को नियंत्रित किया जा सकता है।
- पेचदार (कुंडली) स्वरों का प्रयोग स्पष्ट है।
- राग की स्वतंत्र और विशिष्ट शैली।
- गायक 'आलप' और 'तनम' का पाठ करता है।
- विकृत स्वरों के नाम श्रुतियों के अनुसार रखा गया हैं।
- स्वरों की शुद्धता कम श्रुतियों पर आधारित होती है, जिसका अर्थ है उच्च शुद्धता।
- कर्नाटक संगीत में समय अवधि को अच्छी तरह से परिभाषित किया गया है। 'मध्य' 'विलम्बा' से दुगुना है और 'धृत' मध्य से दुगुना है।

कर्नाटक संगीत का विकास

- ऐसा माना जाता है कि 13वीं शताब्दी से पहले भारत का संगीत कमोबेश एक समान था। हिन्दुस्तानी वैदिक, इस्लामी और फारसी परंपराओं के साथ संश्लेषण करता है। कर्नाटक तुलनात्मक रूप से अछूता है और मूल तर्ज पर विकसित हुआ है।
- भारतीय संगीत के विकास के क्रम में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के रूप में दो अलग-अलग उप-प्रणालियों का उदय हुआ। दोनों शब्द 14वीं शताब्दी ईस्वी में लिखे हरिपाला के "संगीता सुधाकर" में पहली बार उभरे।
- कर्नाटक संगीत समरूप है और हिंदुस्तानी संगीत की एक विषम भारतीय परंपरा है।
- अधिक धर्मनिरपेक्ष हिंदुस्तानी परंपराओं की तुलना में कर्नाटक संगीत में एक संयमित और बौद्धिक चरित्र है।
- विजयनगर के विपुल कवि-संगीतकार और रहस्यवादी पुरंदरदास (1484-1564) को कर्नाटक संगीत (कर्नाटक संगीता पितामह) का जनक माना जाता है।
- वेंकटमाखी को कर्नाटक संगीत का महान सिद्धांतकार माना जाता है। 17 वीं शताब्दी ईस्वी में, उन्होंने "मेलकार्ता" विकसित किया, जो दक्षिण भारतीय रागों को वर्गीकृत करने की प्रणाली है। वर्तमान में 72 मेलकार्ता हैं।

- त्यागराज (1767-1847), उनके समकालीन श्यामा शास्त्री और मुत्तुस्वामी दीक्षित एक साथ कर्नाटक संगीत के "त्रिमूर्ति" के रूप में जाने जाते हैं।

कर्नाटक संगीत के संगीत रूप

- गीतम: यह राग के सहज और मधुर प्रवाह के साथ सबसे सरल प्रकार की रचना है।
- सुलादी: सुलादी एक तालमालिका है, जिसके खंड अलग-अलग तालों में हैं।
- स्वराजति: इसमें तीन खंड होते हैं, जिन्हें पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणम कहा जाता है। विषय या तो भक्तिपूर्ण, वीर या कामुक है।
- जातिस्वरम: यह लयबद्ध उत्कृष्टता और जाति पैटर्न के उपयोग के लिए विख्यात है।
- वर्णम: यह एकमात्र रूप है जिसे हिंदुस्तानी संगीत में समकक्ष नहीं मिलता है। इस रूप को वर्णम कहा जाता है क्योंकि प्राचीन संगीत में 'वर्ण' कहे जाने वाले स्वर समूह के कई पैटर्न इसकी बनावट में गुंथे हुए हैं।
- कीर्तनम्: यह साहित्य की भक्ति सामग्री या भक्ति भाव के लिए मूल्यवान है।
- कृति: यह कीर्तनम से विकसित हुआ। यह एक अत्यधिक विकसित संगीत रूप है।
- पल्लवी: यह रचनात्मक संगीत की सबसे महत्वपूर्ण शाखा है। यह आशुरचना की अनुमति देता है।

कर्नाटक	हिंदुस्तानी
72 राग	6 प्रमुख राग
वीणा, मृदंगम और मंडोलिन	तबला, सारंगी, सितार और संतूर
स्वदेशी	अफगान फारसी और अरब प्रभाव
गायन की केवल एक विशेष निर्धारित शैली	कई उप-शैलियाँ
सुधार करने की स्वतंत्रता	बदलाव और सुधार करने की गुंजाइश
दोनों का समान महत्व है	मुखर संगीत के लिए अधिक महत्व

656. उत्तर प्रदेश का क्षेत्रीय संगीत (Regional Music of Uttar Pradesh)

रसिया गीत	• रसिया गीत गाने की समृद्ध परंपरा ब्रज में विकसित हुई जो अनादि काल से भगवान कृष्ण की आकर्षक लीलाओं की पवित्र भूमि है। • यह किसी विशेष त्योहार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि दैनिक जीवन के ताने-बाने और लोगों के दिन-प्रतिदिन के कामों में बारीकी से बुना जाता है। • रसिया शब्द रस (भावना) शब्द से बना है क्योंकि रसिया का अर्थ है जो रस या भाव से भरा हो। यह गायक के व्यक्तित्व के साथ-साथ गीत की प्रकृति को भी दर्शाता है।

आल्हा	● अल्हा, बुंदेलखंड का विशिष्ट गीत, दो योद्धा भाइयों अल्हा और उदल के वीर कर्मों का वर्णन करता है, जिन्होंने मजोबा (12 वीं -13 वीं शताब्दी ईस्वी) के राजा परिमल की सेवा की थी। ● यह बुंदेलखंड का सबसे लोकप्रिय क्षेत्रीय संगीत है जो देश में अन्यत्र भी लोकप्रिय है।आल्हा सामंती शिष्टता की कहानियों से भरा है, जो आम आदमी को आकर्षित करती है। यह उन समय में प्रचलित नैतिकता, शिष्टता और बड़प्पन के उच्च सिद्धांतों पर प्रकाश डालता है।
होरी	● यह 'राधा-कृष्ण' के प्रेम प्रसंग पर आधारित है। ● होरी गायन मूल रूप से होली के त्योहार से ही जुड़ा है। ● भारत में बसंत के मौसम में होरी गाने और होली मनाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है....... 'ब्रज में हरि होरी मचाई ....
सोहर	● सामाजिक समारोहों में, कई बार, विभिन्न संस्कृतियों के परस्पर जुड़ने के लिए एक शक्तिशाली कारक के रूप में कार्य किया जाता है। उत्तर भारत में एक परिवार में एक बेटा पैदा होने पर 'सोहर' गीत गाने की एक मजबूत परंपरा है। ● इसने मुस्लिम संस्कृति को प्रभावित किया है और उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में रहने वाले मुस्लिम परिवारों में 'सोहर' गीत का एक रूप प्राप्त हुआ है। ● 'सोहर' गीत निश्चय ही दो संस्कृतियों के मिलन की ओर इशारा करते हैं।
कजरी	● कजरी उत्तर प्रदेश और आस-पास के क्षेत्र की महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत है, जो बरसात के मौसम में गाया जाता है। ● भद्रा के दूसरे भाग में तीसरे दिन महिलाएं पूरी रात कजरी गीत गाती हैं, जबकि अर्ध चक्र में नृत्य करती हैं।

657. राजस्थान का क्षेत्रीय संगीत (Regional Music of Rajasthan)

पांखिडा	● राजस्थान के किसानों द्वारा खेतों में काम करते हुए गाया गया, किसान अल्गोजा और मंजीरा बजाते हुए गाते और बोलते हैं। ● 'पांखिडा' शब्द का शाब्दिक अर्थ प्रेमी है।
लोटिया	● चैत्र मास में 'लोटिया' उत्सव के दौरान 'लोटिया' गाया जाता है। ● महिलाएं तालाबों और कुओं से पानी से भरा लोटा (पानी भरने के लिए एक बर्तन) और कलश (पूजा के दौरान पानी भरने के लिए शुभ माना जाने वाला बर्तन) लाती हैं। ● वे उन्हें फूलों से सजाते हैं और घर आते हैं।
तीज गाने	● तीज को राजस्थान की महिलाओं द्वारा बड़ी भागीदारी के साथ मनाया जाता है। ● यह श्रावण मास की अमावस्या या अमावस्या के तीसरे दिन मनाया जाने वाला त्योहार है। ● शिव और पार्वती के गीत, मानसून का जादू, मोर नृत्य आदि गाए जाते हैं। ● उनमें से एक गाना है .... आखा तीज आई रे.....

658. हिमालयी राज्यों का क्षेत्रीय संगीत (Regional Music of Himalayan States)

भाखा, जम्मू और कश्मीर	● लोक संगीत का भाखा रूप जम्मू क्षेत्र में लोकप्रिय है। जब कटाई की जाती है तो ग्रामीणों द्वारा भाखा गाया जाता है। ● इसे सबसे मधुर और सामंजस्यपूर्ण तत्वों वाला क्षेत्रीय संगीत माना जाता है। ● इसे हारमोनियम जैसे वाद्ययंत्रों की संगत में गाया जाता है।
लमन, हिमाचल प्रदेश	● लमन में लड़कियों का एक समूह एक छंद गाता है और लड़कों का एक समूह गीत में उत्तर देता है। यह सिलसिला घंटों चलता रहता है। ● दिलचस्प बात यह है कि पहाड़ी की एक चोटियों पर गाती हुई लड़कियां शायद ही कभी दूसरी चोटी पर गाते हुए लड़कों के चेहरे देखती हैं। ● बीच में पहाड़ी है जो उनके प्रेम गीत को गूँजती है। ● इनमें से ज्यादातर गाने विशेष रूप से कुल्लू घाटी में गाए जाते हैं।
बरहमासा, कुमाऊं	● कुमाऊं का यह क्षेत्रीय संगीत एक वर्ष के बारह महीनों का वर्णन करता है, प्रत्येक अपने विशिष्ट गुणों के साथ। ● एक गीत में घुघुटी पक्षी चैत महीने की शुरुआत का प्रतीक है। ● अपने ससुराल की एक लड़की इस पक्षी को बोलने से मना करती है क्योंकि वह अपनी माँ (इजा) की यादों से परेशान है और वह दुखी महसूस कर रही है।
शकुनाखर - मंगलगीत, कुमाऊं	● हिमालय की तलहटी में शुभ अवसरों पर अनगिनत गीत गाए जाते हैं। ● शकुनाखर को गोद भराई, बच्चे के जन्म, छटी (बच्चे के जन्म से छठे दिन किया जाने वाला एक अनुष्ठान) गणेश पूजा आदि धार्मिक समारोहों के दौरान गाया जाता है। ● इन गीतों को केवल महिलाएं ही गाती हैं, बिना किसी वाद्य यंत्र के। ● शकुनाखर में प्रत्येक शुभ अवसर पर अच्छे स्वास्थ्य और लंबी आयु की प्रार्थना की जाती है........ ● शकुना डे, शकुना दे काज ये अति नीको सो रंगीलो पतलो आंची कमलू को फूल......
बसंती/बसंत गीत, गढ़वाल	● गढ़वाल में बसंत या वसंत ऋतु का स्वागत अनोखे तरीके से किया जाता है। भूमि विभिन्न रंग-बिरंगे फूलों से भरी हुई है। ● बसंत पंचमी के फर्श पर चावल के आटे से डिजाइन बनाए जाते हैं और हरे जई के बंडलों का उपयोग गोबर के साथ छाप लगाने के लिए किया जाता है। ● पेड़ों पर झूले बांधे जाते हैं और लोकगीत गाए जाते हैं।
घसियारी गीत, गढ़वाली	● पहाड़ों की युवा महिलाओं को अपने मवेशियों के लिए घास लेने के लिए दूर जंगलों में जाना पड़ता है। वे जंगल में नृत्य करते हैं और समूहों में गाते हैं। ● घसियारी गीत में मनोरंजन के साथ-साथ श्रम के महत्व पर बल दिया गया है। 'बजली तेरी झंवर झम झम ओ हो.......

659. गोवा और महाराष्ट्र के लोक गीत **(Folk Songs of Goa and Maharashtra)**

मांडो, गोवा	• गोवा क्षेत्रीय संगीत भारतीय उपमहाद्वीप के पारंपरिक संगीत का खजाना है। • गोवा में पुर्तगाली उपस्थिति के दौरान प्यार, त्रासदी और सामाजिक अन्याय और राजनीतिक प्रतिरोध दोनों से निपटने वाली गोवा गीत की बेहतरीन रचना मांडो एक धीमी कविता है।
पोवाड़ा, महाराष्ट्र	• पोवाड़ा महाराष्ट्र की पारंपरिक लोक कला है। • पोवाड़ा शब्द का अर्थ ही "शानदार शब्दों में एक कहानी का वर्णन" है। • कथाएँ हमेशा एक नायक या एक घटना या स्थान की प्रशंसा के लिए श्रद्धेय होती हैं। • मुख्य कथाकार को शाहिर के रूप में जाना जाता है जो ताल बनाए रखने के लिए डफ बजाता है। • गति मुख्य गायक द्वारा तेज और नियंत्रित होती है जिसे कोरस में दूसरों द्वारा समर्थित किया जाता है। • कथाएं हमेशा एक व्यक्तिगत नायक या एक घटना या स्थान की प्रशंसा में होती हैं। • मुख्य कथाकार को शाहिर के रूप में जाना जाता है जो लय बनाए रखने के लिए डफ बजाता है। • टेम्पो मुख्य गायक द्वारा तेज और नियंत्रित होता है जो कोरस में दूसरों द्वारा समर्थित होता है। • सबसे पहला उल्लेखनीय पोवाड़ा अग्निदास द्वारा अफजल खानाचा वध (अफजल खान की हत्या - 1659) था, जिसमें अफजल खान के साथ शिवाजी की मुठभेड़ दर्ज की गई थी।

660. छत्तीसगढ़ का लोक संगीत **(Folk Music of Chattisgarh)**

पांडवानी, छत्तीसगढ़	• पांडवानी में, महाभारत की कहानियों को एक गाथागीत के रूप में गाया जाता है और रात के प्रदर्शन के लिए एक या दो एपिसोड चुने जाते हैं। • मुख्य गायक लगातार पूरे प्रदर्शन में बैठता है और शक्तिशाली गायन और प्रतीकात्मक इशारों के साथ वह एक के बाद एक एपिसोड के सभी पात्रों को ग्रहण करता है।
सुकर के बियाह, भोजपुरी गीत	• भोजपुरी गीत आम लोक की जीवंत तस्वीर को चित्रित करते हैं। वे सरल दिलों की अंतरतम भावनाओं को अभिव्यक्ति देते हैं। • गाँव के लोगों की प्रकृति, ग्रहों और नक्षत्रों की अपनी-अपनी व्याख्याएँ होती हैं। • शुक्र और बृहस्पति की कहानी आज भी गाई जाती है-कैसे शुक्र शादी के आभूषण को भूल जाता है और इसे लेने के लिए वापस आता है, जहां वह अपनी माँ को चावल का • पानी पीते हुए पाता है, जो गरीब आदमी का भोजन है। • माँ से इस बारे में पूछने पर उसकी माँ जवाब देती है कि उसे नहीं पता कि शुक्र की होने वाली पत्नी उसे चावल का पानी भी देगी या नहीं। इससे शुक्र अविवाहित रहने का फैसला करता है।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 93 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

661. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

662. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

663. क्षेत्रीय संगीत: उत्तर-पूर्व (Regional Music: North-East)

664. क्षेत्रीय संगीत: दक्षिण (Regional Music: South)

665. भांड पाथेर और स्वांग (Bhand Pather & Swang)

666. नौटंकी और भवई (Nautanki & Bhavai)

667. माच और तमाशा (Maach & Tamaasha)

668. अपतानी (अरुणाचल प्रदेश); कोसा (छत्तीसगढ़) Apatani (Arunachal Pradesh); Kosa (Chattisgarh)

669. कुणबी (गोवा) और बांधनी (गुजरात) Kunbi (Goa) & Bandhani (Gujarat)

670. फानेक (मणिपुर) और पुआन (मिजोरम) Phanek (Manipur) & Puans (Mizoram)

661 और 662. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

Q.1) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. आधार मेटाडेटा को तीन महीने से ज्यादा स्टोर नहीं किया जा सकता है।
2. आधार डेटा साझा करने के लिए राज्य निजी निगमों के साथ कोई अनुबंध नहीं कर सकता है।
3. बीमा उत्पाद प्राप्त करने के लिए आधार अनिवार्य है।
4. भारत की संचित निधि से लाभ प्राप्त करने के लिए आधार अनिवार्य है।

ऊपर दिए गए कथनों में से सही उत्तर का चयन कीजिये।

a) केवल 1 और 4
b) केवल 2 और 4
c) केवल 3
d) केवल 1, 2 और 3

Answer: (b)

- सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया था कि आधार मेटाडेटा को छह महीने से अधिक समय तक संग्रहीत नहीं किया जा सकता है। इसने अधिनियम में प्रावधान को रद्द कर दिया, जिसने इस तरह के डेटा को पांच साल के लिए भंडारण की अनुमति दी। अत: कथन **1** सही नहीं है।

- सुप्रीम कोर्ट ने आधार अधिनियम की धारा 57 को रद्द कर दिया है, जो निजी संस्थाओं के साथ डेटा साझा करने की अनुमति देता है। फैसले का मतलब है कि दूरसंचार कंपनियां, ई-कॉमर्स फर्म जैसी निजी संस्थाएं उपभोक्ताओं से उनकी सेवाओं के लिए बायोमेट्रिक और अन्य डेटा नहीं मांग सकती हैं। अत: कथन **2** सही है।

- बीमा नियामक आईआरडीएआई ने बीमा कंपनियों को केवाईसी (अपने ग्राहक को जानें) उद्देश्य के लिए मौजूदा या नए ग्राहकों से आधार और पैन/फॉर्म 60 अनिवार्य रूप से नहीं लेने की सलाह दी है। हालांकि, इसने बीमाकर्ताओं को कुछ शर्तों के अधीन ग्राहक की पहचान, पता स्थापित करने के दस्तावेजों में से एक के रूप में आधार कार्ड स्वीकार करने की अनुमति दी, जो संभवतः सूचना के दुरुपयोग से बचाव के लिए निर्धारित किए जा रहे हैं। बीमाकर्ता आधार को केवाईसी के दस्तावेजों में से एक के रूप में तभी स्वीकार कर सकते हैं, जब वह प्रस्तावक/पॉलिसी-धारक द्वारा स्वेच्छा से पेश किया जाता है। अतः कथन **3** सही नहीं है।

- आधार (वित्तीय और अन्य सब्सिडी, लाभ और सेवाओं का लक्षित वितरण) अधिनियम, 2016 की धारा 7 के अनुसार, कोई भी व्यक्ति जो किसी भी सब्सिडी, लाभ या सेवा का लाभ उठाने का इच्छुक है, जिसके लिए भारत की संचित निधि से खर्च किया गया है, आधार संख्या होने का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा या आधार आधारित प्रमाणीकरण से गुजरना होगा। यदि व्यक्ति के पास आधार नहीं है, तो वह नामांकन के लिए एक आवेदन करेगा और व्यक्ति को सब्सिडी, लाभ या सेवा प्रदान करने के लिए पहचान के वैकल्पिक और व्यवहार्य साधन की पेशकश की जाएगी। अतः कथन **4** सही है।

Q.2) राज्यसभा के पास लोकसभा के बराबर शक्तियां हैं

a) नई अखिल भारतीय सेवाओं के निर्माण के सम्बन्ध में।
b) संविधान में संशोधन के सम्बन्ध में।
c) सरकार के निष्कासन के सम्बन्ध में।
d) कटौती प्रस्ताव के सम्बन्ध में।

Answer: (b)

- संवैधानिक विधेयक के संशोधन में राज्यसभा के पास लोकसभा के बराबर अधिकार हैं। धन विधेयक के विपरीत, संवैधानिक संशोधन विधेयक को विशेष बहुमत के साथ संसद के दोनों सदनों द्वारा अनुमोदित किया जाना है। असहमति के मामले में संयुक्त सत्र का कोई प्रावधान नहीं है, इसलिए लोकसभा राज्यसभा के फैसले का अधिरोहण नहीं कर सकती है।

- हालांकि, सरकार के गठन और निष्कासन के मामलों में, राज्यसभा की लोकसभा के संबंध में असमान स्थिति है। इसी तरह, राज्यसभा के पास वित्त के मामलों में कम शक्तियां हैं जैसे कटौती प्रस्ताव बनाना, धन विधेयक पारित करना, आदि लोकसभा की तुलना में।

- राज्यसभा को कुछ विशेष शक्तियां दी गई हैं जो उसे विशेष रूप से प्राप्त हैं। इसमें एक प्रस्ताव पारित करके केंद्र और राज्यों (अनुच्छेद 312) दोनों के लिए नई अखिल भारतीय सेवाएं बनाने के लिए संसद को अधिकृत करने की शक्ति शामिल है।

Q.3) संसद सदस्य स्थानीय क्षेत्र विकास योजना **(MPLADS)** के तहत धन के संदर्भ में**,** निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है**?**

1. MPLADS फंड का उपयोग स्वास्थ्य, शिक्षा आदि के लिए भौतिक बुनियादी ढांचे जैसे टिकाऊ सेट बनाने के लिए किया जाना चाहिए।
2. प्रत्येक सांसद निधि का एक निर्दिष्ट हिस्सा अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति आबादी को लाभान्वित करना चाहिए।
3. MPLADS फंड वार्षिक आधार पर मंजूर किए जाते हैं और अप्रयुक्त धनराशि को अगले वर्ष तक आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है।
4. जिला प्राधिकरण को हर साल कार्यान्वयन के तहत सभी कार्यों का कम से कम 10% निरीक्षण करना चाहिए।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3 और 4
c) केवल 1, 2 और 3
d) केवल 1, 2 और 4

Answer: (d)

MPLAD योजना की विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- MPLAD के दिशा-निर्देशों के अनुबंध-II में निषिद्ध कार्यों को छोड़कर, MPLAD के तहत निर्वाचन क्षेत्र में टिकाऊ संपत्ति के निर्माण पर जोर देने के साथ स्थानीय रूप से महसूस की गई अवसंरचना और विकास आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी कार्यों की अनुमति है। अतः कथन **1** सही है।

- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति द्वारा बसाए गए क्षेत्रों का विकास: सांसदों को हर साल अनुसूचित जाति की आबादी वाले क्षेत्रों के लिए MPLADS पात्रता के कम से कम 15 प्रतिशत और अनुसूचित जनजाति आबादी द्वारा बसाए गए क्षेत्रों के लिए 7.5 प्रतिशत की लागत वाले कार्यों की सिफारिश करनी होती है। दूसरे शब्दों में, 5 करोड़ रुपये की राशि में से एक सांसद अनुसूचित जाति की आबादी वाले क्षेत्रों के लिए 75 लाख रुपये और अनुसूचित जनजाति आबादी द्वारा बसाए गए क्षेत्रों के लिए 37.5 लाख रुपये की सिफारिश करेंगे।

- यदि लोकसभा सदस्य के क्षेत्र में अपर्याप्त आदिवासी आबादी है, तो वे अपने निर्वाचन क्षेत्र के बाहर लेकिन अपने चुनाव राज्य के भीतर आदिवासी क्षेत्रों में सामुदायिक संपत्ति के निर्माण के लिए इस राशि की सिफारिश कर सकते हैं। यदि किसी राज्य में अनुसूचित जनजाति द्वारा बसे हुए क्षेत्र नहीं हैं, तो इस राशि का उपयोग अनुसूचित जाति में किया जा सकता है अतः कथन 2 सही है।

- **MPLADS** फंड गैर-व्यपगत हैं: भारत सरकार द्वारा जिला प्राधिकरण को जारी फंड गैर-व्यपगत हैं। जिले में बचे फंड को बाद के वर्षों में उपयोग के लिए आगे बढ़ाया जा सकता है। अतः कथन **3** सही नहीं है।

- जिला प्राधिकरण की भूमिका: MPLAD दिशानिर्देशों के विभिन्न अनुच्छेदों में जिला प्राधिकरण की भूमिका को रेखांकित किया गया है। जिला प्राधिकरण जिला स्तर पर योजना के तहत कार्यों के समग्र समन्वय और पर्यवेक्षण के लिए जिम्मेदार होगा और हर साल कार्यान्वयन के तहत कम से कम 10% कार्यों का निरीक्षण करेगा। अतः कथन **4** सही है।

Q.4) मौलिक अधिकारों की निम्नलिखित श्रेणियों में से कौन सा भेदभाव के रूप में अस्पृश्यता के खिलाफ संरक्षण को शामिल करता है**?**

a) शोषण के खिलाफ अधिकार
b) स्वतंत्रता का अधिकार
c) संवैधानिक उपचार का अधिकार
d) समानता का अधिकार

Answer: (d)

भेदभाव के रूप में अस्पृश्यता जाति के बावजूद नागरिकों के बीच समानता की धारणा के खिलाफ जाती है। इसलिए, इसे अनुच्छेद 17 के तहत समानता के अधिकार के स्पेक्ट्रम के तहत पांच अधिकारों में से एक के रूप में शामिल किया गया है (अनुच्छेद 14-18)

Q.5) भारत में, न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करने का आदेश किसके द्वारा दिया जाता है**?**

a) संविधान की प्रस्तावना
b) राज्य नीति का एक निर्देशक सिद्धांत
c) सातवीं अनुसूची
d) पारंपरिक अभ्यास

Answer: (b)

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 50 राज्य की सार्वजनिक सेवाओं में न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करने के प्रयासों की सिफारिश करता है। दंड प्रक्रिया संहिता (1973) ने राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों के तहत अनुच्छेद 50 के अनुसरण में कार्यपालिका से न्यायपालिका के अलगाव को प्रभावित किया है।

663. क्षेत्रीय संगीत: उत्तर-पूर्व (Regional Music: North-East)

चाई हिया (चाय नृत्य के गीत), मिजोरम	• चापचर कुट महोत्सव के दौरान मिज़ो रिवाज के अनुसार केवल गायन ही नहीं, नृत्य भी पूरे त्योहार में जारी रहना चाहिए। • गायन और नृत्य के विशेष अवसर को 'चाय' कहा जाता है और गीतों को 'चाई हिया' (चाय गीत) के रूप में जाना जाता है।
सैकुटी ज़ाई (सैकुटी के गीत), मिजोरम	• मिज़ो को पारंपरिक रूप से 'गायन जनजाति'के रूप में जाना जाता है। • मिज़ो को पारंपरिक रूप से एक 'गायन जनजाति' के रूप में जाना जाता है। • मिज़ोरम के क्षेत्रीय लोक गीत मिज़ो की सबसे समृद्ध विरासत का गठन करते हैं। • मिजोरम की एक कवयित्री सैकुटी ने योद्धाओं, बहादुर शिकारियों, महान योद्धाओं और शिकारी बनने के इच्छुक युवकों आदि की प्रशंसा में गीतों की रचना की।
सना लामोक, मणिपुर	• मणिपुर की पहाड़ियां और घाटी-दोनों ही संगीत और नृत्य के शौकीन हैं।

	● सना लामोक को राज्याभिषेक समारोह के समय माईबा (पुजारी) द्वारा गाया जाता है। ● इसे राजा के स्वागत के लिए भी गाया जा सकता है। ● यह पीठासीन देवता पखंगबा की भावना को जगाने के लिए गाया जाता है। ● ऐसी मान्यता है कि यह गीत जादुई शक्तियों से युक्त है।
बिहू गाने, असम	● बिहू गीत (बिहू गीत) असम के सबसे विशिष्ट प्रकार के लोक गीत हैं, उनकी साहित्यिक सामग्री और उनकी संगीत विधा दोनों के लिए। ● बिहू गीत नए साल की शुभकामनाएं हैं और यह नृत्य एक प्राचीन प्रजनन पंथ से जुड़ा है। ● यह बिहू का समय है जब विवाह योग्य युवकों और युवतियों के लिए अपनी भावनाओं का आदान-प्रदान करने और यहां तक कि अपने साथी का चयन करने का अवसर होता है।
दसकठिया, उड़ीसा	● दसकठिया ओडिशा में प्रचलित गाथागीत गायन का एक रूप है। ● दसकठिया एक अद्वितीय संगीत वाद्ययंत्र से लिया गया नाम है जिसे "काठी" या "राम ताली" कहा जाता है, प्रस्तुति के दौरान लकड़ी के ताली का इस्तेमाल किया जाता है। ● प्रदर्शन "दास", भक्त की ओर से पूजा और प्रसाद का एक रूप है।

664. क्षेत्रीय संगीत: दक्षिण (Regional Music: South)

विल्लू पट्टू, "धनुष के गीत", तमिलनाडु	● विल्लू पट्टू तमिलनाडु का एक लोकप्रिय लोक संगीत है। ● मुख्य गायक भी मुख्य भूमिका निभाता है। ● वह मुख्य यंत्र को भी संभालता है जो धनुष के आकार का होता है। ● गीत धार्मिक विषयों के इर्द-गिर्द घूमते हैं और बुराई पर अच्छाई की जीत पर जोर देते हैं।
अम्मानैवारी , तमिल नाडु	● अम्मानैवारी(Ammanaivari) चोल सम्राट की प्रशंसा में गाए जाने वाले गीत हैं। ● अम्मानैवारी एक लकड़ी की गेंद है और महिला लोक गेंद खेलते समय उपयुक्त गीत गाती है। ● अम्मानई का यह खेल आज भी तमिलनाडु में मौजूद है।
बुर्राकथा, आंध्र प्रदेश	● बुर्राकथा गाथागीत का एक अत्यधिक नाटकीय रूप है। ● एक कहानी सुनाते समय मुख्य कलाकार द्वारा बोतल के आकार का ड्रम (तंबूरा) बजाया जाता है। ● गाथागीत गायक, मंच अभिनेताओं की तरह, श्रृंगार और एक उच्च शैली की पोशाक पहनते हैं।
भूता गीत, केरल	● भूता गीत का आधार अंधविश्वासों में निहित है । ● केरल के कुछ समुदाय भूत और आत्माओं को दूर भेजने के लिए भूता अनुष्ठान करते हैं। ● यह अनुष्ठान जोरदार नृत्य के साथ होता है और संगीत में एक भेदी और भयानक चरित्र होता है।

665. भांड पाथेर और स्वांग (Bhand Pather & Swang)

भांड पाथेर

- यह कश्मीर का पारंपरिक रंगमंच है।
- यह नृत्य, संगीत और अभिनय का एक अनूठा संयोजन है।
- हंसी-मजाक के लिए व्यंग्य, बुद्धि और पैरोडी को प्राथमिकता दी जाती है।
- इस नाट्य रूप में सुरनई, नागरा और ढोल के साथ संगीत प्रदान किया जाता है।
- चूंकि भांडेर के कलाकार मुख्य रूप से कृषक समुदाय से हैं, इसलिए उनके जीने के तरीके, आदर्शों और संवेदनशीलता का प्रभाव स्पष्ट है।

स्वांग,

- स्वांग राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र का लोक नृत्य है।
- इसमें गीत और संवाद के साथ उपयुक्त नाट्यशास्त्र और मिमिक्री शामिल है।
- यह आंदोलन-उन्मुख होने के बजाय संवाद-उन्मुख है।
- धार्मिक कहानियों और लोक कथाओं को दस या बारह व्यक्तियों के समूह द्वारा एक खुले क्षेत्र में या दर्शकों से घिरे एक ओपन एयर थिएटर द्वारा अधिनियमित किया जाता है।
- विषय नैतिकता, लोक कथाओं, प्रेरक व्यक्तित्वों के जीवन, भारतीय पौराणिक कथाओं की कहानियों और हाल के दिनों में, स्वास्थ्य और स्वच्छता, साक्षरता आदि जैसे अधिक वर्तमान विषयों से विभिन्न रूप से आकर्षित होते हैं।
- स्वांग की दो महत्वपूर्ण शैलियाँ रोहतक और हाथरस की हैं।
    - रोहतक की शैली में प्रयुक्त भाषा हरियाणवी (बंगरू) है और हाथरस में ब्रजभाषा है।

666. नौटंकी और भवई (Nautanki & Bhavai)

नौटंकी

- यह आमतौर पर उत्तर प्रदेश से जुड़ा हुआ है।
- इस पारंपरिक रंगमंच के सबसे लोकप्रिय केंद्र कानपुर, लखनऊ और हाथरस हैं।
- एक समय था जब नौटंकी में केवल पुरुष ही अभिनय करते थे लेकिन आजकल महिलाओं ने भी प्रदर्शन में भाग लेना शुरू कर दिया है।
- आम तौर पर, दो या तीन कलाकारों के बीच एक गहन मधुर विनिमय होता है; कभी-कभी कोरस का भी प्रयोग किया जाता है।
- कहानी पौराणिक और लोक कथाओं से लेकर समकालीन नायकों की कहानियों तक है।
- श्रद्धा से याद करने वालों में कानपुर की गुलाब बाई भी शामिल हैं। उन्होंने इस पुराने रंगमंच को एक नया आयाम दिया।

भवाई

- यह गुजरात का पारंपरिक रंगमंच है।
- इस रूप के केंद्र कच्छ और काठियावाड़ हैं।
- इसमें सामाजिक जीवन के मुद्दों को व्यंग्यपूर्ण तरीके से शामिल किया गया है।
- भवई में प्रयुक्त वाद्ययंत्र हैं: भुंगल, तबला, बांसुरी, पखावाज, रबाब, सारंगी, मंजीरा, आदि।
- भवई में, भक्ति और रोमांटिक भावनाओं का एक दुर्लभ संश्लेषण है।
- भवई नाटक एक निरंतर प्रदर्शन है जो बिना किसी मंच उपकरण के पूरी रात तक रहता है।
- आमतौर पर महिलाएं भवई में अभिनय नहीं करती हैं और पुरुष कलाकार भी महिला भूमिकाएं निभाते हैं।
- माना जाता है कि नृत्य की उत्पत्ति गुजरात के उत्तर के एक ब्राह्मण असित से हुई है।

667. माच और तमाशा (Maach & Tamaasha)

माच

- यह मध्य प्रदेश का पारंपरिक रंगमंच है।
- माच शब्द का प्रयोग मंच के लिए और नाटक के लिए भी किया जाता है।
- इस थिएटर रूप में संवादों के बीच गीतों को प्रमुखता दी जाती है।
- इस रूप में संवाद के लिए शब्द बोल है और कथन में कविता को वनाग कहा जाता है।
- इस नाट्य रूप की धुनों को रंगत के नाम से जाना जाता है।

तामशा

- तामाशा महाराष्ट्र का एक पारंपरिक लोक नाट्य रूप है।
- यह गोंडल, जागरण और कीर्तन जैसे लोक रूपों से विकसित हुआ है।
- अन्य रंगमंच रूपों के विपरीत, तामाशा में महिला अभिनेत्री नाटक में नृत्य आंदोलनों की मुख्य प्रतिपादक है। उसे मुर्की के नाम से जाना जाता है।
- शास्त्रीय संगीत, बिजली की गति पर फुटवर्क, और ज्वलंत इशारे नृत्य के माध्यम से सभी भावनाओं को चित्रित करना संभव बनाते हैं।

भारत के हथकरघा (Handlooms of India)

668. अपतानी (अरुणाचल प्रदेश); कोसा (छत्तीसगढ़) Apatani (Arunachal Pradesh); Kosa (Chattisgarh)

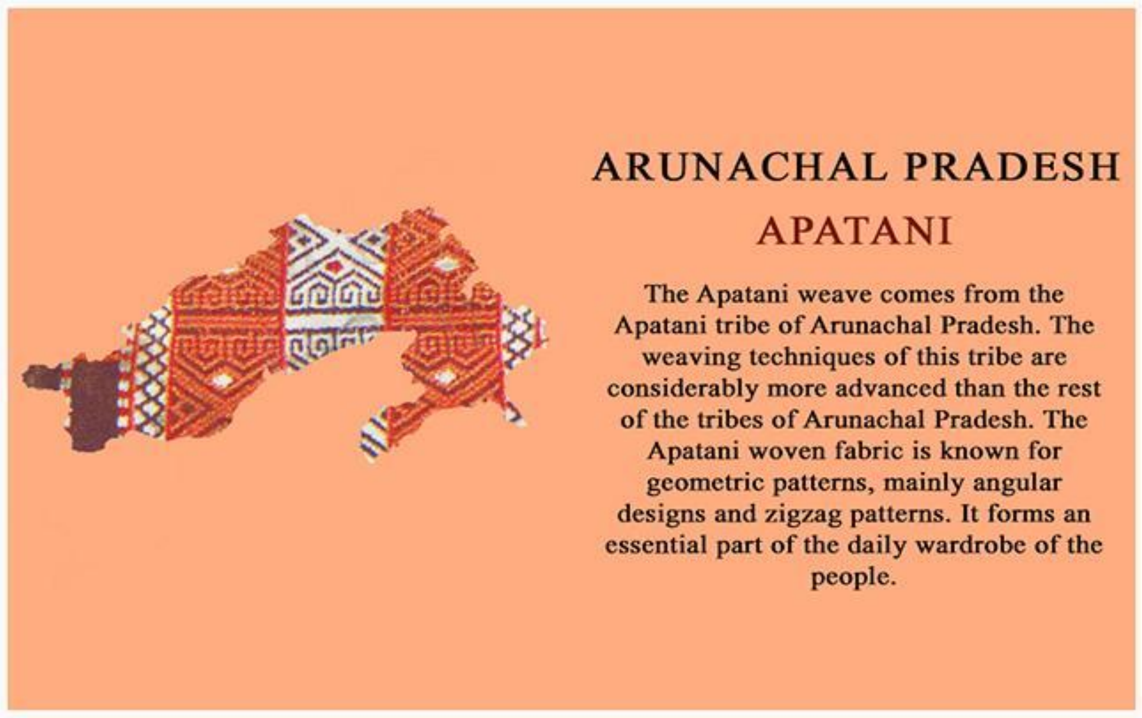

669. कुणबी (गोवा) और बांधनी (गुजरात) Kunbi (Goa) & Bandhani (Gujarat)

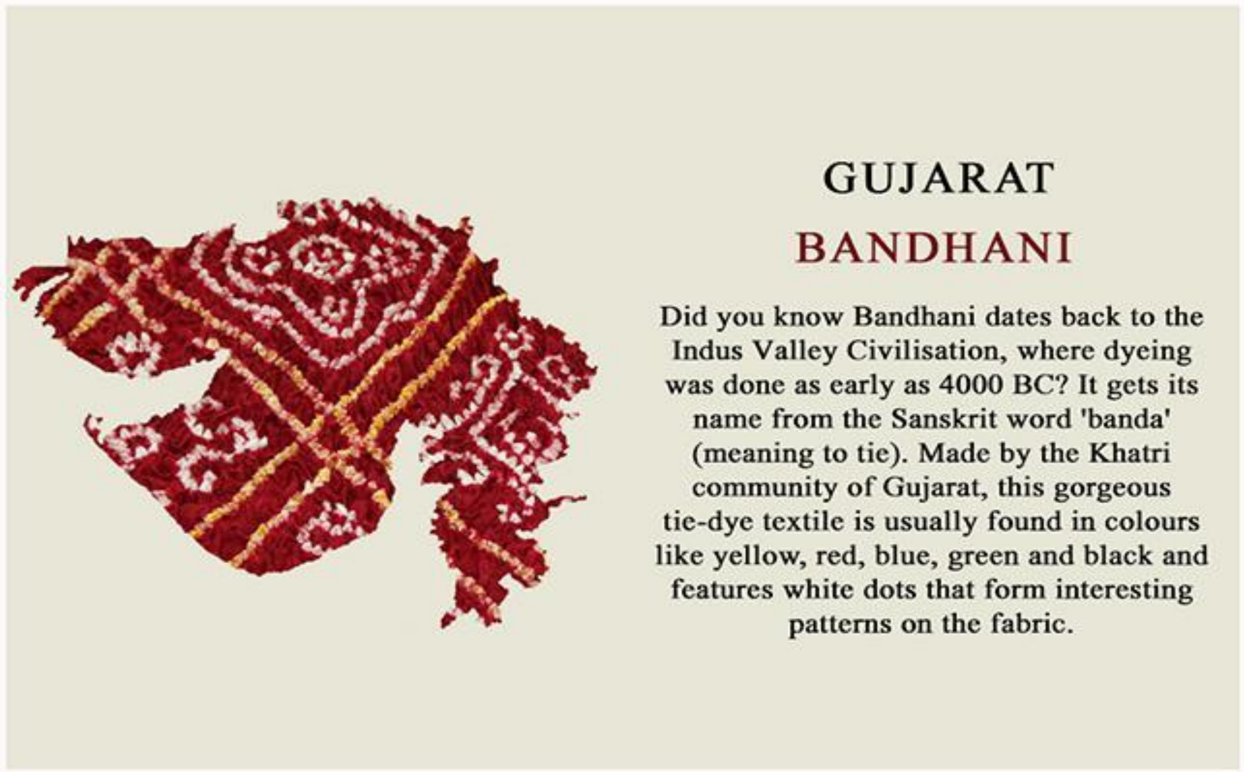

670. फानेक (मणिपुर) और पुआन (मिजोरम) Phanek (Manipur) & Puans (Mizoram)

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 106 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

751. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

752. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

753. दारा शिकोहो (Dara Shikoh)

754. कृष्णदेवराय (Krishnadevaraya)

755. हल्दीघाटी का युद्ध (Battle of Haldighati)

756. महाराजा छत्रसाल बुंदेला (Maharaja Chhatrasal Bundela)

757. टीपू सुल्तान (Tipu Sultan)

758. अब्दुल रहीम खान (Abdul Rahim Khan)

759. महत्वपूर्ण युद्ध (Important Battles)

760. बाबा बंदा सिंह बहादुर (Baba Banda Singh Bahadur)

751. और 752. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

Q.1) किसान क्रेडिट कार्ड योजना के तहत किसानों को निम्न में से किस उद्देश्य के लिए अल्पकालिक ऋण सहायता दी जाती है**?**

1. कृषि संपत्ति के रखरखाव के लिए कार्यशील पूंजी
2. कंबाइन हार्वेस्टर, ट्रैक्टर और मिनी ट्रक की खरीद।
3. कृषि परिवारों की उपभोग आवश्यकताएं
4. फसल के बाद का खर्च
5. पारिवारिक आवास का निर्माण एवं ग्राम कोल्ड स्टोरेज सुविधा की स्थापना।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा सही है**?**

a) केवल 1, 2 और 5
b) केवल 1, 3 और 4
c) केवल 2, 3, 4 और 5
d) 1, 2, 3, 4 और 5

Solution (b)

व्याख्या:

इस प्रश्न को कथन **5** को हटाकर आसानी से हल किया जा सकता है। प्रश्न अल्पकालिक ऋण सहायता के बारे में पूछ रहा है**,** इसलिए इसमें परिवार के घर का निर्माण और गांव कोल्ड स्टोरेज सुविधा की स्थापना शामिल नहीं हो सकती है।

इस योजना का उद्देश्य किसानों को उनकी खेती और अन्य जरूरतों के लिए एकल खिड़की के तहत व्यापक ऋण आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त और समय पर ऋण प्रदान करना है जैसा कि नीचे दर्शाया गया है:

- फसलों की खेती के लिए अल्पकालिक ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए
- फसल के बाद का खर्च
- उत्पादन विपणन ऋण
- किसान परिवार की खपत आवश्यकताएँ
- कृषि संपत्ति के रखरखाव के लिए कार्यशील पूंजी**,** कृषि से संबंधित गतिविधियां, जैसे डेयरी पशु, अंतर्देशीय मत्स्य पालन और फूलों की खेती, बागवानी आदि के लिए आवश्यक कार्यशील पूंजी।
- कृषि और संबद्ध गतिविधियों जैसे पंप सेट, स्प्रेयर, डेयरी पशु, फूलों की खेती, बागवानी आदि के लिए निवेश ऋण की आवश्यकता।
- जानवरों, पक्षियों, मछलियों, झींगा, अन्य जलीय जीवों के पालन, मछलियों को पकड़ने की अल्पकालिक ऋण आवश्यकताएं।

Q.2) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) में भोजन का भार थोक मूल्य सूचकांक (WPI) की तुलना में अधिक है।
2. WPI सेवाओं की कीमतों में परिवर्तन पर कब्जा नहीं करता है, जो CPI करता है।
3. भारतीय रिजर्व बैंक ने अब WPI को मुद्रास्फीति के अपने प्रमुख उपाय के रूप में अपनाया है और प्रमुख नीतिगत दरों को बदलने का निर्णय लिया है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा सही है**?**

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Solution (a)

व्याख्या:
उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) (लगभग 46%) में भोजन का भार थोक मूल्य सूचकांक (WPI) (लगभग 26%) की तुलना में अधिक है।
थोक मूल्य सूचकांक, या WPI, थोक व्यवसायों द्वारा अन्य व्यवसायों को बेचा और थोक में कारोबार किए गए सामानों की कीमतों में परिवर्तन को मापता है।
WPI उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) के विपरीत है, जो उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी गई वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों को ट्रैक करता है।
आरबीआई ने CPI को मुद्रास्फीति के प्रमुख उपाय के रूप में अपनाया। इसलिए कथन 3 गलत है।
संदर्भ: अर्थव्यवस्था वैन में भी शामिल है।
https://m.rbi.org.in/Scripts/PublicationsView.aspx?id=17450
https://iasbaba.com/2020/01/inflation/

Q.3) निम्नलिखित युग्मों पर विचार करें: नदी गिरती है

1. मेकांग: अंडमान सागर में
2. टेम्स: आयरिश सागर में
3. वोल्गा: कैस्पियन सागर में
4. ज़ाम्बेज़ी: हिंद महासागर में

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन-सा सही सुमेलित है?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 3
c) केवल 3 और 4
d) केवल 1, 2 और 4

Solution (c)

व्याख्या:

नदी	::	में गिरती है
1. मेकांग	::	दक्षिण चीन सागर
2. टेम्स	::	उत्तरी सागर
3. वोल्गा	::	कैस्पियन सागर
4. ज़ाम्बेज़ी	::	हिंद महासागर

Q.4) निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. सभी अनाजों, दालों और तिलहनों के मामले में, भारत के किसी भी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर खरीद असीमित है।
2. अनाज और दालों के मामले में, MSP किसी भी राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में उस स्तर पर तय किया जाता है, जिस स्तर तक बाजार मूल्य कभी नहीं बढ़ेगा।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा सही है?

a) केवल 1
b) केवल 2
c) दोनों 1 और 2
d) न तो 1 और न ही 2

Solution (d)

व्याख्या:

तिलहन, दलहन और अनाज की खरीद असीमित नहीं है। PM-AASHA दिशानिर्देश MSP पर दालों और तिलहन उत्पादन के 25% तक खरीद को सीमित करते हैं। अतः कथन **1** सही नहीं है।

बाजार मूल्य, परिभाषा के अनुसार, मांग और आपूर्ति बल के माध्यम से निर्धारित किया जाता है। इसलिए, यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि किसी फसल का बाजार मूल्य MSP की तुलना में कम या अधिक होना चाहिए। अतः कथन **2** भी सही नहीं है।

Q.5) भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'कमर्शियल पेपर' एक अल्पकालिक असुरक्षित वचन पत्र है।
2. 'जमा प्रमाणपत्र' भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एक निगम को जारी किया गया एक दीर्घकालिक साधन है।
3. 'कॉल मनी' एक अल्पकालिक वित्त है जिसका उपयोग अंतरबैंक लेनदेन के लिए किया जाता है।
4. 'शून्य-कूपन बांड' अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा निगमों को जारी किए गए ब्याज वाले अल्पकालिक बांड हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा सही है?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 4
c) केवल 1 और 3
d) केवल 2, 3 और 4

Solution (c)

व्याख्या:

जमा प्रमाणपत्र (CD) बैंकों और क्रेडिट यूनियनों द्वारा पेश किया जाने वाला एक उत्पाद है जो ग्राहक को एक पूर्व निर्धारित अवधि के लिए एकमुश्त जमा छोड़ने के लिए सहमत होने के बदले में ब्याज दर प्रीमियम प्रदान करता है। अतः कथन 2 गलत है।

एक शून्य-कूपन बांड एक ऋण सुरक्षा है जो ब्याज का भुगतान नहीं करता है, बल्कि एक गहरी छूट पर ट्रेड करता है, परिपक्वता पर लाभ प्रदान करता है, जब बांड को उसके पूर्ण अंकित मूल्य के लिए भुनाया जाता है। अतः कथन 4 गलत है।

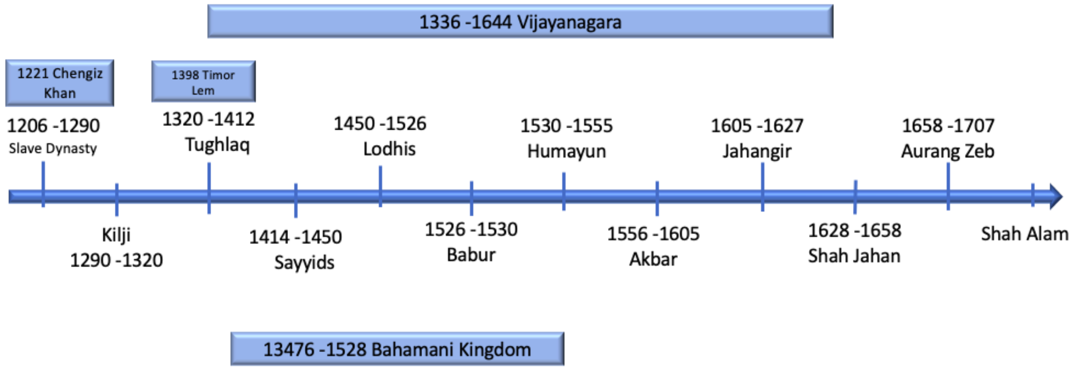

753. दारा शिकोहो (Dara Shikoh)

- वह मुगल सम्राट शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र और उत्तराधिकारी थे।
- दारा शिकोह, अपेक्षित उत्तराधिकारी, उत्तराधिकार का युद्ध हारने के बाद 1659 में अपने भाई औरंगजेब के आदेश पर मारा गया था।

- उन्होंने द कॉन्फ्लुएंस ऑफ द टू सीज (**The Confluence of the Two Seas**) नामक पुस्तक लिखी, जो इस्लाम में सूफी दर्शन और हिंदू धर्म में वेदांत दर्शन के सामंजस्य के लिए तर्क देती है।
- कला के एक महान संरक्षक, वह सैन्य गतिविधियों के बजाय दर्शन और रहस्यवाद के प्रति अधिक इच्छुक थे।
- दारा शिकोह ने इस्लाम और हिंदू धर्म के बीच एक आम रहस्यमय भाषा खोजने की दिशा में बहुत प्रयास किया।
- इस लक्ष्य की ओर उन्होंने 1657 में पचास उपनिषदों का उनकी मूल संस्कृत से फारसी में अनुवाद पूरा किया ताकि मुस्लिम विद्वानों द्वारा उनका अध्ययन किया जा सके।
- उनके अनुवाद को अक्सर सर-ए-अकबर (**Sirr-i-Akbar**) ("सबसे बड़ा रहस्य") कहा जाता है, जहां वह साहसपूर्वक कहते हैं, परिचय में, उनकी विचार योग्य परिकल्पना जिसे कुरान में "किताब अल-मकनून"(**Kitab al-maknun**) या छिपी हुई पुस्तक के रूप में संदर्भित किया गया है, उपनिषदों के अलावा और कोई नहीं है।

754. कृष्णदेवराय (Krishnadevaraya)

- वह विजयनगर साम्राज्य का एक सम्राट था जिसने **1509-1529** तक शासन किया था।
- वह तुलुव वंश के थे।
- कृष्ण देव राय ने कन्नड़ राज्य राम रमण, आंध्र भोज और मुरु रायारा गंडा की उपाधियाँ अर्जित कीं।
- वह बीजापुर, गोलकुंडा, बहमनी सल्तनत और ओडिशा के राजा के सुल्तानों को हराकर भारत के प्रायद्वीप का प्रमुख शासक बन गया।
- महान दक्षिण भारतीय गणितज्ञ नीलकंठ सोमयाजी भी कृष्णदेवराय के साम्राज्य में रहते थे।
- पुर्तगाली यात्री डोमिंगो पेस और फर्नाओ नुनिज़ ने भी उसके शासनकाल के दौरान विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया।
- उन्होंने कन्नड़ कवि मल्लनार्य को संरक्षण दिया, जिन्होंने वीरा-शैवमृत, चतु विट्ठल-अनाथ, जिन्होंने भाग-वथा लिखा, तिम्मन्ना कवि जिन्होंने कृष्ण राय भरत में अपने राजा की स्तुति लिखी।

कृष्णदेवराय की मृत्यु शिलालेख

समाचार: विजयनगर राजा कृष्णदेवराय की मृत्यु की तारीख का पहला एपिग्राफिकल संदर्भ कर्नाटक के तुमाकुरु जिले के होन्नाहल्ली में खोजा गया है।

इसके बारे में

- यह शिलालेख होनानहल्ली में गोपालकृष्ण मंदिर के उत्तर की ओर रखे एक स्लैब पर खुदा हुआ है और लिखा है
- शिलालेख तुमकुरु में भगवान वीरप्रसन्ना हनुमंत की पूजा करने के लिए तुमकुरु में गांव होन्ननहल्ली का उपहार भी दर्ज करता है।
- कालाहस्ती अभिलेख में अच्युतराय के राज्याभिषेक की तिथि २१ अक्टूबर १५२९ ई.
- आम तौर पर, राजाओं की मृत्यु शिलालेखों में दर्ज नहीं की जाती थी और यह उन दुर्लभ अभिलेखों में से एक था।

755. हल्दीघाटी का युद्ध (Battle of Haldighati)

समाचार में: ASI (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण) राजस्थान के राजसमंद जिले में हल्दीघाटी की लड़ाई के बारे में 'गलत जानकारी' रखने वाली कई पट्टिकाओं को बदलेगा।

मुद्दे के बारे में:

- यह लड़ाई जून **1576** में मेवाड़ के महाराणा प्रताप की सेना और उनके चचेरे भाई, अंबर के मान सिंह प्रथम के नेतृत्व में सैनिकों के बीच लड़ी गई थी, जो मुगल साम्राज्य का विस्तार करने के लिए अकबर की सेना का नेतृत्व कर रहे थे।

- कुछ इतिहासकारों के अनुसार, दोनों पक्षों ने लड़ाई के अंत में जीत का दावा किया।

हल्दीघाटी की लड़ाई के बारे में:

- हल्दीघाटी अरावली पर्वत श्रृंखला का एक क्षेत्र है, जिसका नाम इसकी पीली-हल्दी रंग की मिट्टी से प्रेरित है।
- राजस्थान में महाराणा प्रताप के पिता उदय सिंह को छोड़कर लगभग सभी प्रमुख राजाओं ने मुगल वंश को स्वीकार कर लिया था।
- उदय सिंह की मृत्यु के बाद, उनके बेटे महाराणा प्रताप ने मेवाड़ का प्रभार संभाला।
- इस लड़ाई को इतना भयंकर बताया गया है कि इस क्षेत्र की पीली मिट्टी लाल हो गई, यही वजह है कि युद्ध के मैदानों में से एक को अब रक्त के पूल, रक्त तलाई के रूप में जाना जाता है।

756. महाराजा छत्रसाल बुंदेला (Maharaja Chhatrasal Bundela)

समाचार में: पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री ने खजुराहो में 'महाराजा छत्रसाल कन्वेंशन सेंटर' का उद्घाटन किया।

महाराजा छत्रसाल के बारे में (**1649 - 1731**)

- वह एक बुंदेली योद्धा था जिसने मुगल बादशाह औरंगजेब के खिलाफ मुड़कर बुंदेलखंड में अपना राज्य स्थापित करना चाहा।
- वह ओरछा के रुद्र प्रताप सिंह के वंशज थे।
- छत्रसाल प्राण नाथजी के शिष्य थे और उन्होंने उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया और प्रणामी धर्म को भी स्वीकार किया।
- उनकी स्तुति कवि भूषण, लाल कवि, बख्शी हंसराज द्वारा लिखी गई थी और अन्य दरबारी कवियों ने उन्हें स्थायी प्रसिद्धि हासिल करने में मदद की।
- 20 दिसंबर 1731 को 82 वर्ष की आयु में राजा छत्रसाल का निधन हो गया।

757. टीपू सुल्तान (Tipu Sultan)

समाचार में: बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) पूर्वी मुंबई के एक उपनगर गोवंडी में उनके नाम पर एक बगीचे का नाम रखा है।

टीपू सुल्तान के बारे में (**1750-1799**)

- वह दक्षिणी भारत में मैसूर राज्य के शासक थे।
- उनका जन्म **1750** में देवनहल्ली, कर्नाटक में हुआ था।
- उन्हें अपने पिता हैदर अली से सिंहासन विरासत में मिला था।
- उन्होंने **1775** और **1779** के बीच कई मौकों पर मराठों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- मैसूर और मराठा के बीच युद्ध गजेंद्रगढ़ की संधि के साथ समाप्त हुआ।
- वह रॉकेट आर्टिलरी के अग्रदूत थे।

- उन्होंने मैसूर में बड़े पैमाने पर रेशम उत्पादन की शुरुआत की और इसके रिकॉर्ड को बनाए रखा।
- टीपू ने बैंकिंग नेटवर्क और सहकारी समितियों की स्थापना की, जहां मूलधन वार्षिक आधार पर रखा जाता था और ब्याज (या 'नफा') के साथ लौटाया जाता था।
- उन्होंने दुनिया भर में मैसूर उत्पादों के लिए व्यापारिक घरानों की स्थापना की, जिनमें पुडुचेरी , कच्छ, कराची, ओमान, बगदाद और कॉन्स्टेंटिनोपल जैसी जगहें शामिल थी।

758. अब्दुल रहीम खान (Abdul Rahim Khan)

समाचार में: दिल्ली के प्रेम स्मारक को छह साल के संरक्षण के बाद जीवन का नया इजारा (lease) मिला है।

अब्दुल रहीम खान-ए-खानन मकबरा और उसका जीर्णोद्धार

- उनका मकबरा नई दिल्ली में हुमायूं के मकबरे के पास, मथुरा रोड पर निजामुद्दीन पूर्व में स्थित है।
- इसे उन्होंने अपनी पत्नी के लिए 1598 में बनवाया था और 1627 में उनके शरीर को इसमें रखा गया था।

अब्दुल रहीम खान-ए-खानन (**1556 - 1627**) के बारे में

- रहीम के रूप में लोकप्रिय, वह एक कवि थे जो मुगल सम्राट अकबर के शासन के दौरान भारत में रहते थे, जो उनके गुरु भी थे।
- अब्दुल रहीम अकबर के भरोसेमंद संरक्षक और संरक्षक बैरम खान के पुत्र थे, जो तुर्क वंश के थे।
- वह अपने दरबार में नौ महत्वपूर्ण मंत्रियों (दीवान) में से एक थे, जिन्हें नवरत्नों के नाम से भी जाना जाता है।
- रहीम को उनके हिंदी दोहे (दोहे) और ज्योतिष पर उनकी पुस्तकों के लिए जाना जाता है।
- खान खाना का गांव, जो उनके नाम पर है, भारत के पंजाब राज्य के नवांशहर जिले में स्थित है ।

उनकी प्रमुख कृतियाँ

- रहीम ने बाबर के संस्मरणों, बाबरनामा का चगताई भाषा से फारसी भाषा में अनुवाद किया।
- संस्कृत में, उन्होंने ज्योतिष पर दो पुस्तकें लिखीं, खेताकुतुकम **(Khetakautukam)** और द्वादृमशद्योगवल **(Dwatrimshadyogaval).**

759. महत्वपूर्ण लड़ाइयाँ (Important Battles)

हाईडेस्पीज **(Hydaspes)** का युद्ध

सेना: सिकंदर पोरस के खिलाफ

वर्ष: 326 ईसा पूर्व

सेल्यूसिड-मौर्य युद्ध

सेना: सेल्यूकस I निकेटर के खिलाफ चंद्रगुप्त मौर्य

वर्ष: 305 और 303 ईसा पूर्व के बीच

पुल्लूर की लड़ाई

सेना: चालुक्य राजा पुलकसेन द्वितीय विरुद्ध पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम

वर्ष: 618 – 619 CE

तराइन का प्रथम युद्ध

सेना: मोहम्मद गोरी के खिलाफ पृथ्वीराज चौहान

वर्ष: 1191

तराइन का दूसरा युद्ध

सेना: मोहम्मद गोरी के खिलाफ पृथ्वीराज चौहान

वर्ष: 1192

दीव की लड़ाई

सेना: पुर्तगाली बनाम संयुक्त बल

वर्ष: 3 फरवरी 1509

पानीपत की पहली लड़ाई

सेना: इब्राहिम लोदी के खिलाफ बाबर

वर्ष: 21 अप्रैल 1526

खानवा की लड़ाई

सेना: राणा सांगा के खिलाफ बाबर

वर्ष: 16 मार्च, 1527

घाघरा की लड़ाई

सेना: महमूद लोदी (दिल्ली सल्तनत) के खिलाफ बाबर, नुसरत शाह (बंगाल सल्तनत)

वर्ष: 6 मई 1529

चौसा की लड़ाई

सेना: हुमायूं के खिलाफ शेर शाह

वर्ष: 26 जून 1539

पानीपत की दूसरी लड़ाई

सेना: अकबर के खिलाफ हेमू

वर्ष: 5 नवंबर 1556

तालिकोटा की लड़ाई

सेना: दक्कन सल्तनत गठबंधन (अहमदनगर, बीजापुर, बीदर और गोलकुंडा) के खिलाफ विजयनगर साम्राज्य (आलिया राम राय)

वर्ष: 23 जनवरी 1565

हल्दीघाटी का युद्ध

सेना: मान सिंह प्रथम के नेतृत्व में अकबर की सेना के खिलाफ मेवाड़ के महाराणा प्रताप

वर्ष: 18 जून 1576

समुगढ़ की लड़ाई

सेना: दारा शिकोह मुगल सिंहासन के लिए औरंगजेब के खिलाफ

वर्ष: 29 मई 1658

करनाल की लड़ाई

सेना: मुहम्मद शाह (मुगल साम्राज्य) के खिलाफ नादर शाह (फारसी साम्राज्य)

वर्ष: 24 फरवरी 1739

760. बाबा बंदा सिंह बहादुर (Baba Banda Singh Bahadur)

समाचार में: बाबा बंदा सिंह बहादुर की 350वीं जयंती।

बंदा सिंह बहादुर का इतिहास

- बंदा सिंह बहादुर, जिन्हें लछमन दास, लक्ष्मण देव या माधो दास भी कहा जाता है, (जन्म 1670, राजौरी [भारत] - मृत्यु जून 1716, दिल्ली),
- वह मुगल के खिलाफ आक्रामक युद्ध छेड़ने वाले पहले सिख सैन्य नेता थे।
- वह पहले सिख राज के संस्थापक थे, जिन्होंने पंजाब में जमींदारी व्यवस्था को समाप्त कर दिया था।
- मुगल प्रांत की राजधानी सरहिंद की बोरी के लिए प्रसिद्ध है।
- एक युवा के रूप में, उन्होंने एक समान (तपस्वी) बनने का फैसला किया।
- **1708 में,** वे गुरु गोबिंद सिंह के शिष्य बने, उन्हें माधो दास के नाम से जाना जाने लगा।
- सिख भाईचारे में दीक्षा के बाद, उन्होंने बंदा सिंह बहादुर का नाम लिया और सम्मानित हो गए।
- **1709** में बंदा सिंह ने मुगलों पर हमला करने के लिए, क्षेत्र के बड़े इलाकों को जीत लिया।
- उसे लाल-गर्म लोहे से प्रताड़ित किया गया।

IASBABA'S

RAPID REVISION (RaRe) SERIES - UPSC 2021

RaRe Notes Hindi

DAY 107 - HISTORY

#RaRebaba

www.rrs.iasbaba.com

विषय

761. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

762. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

763. मामलुक और खिलजी (Mamluk and Khilji)

764. तुगलक और सैय्यद (Tuglaq & Sayyids)

765. लोधी और मुगल (बाबर, हुमायूं, शेर शाह) (Lodhis & Mughlas - Babur, Humayun, Sher Shah)

766. मुगल (अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब) (Mughals - Akbar, Jahangir, Shah Jahan, Aurangzeb)

767. उत्तरवर्ती मुगल (Later Mughals)

768. प्राचीन भारत का साहित्य (Literature of Ancient India)

769. मध्यकालीन भारत का साहित्य (Literature of Medieval India)

770. राजपूत (Rajputs)

761. और 762. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

Q.1) भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किसे इसकी प्रमुख विशेषता माना जाता है?

a) यह एक सूचीबद्ध कंपनी में अनिवार्य रूप से पूंजी उपकरणों के माध्यम से निवेश है।
b) यह बड़े पैमाने पर गैर-ऋण पैदा करने वाला पूंजी प्रवाह है।
c) यह निवेश है जिसमें ऋण-सेवा शामिल है।
d) यह सरकारी प्रतिभूतियों में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा किया गया निवेश है।

Solution (b)

व्याख्या:

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश या एफडीआई तब होता है जब कोई व्यवसाय किसी विदेशी निवेशक (व्यक्ति या कंपनी) से निवेश प्राप्त करता है। यह विदेशी निवेशक उस देश के बाहर स्थित होता है जहां कारोबार हो रहा है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की विशेषता 'स्थायी ब्याज' की धारणा है। जिस व्यवसाय में निवेश किया जा रहा है उसमें स्थायी रुचि होना एफडीआई की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 'स्वामित्व को नियंत्रित करने' की धारणा द्वारा निर्देशित होते हैं।

Q.2) वर्तमान में भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

1. भारत का व्यापारिक निर्यात उसके व्यापारिक आयात से कम है।
2. हाल के वर्षों में भारत के लौह और इस्पात, रसायन, उर्वरक और मशीनरी के आयात में कमी आई है।
3. भारत का सेवाओं का निर्यात उसकी सेवाओं के आयात से अधिक है।
4. भारत एक समग्र व्यापार/चालू खाता घाटे से ग्रस्त है।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिये:

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 4
c) केवल 3
d) केवल 1, 3 और 4

Solution (d)

व्याख्या:

भारत में कुल 322,291,568.43 अमेरिकी डॉलर का निर्यात हुआ और 617,945,603.08 अमेरिकी डॉलर का कुल आयात हुआ, जिससे हजारों अमेरिकी डॉलर में नकारात्मक व्यापार संतुलन -295,654,034.65 हो गया। जो हजारों अमेरिकी डॉलर में -295,654,034.65 के नकारात्मक व्यापार संतुलन के लिए अग्रणी था, भारत के लिए प्रभावी रूप से लागू टैरिफ भारित औसत (सीमा शुल्क) 4.88% और मोस्ट फेवर्ड नेशन (MFN) भारित औसत टैरिफ 6% है। 3.50% की विश्व वृद्धि की तुलना में व्यापार वृद्धि 0.87% है। वर्तमान US$ में भारत की GDP 2,718,732,231,300 है। भारत सेवाओं का निर्यात BoP में 204,955,578,850 है, वर्तमान US$ और सेवाओं का आयात BOP, वर्तमान US$ में 124,181,614,510 है। GDP के प्रतिशत के रूप में भारत में वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात 19.74% है और GDP के प्रतिशत के रूप में वस्तुओं और सेवाओं का आयात 23.64% है।

संदर्भ:

https://wits.worldbank.org/CountryProfile/en/IND#:~:text=India%20All%20Products%20Exports%20and%20Imports&text=India%20services%20export%20is%20204%2C955%2C578%2C850,percentage%20of%20GDP%20is%2023.64

%25.

https://iasbaba.com/2020/05/issues-in-export-sector-during-covid19-all-india-radio-air-ias-upsc/

Q.3) 'वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट' शब्द, जो कभी-कभी समाचारों में पाया जाता है, एक ग्रेड को संदर्भित करता है।

a) कच्चा तेल
b) बुलियन
c) दुर्लभ पृथ्वी तत्व
d) यूरेनियम

Solution (a)

व्याख्या:

वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट (WTI) कच्चा तेल कच्चे तेल का एक विशिष्ट ग्रेड है और ब्रेंट और दुबई क्रूड के साथ तेल मूल्य निर्धारण में मुख्य तीन बेंचमार्क में से एक है।

Q.4) भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, गैर-वित्तीय ऋण में निम्नलिखित में से कौन शामिल है?

1. परिवारों पर बकाया आवास ऋण
2. क्रेडिट कार्ड पर बकाया राशि
3. ट्रेजरी बिल

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिये:

a) केवल 1
b) केवल 1 और 2
c) केवल 3
d) 1, 2 और 3

Solution (d)

व्याख्या:

गैर-वित्तीय ऋण में सरकारी संस्थाओं, परिवारों और व्यवसायों द्वारा जारी किए गए क्रेडिट उपकरण शामिल हैं जो वित्तीय क्षेत्र में शामिल नहीं हैं। यह वित्तीय ऋण के साथ अधिकांश समान विशेषताओं को साझा करता है, सिवाय इसके कि जारीकर्ता गैर-वित्तीय हैं। इसमें औद्योगिक या वाणिज्यिक ऋण, ट्रेजरी बिल और क्रेडिट कार्ड शेष शामिल हैं।

ऋण मौद्रिक ऋण चुकाने के लिए संविदात्मक दायित्व हैं, अक्सर संबंधित ब्याज व्यय के साथ। गैर-वित्तीय ऋण में औद्योगिक या वाणिज्यिक ऋण, ट्रेजरी बिल और क्रेडिट कार्ड शेष शामिल हैं। वे वित्तीय ऋण के साथ अधिकांश समान विशेषताओं को साझा करते हैं, सिवाय जारीकर्ता गैर-वित्तीय हैं। उनके पास एक दिन से लेकर शाश्वत तक की परिपक्वता है, और इसका उपयोग कंपनी के विकास को वित्त करने के लिए ऋण के रूप में किया जा सकता है। कंपनियां हेजिंग उद्देश्यों के लिए अधिक परिष्कृत ऋण उपकरणों का भी उपयोग कर सकती हैं।

Q.5) भारत में, कुछ परमाणु रिएक्टरों को **"IAEA** रक्षोपाय**"** के तहत क्यों रखा जाता है जबकि अन्य को नहीं?

a) कुछ यूरेनियम का उपयोग करते हैं और अन्य थोरियम का उपयोग करते हैं
b) कुछ आयातित यूरेनियम का उपयोग करते हैं और अन्य घरेलू आपूर्ति का उपयोग करते हैं
c) कुछ विदेशी उद्यमों द्वारा संचालित होते हैं और अन्य घरेलू उद्यमों द्वारा संचालित होते हैं।
d) कुछ राज्य के स्वामित्व वाले हैं और अन्य निजी स्वामित्व वाले हैं।

Solution (b)

व्याख्या:

भारत IAEA के सुरक्षा उपायों के तहत रखे जाने वाले नए रिएक्टरों की संख्या के बारे में यह आकलन करने के बाद ही तय करेगा कि इनमें विदेश से खरीदे गए यूरेनियम से ईंधन भरा जाएगा या नहीं।

विदेश में खरीदे गए फॉर्म के लिए, IAEA सुरक्षा उपायों के तहत आएंगे और घरेलू उपयोग करने वाले इसके पूर्वावलोकन से बाहर होंगे।

763. मामलुक और खिलजी (Mamluk and Khilji)

मामलुक (Mamluk)

कुतुब उद-दीन ऐबक (शासनकाल: **1206 - 1210**)

- दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण शुरू किया।
- उन्होंने दिल्ली में कुतुब मीनार का निर्माण शुरू किया।
- उनकी उदारता के लिए उन्हें लाख बश (लाखों का दाता) के रूप में भी जाना जाता था।

इल्तुतमिश (शासनकाल: **1211 - 1236**)

- साथ ही इक्तादारी प्रणाली की शुरुआत की।
- उन्होंने अपनी राजधानी को लाहौर से दिल्ली स्थानांतरित कर दिया।
- 1221 में, उसने चंगेज खान के नेतृत्व में एक आक्रमण को रोक दिया।
- उन्होंने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और कुतुब मीनार का निर्माण पूरा किया।
- उसने सल्तनत के दो सिक्के, चांदी के टंका और तांबे के जीतल को पेश किया।

रजिया सुल्ताना (शासनकाल: **1236 - 1240**)

- रुकनुद्दीन फिरोज के बाद गद्दी पर बैठी।
- उनका विवाह बठिंडा के गवर्नर मलिक अल्तुनिया से हुआ था।

गयास उद दीन बलबन (शासनकाल: **1266 – 1287**)

- उन्होंने प्रशासन में सैन्य और नागरिक सुधार किए।
- उसने यह भी मांग की कि लोग राजा के सामने सजदा करें।
- उनके पास अपने रईसों पर नजर रखने के लिए एक जासूसी प्रणाली थी।
- उन्होंने भारत में नवरोज के फारसी उत्सव की शुरुआत की।

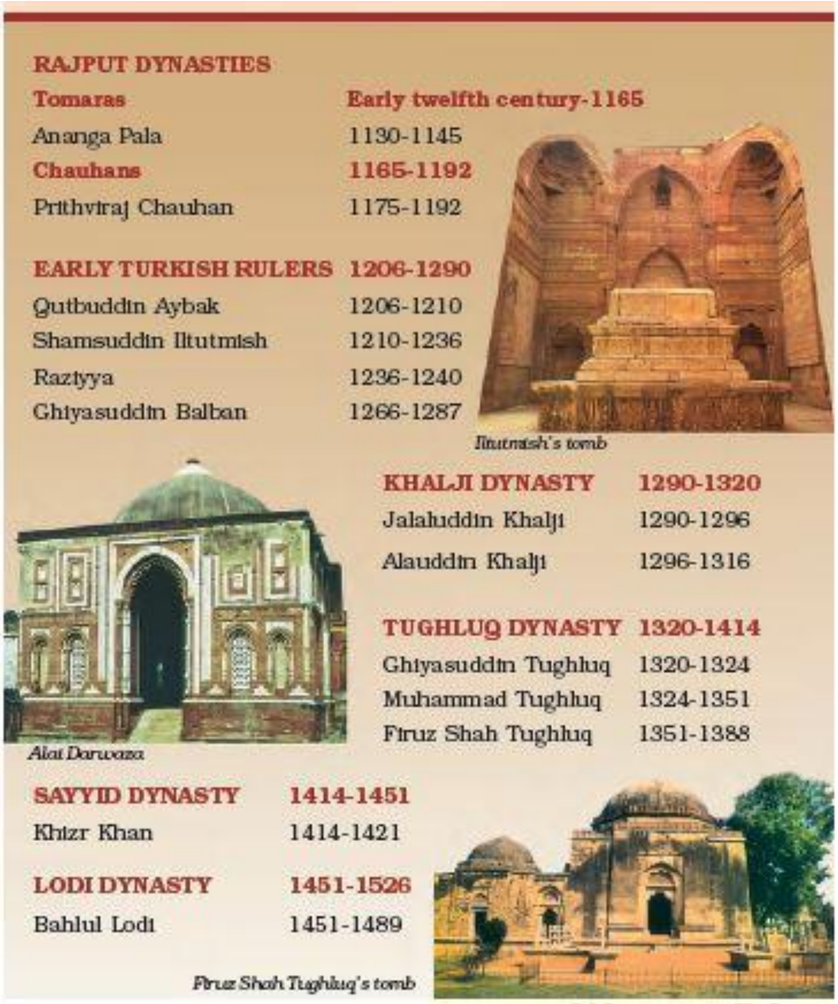

RAJPUT DYNASTIES	
Tomaras	**Early twelfth century-1165**
Ananga Pala	1130-1145
Chauhans	**1165-1192**
Prithviraj Chauhan	1175-1192
EARLY TURKISH RULERS	**1206-1290**
Qutbuddin Aybak	1206-1210
Shamsuddin Iltutmish	1210-1236
Raziyya	1236-1240
Ghiyasuddin Balban	1266-1287
KHALJI DYNASTY	**1290-1320**
Jalaluddin Khalji	1290-1296
Alauddin Khalji	1296-1316
TUGHLUQ DYNASTY	**1320-1414**
Ghiyasuddin Tughluq	1320-1324
Muhammad Tughluq	1324-1351
Firuz Shah Tughluq	1351-1388
SAYYID DYNASTY	**1414-1451**
Khizr Khan	1414-1421
LODI DYNASTY	**1451-1526**
Bahlul Lodi	1451-1489

Iltutmish's tomb

Alai Darwaza

Firuz Shah Tughluq's tomb

खिलजी (**khilji**)

जलाल-उद-दीन फिरोज खिलजी (**1290-1296** ई.)

- शांति का पालन करने और हिंसा के बिना शासन करने की इच्छा रखने के कारण उन्हें "क्षमादान जलाल-उद्दीन" भी कहा जाता था।

अलाउद्दीन खिलजी (**1296-1316** ई.)

- उन्होंने पवित्र अनुदान और भूमि के मुफ्त अनुदान को जब्त कर लिया।
- उन्होंने सामाजिक पार्टियों और शराब पर प्रतिबंध लगा दिया।
- उन्होंने एक स्थायी स्थायी सेना की शुरुआत की।
- उन्होंने घोड़ों की ब्रांडिंग और वर्णनात्मक रोस्टर की व्यवस्था शुरू की।
- उन्होंने आवश्यक वस्तुओं की कीमतें तय कीं जो सामान्य बाजार दरों से कम थीं।
- उन्होंने कालाबाजारी पर सख्त रोक लगा दी।
- राजस्व नकद में एकत्र किया जाता था न कि वस्तु के रूप में।
- उसने जजिया कर लगाया।
- बाजार को मानकीकृत करने के लिए शहाना-ए-मंडी नामक कार्यालयों में दीवान-ए-रियासत नामक अधिकारी नियुक्त किए गए थे।

- व्यापारियों को तय दरों पर अपना माल बेचने से पहले कार्यालय में अपना पंजीयन कराना होता था।
- उन्होंने अलाई दरवाजा, एक हजार स्तंभों के महल और सिरी के किले का निर्माण करवाया।

764. तुगलक और सैय्यद (Tuglaq & Sayyids)

तुगलक (Tughlaq)

गयास-उद-दीन तुगलक या गाजी मलिक (**1320 - 1325** ई.)

- तुगलक की नीति मंगोलों के विरुद्ध कठोर थी।
- उन्होंने तुगलकाबाद किले का निर्माण भी शुरू किया।
- उन्होंने डाक व्यवस्था, न्यायिक, सिंचाई, कृषि और पुलिस को अधिक महत्व दिया।

मुहम्मद-बिन-तुगलक (**1325-1361** ई.)

- मुहम्मद-बिन-तुगलक भारत की प्रशासनिक और राजनीतिक एकता के लिए खड़ा था।
- खाली खजाने को भरने के लिए उसने दोआब क्षेत्र में करों को बढ़ा दिया।
- बहुत से लोग भारी करों से बचने के लिए जंगलों की ओर भाग गए, जिसके कारण खेती की उपेक्षा की गई और भोजन की गंभीर कमी हो गई।
- उसने अपनी राजधानी को दिल्ली से देवगिरी स्थानांतरित कर दिया।
- उन्होंने तांबे की मुद्रा प्रणाली की शुरुआत की।
- सिक्कों का मूल्य गिरा; इसलिए उसे तांबे की टोकन मुद्रा वापस लेनी पड़ी।

फिरोज तुगलक (**1351-1 388** ई.)

- उन्होंने मोहम्मद-बिन-तुगलक द्वारा दिए गए सभी तकावी (कृषि) ऋण वापस ले लिए।
- उन्होंने चार महत्वपूर्ण कर एकत्र किए जो हैं:
  - खराज-भूमि की उपज का 1/10
  - खम्स- युद्ध लूट का 1/5
  - जजिया-पोल टैक्स
  - विशिष्ट धार्मिक उद्देश्यों के लिए मुसलमानों पर ज़कात-कर
- उन्होंने 150 कुओं, 100 पुलों और 50 बांधों का निर्माण किया, और कई सिंचाई नहरों का निर्माण कराया।
- उसने फिरोजाबाद, हिसार, जौनपुर और फतेहाबाद जैसे शहरों का निर्माण किया।
- उन्होंने अस्पताल (दार-उल-शफा), विवाह ब्यूरो, (दीवानी-ए-खेरत) और एक रोजगार ब्यूरो की स्थापना की।
- उन्होंने गरीबों को आर्थिक सहायता देने के लिए दीवान-ए-इस्तिहक़ की स्थापना की।
- फुतुहत-ए-फिरोज शाही फिरोज तुगलक की आत्मकथा है।
- उन्होंने विद्वान जिया-उद-दीन बारानी को संरक्षण दिया।
- उनके शासनकाल के दौरान, चिकित्सा, विज्ञान और कला पर कई संस्कृत पुस्तकों का फारसी में अनुवाद किया गया था।

- कुतुब-फिरोज शाही-भौतिकी से संबंधित एक पुस्तक है।

सैय्यद (Sayyed)

खिज्र खान **(1414-1421** ई.)

- उन्होंने किसी शाही उपाधि की शपथ नहीं ली।
- उसने तैमूर के आक्रमण के बाद भारत की अव्यवस्थित स्थिति का लाभ उठाया।
- 1414 ई. में उन्होंने दिल्ली के सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

मुबारक शाह **(1421-1434** ई.)

- मुबारक शाह ने दोआब क्षेत्र के स्थानीय प्रमुखों और खोखरों को कुचल दिया।
- वह दिल्ली के दरबार में हिंदू कुलीनों को नियुक्त करने वाला पहला सुल्तान शासक था।
- उन्होंने जमुना नदी के तट पर "मुबारकाबाद" शहर का निर्माण किया।

मुहम्मद शाह **(1434-1445** ई.)

- उसने लाहौर के गवर्नर बहलूल लोदी की सहायता से मालवा के शासक को पराजित किया।
- उसने मालवा के शासक को हराने में मदद के लिए बहलुल लोदी को खान-ए-खानन की उपाधि से सम्मानित किया।

765. लोधी और मुगल (बाबर, हुमायूं, शेर शाह) (Lodhis & Mughlas - Babur, Humayun, Sher Shah)

लोधी

बहलुल लोदी **(1451-1489** ई.)

- ग्वालियर, समथल, साकित, मेवात को बहलोल लोदी ने जीत लिया था।
- 1489 ई. में उनकी मृत्यु हो गई।
- समर्थन और मान्यता प्राप्त करने के लिए, बहलुल लोदी कभी सिंहासन पर नहीं बैठे, इसके बजाय उन्होंने अपने रईसों के साथ कालीन पर बैठने का विकल्प चुना।

सिकंदर शाही **(1489-1517** ई.)

- उन्होंने एक सुव्यवस्थित जासूसी प्रणाली स्थापित की।
- उन्होंने कृषि और उद्योग का विकास किया।
- उन्होंने हिंदुओं पर कठोर प्रतिबंध लगाए।
- सिकंदर शाह ने "शहनाई" संगीत का आनंद लिया।
- उनके शासनकाल के दौरान "लहजती-सिकंदर शाही" नामक संगीत पर कार्य किया गया।

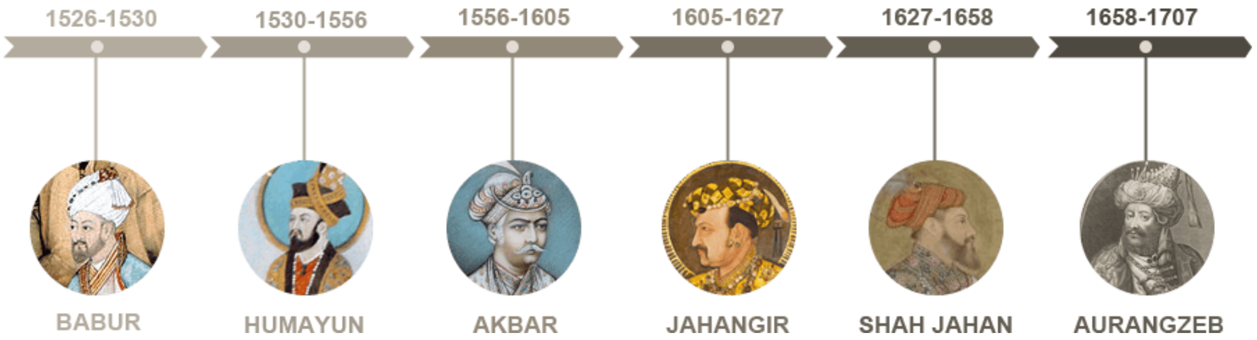

बाबर - जहीरुद्दीन मुहम्मद

- वह तैमूर (अपने पिता की तरफ) और चंगेज खान (अपनी मां की तरफ) के वंशज थे।
- पानीपत की पहली लड़ाई ने भारत में मुगल प्रभुत्व की नींव रखी।
- बाबर ने दिल्ली पर विजय प्राप्त की और आगरा पर कब्जा करने के लिए अपने बेटे हुमायूँ को भेजा।
- बाबर ने स्वयं को "हिन्दुस्तान का सम्राट" घोषित किया।
- 1527 में उन्होंने खानवा की लड़ाई में राणा संघ से लड़ाई की।
- उन्होंने अपने संस्मरण तुज़ुक-ए-बाबुरिन तुर्की भाषा में लिखे।

मुगल साम्राज्य - हुमायूँ **(1530-1540, 1555-1556)**

- हुमायूँ के तीन भाई थे, कामरान, अस्करी और हिंडाली
- हुमायूँ ने साम्राज्य को अपने भाइयों में बाँट दिया।
- 1540 में, बिलग्राम या गंगा की लड़ाई में, जिसे कन्नौज की लड़ाई के रूप में भी जाना जाता है, हुमायूँ ने शेर खान के साथ लड़ाई की।
- हुमायूँ ने सफ़ाविद शासक से मदद मांगी।
- बाद में, उसने अपने भाइयों कामरान और अस्करी को हराया।

शेर शाह सूर **(1486-1545)**

- शेरशाह का साम्राज्य सैंतालीस सरकारों में विभाजित था।
- प्रत्येक सरकार को आगे विभिन्न परगना और विभिन्न अधिकारियों के प्रभारी में विभाजित किया गया था।
    - शिकदार - सैन्य अधिकारी
    - अमीन - भू-राजस्व
    - फोतेदार - कोषाध्यक्ष
    - करकुन - लेखाकार
- इक्तास - विभिन्न प्रशासनिक इकाइयाँ
- शेरशाह के नेतृत्व में भूमि सर्वेक्षण किया जाता था।
- सभी कृषि योग्य भूमि को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया - अच्छा, मध्यम और बुरा।
- राज्य का हिस्सा औसत उत्पादन का एक तिहाई था और इसका भुगतान नकद या फसल के रूप में किया जाता था।
- शेर शाह ने "बांध" नामक नए तांबे के सिक्के पेश किए।

- शेरशाह ने चार महत्वपूर्ण राजमार्ग बिछाकर संचार का भी विकास किया था।
    - सिंध से सोनारगांव
    - आगरा से बरहामपुर
    - जोधपुर से चित्तौड़
    - लाहौर से मुल्तान

766. मुगल (अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब) (Mughals - Akbar, Jahangir, Shah Jahan, Aurangzeb)

अकबर **(1556-1605)**

- 1556 में, पानीपत की दूसरी लड़ाई में, अकबर ने हेमू को हराया।
- अकबर ने राजा मान सिंह और राजा भगवान दास को मुगल प्रशासन के वरिष्ठ पद पर नियुक्त किया।
- हालाँकि अधिकांश राजपूत राज्यों ने अकबर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, लेकिन मेवाड़ के रणों का सामना करना जारी रहा।
- उन्होंने तीर्थ कर और बाद में जजिया को समाप्त कर दिया।
- 1575 में, अकबर ने अपनी नई राजधानी फतेपुर सीकरी में इबादत खाना (पूजाघर) का निर्माण किया।
- उन्हें राजनीतिक मामलों में मुस्लिम उलेमाओं की घुसपैठ पसंद नहीं थी।
- 1582 में, उन्होंने दीन इलाही या ईश्वरीय आस्था नामक एक नए धर्म का प्रचार किया।
- भू-राजस्व प्रणाली कोज़बती या बंदोबस्त प्रणाली या दहसाला प्रणाली कहा जाता था।
- राजस्व पिछले दस वर्षों के आधार पर मापी गई भूमि की औसत उपज पर तय किया गया था।
- भूमि को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया था।
    - पोलाज, परौती, चचर और बंजर
    - राजस्व का भुगतान आम तौर पर नकद में किया जाता था।
- उनकी मनसबदारी प्रथा अति प्राचीन है।

जहांगीर **(1605-1627)**

- उसने अपने पुत्र खुसरो मिर्जा को हराकर कैद कर लिया।
- उन्होंने 5 वें सिख गुरु और खुसरो मिर्जा के समर्थकों में से एक गुरु अर्जुन का भी सिर कलम कर दिया।

शाहजहाँ **(1628-1658)**

- उनकी दक्कन नीति अधिक सफल रही।
- उसने अहमदनगर की सेना को हराकर उस पर अधिकार कर लिया।
- बीजापुर और गोलकुंडा दोनों ने सम्राट के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए।
- शाहजहाँ ने दक्कन में चार मुगल प्रांतों को उत्कीर्ण किया - खानदेश, बरार, तेलंगाना और दौलताबाद।

औरंगजेब **(1658-1707)**

- उन्होंने आलमगीर, विश्व विजेता की उपाधि धारण की।

- अपने पहले दस वर्षों के शासनकाल में, उनके सैन्य अभियान एक बड़ी सफलता थे।
- उसी समय, मराठा शासक शिवाजी ने एक स्वतंत्र मराठा साम्राज्य का निर्माण किया।
- उनके बीच एक सीधा टकराव हुआ जिसने मुगल साम्राज्य को आर्थिक रूप से समाप्त कर दिया।

767. उत्तरवर्ती मुगल (Later Mughals)

शासक	समय अवधि	प्रमुख बिंदु
बहादुर शाह प्रथम (शाह आलम प्रथम)	1707–1712	उन्होंने शंभूजी के पुत्र शाहूजी को रिहा कर दिया।
फ़र्रुख़ सियर	1713–1719	जोड़ तोड़ करने वाले सैयद बंधुओं की चढ़ाई। अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को फ़रमान।
मुहम्मद शाह (रंगीला)	1719–1720 1720–1748	सैयद बंधुओं से छुटकारा मिला। 1739 में फारस के नादिर-शाह का आक्रमण।
अहमद शाह बहादुर	1748–1754	मुहम्मद शाह का पुत्र उनके मंत्री सफदरजंग मुगल गृहयुद्ध के लिए जिम्मेदार थे।
आलमगीर II	1754–1759	इमाद-उल-मुल्क और उनके मराठा सहयोगी सदाशिवराव भाऊ की साजिश से उनकी हत्या कर दी गई थी।
शाहजहाँ III	1759-1760	पानीपत की तीसरी लड़ाई के बाद राजकुमार मिर्जा जवान बख्त द्वारा उन्हें उखाड़ फेंका गया था।
शाह आलम II	1760–1806	बक्सर का युद्ध।
बहादुर शाह II	1837–1857	वह अंतिम मुगल सम्राट था।

768. प्राचीन भारत का साहित्य (Literature of Ancient India)

पुस्तकें	लेखक
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
राजतरंगिणी	कल्हन
कथासरितसागरी	सोमदेव
कामसूत्र	वात्स्यायन
प्रश्नोत्तर्मलिका	अमोघवर्ष

स्वप्नवासवदत्तम	भास
बुद्ध चरित	अश्वघोसा
नाट्य शास्त्र	भारत
अभिज्ञान शकुंतला विक्रमोर्वशी रघुवनसां	कालिदास
अमरकोसा	अमरश्म:
पंचसिद्धांतिका बृहत संहिता	वराह मिहिर
सूर्य सिद्धांत आर्यभट्ट	आर्यभट्ट
पंच तंत्र	विष्णु शर्मा
नितिसार	कामन्दकीय
ऐहोल प्रशस्ति	रवि कृति
इंडिका	मेगास्थनीज
अर्थशास्त्र	कौटिल्य
चरक संहिता	चरक
लीलावती	भास्कर II
हर्षचरित कादम्बरी नागानंद रत्नावली	हर्षवर्धन
गीतागोविंदा	जयदेवी
नवरत्न	विरसेना
गतसप्तशती	हाला
नितिसार	कामन्दकीय
अष्टाध्यायी	पाणिनी
महाभाष्य	पतंजलि
नैषाढ़चरित्र	श्री हर्ष
मृच्छकटिका	शूद्रक

769. मध्यकालीन भारत का साहित्य (Literature of Medieval India)

पुस्तक	लेखक
ताज-उल-मासिर	हसन निज़ामी
तबकात-ए-नासिरी	मिन्हाज सिराजो
तारिख-ए-फ़िरोज़शाही (सल्तनत काल का सबसे महत्वपूर्ण कार्य) फतवा-ए-जहाँदारी	ज़ियाउद्दीन बरनी
फ़ुतुह-उस-सलातिन(बहमनी साम्राज्य की स्थापना)	इसामी
तारिख-ए-फ़िरोज़शाही	अफिफ
तारिख-ए-मुबारक शाही	याह्या सरहिंदी
अकबर नामा	अबुल फ़ज़ल
तबक़त-ए-अकबरी	निज़ामुद्दीन अहमद
मुन्तखाब-उत-तवारीख	बदायूंनी
बादशाहनामा/पादशाहनामा	अब्दुल हमीद लाहौरी
मुंतखब-उल लुबाब (औरंगजेब का शासनकाल)	खफी खान
मिरात-ए-अहमदी	अली मुहम्मद खान
पद्मावत (पद्मिनी पर - चित्तौड़ के राजा रतन सिंह की पत्नी)	मलिक मोहम्मद जायसी
तुगलक नमाज़ तारिक-ए-अलाई नुह सिपिह्री आशिका	अमीर खुसरो
मारवाड़ रा परगनी री विगट (राजस्थान पर जानकारी)	मुन्हता नैंसी
तुजुक-ए-जहाँगीरी (आत्मकथा)	जहांगीर
तारीख-ए-शेरशाही	अब्बास सरवानी
तुजुक-ए-बाबरी/बाबरनामा (तुर्की में - आत्मकथा)	बाबर
शाहजहाँनामा	इनायत खान
दयाभाग	जिमुता वाहन
चंदयान	मौलाना दाऊद
हिमायूं नामा	गुलबदन बेगम
भावार्थ दीपिका	ज्ञानेश्वर
सफ़रनामा या रिहला	इब्न बतूता
तुजुक-ए-जहाँगीरी (आत्मकथा)	जहांगीर

तारीख-ए-शेरशाही	अब्बास सरवानी
तुजुक-ए-बाबरी/बाबरनामा (तुर्की में - आत्मकथा)	बाबर
शाहजहाँनामा	इनायत खान
दयाभाग	जीमूतवाहन
पेरिया पुराणम (तमिल वेद की 12वीं पुस्तक जिसे तिरुमुरई कहा जाता है)	शेकीलार (Shekilaro)
सुर सागर (कृष्ण का जीवन)	सुर दास
औरंगजेब का इतिहास, मुगल साम्राज्य का पतन	जदुनाथ सरकार
गजनी के महमूद	मोहम्मद हबीब
दिल्ली सल्तनत का प्रशासन	आई.एच. कुरैशी
भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना	ए.बी.एम. हबीबुल्ला
मुगल भारत की कृषि प्रणाली	इरफान हबीब

770. राजपूत (Rajputs)

कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष

दिल्ली के तोमर

- अनंगपाल प्रथम ने 8वीं शताब्दी ई. में तोमर वंश की स्थापना की।
- अनंगपाल द्वितीय ढिलिकापुरी का संस्थापक था, जो अंततः दिल्ली बन गया।
- अनंगपाल द्वितीय को 11वीं शताब्दी में अपने शासनकाल के दौरान दिल्ली की स्थापना और आबादी करने का श्रेय दिया जाता है।
- अनंगपाल तोमर द्वितीय को उनके पोते पृथ्वीराज चौहान ने उत्तराधिकारी बनाया।

दिल्ली और अजमेर के चौहान

- उन्होंने उज्जैन पर 12वीं शताब्दी के आरंभ में मालवा और दिल्ली के परमारों से कब्जा कर लिया।
- उन्होंने अपनी राजधानी दिल्ली स्थानांतरित कर दी।
- पृथ्वीराज चौहान इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था।

कन्नौज के राठौर

- राठौड़ों ने 1090 से 1194 ई. तक कन्नौज के सिंहासन पर स्वयं को स्थापित किया।
- जयचंद इस वंश का अंतिम महान शासक था।
- वह 1194 ई. में चंदावर की लड़ाई में गोरी के मुहम्मद द्वारा मारा गया था।

बुंदेलखंड के चंदेल

- 9वीं शताब्दी में इनकी स्थापना की।
- छोटे राज्य के शासक नन्नुक चंदेल वंश के संस्थापक थे।
- चंदेल की राजधानी खजुराहो थी जिसे बाद में बदलकर महोबा कर दिया गया।
- कालिंजर उनका महत्वपूर्ण किला था।

मेवाड़ के गुहला या सिसोदिया

- गुहिल गुहिला राजवंश के संस्थापक थे।
- राजपूत शासक बप्पा रावल ने गहलोत राजवंश की नींव रखी थी।
- राणा संघ और महाराणा प्रताप सिसोदिया शासकों ने भारत के मुगल शासकों को कड़ी टक्कर दी।

मालवा के परमार

- उन्होंने 10वीं शताब्दी में अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की और धार उनकी राजधानी थी।
- बाद के परमार शासकों ने अपनी राजधानी को मंडप-दुर्ग (अब मांडू) में स्थानांतरित कर दिया।

राजा भोज **(1010-1055)**

- वह इस काल के सबसे प्रसिद्ध शासक थे।
- उन्होंने भोपाल के पास 250 वर्ग मील से अधिक की एक खूबसूरत झील का निर्माण किया।
- उन्होंने संस्कृत साहित्य के अध्ययन के लिए धार में एक कॉलेज की स्थापना की।